

पुस्तक	स्वाध्याय, मीलों
संख्या	एक हजार
संग्रह-कर्ता	श्री नृतन मूर्ति
प्रकाशन-काल	सवन्सरी पर्व, २०७८
प्रकाशक	श्री जैनधर्म-प्रसारक संम्बिद्या पाठडी (भहमदनगर)
मुद्रक	आत्मजैन प्रिंटिंग प्रेस ३५०-इण्डियल एरिया-४ लूधियाना-३
मूल्य	
दो रुपये (ज्ञान प्रचारार्थ)	

दो शब्द



मानव-जीवन को श्रेयस् की ओर ले जाने के लिये स्वाध्याय ही सर्वोत्तम साधन है। स्वाध्याय की कुजौ से आत्म-भवन के बेबन्द द्वारा खुल जाते हैं जिनके भीतर ज्ञान, दर्शन, चारित्र की ज्योति प्रकाशित हो रही है, उस दिव्य-ज्योति के दर्शन ही इस सकलन का उद्देश्य है।

प्रस्तुत सकलन मे मेरा यही प्रयास रहा है कि स्वाध्याय प्रेमियों को उपयोगी एव शुद्ध सामग्री उपलब्ध हो सके।

इस प्रयास को क्रियान्वित रूप प्रदान करने मे मेरे सहचारी सन्त मुनि श्री कुन्दन ऋषि ने आशातीत सहयोग दिया है, जी चाहता उनका आभार प्रदर्शित कर ही दू, किन्तु अभिन्नता मे आभार-प्रदर्शन कहाँ?

यदि प्रवुद्ध श्रावक श्राविकाओं को इस सकलन से स्वाध्याय का यथेष्ट लाभ प्राप्त हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूगा।

—एतनमुनि

ग्रामार्थ-प्रदर्शन



श्री जैन-धर्म-प्रसारक संस्था पाठडी (अहमदनगर) अपने उन धर्मप्रेमी, दानशील बन्धुओं को आभारी है जिनका सहयोग प्रकाशन को साकार रूप दे रहा है। विशेष रूप से हम धन्यवाद देते हैं प्रकाशनार्थ निम्नलिखित द्रव्य-दाताओं को

- १ श्री टेकचन्द जी जैन, फगवाड़े वाले दिल्ली
- २ श्री रामलाल जी ढूगड़, (सराफ) दिल्ली
- ३ श्री लोकनाथजी नौलखा (लाहौर वाले) दिल्ली
- ४ श्री बनारसी दास जी, ओसवाल, दिल्ली



पुस्तकार्पण



श्रमणसंघीय आचार्य परम पूज्य
श्री आत्माराम जी महाराज के
पद्धति

श्रमणसंघीय द्वितीय आचार्य

प्रातःस्मरणीय

श्री आनन्द ऋषि जी महाराज की
स्वाध्याय-प्रवृत्ति की प्रेरणा से
प्रेरित होकर ही मैंने यह
श्रुत-सग्रह—‘स्वाध्याय-माला’

प्रस्तुत की है ।

यह उनका प्रेरणा-पुष्टि
उन्हीं के कर-कमलों में
सादर समर्पित करता हूँ ।

रत्नस्तुति

'मंगल-कामना'



भारतीय महर्षियों का प्रथम आदेश है 'स्वाध्यायान्मा प्रमद'—स्वाध्याय में प्रमाद मत करो ! क्योंकि भगवान् महावीर की वाणी का यह पावन सन्देश है—“सज्ज्ञाएण ज्ञानावरणिज्जं कम्म खवेइ” स्वाध्याय से ही ज्ञान को आवृत्त करनेवाले कर्मों का क्षय होता है ।

स्वाध्याय का अर्थ है मनन, चिन्तन और निदिध्यासन पूर्वक इस प्रकार से अध्ययन जिससे इन्द्रियां नियन्त्रित हों, मनोविकार शान्त हो, हृदय पवित्र हो और आत्म-गुणों का विकास हो ।

स्वाध्याय-माला में 'श्री रत्न मुनि' ने उन शास्त्रीय वचनों का सग्रह किया है जो स्वाध्याय के वास्तविक लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हैं, जो ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय करने में समर्थ हैं, बुद्धि की स्वच्छता और आत्म-चेतना को प्रकाशित करने में सहायक हैं । यह आध्यात्मिक प्रयास सफल हो यही भेरी मंगल-कामना है ।

मुनि फूलचन्द श्रमण
लुधियाना

• श्रहं •

＊ दसवेआलियसुत्तं *



दुमपुण्फया नाम पढममजभयणं

धम्मो मगलमुक्किहू', अहिंसा सजमो तवो ।

देवा वि तं नमंसति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुण्फेसु, भमरो आवियह रस ।

न य पुण्फ किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।

विहंगमा व पुण्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च विर्ति लब्भामो, न य कोइ उवहम्मह ।

अहागडेसु रीयन्ते^१, पुण्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।

नाणा पिण्डरया दन्ता, तेण वुच्चन्ति साहुणो ॥५॥ त्ति बेमि ॥

॥ पढम दुमपुण्फय अजभयणसमत्त ॥



सामणपुण्डयं बीयमजभयण

कह नु कुञ्जा सामण, जो कामे न निवारए ।

रए पए विसीयतो, संकप्पस्स वस गओ ॥ १ ॥

ब्रत्य - गन्धमलकार, इत्थीओ सयणाणि य ।

अच्छन्दा जे न भु जन्ति, न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य कन्ते पिए भोए, लद्धे विपिहृ^२ कुच्चइ ।

साहीणे चयह भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

१ वकहू । २ रीयति । ३ वि पिहृ ।

समाइ पेहाइ' परिव्वयन्तो,
 सिया मणो निस्सरई बहिष्ठा ।
 “न सा महं नो वि अह पि तीसे”,
 इच्छेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥
 आयावयाही, चय सोगमलं,
 कामे कमाही, कमिय खु दुखं ।
 छिन्दाहि दोसं, विणएज्ज रागं,
 एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥
 पवखन्दे जलियं जोइ, धूमकेउं दुरासय ।
 नेच्छति वतय भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥
 धिरतथु तेऽज्जसो-कामी, जो तं जीवियकारणा ।
 वंतं इच्छसि आवेउ । सेय ते मरणं भवे ॥ ७ ॥
 अहं च भोगरायस्स, तं च सि अन्धगवण्हणो ।
 मा कुले गन्धणा होमो, संजम निहुओ चर ॥ ८ ॥
 जइ तं काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
 वायाविद्वृव्व हड्डो, अट्टियष्ठा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयण सोच्चा, सजयाए लुभासियं ।
 अं कुसेण जहा नागो, धम्मे संपङ्किवाइओ ॥ १० ॥
 एव करेति सबुद्धा, पण्डिया पवियकखणा ।
 विणियद्वन्ति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति देमि ॥
 ॥ वीय सामण्णपुव्वय अज्ञान समत्त ॥



खुड्डियायार कहा नामं तइयमज्ञयणं
 सजमे सुटि अप्पाण, विष्पमुक्काण ताइण ।
 तेसिमेयमणाइण, निगन्थाण महेसिण ॥ १ ॥
 उहेसिय कीयगड, नियां अभिहडाण य ।
 राइभत्ते सिणाणे य, गन्धमल्ले य बीयणे ॥ २ ॥
 सन्निही गिहिमत्ते य, रायपिण्डे किमिच्छए ।
 सवाहणा दन्तपहोयणाय, सपुच्छणा देहपलोयणाय ॥ ३ ॥
 अट्टावएय नालीए, छत्तस्स य धारणट्टाए ।
 तेगिच्छं पाणहा' पाए, समारम्भं च जोइणो ॥ ४ ॥
 सिज्जायरपिण्ड च, आसन्दी पलियङ्क्कए ।
 गिहन्तरनिसिज्जा य, गायस्सुब्बट्टणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडिय, जा य आजीववित्तिया ।
 तत्तानिवुडभोइत्तं, प्राऊरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
 मूलए सिज्जवेरे य, उच्छुखडे अनिवुडे ।
 कन्दे मूले य सज्जित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
 सोवज्जले सिन्धवे लोणे, रोमालोणे य आमए ।
 सामुद्रे पसुखारे य, कालातोणे य आमए ॥ ८ ॥
 धुवणेत्ति॑ वमणे य, वत्थीकम्म-विरेयणे ।
 अञ्जणे दन्तवणे य, गायब्भङ्गविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण, निगन्थाण महेसिण ।
 सजमम्मि य जुत्ताण, लहुभूय विहारिण ॥ १० ॥
 पञ्चासव-परिन्नाया, तिगुत्ता छसु सजया ।
 पञ्चनिगहणा धीरा, निगन्था उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयति गिम्हेसु, हेमन्तेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसंलोणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥

१ पाहणा । २ धूवणे ।

परीसहरिङ्ग-दन्ता, धुयमोहा' जिइन्दिया ।
 सव्वदुकखप्पहीणद्वा, पदकमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥
 दुदकराइं करेत्ताण, दुसहाइं सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोगेसु केइ, सिंजभन्ति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमन्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडा ॥ १५ ॥ त्ति बेमि ॥
 ॥ तइय खुड्हियायार कहा अज्ञभयण समत्त ॥



छज्जीवणिया नामं चउत्थमज्ञभयणं

सुथं मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु
 छज्जीवणिया नामज्ञभयणं समणेण भगवया महावीरेण कास-
 देण पवेइया, सुश्रव्वखाया, सुपण्णत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्ञभयणं
 धम्मपण्णत्ती ।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्ञभयण समणेण भगवया
 महावीरेण कासवेण पवेइया, सुश्रव्वखाया, सुपण्णत्ता । सेय मे अहि-
 ज्जिउं अज्ञभयणं धम्मपण्णत्ती ?

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्ञभयणं समणेण भगवया
 महावीरेण कासवेण पवेइया सुश्रव्वखाया सुपण्णत्ता । सेव मे अहि-
 ज्जिउं अज्ञभयणं धम्मपण्णत्ती । तं जहा—पुढवी-काइया, आउ-
 काइया, तेउ-काइया, वाउ-काइया, वणस्सइ-काइया, तस-काइया ॥

पुढवी चित्तमन्तमव्वखाया, अणेगजीवा पृढोसत्ता, अन्नत्य
 सत्थपरिणएण । आउ चित्तमन्तमव्वखाया अणेगजीवा पुढो-

सत्ता अनन्तथ सत्थपरिणएण । तेउ चित्तमन्तमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अनन्तथ सत्थपरिणएण । वाउ चित्तमन्त-मक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनन्तथ सत्थपरिणएण । वणस्सई चित्तमन्तमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनन्तय सत्थपरिणएण । तं जहा—अग्नबीया, मूलबीया, पोरबीया, खन्धबीया, बीयरुहा, समुच्छमा, तणलया, वणस्सइ-काइया सबीयां चित्तमन्तमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनन्तथ सत्थपरिण-एण ।

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा त जहा—अण्डया, पोयया, जराउया रत्या, ससेहमा, समुच्छमा, उन्भया उव-वाइया, जेसि केसिचि पाणाण अभिक्षकन्त पडिक्कन्त सकुचियं पसारिय रुय भत तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया जे य कीडपयगा जाय कुन्धुपिवीलिया सब्बे बेइदिया सब्बे तेइंदिया सब्बे चउरिदिया सब्बे पर्चिदिया सब्बे तिरिक्खजोणिया सब्बे नेरइया सब्बे मणुया सब्बे देवा सब्बे पाणा परमाहम्मिया । एसो खलु छटो जीवनिकाओ “तसकाउ” त्ति पवुच्चइ ।

इच्चेंस छण्हु जीदनिकायाण नेव रथं दड समारंभिज्जा, नेवन्नेहि दड समारभाविज्जा, दडं समारम्भन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि^१ जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए । काएण । न करेमि न कारवेमि करन्त पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भते । पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

पढमे भते ! महब्बए पाणाइवायाओ वेरमण । सब्बं भते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुम वा बायर वा तस वा थावर वा । नेव स्य पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहि पाणे अइवा-
१. समणुजाणिज्जा ।

यावेज्जा, पाणे श्रहव्वशते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-
झीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न
कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडि-
वक्कमामि निन्दामि गरिहामि श्रप्पाणं वोसिरामि । पढमे भन्ते !
महव्वए उवट्टियो मि, सव्वाओ पाणाइदायाओ वेरमण ॥१॥

अहावरे दोच्चे भन्ते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमण ।
सव्वं भन्ते ! मुसावाय पच्चवखामि, से कोहा वा लोहा वा
भया वा नेव सय मुसं वएज्जा, नेवन्नेहि मुसं वायावेज्जा,
मुस वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावझीवाए तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिवक्कमामि निन्दामि
गरिहामि श्रप्पाणं वोसिरामि । दोच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्टिओ
मि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण ॥२॥

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण ।
सव्वं भन्ते ! अदिन्नादाण पच्चवखामि, से गासे वा नयरे वा
रणे वा, श्रप्पं वा बहुं वा ग्रणुं वा थूलं वा चित्तमत्त वा
अचित्तमत्तं वा । नेव सयं अदिन्नं गिष्ठेज्जा, नेवन्नेहि अदिन्नं
गिष्ठावेज्जा, अदिन्नं गिष्ठन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-
झीवाए तिविहं तिवेहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न
कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडि-
वक्कमामि निन्दामि गरिहामि श्रप्पाण वोसिरामि । तच्चे भन्ते !
महव्वए उवट्टिओ मि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥३॥

अहावरे चउत्थे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण । सव्वं
भन्ते ! मेहुणं पच्चवखामि से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिख-
जोणियं वा नेव सय मेहुणं सेवेज्जा, नेवन्नेहि मेहुणं सेवावेज्जा

मेहुणं सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्ञीवाए तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि
गरिहामि श्रष्टाण वोसिरामि । चउत्थे भन्ते ! महब्बए उवट्ठिओ
मि, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण ॥४॥

अहावरे पंचमे भन्ते ! महब्बए परिगग्हाओ वेरमण ।
सव्वं भन्ते ! परिगग्हं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं
वा थूलं वा चित्तमतं वा अचित्तमतं वा । नेव सयं परिगग्हं
परिगिणहेज्ञा, नेवन्नेहि परिगग्हं परिगिणहावेज्ञा, परिगग्हं
परिगिणहन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि
गरिहामि श्रष्टाण वोसिरामि । पचमे भन्ते ! महब्बए उवट्ठिओ
मि, सव्वाओ परिगग्हाओ वेरमण ॥५॥

अहावरे छट्ठे भन्ते ! वए राइभोयणाओवेरमणं । सव्व भन्ते !
राइभोयण पच्चक्खामि से असणं वा पाण वा खाइम वा
साइमं वा । नेव सय राइं भु जेज्ञा, नेवन्नेहि राइ भुजावेज्ञा
राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएण । न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि
गरिहामि श्रष्टाण वोसिरामि । छट्ठे भन्ते ! वए उवट्ठिओ मि,
सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमण ॥६॥

इच्चेयाइं पच महब्बयाइ राइभोयणवेरमणछट्ठाइ अत्त
हियट्ठाए उवसंपज्जित्ताण विहरामि ॥६॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजय-विरय-पडिह्यपच्च-
क्खायपावकम्मे दिश्चा वा राश्रो वा एगश्रो वा परिसागश्रो
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढर्बि वा भिर्ति वा सिल वा
लेलु वा ससरक्ख वा काय ससरक्ख वा वत्थ हत्थेण वा
पाएण वा कट्टेण वा किञ्चित्तेण^१ वा अगुलियाए वा सलागाए
वा, सलागहत्थेण वा न आलिहेज्ञा न विलिहेज्ञा न घट्टेज्ञा न
भिन्देज्ञा, अन्न नालिहावेज्ञा न विलिहावेज्ञा न घट्टावेज्ञा न
भिन्दावेज्ञा, अन्न आलिहन्त वा विलिहन्त वा घट्टन्त वा
भिन्दन्त वा न समणुजाणामि जावज्ञीवाए तिविह तिविहेण
मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्त पि अन्न
न समणुजाणामि । तस्स भन्ते । पडिङ्कमामि निन्दामि गरिहामि
अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजय-विरय-पडिह्य-पच्चक्खा-
यपावकम्मे दिश्चा वा राश्रो वा एगश्रो वा परिसागश्रो वा सुत्ते
वा जागरमाणे वा, से उदग वा ओसं वा हिमं वा महियं वा
करग वा हरतणुग वा सुद्धोदग वा उदउल्लं वा काय उद-
उल्ल वा वत्थ, ससिणिद्धं वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ, नामु-
सेज्ञा न सफुसेज्ञा न प्रावीलेज्ञा न पवीलेज्ञा न अव्खो-
डेज्ञा न पव्खोडेज्ञा न आयावेज्ञा न पथावेज्ञा, अन्न नामु-
सावेज्ञा न सफुसावेज्ञा न आवीलावेज्ञा न पवीलावेज्ञा न
अव्खोडावेज्ञा न पव्खोडावेज्ञा न आयावेज्ञा न पथावेज्ञा,
अन्न आमुसन्त वा संफुसन्त वा आवंलन्त वा पवीलन्त वा
अव्खोडन्त वा पव्खोडन्त वा आयावन्त वा पथावन्त वा न
समणुजाणामि, जावज्ञीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण
न करेमि न कारवेमि करन्त पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स
भन्ते । पडिङ्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥८॥

१ किञ्चित्तेण ।

से भिक्खूं वा भिक्खुणीं वा सजय-विरय-पडिह्यपच्च-
क्खायपावकम्मे दिश्रा वा राश्रो वा एगश्रो वा परिसागश्रो वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अर्गणि वा इङ्गाल वा, मुम्मुर वा
अर्चिच वा जाल वा अलाय वा सुद्धार्गणि वा उक्क वा । न उजेज्जा
न घट्टेज्ञा न भिदेज्ञा न उज्जालेज्ञा न पज्जालेज्ञा न निव्वावेज्ञा ।
अन्न न उजावेज्ञा न घट्टावेज्ञा न भिदावेज्ञा न उज्जालावेज्ञा न
पज्जालावेज्ञा न निव्वावेज्जा, अन्न उजत वा घट्ट त वा भिदत
वा उज्जालत वा पज्जालत वा निव्वावत वा न समणुजाणामि
जावज्जीवाए तिविहेण मणेण वायाए काएण । न करेमि न
कारवेमि करेत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्क-
मामि निवामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥६॥

से भिक्खूं वा भिक्खुणीं वा सजय-विरय-पडिह्यपञ्च-
क्खायपावकम्मे दिश्रा वा, राश्रो वा, एगश्रो वा, परिसागश्रो
वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहृयणेण वा,
तालियटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण
वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा चेलकण्णेण वा,
हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा काय बाहिर वा वि पोगलं
न फूमेज्ञा', न वीएज्ञा अन्न न फूमावेज्ञा, न वीआवेज्ञा, अन्न
फूमन्तं वा वीयन्त वा न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करेत
पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥१०॥

से भिक्खूं वा, भिक्खुणीं वा, सजयविरयपडिह्यपच्च-
क्खायपावकम्मे दिश्रा वा राश्रो वा एगश्रो वा परिसागश्रो

वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से बोएसु वा बीयपइहुसु वा रुहेसु
 वा रुहपइहुसु वा, जाएसु वा, जायपइहुसु वा, हरिएनु वा
 हरियपइहुसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइहुसु वा, सचित्तेसु वा,
 सचित्तकोलपडिनिस्सएनु वा, न गच्छेज्ञा न चिह्नेज्ञा, न निसी-
 एज्ञा न तुयहुज्ञा, अन्न न गच्छावेज्ञा न चिह्नावेज्ञा न निसी-
 यावेज्ञा न तुयद्वावेज्ञा, अन्न गच्छन्त वा चिह्नंत वा निसीयन्तं
 वा तुयहुन्तं वा न समरुजारामि जावज्ञीवाए तिविहं तिवि-
 हेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं
 न समरुजारामि, तस्त भन्ते । पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
 अप्पाणं वोसिरामि ॥ ११ ॥

से भिक्खु वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्च-
 क्खायपावकम्भे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा
 सुत्ते वा जागरमाणे वा, से कीडं वा पयंगं वा कुन्धुं वा पिवी-
 लियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा वाहुंसि वा ऊर्हंसि वा उद-
 रंसि वा सीससि वा वत्थसि वा पडिगहंसि वा कवलगंसि वा
 गाथं पुँछणंसि वा रथहरणंसि वा, गोच्छगंसि वा, उडुगंसि वा
 दण्डगंसि वा. पीडगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्ञंसि वा संयार-
 गंसि वा अन्तर्यरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजया-
 मेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्ञिय पमज्ञिय एगन्तमवरेज्ञा नो
 णं संघायमावज्जेज्ञा ॥ १२ ॥

अजयं चरमाणो उं, पाणभूयाइं हिसइ ।

बन्धइ पावयं कम्भं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥

अजय चिह्नमाणो उ, पाणभूयाइं हिसइ ।

बन्धइ पावयं कम्भं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आसमाणो उ, पाणभूया इहसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्म, त से होइ कडुयं फलं ॥३॥
 अजय सयमाणो उ, पाणभूयाइ हिसइ ।
 बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कडुयं फलं ॥४॥
 अजयं भुञ्जमाणो उ, पाणभूयाइ हिसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्म, त से होइ कडुय फल ॥५॥
 अजयं भासमाणो उ, पाणभूयाइ हिसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्म, तं से होइ कडुयं फल ॥६॥
 कहं चरे ? कह चिट्ठे ? कहमासे ? कह सए ?
 कहं भुंजंतो भासतो, पाव कम्म न बन्धइ ? ॥७॥
 जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए ।
 जयं भुञ्जन्तो भासन्तो, पाव कम्मं न बन्धइ ॥८॥
 सब्बभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ ।
 पिहियासवस्स दन्तस्स, पावं कम्म न बन्धइ ॥९॥
 पढमं नाणं तओ दया, एव चिट्ठइ सब्बसजए ।
 अन्नाणी किं काही किं, वा नाहिहै छेयपावगै ॥१०॥
 सोच्चा जाणइ कल्लाण, सोच्चा जाणइ पावग ।
 उभय पि जाणइ सोच्चा, ज छेय त समायरे ॥११॥
 जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणइ ।
 जीवाजीवे अयाणन्तो, कहं सो नाहीइ सजम ॥१२॥
 जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ ।
 जीवाजीवे वियाणन्तो, सो हु नाहीइ सजमं ॥१३॥
 जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ ।
 तथा गईं बहुविह, सब्बजीवाण जाणइ ॥१४॥

जया गइ बहुविहं, सच्चजीवाण जाणइ ।
 तया पुण्णं च पावं च, वन्धं मोक्खं च जाणइ ॥१५॥
 जया पुण्णं च पावं च, वन्धं मोक्खं च जाणइ ।
 तया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वेजे य माणुसे ॥१६॥
 जया निव्विन्दए भोए, जे दिव्वेजे य माणुसे ।
 तया चयइ संजोगं, सर्वभतरवाहिर ॥१७॥
 जया चयइ संजोगं, सर्वभतरवाहिरं ।
 तया मुण्डे भवित्ताणं, पच्चयइ अणगारियं ॥१८॥
 जया मुण्डे भवित्ताण, पच्चयइ अणगारिय ।
 तया संवरमुक्कटु, धम्म फासे अणुत्तर ॥१९॥
 जया संवरमुक्कटुं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।
 तया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥
 जया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड ।
 तया सच्चत्तग नाण, दसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥
 जया सच्चत्तगं नाप, दसणं चाभिगच्छइ ।
 तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
 जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
 तया जोगे निरुमित्ता, सेलेसि पडिवज्ञइ ॥२३॥
 जया जोगे निरुमित्ता, सेलेसि पडिवज्ञइ ।
 तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धि गच्छइ नीरओ ॥२४॥
 जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धि गच्छइ नीरओ ।
 तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
 सुहसायगस्स समणस्स,
 सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
 उच्छ्वोलणापहोअस्स,
 डुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइखन्तिसंजमरयस्स ।
 परीसहे जिणंतस्स, सुखहा सुगड तारिसगस्स ॥२७॥
 पच्छा वि ते पथाया, खिप्पं
 गच्छन्ति अमरभवणाइ ।
 जेसि पिओ तवो संजमो
 य खन्ती य बम्भचेर च ॥२८॥
 इच्छेयं छङ्गीवणियं, सम्मद्विटी सया जए ।
 दुल्लहं लहितु सामण्ण, कम्मुणा न विराहिङ्गासि ॥२९॥
 ॥ त्ति वेसि ॥
 चउत्थ छङ्गीवणिय अजभयण समत्त

पिडेसणा नामं पंचममजभयणं, पढमो उद्देस्तओ
 संपत्ते भिक्खकालस्मि, असंभन्तो अमुच्छओ ।
 इसेण कमजोगेण, भत्तपाण गवेसए ॥१॥
 से गामे वा नयरे वा, गोयरगगओ मुणी ।
 चरे मन्दमणुविग्नो, अच्चकित्तेण चेयसा ॥२॥
 पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
 वज्ञन्तो बीयहरियाए, पाणे य दगमद्वियं ॥३॥
 श्रोवायं विसम खाणुं, विज्ञलं परिवज्ञए ।
 संकमेण न गच्छेज्ञा, विज्ञमाणे परकमे ॥४॥
 पवडन्ते व से तत्थ, पवखलन्ते व सजए ।
 हिसेज्ञ पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे ॥५॥
 तम्हा तेण न गच्छेज्ञा, संजए सुसमाहिए ।
 सइ अन्नेण मगोण, जयमेव परकमे ॥६॥

इङ्गाल छारिय रासि, तुसरासि च गोमयं ।
 ससरक्खेहिं पाएहिं, सजओ तं न इकमे ॥७॥
 न चरेज्ज वासे वासन्ते, महियाए व पडंतिए ।
 महावाए व वायते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥८॥
 न चरेज्ज वेसासामन्ते, बंभचेरवसाणुए' ।
 बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तथ विसोत्तिया ॥९॥
 अणायणे' चरतस्स, संसग्गीए अभिव्यक्तिं ।
 होज्ज वयाण पीला, सामण्णन्मि य ससओ ॥१०॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवज्जूरा ।
 वज्जए वेससामन्तं मुणी एगतमस्सिए ॥११॥
 साणं सूझय गावि, दित्त गोण हय गय ।
 संडिबभं कलहं जुळ्ह, दूरओ परिवज्जए ॥१२॥
 अणुन्नए नावणए, अप्पहिंदे अणाउले ।
 इंदियाइं जहाभागं, दस्यइत्ता मुणी चरे ॥१३॥
 दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाशो य गोयरे ।
 हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुल उज्जावयं सया ॥१४॥
 आलोय थिगलं दार, सर्न्ध दगभवणाणि य ।
 चरतो न विनिजभकाए, संकटुण विवज्जए ॥१५॥
 रन्नो गिहवईणं च, रहस्सारकिखयाणे' य ।
 संकिलेसकर ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥१६॥
 पडिकटुकुल न पविसे, मामग परिवज्जए ।
 अचियत्तकुलं न पविसे, चियत्त पविसे कुलं ॥१७॥
 साणीपावारपिहिय, अप्पणा नावपंगुरे ।
 कवाडं नो पणोल्लेज्जा, ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥
 गोयरगपविद्वृ उँ, वज्जमुतं न धांरए ।
 श्रोगासं फासुय नज्जा, अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥

१. वसाणए । २. अणाययणे । ३. याणि । ४. अ ।

नीयदुवारं तमसं, कोट्टुग परिवज्ञए ।
 अचक्षुविसओ जत्थ, पाणा दुष्पडिलेहगा ॥२०॥
 जत्थ पुष्पाइं बीयाइं, विष्पइण्णाइं कोट्टुए ।
 अहुणोवलित्तं उल्ल, दहूण परिवज्ञए ॥२१॥
 एलगं दारगं साणं, वच्छगं वाकि कोट्टुए ।
 उल्लधिया न पविसे, विडहित्ताण व संजए ॥२२॥
 अससत्त पलोएज्ञा, नाइङ्गरावलोयए ।
 उप्फुलं न विनिजभाए, नियट्टुज्ज अयंपिरो ॥२३॥
 अइभूमि न गच्छेज्ञा, गोयरगगओ भुणी ।
 कुलस्स भूमि जाणित्ता, मियं भूमि परक्कमे ॥२४॥
 तत्थेव पडिलेहिज्ञा, भूमिभागं वियक्खणे ।
 सिणाणस्स य वज्ञस्स, संलोग परिवज्ञए ॥२५॥
 दगमद्वियआयणे, बीयाणि हरियाणि य ।
 परिवज्ञन्तो चिट्ठेज्ञा, सच्चिन्दियसमाहिए ॥२६॥
 तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाणभोयण ।
 अकप्पियं न गेहिज्ञा, पडिगाहेज्ज कप्पिय ॥२७॥
 आहरन्ती सिया तत्थ, परिसाडेज्ज भोयण ।
 दिन्तिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥
 संमहामाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
 असजमकर्ि नच्चा, तारिस परिवज्ञए ॥२९॥
 साहद्दु निक्खिवित्ताण, सचित्तं घट्टियाणि य ।
 तहेव समणद्वाए, उदग संपणोलिलया ॥३०॥
 ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाणभोयणं ।
 दिन्तियं पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥
 पुरेकम्मेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा ।
 दिन्तियं पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥३२॥

एवं उदउल्ले ससिणिद्वे, ससरखे मट्टियाऊसे ।
 हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला अजणे लोणे ॥३३॥
 गेरुयवण्णियसेडिय, सोरटुयपिंडकुकुसकए य ।
 उविकहुमससठु, ससठु चेव बोद्धव्वे ॥३४॥
 अससठुण हत्तेण, दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, पच्छाकम्मजाहि भवे ॥३५॥
 ससठुण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाण पडिच्छेज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥३६॥
 दोणह तु भू जमाणाण, दो वि तत्थ निमत्तए ।
 दिज्जमाण न इच्छेज्जा, छन्द से पडिलेहए ॥३७॥
 दोणह तु भू जमाणाण, एगो तत्थ निमत्तए ।
 दिज्जमाण पडिच्छेज्जा, ज तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
 गुच्छिणीए उवन्नत्थ, विविह पाणभोयण ।
 भू जमाण विवज्जेज्जा, भूत्तसेस पडिच्छए ॥३९॥
 सिया य समणद्वाए, गुच्छिणी कालमासिणी ।
 उट्टिया वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुण्ड्रद्वए ॥४०॥
 त भवे भत्तपाण तु सज्याण अकप्पिय ।
 दितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥४१॥
 थणग पिज्जमाणी य, दारग वा कुमारिय ।
 त निखविअ रोअत, आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
 त भवे भत्तपाण तु, सज्याण अकप्पिय ।
 दितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
 ज भवे भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्मि सकियं ।
 दितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
 दगवारएण पिहिय, नीसाए पीढएण वा ।
 लोहेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ ॥४५॥

त च उच्चिभदिग्ना दिज्जा, समणद्वाए व दावए ।
 दितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥४६॥
 असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा, दाणद्वा पगड इम ॥४७॥
 तारिस भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिय ।
 दितियं पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥४८॥
 असण पाणगं वा वि, खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुणद्वा पगड इम ॥४९॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय ।
 दितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥५०॥
 असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमद्वा पगड इम ॥५१॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय ।
 दितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥५२॥
 असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणद्वा पगड इम ॥५३॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय ।
 दितिय पडियाइखे न मे कप्पइ तारिस ॥५४॥
 उद्देसिय कीयगड, पूङ्कम्म च आहड ।
 अजभोयरपामिच्च, मीसजाय च वज्जए ॥५५॥
 उगगम से श पुच्छेज्जा, कस्सद्वा केण वा कड ।
 सोऽन्ना निस्सकिय सुद्ध, पडिगाहेज्ज सज्जए ॥५६॥

असणं पाणग वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 पुष्केसु होङ्ग उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
 तं भवे भत्तपाण तु, सजयाण श्रकप्पिय ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥५८॥
 असण पाणग वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 उदगंभि होङ्ग निकिखत्त, उर्त्तगपणगेसु वा ॥५९॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण श्रकप्पिय ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥६०॥
 असण पाणग वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 अगणिम्मि^१ होङ्ग निकिखत्त, त च सघट्टिया दए ॥६१॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण श्रकप्पिय ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥६२॥
 एव उस्सक्किया ओस्सक्किया,
 उज्जालिया पञ्जालिया निव्वाविया ।
 उर्स्सचिया निर्स्सचिया,
 उच्चत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण श्रकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥
 होङ्ग कटु सिल वा वि, इट्टाल वा वि एगया ।
 ठवियं सकमट्टाए, त च होङ्ग चलाचल ॥६५॥
 न तेण भिक्खू गच्छेह्ना, दिट्टो तत्य असंजमो ।
 गम्भीरं भुसिरं चेव, सर्वविद्यसमाहिए ॥६६॥

१ तेजम्मि ।

निस्सेर्ण फलग पांड, उस्सवित्ताणमार्हहे ।
 मंचकीलं च पासायं, समणद्वाए व दावए ॥६७॥
 दुरुहमाणी पवज्ज्ञा, हृथं पायं व लूसए ।
 पुढविजीवे वि हिसेज्ञा, जे य त निस्सया जगा^१ ॥६८॥
 एयारिसे महादोसे, जाणऊण महेसिणो ।
 तम्हा मालोहड भिक्ख, न पडिगेहति संजया ॥६९॥
 कंदं मूलं पलंबं वा, आम छिन्नं व सन्निर ।
 तुबाग सिंगवेरं च, आमग परिवज्ञाए ॥७०॥
 तहेव सत्तुचुण्णाइ, कोलचुण्णाइ आवणे ।
 सकुर्लिं फाणिय पूय, श्रन्न वा वि तहाविह ॥७१॥
 विक्षायमाण पसढ, रएण परिफासिय ।
 दितियं पडियाइव्वेहे, न मे कप्पइ तारिस ॥७२॥
 बहु-अद्विय पोगल, अणिमिस वा बहुकटय ।
 अतिथय तिदुयं बिल्ल, उच्छुखड च सिर्वर्लि ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए, बहुउज्जिभयधम्मिए ।
 दितिय पडियाइव्वेहे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
 तहेबुच्चावयं पाण, अदुवा वारधोप्रणं ।
 ससेइम चाउलोदग, अहुणाधोअ विवज्ञाए ॥७५॥
 ज जाणेज्ञ चिराधोयं, मईए दसणेण वा ।
 पडियुच्छुर्लण सोज्ञा वा, जं च निस्संकिय भवे ॥७६॥
 अजीवं परिणय नज्ञा, पडिगाहेज्ञ सजए ।
 अह सकिय भवेज्ञा, आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥

थोवमासायणहुए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।
 मा मे अच्चर्वबिलं पूइ, नाल तण्ह-विणित्तए ॥७८॥
 त च अच्चबिल पूइ, नाल तण्ह विणित्तए ।
 द्वितिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥७९॥
 तं च होझ अकामेण, विमणेण पडिच्छय ।
 त अप्पणा न पिबे, तो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया ।
 जय परिद्वेष्टा, परिद्वप्प पडिक्कमे ॥८१॥
 सिया य गोयरगगगओ इच्छेझा परिभोत्तुओ^१ ।
 कोटुग, भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुय ॥८२॥
 अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नमिम्म सवुडे ।
 हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजिझ सजए ॥८३॥
 तत्थ से भुजमाणस्स, अद्विय कण्टओ सिया ।
 तणकहुसक्कर वा वि, अन्न वा वि तहाविहं ॥८४॥
 तं उक्खिवित्तु न निकिखवे, आसएण न छहुए ।
 हत्थेण तं गहेझण, एगंतमवक्कमे ॥८५॥
 एगंतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया ।
 जयं परिद्वेष्टा, परिद्वप्प पडिक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खु इच्छेझा, सेझमागम्म भोत्तुओ ।
 सर्पिडपायमागम्म, उंडुयं पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥

आभोएत्ताण नीसेसं, अहयारं जहक्कमं ।
 गमणागमणे चेव, भत्तपाणे य संजए ॥६८॥
 उज्जुप्पन्नो अणुविवग्गो, अववक्षिलत्तेण चेयसा ।
 आलोए गुख्सगासे, ज जहा गहियं भवे ॥६९॥
 न सम्ममालोइयं होझा, पुर्विं पच्छा व ज कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्टो चितए इमं ॥६१॥
 अहो जिणेहिडसावझा, वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥६२॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंथवं ।
 सज्ञाय पट्टवित्ताण, वोसमेझ खणं मुणी ॥६३॥
 चीसमतो इम चित्ते, हियमट्ट लाभमट्टओ^१ ।
 जइ मे अणुग्रह कुझा, साहू होझामि तारिओ ॥६४॥
 साहूवो तो चियत्तेण, निमतेझ जहक्कम ।
 जइ तत्य केह इच्छेझा, तेहिं सर्द्धि तु भु जए ॥६५॥
 अह कोइ न इच्छेझा, तओ भुंजेझ एक्कओ ।
 आलोए भायणे साहू, जयं अपरिसाडिय ॥६६॥
 तित्तग व कडुय व कसायं,
 अबिलं व भहुरं लवणं वा ।
 एयलछमन्नदृपउत्तं,
 महुघयं व भुजेझ संजए ॥६७॥
 अरस विरसं वा वि, सूझयं वा असूझयं ।
 उल्ल वा जइ वा सुकं, मंथुकुम्मासभोयणं ॥६८॥

१ मस्सओ ।

उप्पन्तं नाइहीलेज्ञा, अप्पं वा द्वहु-फासुयं । . .
 मुहालद्वं मुहाजीवी, भुंजिज्ञा दोसवज्जियं ॥६६॥ ।
 दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
 मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छन्ति सुगड़ ॥१००॥
 ॥ ति वेमि ॥

॥ पञ्चमज्जभयणस्स पिडेसणाए पढमुद्देसओ समत्तो ॥



॥ पञ्चममज्जभयणं, बीओ उद्देसओ ॥
 पडिगगहं सलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए ।
 दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुजे न छहुए ॥१॥
 सेज्ञा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे ।
 अयावयद्वा' भोज्ञा णं, जइ तेण न सथरे ॥२॥
 तओ कारणमुप्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्वउत्तेण, इसेणं उत्तरेण य ॥३॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कसे ।
 अकालं च विवज्ञित्ता, काले कालं समायरे ॥४॥
 अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥५॥
 सइ काले चरे भिक्खू, कुज्ञा पुरिसकारियं ।
 अलाभो त्ति न सोएज्ञा, तवो त्ति अहियासए ॥६॥
 १ आयावयद्वा ।

तहेवृज्ञावया पाणा, भत्तट्टाए समागया ।
 तं उज्जुय न गच्छृज्ञा, जयमेव परक्षमे ॥७॥
 गोपरगगपविद्वो उ, न निसीएङ्ग कत्थइ ।
 कहं च न पबधेज्ञा, चिंडित्ता ण व संजए ॥८॥
 अगल फलिह दार, कवाड वा वि सजए ।
 अवलबिया न चिंडेज्ञा, गोयरगगओ मूणी ॥९॥
 समण माहण वा वि, किविण वा वणीमग ।
 उवसकमतं भत्तट्टा, पाणट्टाए व सजए ॥१०॥
 त अइक्कमित्तु न पविसे, न चिंडे चवङ्गगोयरे ।
 एगतमवङ्गमित्ता, तत्थ चिंडेज्ञ सजए ॥११॥
 वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तियं सिया होज्ञा, लहुत्त पवयणस्स वा ॥१२॥
 पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तस्मि नियत्तिए ।
 उवसंकमेज्ञ भत्तट्टा, पाणट्टाए व सजए ॥१३॥
 उप्पलं पउम वा वि, कुमुय वा मगदत्तिय ।
 अन्नं वा पुफसचित्त, त च सलुचिया दए ॥१४॥
 तं भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय ।
 दित्तिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥१५॥
 उप्पलं पउम वा वि, कुमुय वा मगदत्तिय ।
 अन्नं वा पुफसचित्त, त च संमद्दिया दए ॥१६॥
 तं भवे भत्तपाण 'तु, संजयाण अकप्पिय ।
 दित्तिय पडियाइखे, न मे कप्पइ तारिस ॥१७॥

सालुय वा विरालियं, कुमुयं उप्पलनालियं ।
 मुणालियं सासवनालियं, उच्छुखुडं श्रनिवृडं ॥१८॥
 तरुणं वा पवालं, रुखस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्ञए ॥१९॥
 तरुणियं वा छिवार्डि, आमियं भज्ञियं सइं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुस्त्सिन्नं, वेलुय कासवनालियं ।
 तिलपट्पडगं नीमं, आमगं परिवज्ञए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिटुं, वियडं वा तत्तनिवृड़ ।
 तिलपिटुपूइपिण्णाग, आमग परिवज्ञए ॥२२॥
 कविठु मार्डिलंग च, मूलगं सूलगत्तिय ।
 आम असत्थपरिणय, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमथूणि, बीयमंथूणि जाणिया ।
 विहेलग वियाल च, आमगं परिवज्ञए ॥२४॥
 समुद्याण द्वे भिक्षू, कुलं उच्चावय सया ।
 नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसडं नाभिधारए ॥२५॥
 अदीणो नित्तिमेसेज्ञा, न विसीएज्ञ पडिए ।
 अमुच्छिओ भोयणम्म, मायन्ने एसणारए ॥२६॥
 बहुं परघरे अत्थ, विविह खाइमसाहमं ।
 न तत्थ पडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ञ परो न वा ॥२७॥
 सयणासणवत्थं वा, भत्तपाणं व संजए ।
 अर्दितस्स न कुप्पेज्ञा, पञ्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥ .

१ मणस्सिन्न । २ तत्तनिवृडं ।

इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महत्त्वग ।
वदमाण न जाएङ्गा, नो य ण फरूस वए ॥२६॥

जे न वदे न से कुप्ये, वदिश्चो न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुच्छुइ ॥३०॥

सिया एगइश्चो लद्धु, लोभेण विणिगूहइ ।
मा भेय दाहय सत, दद्धूण सयमायए ॥३१॥

अतद्वागुरुश्चो लुद्धो, बहुं पाव पकुव्वइ ।
दुत्तोसश्चो य से होइ, निव्वाण च न गच्छइ ॥३२॥

सिया एगइश्चो लद्धु, विविह पाणभोयण ।
भद्धग भद्धग भोज्ञा, विवण विरसमाहरे ॥३३॥

जाणतु ता इसे समणा, आययट्टी अय मुणो ।
सतुद्धो सेवए पत, लूहवित्ती सुतोसश्चो ॥३४॥

पूयणट्टा जसोकामी, माणसंमाणकासए ।
बहुं पसवइ पाव, मायासल्ल च कुव्वइ ॥३५॥

सुर वा भेरग वा वि, अन्न वा मन्नुगं रसं ।
ससक्ख न पिबे भिक्खु, जस सारक्खमप्पणो ॥३६॥

पियए एगश्चो तेणो, न मे कोइ वियाणइ ।
तस्स पस्सह दोसाइं, निर्यड्च च सुणेह मे ॥३७॥

बहुइ सोडिया तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाणं, सयय च असाह्या ॥३८॥

निच्चुविग्गो जहा तेणो, अत्तकम्सेहि दुम्सई ।
तारिसो भरणंते वि, नाराहैइ संवरं ॥३९॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं गरहति, जेण जाणति तारिसं ॥४०॥
 एवं तु अगुणप्येही, गुणाणं च विवज्ञश्रो ।
 तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ सवरं ॥४१॥
 तवं कुब्बइ मेहावी, पणीय वज्ञए रस ।
 मज्जप्पमायविरश्रो, तवस्सी अङ्गुष्ठकसो ॥४२॥
 तस्स पस्सह कल्लाण, अणेगसाहूपूदय ।
 विउल अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्स सुणेह मे ॥४३॥
 एवं तु गुणप्येही^१, अगुणाण च विवज्ञश्रो ।
 तारिसो मरणंते वि, आराहेइ सवर ॥४४॥
 आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं पूयन्ति, जे ण जाणति तारिस ॥४५॥
 तवतेणे वइतेणे^२, रूवतेणे य जे नरे ।
 आयारभावतेणे य, कुब्बइ देवकिब्बिसं ॥४६॥
 लद्धूण वि देवतं, उववन्नो देवकिब्बिसे ।
 तत्थावि से न याणाइ, कि मे किच्चा इमं फल ॥४७॥
 तत्तो वि से चइत्ताणं, लविभही एलमूग्रय ।
 नरय तिरिक्खजोँगि वा, बोही ज्यथ सुदुल्लहा ॥४८॥
 एयं च दोसं दद्धूण, नायपुत्तेण भासिय ।
 अणुमाय पि मेहावी, मायामोसं विवज्ञए ॥४९॥
 सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहि,
 सज्याण बुद्धाण सगासे ।

^१ स गुण० । ^२ वयतेणे ।

तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइदिए,
 तिव्वलज्जगुणवं विहरेज्ञासि ॥५०॥
 ॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ पचमज्जभयणस्स पिंडेसणाए वीओ उद्देसओ समत्तो ॥



महल्लियायार कहा (धम्मत्थकाम) नामं छट्ठमज्जभयणं

नाणदसणसपन्नं, संजमे य तवे रथ ।
 गणिमागमसपन्न, उज्जाणमिम समोसढ ॥१॥
 रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया ।
 पुच्छन्ति निहयप्पाणो, कह मे आयारगोयरो ॥२॥
 तैसि सो निहुओ दन्तो, सच्चभूयसुहावहो ।
 सिखाए सुसमाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणो ॥३॥
 हंदि धम्मत्थकामाण, निगथाण सुणेह मे ।
 आयारगोयरं भीमं, सपल दुरहिंद्वियं ॥४॥
 नन्त्य एरिस, वुत्तं, जं लोए परमदुच्चर ।
 विउलहुणभाइस्स, न भूय न भविस्सइ ॥५॥
 सखुहुगवियत्ताण वाहियाण च जे गुणा ।
 अखंडफुडिया कायब्बा, तं सुणेह जहा तहा ॥६॥
 दस अट्ट य ठाणाइ, जाइं वालोइवरज्जमह ।
 तत्थ अण्णयरे ठाणे, निगन्थत्ताओ भस्सइ ॥७॥
 वयछक्क कायछक्क, अकप्पो गिहिभायण ।
 पलियझ्निसेज्ञा य, सिणाण सोभवज्ञणं ॥८॥

तत्त्विमं पढमं ठाणं, महावीरेण देतियं ।
 अर्हिता निउणा द्विद्वा, सब्बभूएमु संजमो ॥६॥
 जावंति लोए पाणा तसा अद्वव थावरा ।
 ते जाणमज्जण वा, न हणे नो व घायए ॥७॥
 सब्बजीवा वि इच्छ्वंति, जीवित न मरिज्जित ।
 तम्हा पाणदहं घोरं, निगथा वज्ज्यांति ण ॥८॥
 अप्पणह्वा परह्वा वा, कोहा वा जह्व वा भया ।
 हितग न मुत्त दूया, नो वि अन्नं वयावए ॥९॥
 मुसावाओ य लोगंसि, सब्बत्ताहूहि गरहिओ ।
 अविस्त्तासो य मूयाणं, तम्हा नोसं विवज्जए ॥१०॥
 चित्तमत्तमचित्त वा, अप्पं वा जह्व वा बहुं ।
 दंतसोहणमेत्त पि, ओगाहसि अजाइया ॥११॥
 तं अप्पणा न गेणहति, नो वि गिर्हावए परं ।
 अन्नं वा गिर्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥१२॥
 अबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्यं ।
 नायरंति मुणी लोए, भेयायथणवज्जिणो ॥१३॥
 मूलमेयमहम्मस्त, महादोससमुस्सयं ।
 तम्हा मेहुणतंसनं, निन्नया वज्ज्यति ण ॥१४॥
 विडम्भुजेइमं लोण, तेलं सर्पिप च काणियं ।
 न ते सन्त्विहिसिच्छंति, नायपुत्तवओरया ॥१५॥
 लोहम्सेस अणुप्पात्तो, मन्ते अन्नयरामवि ।
 जे तिया सन्त्विकामे गिही, पव्वइए न से ॥१६॥

ज पि वत्थ व पाय वा, कबल पायपुच्छण ।
 त पि सजमलज्जटा, धारति परिहरति य ॥२०॥
 न सो परिगगहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
 मुच्छा परिगगहो वुत्तो, इइ वुत्त महेसिणा ॥२१॥
 सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, सरक्खणपरिगहे ।
 अवि अप्पणो चि देहसि, नायरति ममाइय ॥२२॥
 अहो निच्चं तवोकम्म, सव्वबुद्धेहि वण्णय ।
 जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्त च भोयण ॥२३॥
 संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।
 जाइं राओ अपासतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥
 उदउल्ल बीयसंसत्त, पाणा निवडिया महि ।
 दिआ ताइ विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कह चरे ॥२५॥
 एय च दोसं दट्टूण, नायपुत्तेण भासिय ।
 सव्वाहार न भु जति, निगथा राइभोयण ॥२६॥
 पुढविकायं न हिसति, मणसा वयस कायसा ।
 तिविहेण कण्णजोएण, संजया सुसमाहिया ॥२७॥
 पुढविकाय विहिसतो, हिसइ उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे, चक्कुसे य अचक्कुसे ॥२८॥
 तम्हा एय वियाणिता, दोस दुग्गइवड्डण ।
 पुढविकायसमारभ, जावज्जीवाए बज्जए ॥२९॥
 आउकाय न हिसति, मणसा वयसाकायसा ।
 तिविहेण करण जोएण, सजया सुसमाहिया ॥३०॥

आउकायं विहसतो हिसइ उ तयस्तिए ।
तसे य विविहे पाणे. चक्षुसे य श्रचक्षुसे ॥३४॥

तस्मा एयं वियाणिता, दोसं दुरगङ्गवङ्गणं ।
आउकायसमारभ, जावज्ञीवाए वज्ञए ॥३२॥

जायतेयं न इच्छन्ति, पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्त्यरं सत्थ, सव्वओ वि दुरासयं ॥३३॥

पाइणं पडिणं वा वि, उड्ड अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि य ॥३४॥
भूयाणमेहमाधाओ, हव्वकाहो न ससओ ।
तं पईवपयावट्टा, संजया किंचि नारभे ॥३५॥

तस्मा एयं वियाणिता दोसं दुरगङ्गवङ्गणं ।
तेउकायसमारभं, जावज्ञीवाए वज्ञए ॥३६॥

अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्तति तारिस ।
सावज्ञवङ्गलं चेयं, नेयं ताईहि सेविय ॥३७॥
तालियटेण पत्तेण, साहाविहुयणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छति, वीयावेऊण वा परं ॥३८॥

जं पि वत्थ व पाय वा, कंवल पायपुँछणं ।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरति य ॥३९॥

तस्मा एयं वियाणिता, दोसं दुरगङ्गवङ्गणं ।
आउकायसमारभं, जावज्ञीवाए वज्ञए ॥४०॥

वणस्सइं न हिसति, मणसा वयसाकायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४१॥

वणस्सइ विहिसतो, हिसइ उ तयस्सए । ,
 तसे य विविहे पाणे, चकखुसे य अचकखुसे ॥४२॥

तम्हा एय वियाणिता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वणस्सइ समारभ, जावज्ञीवाए वज्जए ॥४३॥

तसकाय न हिसति, मणसा वयसाकायसा ।
 तिविहेण करणजोएण, सजया सुसमाहिया ॥४४॥

तम्हा एय विहिसतो, हिसइ उ तयस्सए ।
 तसे य विविहे पाणे, चकखुसे य अचकखुसे ॥४५॥

तम्हा एय वियाणिता, दोस दुग्गइवड्ढण ।
 तसकायसमारभ, जावज्ञीवाए वज्जए ॥४६॥

जाइं चत्तारिऽभोज्जाइ, इसिणाहारमाइण ।
 ताइ तु विवज्जन्तो, संजमं ग्रणुपालए ॥४७॥

पिंडं सेज्जं च वत्थ च, चउत्थं पायमेव य ।
 श्रकट्पियं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कपिय ॥४८॥

जे नियागं ममायति, कीयमुहैसियाहडं ।
 वहं ते समणुजाणति, इइ वुतं महेसिणा ॥४९॥

तम्हा असणपाणाइं, कीयमुहैसियाहड ।
 वज्जयंति ठियप्पाणो, निगगथा धम्मजीविणो ॥५०॥

कसेसु कसपाएसु, कु डमोएसु वा पुणो ।
 भुंजंतो असणपाणाइ, आयरा परिभस्सइ ॥५१॥

सीओदगसमारंभे, मत्तधोयणद्वङ्गणो ।
 जाइ छंणति भूयाइ, दिहो तत्थ असजमो ॥५२॥

पञ्चाकम्भ पुरेकम्भ, सिया तत्थ न कप्पइ ।

एयमद्दुं न भुंजति, निगथा गिहिभायणे ॥५३॥

आसदीपलियकेसु, भचमासालएसु वा ।

अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥

नासदीपलियकेसु, न निसेज्ञा न पीढए ।

निगंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिंदुगा ॥५५॥

गभोरविजया एए, पाणा दृष्टिलेहगा ।

आसदीपलियको य एयमद्दुं विवज्जिया ॥५६॥

गोयरगपविद्वस्स, निसेज्ञा जस्स कप्पइ ।

इमेरित्समणायारं, आवज्ञइ अबोहियं ॥५७॥

विवत्ती बभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।

वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिण ॥५८॥

श्रगुती बंभचेरस्स, इत्थीओ वा वि सकण ।

कुसीलवड्ढण ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥

तिण्हमन्नयरागस्स, निसेज्ञा जस्स कप्पइ ।

जराए अभिभूयस्स, वाहियस्स तवस्तिसणो ॥६०॥

वाहिओ वा प्ररोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए ।

बुक्कतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥६१॥

संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलुगासु य ।

जे उ भिक्खु सिणायतो, वियडेणुप्पलावए ॥६२॥

तम्हा ते न सिणायति, सीएण उसिणेण वा ।

जावज्ञीब वय घोर, असिणाणमहिंदुगा ॥६३॥

सिणाणं अदुवा कवक, लोद्वं पउमगाणि य ।
 गायस्सुच्वदृणद्वाए, नायरति कयाइ वि ॥६४॥
 नगिणस्स वा वि मुङ्डस्स, दीहरोमनहसिणो ।
 मेहुणा उवसंतस्स, कि विभूसाए कारिय ॥६५॥
 विभूसावत्तिय भिक्खू, कम्म बन्धइ चिक्कणं ।
 ससारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुतरे ॥६६॥
 विभूसावत्तियं चेय, बुद्धा मन्ति तारिस ।
 सावज्ञबहुल चेय, नेय ताईहि सेविय ॥६७॥
 खर्वेति अप्याणमसोहदसिणो ।
 तवे रया सजमश्ज्ञवे गुणे ।
 ब्रुणति पावाइ पुरेकडाइ ।
 नवाइ पावाइ न ते करेति ॥६८॥
 सअ्रोवसता अममा अकिचणा
 सविज्ञविज्ञाणुगया जससिणो ।
 उउप्पसन्ने विमले व चदिमा
 सिँद्ध विमाणाइ उवेति ताइणो ॥६९॥ ति बेमि ॥
 ॥ छट्ठ महिलियायारकहज्मयण समत ॥

ववकसुद्धी नामं सत्तममज्जभयणं
 चउण्ह खलु भासाण परिसखाय पण्णव ।
 दोण्ह तु विणय सिवखे, दो न भासेज्ज सव्वसो ॥१॥
 जाय सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
 जाय बुद्धेहिणाइणा, न त भासेज्ज पन्नव ॥२॥

असच्चमोस सच्च च, अणवज्जमकक्ष।
 समुप्पेहमसदिद्धं, गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥३॥
 एय च अहमन्न वा, जं तु नामेइ सासयं ।
 स भासं सच्चमोस पि, त पि धीरो विवज्जए ॥४॥
 वितहं पि तहामुर्ति, ज गिर भासए नरो ।
 तम्हा सो दृढो पावेण, कि पुण जो मुस वए ॥५॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
 अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा ण करिस्सइ ॥६॥
 एवमाइ उ जा भासा, एस्सकालम्मि संकिया ।
 संपद्याईयम्हु वा, त पि धीरो विवज्जए ॥७॥
 अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जमहुं तु न जाणेज्जा, एवमेय ति नो वए ॥८॥
 अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जत्थ सका भवे त तु, एवमेयं ति नो वए ॥९॥
 अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
 निस्सकिय भवे ज तु, एवमेयं ति निहिसे ॥१०॥
 तहेव फर्सा भासा, गुरुभूओवधाइणी ।
 सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काण काणे त्ति, पडग पंडगे त्ति वा ।
 वाहियं वा वि रोगि त्ति, तेण चोरे त्ति नो वए ॥१२॥
 एएणन्नेण अद्वेण, परो जेणुवहम्मइ ।
 आयारभावदोसन्नू, न त भासेज्ज पन्नव ॥१३॥

तहेव होले गोले त्ति, साणे वा वसुले त्ति य ।
 दमए दूहए वा वि, नै त भासेज्ज पन्नव ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि, अस्मो माउसिए त्ति य ।
 पिउसिए भाइणेज्ज त्ति, धुए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥

 हले हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वसुले त्ति, इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 नामधेज्जेण ण बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१६॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि, बप्पो चूल्लपिउ त्ति य ।
 माउला भाइणेज्ज त्ति, पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

 हे हो हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिय गोमिय ।
 होल गोल वसुले त्ति, पुरिस नेवमालवे ॥१९॥
 नामधेज्जेण ण बूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥
 पर्चिदियाण पाणाण, एस इत्थी अथ पुम ।
 जाव ण न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥

 तहेव माणुस पसु, पर्किख वा वि सरीसव ।
 थूले पमेइले वज्झे, पायमिति य नो वए ॥२२॥

 परिवूढत्ति ण बूया, बूया उवचिए त्ति य ।
 सजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥

 तहेव गाओ दोज्जाओ, दम्मा गोरहग त्ति य ।
 वाहिमा रहजोगत्ति, नेव भासेज्ज पन्नव ॥२४॥

जुवं गवे ति ण बूया, घेणु रसदयति य ।
 रहस्तो सहृत्ताए वा वि, वए तांदहणे ति य ॥२५॥
 तहेव गतुमुज्जाण, पद्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥
 शल पासायत्तभाण, तोरणाण गिहोण य ।
 फलिहगलतावाण, श्वल उदगदोणिण ॥२७॥
 पीढए चगवेरे य, नगले मङ्गवं सिया ।
 जन्तव्यहुटी व नाभी वा, गडिया वा अल सिया ॥२८॥
 ग्रातण सधण जाण, होज्जा वा किञ्चुक्तस्त्तए ।
 भूमोवघाईण भास, नेव भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥
 तहेव गतुमुज्जाण, पद्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥
 जाइमता इसे रुक्खा, दीहव्यहुटा महात्या ।
 पद्यायत्तता विडिमा, वए दर्त्सणिति य ॥३१॥
 तहा फलाइ पद्काइ, पायत्तज्जाइ नो वए ।
 वेलोइयाइ टालाइ, वेहिमाइ ति नो वए ॥३२॥
 असथडा^१ इसे श्रबा, बहुनिव्वडिमा^२ फला ।
 वएज्ज बहुसंभूया, भूयल्लवति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोत्तहीओ पद्काओ, नीलियाओ छ्ववी इय ।
 लाइमा भञ्जिमाओ त्ति, पिहुखज्जति नो वए ॥३४॥
 रुडा बहुसभूया, यिरा ऊसडा वि य ।
 गद्विमाओ पस्याओ, ससाराओ त्ति आलवे ॥३५॥

१. असंघडा २. निव्वडिमा ।

तहेव सखांडि नच्चा, किच्च कज्ज ति नो वए ।
तेणग वा वि वज्ञे त्ति, सुतित्ये त्ति य आवगा ॥३६॥

सखांडि सखांडि बूया, पणियटुत्ति तेणग ।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाण वियागरे ॥३७॥

तहा नईओ पुणाश्चो, कायतिज्जत्ति नो वए ।
नावाहि तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्जत्ति नो वए ॥३८॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
बहुवित्थडोदगा यावि, एव भासेज्ज पन्नव ॥३९॥

तहेव सावज्ज जोगं, परस्तटुए निट्ठिय ।
कीरमाण ति वा नच्चा, सावज्ज नालवे मुणी ॥४०॥

सुकडे त्ति सुपवक्के त्ति, सुच्छन्ने सुहडे मडे ।
सुनिट्ठिए सुलट्टे त्ति सावज्ज वज्जए मुणी ॥४१॥

पथत्तपककत्ति व पक्कमालवे,
पथत्तछिननत्ति व छिन्नमालवे ।
पथत्तलटुत्ति व कम्महेउय,
पहारगाढत्ति व गाढमालवे ॥४२॥

सव्वुक्कस परग्य वा, अउलं नत्य एरिस ।
अच्चिक्कयभवत्तवं, अचियत्त चेव नो वए ॥४३॥

सव्वमेय वद्दसामि, सव्वमेय ति नो वए ।
अणुवीइ सव्व सव्वत्य, एव भासेज्ज पन्नव ॥४४॥
सुक्कीय वा सुविक्कीय, अकिज्ज किज्जमेव वा ।
इम गेणह इम मुञ्च, पणिय नो वियागरे ॥४५॥

अप्परघे वा महरघे वा, कए वा विदकए वि वा ।
पणियहुे समुपन्ने, अणवज्ज वियागरे ॥४६॥

तहेवासजय धीरो, आस एहि करेहि वा ।
सय चिटु वथाहि त्ति, नेव भासेज्ज पन्नव ॥४७॥

बहवे इसे असाहू, लोए बुच्चति साहुणो ।
न लवे असाहुं नाहु त्ति, साहुं साहुति आलवे ॥४८॥

नाणदसणसंपन्नं, संजमे य तवे रय ।
एव गुणसमाउत्तं, संजयं साहुभालवे ॥४९॥

देवाण मणुयाण च, तिरियाणं च बुगहे ।
अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥

वाओ वुहुं व सीउण्ह खेम धायं सिवं ति वा ।
कया णु होझा एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व शहं व माणव,
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
संमुच्छिए उन्नए या पओए,

वएज्ज वा वुटु बलाहय त्ति ॥५२॥

अन्तलिक्ख त्ति ण बूया, गुजभाणुचरिय त्ति य ।
रिद्धिमंतं नर दिस्स, रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावस्त्रणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवधाइणी ।

से कोहु लोहा भय हास माणवो,
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

^१ कोहलोहमयसाव माणवो ।

। सुवक्कसुद्धि समुपेहिया मुणी,
 गिर च दुहुं परिवज्जए सथा ।
 मिय अदुट्ट अणुवीइ भासए,
 सायाण मज्जे लहइ पससण ॥५५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया,
 तीसे य दुट्टे परिवज्जए सथा ।
 । छसु सजए सामणिए सथा जए,
 बएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमिय ॥५६॥
 परिषखभासो सुसमाहिइदिए,
 चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
 । सनिद्धुणे धुन्नमल^१ पुरेकड,
 आराहए लोगमिण तहा पर ॥५७॥ । त्ति बेमि^२ ॥
 ॥ सत्तम वक्सुद्धी अञ्जभयण समत्त ॥

आयारपणिहिनाम अदुममज्जयण

आयारपणिहिं लद्धु, जहा कायव्व भिक्खुणा ।
 त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुर्वि सूष्णेह मे ॥१॥
 पुढवि-दग-अगणि-मारुप^२-तणरुक्ख-सबीयगा ।
 तसा य पाणा जीव त्ति, इह वुत्त महेसिणा ॥२॥
 तेसि अच्छणजोएण, निच्च होयव्वय सिया ।
 मणसा कायवक्केण, एव भवइ सजए ॥३॥
 पुढवि भिंत्ति सिलं लेलु नेव भिन्दे न संलिहे ।
 तिविहेण करणजोएण, सजए सुसमाहिए ॥४॥

सुद्धपुढवीए न निमोए, ससरक्तवम्म य आसणे ।
 पमज्जित्तु निसीएझा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥५॥

सीओदगं न सेवेझा, सिलावुहुं हिमाणि य ।
 उसिणोदग तत्तफासुयं, पडिगाहेझ संजए ॥६॥

उदउल्ल अप्पणो कायं, नेव पुच्छे न सलिहे ।
 समुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी ॥७॥

इंगालं श्रगर्णि अर्च्च, अलायं वा सजोइयं ।
 न उंजेझा न घट्टेझा, नो णं निव्वावए मुणी ॥८॥

तालियटेण पत्तेण, साहाए विहुणेण वा ।
 न वीएझ अप्पणो कायं, बाहिर वा वि पोग्गल ॥९॥

तणस्क्ख न छिदेझा, फल मूलं व कस्सइ ।
 श्रामग विविहं बीय, मणसा वि न पत्थए ॥१०॥

गहणेसु न चिट्ठेझा, बीएसु हरिएसु वा ।
 उदगमि तहा निच्च, उत्तिंगपणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिसेझा, वाया अदुव कम्मुणा ।
 उवरओ सच्चभूएसु, पासेझ विविह जग ॥१२॥

अदु सुहुमाइ पेहाए, जाइं जाणित्तु सजए ।
 दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥

कयराइ अदु सुहुमाइं ? जाइ पुच्छेझ संजए ।
 इमाइ ताइ मेहादो, श्राइक्खेझ वियक्खणे ॥१४॥

सिणेहं पुष्पसुहुमं च, पाणुत्तिग तहेव य ।
 पणग बीयहरिय च, अडसुहुम च अट्टम ॥१५॥

एवमेयाणि जाणित्ता, सब्बभावेण सजए ।
 अप्पमत्ते जए निच्च, सर्विवदियसमाहिए ॥१६॥
 धुव च पडिलेहेज्ञा, जोगसा पायकम्बल ।
 सेज्ञमुच्चारसौमि च, सथार अदुवासण ॥१७॥
 उच्चार पासवण, खेल सिंधाणजल्लिय ।
 फासुय पडिलेहिता, परिद्वावेज्ज सजए ॥१८॥
 पविसित्तु परागार, पाणहुा भोयणस्स वा ।
 जयं चिढु मिय भासे, न य रुवेसु मणं करे ॥१९॥
 बहुं सुणेइ कण्ठेहिं, बहुं अच्छीर्हिं पेच्छइ ।
 न य दिढु सुय सब्ब, भिक्खू श्रक्खाउमरिहइ ॥२०॥
 सुय वा जइ वा दिढुं, न लवेज्ञोवघाइय ।
 न य केण उवाएण, गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
 निढुणं रसनिज्जूढ, भद्रग पावग ति वा ।
 पुढो वा वि श्रपुढो वा, लाभालाभ न निद्विसे ॥२२॥
 न य भोयणम्मि गिढो, चरे उछ श्रयपिरो ।
 अफासुयं न भुजेज्ञा, कीयमुहेसियाहड ॥२३॥
 सन्निर्हं च न कुवेज्ञा, श्रणुमाय पि सजए ।
 भुहाजीवी असवढे, हवेज्ञा जगनिस्सए ॥२४॥
 लूहवित्ती सुसंतुडे, अप्पिच्छे सुहरे सिधा ।
 श्रासुरत्त न गच्छेज्ञा, सोच्चाण जिणसासण ॥२५॥
 कण्ठसोक्खेहिं सद्वेहिं, पेमं नाभिनिवेसए ।
 दारुणं कक्षकस फास, काएण श्रहियासए ॥२६॥
 खुहं पिवास दुसेज्ज, सीउण्ह श्ररई भय ।
 श्रहियासे अब्बहिओ, देहदुक्खं महाफल ॥२७॥

अत्थंगयमि आइच्चे, पुरत्था य प्रणुग्गाए ।
 आहारमाइय सब्ब, मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अतितिणे अच्चवले, अप्पभासी मियासणे ।
 हवेज्ञ उयरे दन्ते, थोवं लद्ध न खिसए ॥२९॥
 न बाहिर परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
 सुयलामे न मज्जेज्ञा, जच्चा तवस्तिस्तुद्धिए ॥३०॥
 से जाणं त्रजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पय ।
 संवरे खिष्पमप्पाणं, बीय त न समायरे ॥३१॥
 अणायारं परककम्म, नेव गूहे न निण्हवे ।
 सुई सथा वियडभावे, अससत्ते जिइदिए ॥३२॥
 अमोहं वयणं कुज्ञा, आयरियस्स महप्पणो ।
 तं परिगिजभ वायाए, कम्मुणा उदवायए ॥३३॥
 अधुवं जीवियं नच्चा, सिद्धिमग्ग वियाणिया ।
 विणियद्वेज्ञ भोगेसु, आउ परिमियमप्पणो ॥३४॥
 बलं थाम च येहाए, सद्धमारोग्गमप्पणो ।
 सेत्त कालं च विन्नाय, तहप्पाण न जुंजए ॥३५॥
 जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्डइ ।
 जाविदिया न हायति, ताव घम्मं समायरे ॥३६॥
 कोहं माणं च मायं च, लोभ च पाववड्डणं ।
 वसे चत्तारि दोसे उ, इच्छतो हियमप्पणो ॥३७॥
 कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
 माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सब्बविणासणो ॥३८॥
 उवसमेण हणे कोह, माण महवया जिणे ।
 माय चञ्चूवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिगहीया,
माया य लोभो य पवङ्गमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिचति सूलाइपुणदभवस्स ॥४०॥

राइणिएसु विणय पउजे,
धुवसील सययं न यावझ्जा ।
कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो,
परखकमेझा तवसजमम्मि ॥४१॥

निहं च न बहु मन्नेझा, सप्पहास विवझ्जए ।
मिहो कहाहि न रमे, सज्भायम्मि रओ सया ॥४२॥
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे शणलसो धुव ।
जुत्तो य समणधम्मम्मि, अहुं लहइ शणुत्तर ॥४३॥
इहलोगपारत्तहिय, जेण गच्छइ सोगइ ।
बहुसुय पज्जुवासेझा, पुच्छेझत्यविणिच्छयं ॥४४॥
हत्थं पायं च काय च, पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥
न पक्खश्रो न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठुओ ।
न य ऊरु समासेझा, चिट्ठेझा गुरुणन्तिए ॥४६॥

अपुच्छश्रो न भासेझा, भासमाणस्स अन्तरा ।
पिट्ठुमंसं न खाएझा, मायामोस विवझ्जए ॥४७॥
अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेझा वा परो ।
सब्बसो तं न भासेझा, भास अहियगामिण ॥४८॥

दिं हि यं असंदिं, पडिषुण वियं जियं ।
 अथपिरमणूच्चिग्नं, भासं नितिर अत्तव ॥४६॥
 आयारपन्तिधरं, विद्विवायमहिज्ञगं ।
 वायविवेत्तिय नज्ञा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥
 नक्खत्त सुमिण जोगं, निमित्तं मन्त्रभेसजं ।
 गिहिणो तं न आइक्षे. मूयाहिगरणं पयं ॥५१॥
 अन्नहु पगड लयणं, भेङ्गा सयणासणं ।
 उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थीपसुविवज्ञियं ॥५२॥
 विवित्ता य भवे सेज्ञा, नारीण न लवे कहं ।
 गिहिसथव न कुज्ञा, कुज्ञा साहूहि संथव ॥५३॥
 जहा कुक्कुडपोयस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
 एवं खु बभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ॥५४॥
 चित्तभित्त न निज्ञाए, नारि वा सुअलंकियं ।
 भक्खरं पिव दट्ठूण, दिं हि पडिसमाहरे ॥५५॥
 हत्यपायपडिच्छन्नं, कण्णनासविकपियं ।
 अवि वाससइं नारि, बंभयारी विवज्ञाए ॥५६॥
 विभूता इत्थिससग्गो, पणीयरसभोयणं ।
 नरस्तत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥५७॥
 अंगपच्चंगसंठाणं, चार्खलवियपेहियं ।
 इत्थीण त न निज्ञाए, कामरागविवडुणं ॥५८॥
 विसएसु मणुन्लेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
 अणिच्च तेसि विन्नाय, परिणामं पोग्गलाण य ॥५९॥
 पोग्गलाण परिमाण, तेत्ति नच्चा जहा तहा ।
 विणीयतण्हो विहरे, सीईभूएण च्रप्पणा ॥६०॥

जाए सद्वाए निक्खतो, परियायद्वाणमुत्तम ।
तमेव श्रणुपालेज्ञा, गुणे आयरियसम्मए ॥६१॥

तवं चिम सजमजोगयं च,
सजभायजोग च सथा अहिद्वाए ।
सूरे व सेणाए समत्तमाउहे,
अलमपणो होइ अल परेस ॥६२॥
सजभायसजभाणरयस्स ताइणो,
अपावभावस्स तवेरयस्स ।
विसुजभई ज से' मल पुरेकड,
समीरियं रूपमलं व जोइणा ॥६३॥

से तारिसे दुक्खसहे जिह्वादिए,
सुएण जुत्ते अमसे अकिञ्चणे ।
विरायई कम्मधणमिम अवगाए,
कसिणबभपुडावगमे व चन्दिमे ॥६४॥ त्ति बेमि ॥
॥ श्रद्धम शायारपणिही अज्ञयण समत्त ॥

विणयसमाही नामं णवममज्ञयण—पढमो उद्देसश्रो
थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणय न सिक्खे ।
सो चेव ऊतस्स अभूद्भावो,
फल व कीयस्स वहाय होइ ॥१॥

जे यावि मन्दिति गुरुं विहृत्ता,
 डहरे इसे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
 हीलंति मिच्छं पडिवज्ञमाणा,
 करंति आसायण ते गुरुण ॥२॥

पगईए भन्दा वि भवंति एगे,
 डहरा नि य जे सुयबुद्धोवदेया ।
 आयारमता गुणसुद्धियप्पा,
 जे हीलिया सिहिरिव भास कुञ्जा ॥३॥

जे यावि नागं डहरं ति नच्चा,
 आसायए से अहियाय होइ ।
 एवायरियं पि हु हीलयंतो,
 नियच्छइ जाइपहं खु भन्दे ॥४॥

आसीविसो यावि परं सुरुद्धो,
 किं जीवनासाउ परं नु कुञ्जा ।
 आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
 श्रवोहिन्नासायण नत्य मोक्षो ॥५॥

जो पावग जलियमवज्ञमेज्ञा,
 आसीविस वा वि हु कोवएज्ञा ।
 जो वा विस खायइ जीवियट्टो,
 एसोवमाऽऽसायणया गुरुणं ॥६॥

सिया हु से पावय नो डहेज्ञा,
 आसीविसो वा कुविओ न भक्षे ।
 सिया विसं हालहलं न मारे,
 न यावि मोक्षो गुरुहीलणाए ॥७॥

जो पव्वय सिरसा भेत्तुमिच्छे,
 सुतं व सीह पडिबोहएज्जा ।
 जो वा दृष्टि सत्तिअग्गे पहारं,
 एसोवमाऽऽसायणया गुरुणं ॥८॥

 सिया हुं सीसेण गिरि पि भिदे,
 सिया हु सीहो कुविग्रो न भक्खे ।
 सिया न भिदेज्ज व सत्तिअग्ग,
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥९॥

 आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
 अबोहिआसायण नत्यि मोक्खो ।
 तम्हा अणाबाहसुहाभिक्खो,
 गुरुण्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

 जहाहियग्गी जलण नमसे,
 नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
 एवायरियं उच्चिद्धुएज्जा,
 अणतनाणोवगश्रोवि सतो ॥११॥

 जससतिएवम्पयाइ सिक्खे,
 तस्सतिए वेणइय पउजे ।
 सक्कारए सिरसा पजलीओ,
 कायगिरा भो मणसा य निच्चं ॥१२॥

 लज्जा-दया-संज्ञम-बभचेर,
 कल्लाणभागिस्स विसोहिठाण ।
 जे मे गुरु सययमणुसासयति,
 ते ह गुरु सयय पूययामि ॥१३॥

जहा निसते तवणज्जिमाली,
 पभासइ केवलभारह तु ।
 एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए,
 विरायर्द्दि सुरमज्ज्ञे व इदो ॥१४॥
 जहा ससी कोमुझोगजुत्तो,
 नकखत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
 खे सोहइ विमले श्रद्धभमुक्के,
 एव गणी सोहइ भिक्खुमज्ज्ञे ॥१५॥
 महागरा आयरिया महेसी,
 समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए ।
 सपाविउकामे श्रणुत्तराइ,
 आराहए तोसए धम्मकामी ॥१६॥
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइ,
 सुस्सूसए आयरियडप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे,
 सो पावर्द्दि सिद्धिमणुत्तर ॥१७॥ त्ति बेमि ॥
 ॥ णवमश्रज्जयणस्स विणयसमाहीए पढमो उद्देसओ समन्तो ॥

णवममज्जयण—बीओ उद्देसओ

मूलाओ खधप्पभवो दुमस्स,
 खंधाउ पच्छाँ समुर्वेति साहा ।
 साहप्पसाहा विरुहति पत्ता,
 तओ से पुण्क च फल रसो य ॥१॥

एव धन्मस्त विणश्चो, मूल परमो से भोक्षो ।
जेण किर्ति सुय सिगघ, निस्सेस चाभिगच्छइ ॥१॥

जे य चडे भिए थद्वे, दुव्वाई नियडी सहे ।
बुज्जहइ से अविणीयप्पा, कटु सोयगयं जहा ॥२॥

विणय पि जो उवाएण, चोहश्चो कुप्पइ नरो ।
दिव्व सो सिरिमेज्जर्न्ति, दडेण पडिसेहए ॥३॥

तहेव अविणीयप्पा उववज्ञा हया गया ।
दीसंति दुहमेहता, अभियोगमुवढिया ॥४॥

तहेव सुविणीयण्ण, उववज्ञा हया गया ।
दीसंति सुहमेहता, इँडु पत्ता महायसा ॥५॥

तहेव अविणीयप्पा, लोगसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिदिया' ॥६॥

दंडसत्थपरिजुणा, असब्बवयणेहि य ।
कलुणा विवन्नच्छदा, खुप्पिवासाइपरिगया ॥७॥

तहेव सुविणीयप्पा, लोगसि नरनारिओ ।
दीसंति सुहमेहता, इँडु पत्ता महायसा ॥८॥

तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्जहा ।
दीसंति दुहमेहता, आभियोगमुवढिया ॥९॥

तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्जहा ।
दीसंति सुहमेहता, इँडु पत्ता महायसा ॥१०॥

जे श्रायरियउवज्ञायाण, सुस्सासावयणंकरा ।
तेर्सि सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा ॥११॥

तेर्सि सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा ॥१२॥

अप्पणद्वा परद्वा वा, सिष्पा नेउणियणि य ।
 गिहिणो उवभोगद्वा, इहलोगस्स कारणा ॥१३॥
 जेण वंधं वहं घोरं, परियाव च दारणं ।
 सिक्खमाण नियच्छ्रंति, जुत्ता ते ललिङ्दिया ॥१४॥
 ले वि तं गुरं पूर्यंति, तस्स सिष्पस्स कारणा ।
 सङ्कारंति णसंसन्ति, तुद्वा निह्देसवत्तिणो ॥१५॥
 कि पृण जे सुयगाही, अणन्तहियकामए ।
 आयरिया जं वाए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥
 नीयं सेज्जं गइ ठाणं, नीयं च आसणाणि य ।
 नीयं च पाए वंदेज्जर, नीयं कुञ्जा य अंजलि ॥१७॥
 संघट्टित्ता काएणं, तहा उवहिणामवि ।
 खमेह अवरहं मे, वएज्ज न पुणो ति य ॥१८॥
 दुग्गओ वा पन्नोएणं, चोइओ वहइ रहं ।
 एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वृत्तो वृत्तो पकुच्चइ ॥१९॥
 आलवते लवते वा, न निसेज्जरए पडिस्सुणे ।
 मोत्तूणं आत्तणं धीरो, तृस्तूसाए पडिस्सुणे ॥२०॥
 कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेझहि ।
 तेहि तेहि उवार्हेहि, तं तं संपडिवायए ॥२१॥
 विवत्ती अविणीयस्त्, संपत्ती विणियस्त् य ।
 जस्तेयं दुहओ नार्थं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥२२॥
 जे यावि चण्डे मझद्धिगारवे,
 पिसुणे नरे साहत हीणपेसणे ।
 अदिटु वस्मे विणए अकोविए,
 असंविभागो न हु तस्स मोक्षो ॥२३॥

णिद्वेसवत्ती पुण जे गुरुणं,
सुयत्थधम्भा विणयमि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं,
खवित्तु कम्म गइमुत्तम गथा ॥२४॥ त्ति बेमि ॥

॥ णवमभज्ञभयणस्स विणयसमाहीए विइशो उद्देसगो समत्तो ॥

णवमभज्ञभयणं, तइओ उद्देसओ
आयरियभगिमिवाहियगो,
सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्ञा ।
आलोइयं हंगियमेव नच्चा,
जो छन्दमाराहयई स पुङ्गो ॥१॥
आयारमटु विणयं पउंजे,
सुस्सूसमाणो परिगिज्ञ वक्कं ।
जहोवइटुं श्रभिकखमाणो,
गुहं तु नासायर्यई स पुङ्गो ॥२॥
राइणिएसु विणयं पउजे,
डहरा विय जे परियाय जिटुा ।
नीयत्तणे वट्टइ सञ्चवाई,
ओवायव वक्करे स पुङ्गो ॥३॥
अन्नायउछं चरई विसुद्ध,
जवणटुया समुयाण च निच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्ञा,
लद्धं न विकत्थयई स पुङ्गो ॥४॥
संथारसेज्ञासणभत्तपाणे,

जो एवमप्याणभितोसएङ्गा,
 सतोसपाहन्नरए स पुङ्गो ॥५॥
 सङ्का सहेज आसाइ कंटया,
 अओमया उच्छ्वया नरेण ।
 अजासए जो उ सहेज कंटए,
 वईमए कण्णसरे सपुङ्गो ॥६॥
 मुहुत्तदुखा उ हवंति कंटया,
 अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
 वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि,
 वेराणुबंधीणि महवभयाणि ॥७॥
 समावयंता वयणाभिघाया,
 कण्णं गया दुम्मणियं जणंति ।
 धम्मो त्ति किञ्चा परमगग्सरे,
 जिइदिए जो सहई स पुङ्गो ॥८॥
 अवण्णवायं च परंमुहस्स,
 पच्चक्खओ पडिणीय च भासं ।
 ओहारिण अव्यियकारिण च,
 भास न भासेन्न सया स पुङ्गो ॥९॥
 अलोलुए अक्कुहए असाई,
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
 नो भावए नो वि य भावियप्पा,
 अकोउहल्ले य सया स पुङ्गो ॥१०॥
 गुणेहि साहू अगुणेहिःसाहू
 गिणहाहि साहूगुण मुच्चडसाहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पएण,
 जो रागदोसेहि समो स पुङ्गो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लग वा,
 इत्थी पुम पव्वइय गिहिं वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएङ्गा,
 थभं च कोह च चए स पुज्ञो ॥१२॥
 जे माणिया सयय माणयति,
 जत्तेण कन्न व निवेसयति ।
 ते माणए माणरिहे तवस्सी,
 जिइदिए सच्चरए स पुज्ञो ॥१३॥
 तेर्स गुरुण गुणसागराण,
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइ ।
 चरे मुणो पंचरए तिगुत्तो,
 चउङ्कसायावगए स पुज्ञो ॥१४॥
 गुरुमिह सयय पडियरिय मुणी,
 जिणवयनिउणे^१ अभिगमकुसले ।
 धुणिय रयमलं^२ पुरेकड,
 भासुरमउलं गइ गए ॥१५॥ ति बेमि ॥
 ॥ णवमश्रजभयणस्स विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

णवममज्जभयणं, चउत्त्यो उद्देसओ

सुयं मे आउसं ! तेण भगवया एवमक्षाय—इह खलु थेरेहिं
 भगवत्तेहिं चत्तारि विणयसमाहिङ्गाणा पण्णत्ता ।
 कयरे खलु ते थेरेहिं भगवत्तेहिं चत्तारि विणयसमाहिङ्गाणा
 पण्णत्ता ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवत्तेहिं चत्तारि विणयसमाहिङ्गाणा
 पण्णत्ता तं ज्ञहा—विणयसमाही, सुयसमाही, तवसमाही, आयार-

समाही ।

विणए सुए तवे य आयारे णिच्च पंडिया ।

अभिरामर्यंति अप्पाण जे भवति जिइदिया ॥१॥

चउच्चिवहा खलु विणयसमाही भवइ, त जहा—अणुसासि-
ज्जन्तो सुस्सूसइ, सम्म सपडिवज्जुइ, वेयमाराहयइ, न य भवइ
अत्तसपग्गहिए चउत्थ पयं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगोः—

पेहेइ हियाणुसासणं सुस्सूसइ त च पुणो अहिट्टुए ।

न य माणमाएण मज्जुइ वियणसमाही आययट्टुए ॥२॥

चउच्चिवहा खलु सुयसमाही भवइ, त जहा—सुय मे भविस्सइ
ति अजभाइयव्व भवइ, एगगचित्तो भविस्सामि ति अजभाइयव्वं
भवइ, अप्पाण ठावइस्सामि ति अजभाइयव्व भवइ, ठिओ परं
ठावइस्सामि ति अजभाइयव्वं भवइ, चउत्थ पयं भवइ । भवइ य
एत्थ सिलोगोः—

नाणमेगगचित्तो य ठिओ य ठावइ परं ।

सुयाणि य अहिज्जिता रओ सुयसमाहिए ॥३॥

चउच्चिवहा खलु तवसमाही भवइ, तं जहा—नो इहलोग-
ट्टुयाए तवमहिट्टेज्जा, नो परलोगट्टुयाए तवमहिट्टेज्जा, नो किति-
वण्णसद्दिसिलोगट्टुयाए तवमहिट्टेज्जा, नन्नत्य निज्जरट्टुयाए तवमहि-
ट्टेज्जा चउत्थ पयं भवइ । भवइ य एत्थ सलोगोः—

विविहगुणतवोरए य निच्चं,

भवइ निरासए निज्जरट्टुए ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं,

जुत्तो सया तवसमाहिए ॥४॥

चउच्चिवहा खलु आयारसमाही भवइ, त जहा—नो इहलोग-
ट्टुयाए आयारमहिट्टेज्जा, नो परलोगट्टुयाए आयारमहिट्टेज्जा, नो

**कित्तिवण्णसहसिलोगद्याए आयारमहिंदेज्जा, नन्नत्य आरहन्तेहिंहे
हेऊहिं श्रायारमहिंदेज्जा। चउत्त्य पथ भवइ। भवइ य एत्य
सिलोगोः—**

जिणवयणरए अर्तितणे,
पडिषुणाययमाययहि॒ए ।
आयारसमाहिसंत्रुडे
भवइ य इते भावसधए ॥५॥

अभिगम चउरो समाहिश्चो,
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पश्चो ।
विउलहिथ सुहावह पुणो,
कुचवइ सो पयखेमध्यणो ॥६॥

जाइमरणाउ मुच्चचइ,
इत्थथ च चएइ सववसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए,
देवो वा अप्परए महिहि॒ए ॥७॥ त्ति बेमि ॥

। णवम विणयसमाही अर्जभयणं समत्त ॥

सभिकखू नाम दसम अर्जभयणं
निकखममाणाइ श्र बुद्धवयणे,
णिञ्चं चित्तसमाहिश्चो हवेज्ञा ।
इत्थोण वसं न यावि गच्छे,
वत नो पडियायइ जे स भिकखू ॥१॥

पुढिंचि न खणे न खणावए,
सोओदग न पिए न पिवावए ।
अगणिसत्थ जहा सुनिसिय,
त न जले न जलावए जे स भिकखू ॥२॥

अनिलेष न दोए न दीयावए.
 हरियाजि न छिन्दे न छिन्दावए ।
 दीयाजि सया विच्छयन्ते,
 नव्वितं नाहारए जे त भिक्खू ॥३॥
 वहण तक्षयावराणं होइ.
 पुडवीतणकहनिस्तियाणं ।
 तम्हा उहैस्तियं न मृजै,
 नो वि पए न पयावए जे त भिक्खू ॥४॥
 रोइय नायपुत्तवयणे.
 झप्पत्तसे मन्त्रेष्टु छप्पि काए ।
 पञ्च व फाते महन्वयाइ,
 पञ्चासत्तंवरए जे त भिक्खू ॥५॥
 चत्तारि वसे सया कसाए,
 बुबल्गोगी य हवेज्ञ बुहवयणे ।
 अहणे निज्ञायल्वत्यए.
 निहिजों परिवद्धए जे त भिक्खू ॥६॥
 सम्मद्वी सया अमूढः.
 अत्यि हु नाणे तवे संजसे य ।
 तवसा धुणइ पुराणपावर्ग,
 मणवयकायसुसंवृडे जे स भिक्खू ॥७॥
 तहेव अस्तरं पाणनं वा,
 विविहं द्वाइमस्तोइमं लभित्ता ।
 होही शहो जुए परे वा,
 तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणग वा,
 विविह खाइमसाइम लभित्ता ।
 छदिय साहस्मियाण भुंजे,
 भोज्ञा सज्जायरए य जे स भिक्खू ॥६॥
 न य चुगहिय कह कहिज्ञा,
 न य कुप्ये निहुइदिए पसते ।
 सजमधुवजोगजुत्ते,
 उवसते अविहेडए जे स भिक्खू ॥१०॥
 जो सहइ हु गामकण्टए,
 अक्रोसपहारतज्ञाओ य ।
 भयभेरवसद्वप्पहासे,
 समसुहदुखसहे य जे स भिक्खू ॥११॥
 पडिम पडिवज्ञिया मसाणे,
 नो भीयए भयभेरवाहं दिस्स ।
 विविहगुणतवोरए य निज्ञ,
 न सरोरं चाभिकखइ जे स भिक्खू ॥१२॥
 असइ वोसटुचत्तदेहे,
 अक्कुठे व हए व लूसिए वा ।
 पुढिविसमे भुणी हवेज्ञा,
 अनियाणे अकौउहल्ले य जे स भिक्खू ॥१३॥
 अभिभूय काएण परीसहाह,
 समुद्धरे जाइपहाड अप्पय ।
 विइत्तु [जाइमरण महब्य,
 तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

१. संजमे धुव जोगेण जूत्ते ।

हत्थसंजए पायसचए,
 वायसजए सजइदिए ।
 अजभक्षपरए सुसमाहियपा,
 सुत्तथ च वियाणइ जे स भिक्खू ॥१५॥
 उचहिम्म अमुच्छए अगिढ्हे,
 अन्नायउच्छ पुलनिष्पुलाए ।
 कथविककथसन्निहिओ विरए,
 सब्बसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥
 अलोल भिक्खू न रसेसु गिढ्हे,
 उच्छ चरे जीविय नाभिकखी ।
 इँड्हु च सक्कारण पूयण च,
 चए ठियपा आणिहे जे स भिक्खू ॥१७॥
 न परं वएज्ञासि अयं कुसीले,
 जेणन्नो कप्पेज्ञ न त वएज्ञा ।
 जाणिय पत्तेय पुण्णपाव,
 अत्ताण न समुक्से जे स भिक्खू ॥१८॥
 न जाइमत्ते न य रुवमत्ते,
 न लाभमत्ते न सुएण मत्ते ।
 मयाणि सच्चाणि विवज्ञयतो,
 घम्मज्ञभाणरए य जे स भिक्खू ॥१९॥
 पवेयए अज्ञपय महामुणी,
 घम्मे ठिश्रो ठावयइ परं पि ।
 निवखम्म वज्जेज्ञ कुसीलर्लिंगं,
 न यावि हासकुहए जे स भिक्खू ॥२०॥
 तं देहवास असुइ असासयं,
 सया चए निज्ञहियद्वियपा ।

छिदित्तु जाईमरणस्त बधण,
उदेइ भिक्खु अपुणागम गइ ॥२१॥ त्ति वेमि ॥
॥ सभिक्खु अज्ञयण दसम समत्त ॥

अहरइवक्त्रा चूलिया पठमा

इह खलु भो पववझएण उपन्नदुखेण सजमे श्ररइसमा-
वन्निचित्तेण श्रोहणुप्पेहिणा श्रणोहाइएण चेव ह्यरस्तिगय-
कुसपोयपडागामूयाइ इमाइ श्रट्टारस ठाणाइ सम्म सपडिलेहियब्बाइं
भवन्ति । तं जहा—

ह भो दुस्समाए दुप्पजीवी ॥१॥
लहुस्सगा इत्तरिया गिहीण कामभोगा ॥२॥
भुज्जो य साइबहुला मणुत्सा ॥३॥
इम च मे दुक्ख न चिरकालोवट्टाई भविस्सइ ॥४॥
ओमजणपुरक्षारे ॥५॥
वतस्स य पडिआयण ॥६॥
अहरगइवासोवसंपया ॥७॥
दुल्लभे खलु भो ! गिहीण घम्मे गिहिवासमज्जे वसताण ॥८॥
आयके से वहाय होइ ॥९॥
सक्ष्ये से वहाय होइ ॥१०॥
सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥११॥
बधे गिहिवासे मोक्खे परिमाए ॥१२॥
सावज्जे गिहिवासे श्रणवज्जे परियाए ॥१३॥
बहुसाहारणा गिहीण कामभोगा ॥१४॥
पत्तेयं पुण्णपाव ॥१५॥
श्रणिच्छ खलु भो मणुयाण जीविए कुसगगजलर्बिदुचंचले ॥१६॥
बहुं च खलु भो ! पाव कम्मं पगडं ॥१७॥

पावाणं च खलु भो कडाणं कम्माण पुर्विं दुच्छणाणं हृष्प-
डिवकंताणं वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तदसा वा
स्फोसइत्ता । अठारत्समं पय भवइ ॥१८॥ भवइ य एत्थ सिलोगोः—

जया य चयइ धम्म, अणज्ञो भोगकारणा ।

से तथ्य मुच्छिए बाले, आयइ नावबुजभइ ॥१॥

जया श्रोहाविश्रो होइ, इदो वा पडिश्रो छमं ।

सव्वधम्मपरिब्भट्टो स, पच्छा परितप्पइ ॥२॥

जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवदिमो ।

देवया व चुया ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥३॥

जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो ।

राया व रम्मपब्भट्टो, स पच्छा परितप्पइ ॥४॥

जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो ।

सेहुव्व कब्बडे बूडो, स पच्छा परितप्पइ ॥५॥

जया य थेरश्रो होइ समझकंतजोव्वणो ।

मच्छोव्वगलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥६॥

जया य कुकुडबस्स कुतत्तीहि विहम्मइ ।

हत्यो व बघणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥७॥

पुत्तदारपरिकिणो मोहसताणसंतश्रो ।

पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥८॥

अज्ञ याहं गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुश्रो ।

जइहुं रमंतो परियाए सामणे जिणदेसिए ॥९॥

देवलोगसमाणो उ परियाश्रो महेसिण ।

स्याण अर्याणं च महानरयसारित्तो ॥१०॥

अमरोवम जाणिय सौख्यमुत्तम,
रयाण परियाए तहारयाण ।
निरयोवम जाणिय दुखमुत्तम,
रमेज्ञ तम्हा परियाए पडिए ॥११॥

धम्माड भट्ठ सिरिओ अवेय,
जन्नग्यविजभायमिवप्पतेय ।
हीलति ण दुविहिय कुसीला,
दाङ्गुद्धुय घोरविसं व नाग ॥१२॥

इहेवधम्मो अयसो अकित्ती,
दुन्नामधेज्ञ च पिहुज्ञणम्मि ।
चुयस्स धम्माश्रो अहम्मसेविणो,
सभित्तवित्तस्स य हेटुओ गई ॥१३॥

भुजित्त भोगाइ पसज्भ चेयसा,
तहाचिह कट्टु असजम वहु ।
गइ च गच्छे अणभिज्ञस्य दुह,
बोही य से नो सुलभा पुणोपुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरहयस्स जतुणो,
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिश्रोवमं भिज्ञइ सागरोवम,
किमग पुण भज्भ इम मणोदुह ? ॥१५॥

न मे चिर दुखमिण भविस्सइ,
असासया भोगपिवास जतुणो ।
न चे सरीरेण इमेणज्वेस्सइ,
अवेस्सई जीवियपञ्जवेण मे ॥१६॥

जस्तेवस्प्या उ हवेज्ञ निच्छश्रो,
चएज्ञ देहं न उ धम्मसासणं ।
तं तारिसं नो पयलेन्ति इन्दिया,
उविन्तवाया त सुट्सण गिरि ॥१७॥

इच्चेव । संपस्त्य बुद्धिम नरो,
आय उवाय विविहं वियाणिया ।
काएण वाया श्रद्ध माणसेण,
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्विज्ञासि ॥१८॥ त्ति बेमि॥
॥ रइवक्का पढमा चूलिया समता ॥

विवत्त चरिश्चा णासा बीया चूलिया

चूलिय तु पवकखामि सुय केवलिभासिय ।
र्जं सुणित्तु सपुज्ञाण धम्मे उत्पज्ञए मई ॥१॥
अणुसोयपहिए बहुजणन्मि, पडिसोयराढ्ढलखेण ।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेण ॥२॥
अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आसवो सुविहियाण ।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥३॥
तम्हा आयारपरक्कमेण, संवरसमाहिबहुलेण ।
चरिया गुणा य नियमा य, होति साहूण दहुच्च्वा ॥४॥
अणिएयवासो समुयाणचरिया,
अन्नायउच्छं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्ञणा य,
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥५॥

आइण्णओमाणविवज्ञा य,
ओसन्नदिहुहभत्तपाणे ।

संसटुकपेण चरेज्ञ भिक्खू,
तज्ञायससद्व जई जएज्ञा ॥६॥

अमज्ञमंसासि अमच्छ्रीया,
अभिक्खण निविगद्व गया य
अभिक्खणं काउस्सगकारी,
सज्जायजोगे पयश्चो हवेज्ञा ॥७॥

न पङ्गनवेज्ञा सयणासणाइ,
सेज्ज निसेज्ज तह भत्तपाण ।

गामे कुले वा नगरे व देसे,
भमत्तभावं न कहिंचि कुज्ञा ॥८॥

गिहिणो वेयावडिय न कुज्ञा,
अभिवायण वदण पूयणं वा ।

असंकिलिहुहिं सम वसेज्जा,
मुणी चरित्तस्स जश्चो न हाणी ॥९॥

न या लमेज्जा निउणं सहायं,
गुणाहिय वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइं विवज्जयतो,
विहरेज्ञ कामेसु असज्ञमाणो ॥१०॥

सवच्छरं चावि पर पमाण,
बीयं च वासं न तर्हि वसेज्ञा ।

सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ञ भिक्खू,
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले,
 संपेहई अप्पगमप्पएण ।
 किं मे कडं किं च मे किञ्चसेस,
 कि सङ्कणिञ्जं न समायरामि ॥१२॥
 कि मे परो पासइ कि च अप्पा,
 कि चाह् खलिय न विवज्ञयामि ।
 इच्चेव सम्म अणुपासमाणो,
 अणागयं तो पडिबध कुञ्जा ॥१३॥
 जत्थेव पासे कइ दुष्पउत्तं,
 काएण वाया अदु माणसेण ।
 तत्थेव धीरो पडिसाहरेञ्जा,
 प्राईण्णओ खिष्पमिव वखलीण ॥१४॥
 जस्सेरिसा जोग जिइदियस्स,
 धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
 तमाहु लोए पडिदुह्जोवी,
 सो जीवई सजसजीविएण ॥१५॥
 अप्पा खलु समय रकिखयव्वो,
 सर्विवदिएहि सुसमाहिएहि ।
 अरकिखओ जाइपह उवेइ,
 सुरकिखओ सबदुहाण मुच्चइ ॥१६॥त्ति वेमि॥
 ॥ वीया चूलिया समत्ता ॥



＊ स्वाध्याय-माला ＊



श्री सुखविपाक सूत्रम्

(१) तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे णाम णयरे होत्था । रिद्धित्यमियसमिद्धे । गुणसिलए चेहए । सुहम्मे अणगारे समो-सढे । जंबू जाव पञ्जुवासमाणे एव वयासी—जइ णं भते ! सम-णेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण दुहविवागाण अयमडु पण्णते, सुहविवागाण भन्ते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अटु पण्णते ? तए ण से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगार एव वयासी—एव खलु जबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दस अजभयणा पण्णता । त जहा—

सुबाह॑, भद्रनंदी॒ य सुजाए॑ य, सुवासवे॑, तहेव जिणदासे॑ ।
धणवई॑ य महब्बले॑, भद्रनंदी॑ महचन्दे॑ वरदत्ते॑ ॥

जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सुहविवागाण दस अजभयणा पण्णता, पठमस्स णं भन्ते । अजभयणस्स सुहविवागाण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अटु पण्णते ? तए ण से सुहम्मे अणगारे जबू-अणगार एव वयासी—एव खलु जबू ! तेष कालेण, तेण समएण हृत्यसीसे णाम णयरे होत्था, रिद्धित्यमियसमिद्धे । तत्थ ण हृत्यसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्यमे दिसीभाए

एत्थं पुष्पकरडेण णाम उज्जाणे होत्था । सद्वौउयपुष्पफलसमिद्धे, रम्मे, नदणवणप्यगासे, पासाईए ४ । तत्थं णं क्यवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था, दिव्वै० ।

तत्थं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्त् नामं राया होत्था । महया हिमवन्त रायवण्णश्च । तस्स ण अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहै यावि होत्था । तए ण सा धारिणी देवी अन्नया कथाइ तसि तारिसगसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे पासति, जहा मेहजम्मणं तहा भाणियव्व । णवर सुबाहुकुमारे जाव अल भोगसमत्य यावि जाणति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिसगसयाइ करेंति, अब्भुग्यमूसियपहसिए विव भवणं । एव जहा महब्बलस्स रण्णो । णवर पुष्पचूलापामोक्खार्णं पचण्ह रायवरकण्णासयाण एगदिव-सैण पार्णि गेण्हावेन्ति । तहेव पचसइश्चो दाश्रो जाव उर्ध्य पासायवरगते फुट्टमाण जाव विहरति । तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे । परिसा निग्या । अदीणसत्त् जहा कोणिए निग्गए । सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेण निग्गए । जाव धम्मो कहिश्चो । राया परिसा पडिग्या ।

तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवश्चो महावीरस्स अतिए धम्मं सौञ्चा निसम्म हट्टतुडे उट्टाए उट्टेइ, जाव एव वयासी—सद्हामिं ण भन्ते ! निगथ पावयण, जाव जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे राईसरसत्यवाहपभइउ मुडे भवित्ता आगाराश्चो अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा तच्चाएमि मुडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइत्तए । अहुण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ-दुवालसविह-गिहिधम्म पडिवज्ञामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह ।

तेण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवन्नो महावीरस्स
अंतिए पचाणुववयाइ सत्तसिवखावयाइ पडिवज्ज्ञह, पडिवज्ज्ञहता
तमेव रह दुर्लहइ, दुर्लहिता जामेव दिस पाउभूए, तामेव दिस
पडिगए। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवन्नो महा-
वीरस्स जेहु अंतेवासी इदभूई णाम अणगारे जाव एव वयासी—

अहो ण भन्ते ! सुबाहुकुमारे इहु, इट्टरुवे १, कते, कतरुवे २,
पिये, पियरुवे ३, मणुन्ने, मणुन्नरुवे ४, मणामे, मणोमरुवे ५, सोमे
सुभगे, पियदसणे, सुरुवे, बहुजणस्सवि य ण भते ! सुबाहु-
कुमारे इहु, इट्टरुवे ५, सोमे जाव सुरुवे । साहुजणस्सवि य ण
भते ! सुबाहु कुमारे इहु, इट्टरुवे ५, जाव सुरुवे । सुबाहुणा
भते ! कुमारेण इमे एयारुवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा
लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमणागया ? को वा एस
आसी जाव किं नामए वा, किं गोत्तए वा, किं वा दञ्चा, किं वा
भोञ्चा, किं वा समायरिता, कस्स वा तहारुवस्स समणस्स
वा अंतिए एगमवि आयरिय धम्मिय सुवयण सोञ्चा जेण
इमे एयारुवा माणुस्सरिद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमणागया ?

एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण, इहेव जब्ब-
हीवे दीवे, भारहे वासे, हत्थिणाउरे णाम णयरे रिद्धित्थिमिय-
समिद्धे वण्णन्नो । तथ्य ण हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णाम गाहा-
वई परिवसइ, अड्हे, दित्ते जाव श्रपरिभूए । तेण कालेण तेण
समएण धम्मघोसे णाम थेरे जाइसपन्ने जाव पर्वहि समण-
सएहि सद्धि सपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विव चरमाणे, गामाणुगाम
द्वाङ्गमाणे, जेणेव हत्थिणाउरे णयरे, जेणेव सहस्रबवणे
उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरुव उग्गह उरिग-
णहइ, उग्गिणहिता सजमेण तवसा अध्याण भावेमाणे विहरइ ।

तेण कालेण, तेण समएण धस्मघोसाणं थेराण अंतेवासीं
सुदत्ते णामं श्रणगारे उराले जाव तेजलेसे मास मासेण खम-
माणे विहरइ । तए ण सुदत्ते श्रणगारे मासखमणपारणगंसि
घढमाए पोरिसीए सज्जायं करेइ । जहा गोयम तहेव धस्म-
घोसं थेर आपुच्छइ, जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स
गिह श्रणुपविट्ठु । तए ण से सुमुहे गाहावई सुदत्तं श्रणगार एझ-
माणं पासह, पासित्ता हट्टुरुट्टे आसणाऊ अब्भुट्टुइ, अब्भुठित्ता पाय-
पोढाउपच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाउ ओमुयति, ओमुइत्ता एगसाडिय
उत्तरासंग करेइ, करित्ता सुदत्त श्रणगारं सत्तद्वपयाइ श्रणुगच्छइ,
श्रणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पर्याहण करेइ करित्ता बंदइ णम-
सइ, नमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सयहत्येण वित्तलं असण पाण खाइमं साइम पडिलाभिस्साभि
त्ति कट्टु, तुट्टे, पडिलाभेमाणे वि तुट्टे, पडिलाभिए त्ति तुट्टे ।

तए ण तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण,
दायगस्द्धेण, पडिगाहयसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते
श्रणगारे पडिलाभिए समाणे ससारे परित्तीकए, मणुस्साउए
निदद्धे, गिहसि य से इमाइ पंच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ —
तं जहा—वसुहारा वुट्टा १, दसद्धवणे, कुसुमे निवइए
२, चेलुक्खेवे कए ३, आहयाओ देवदुंदुहीओ ४, अतरा वि य ण
आगाससि अहो दाण घुट्टे य ५ । तए ण हत्थिणाउरे णयरे
सिधाडग जाव पहेसु बहुजणो श्रणमणस्स एवमाइखइ ४
धन्नेण देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई जाव त धन्ने ण देवाणु-
प्पिया सुमुहे गाहावई ।

तए ण से सुमुहे गाहावई बहूइ वासाइ आउय पालेइ,
पालित्ता कालमासे कालं किञ्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणस-

तूरणो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पृत्तत्ताए उववणे । तए ण सा धारिणी देवी सयणिज्जसि सुतजागरा ओहीरमाणी २ तहेव सौह पासइ । सेसं त चेव जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ । तं एव खलु गोयमा ! सुबाहुणा कुमारेण इसे एयारुवा सुणुस्सरिद्धी लद्धा, पत्ता, अभिसमणागया । पभू ण भन्ते । ' सुबाहुकुमारे देवाणुपियाण अंतिए मुँडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पववइत्तए ? हंता पभू । तए ण से भगवं गोयमे समणं भगव महावीर वंदइ, णमंसइ, णमसित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए ण से समणे भगव महावीरे अणणया कयाइ हृत्थ-सीसाउ णयराउ पुण्फकरड्याउ उज्ज्वाणाउ कयवणमालप्पयस्स जक्खस्स जक्खायतणाउ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खभित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ । तए ण से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए, अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तए ण से सुबाहुकुमारे अणणया कयाइ चाउदसट्टमुद्दिष्टपुण्यमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाला पमझइ, पमजइत्ता उच्चारपासवण भूमि पडिलेहइ, पडिलेहित्ता दबभसथा-रगं सथरेइ, संथरित्ता दबभसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता अदुमभत्त पगिणहइ, पगिणहित्ता प्रोसहसालाए पोसहिए अदुमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ।

तए णं तस्स सुबाहुस्स, कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले धन्मजागरिय जागरमाणस्स इसे एयारुवे अञ्जभूत्थिए ५ समु-प्पने—धण्णा ण ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगव महावीरे विहरइ ! धन्ना ण ते राईसुर जाव सत्थ-वाहृपभडउ जे णं समणस्स भगवश्चो महावीरस्स अंतिए मुँडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पववयति ! धन्ना ण ते राईसर-तल-

वर जाव सत्य वाह पभइओजेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पचाणुव्वद्दिय गिहिधम्म जाव धण्णा ण ते राईसर जाव सत्यवाह पभइउ जेण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणति । तंजइ णं समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुर्विच चरमाणे जाव गामाणु-गाम दूझमाणे इहमागच्छेज्ञा जाव विहरेज्ञा, तए णं अह समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्ञा ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूच अञ्जभत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुर्विच चरमाणं जाव गामाणुगामं दूझमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुष्फकरंडे उज्ञाणे जेणेव क्यवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता श्रहापडिरुच उग्रह उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा श्रध्पाण भावेमाणे विहरइ । परिसा, राया निगया । तए ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निगश्चो । धम्मो कहिओ परिसा राया, पडिगया ।

तए णं से सुबाहुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टु-तट्टु । जहा मेहो तहा अम्मा-पियरे आपुच्छइ । निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियासिए जाव गुत्कंभयारी । तए ण से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूचाण थेराण अंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अंगाइ अहिज्ञइ, अहिज्ञइत्ता बहूहिं-चउत्थछट्टुम तवोविहाणेहि अप्पाण भावित्ता बहूइ वासाइ सामणपरियां पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाण झूसित्ता, सट्टु भत्ताइं अणेसणाए छेदित्ता आलोइय पडिकंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा' सोहूम्मेकप्पे देवत्ताए उववण्ण ।

से ण तथो देवलोगाश्रो आउवखएणं भवक्खएणं ठिङ्ख-
क्खएण अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिइ २ त्ता
केवलबोईंह बुज्जभहिइ, २ त्ता तहारूचाण थेराण अतिए मुडे
भवित्ता जाव पव्वइस्सइ । से ण तत्थ बहूइ चासाइ सामण्ण-
परियाग पाउणिहिइ २ त्ता आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते
कालमासे काल किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववणे । से
ण तथो देवलोगाउ माणुस्स जाव पव्वज्ञा । बंभलोए । ततो
माणुस्स, महासुक्के । ततो माणुस्स आणए देवे । ततो माणुस्स ।
ततो आरणे । ततो माणुस्स सद्वदुसिद्धे ।

से ण तथो अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे जाव
अड्डे जहा दहपइन्ने सिज्जभहिति, बुज्जभहिति, मुच्चिच्चहिति, परि-
निव्वाहिति, सद्वदुक्खाणमत करेहिति । एव खलु जबू ! सम-
णेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सुहविवागाण पठ-
मस्स अञ्जभयणस्स अयमट्टे पषणत्ते, त्तिबेमि ।

इइ सुहविवागस्स पठम अञ्जभयण समत्त । ३ ।

(२) वितियस्स उक्खेवश्रो । एवं खलु जबू । तेणं कालेण
तेण समएणं उसभपुरे णाम णयरे थूभकरडग उझाणे ।
धण्णो जक्खो । धण्णवहो राधा सरस्सई देवी । सुमिणदसण,
कहण, जस्म, बालत्तण, कलाश्रो य जोवणं पाणिगहणं, दाश्रो
यासादा य भोगा य जहा सुबाहुस्स णवर भहनदो कुमारे ।
सिरीदेवी पामोक्खाणं पचसया । सामिस्स समोसरणं । साव-
गधम्म । पुव्वभव पुच्छा । महाविदेह वासे पु डरिगिणि
नगरीए विजए कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माण-
स्साउए निबद्धे इह उववणे । सेस जहा सुबाहुस्स जाव महा-
विदेहवासे सिज्जभहिति बुज्जभहिति मुच्चिच्चहिति परिनिव्वाहिति

सच्चदुखखाणमतं करेहिति । एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाणं वित्तियस्स अजभयणस्स अणगारे पण्णते तिबेमि ।

इह सुहविवागस्स वीय अजभयणं समत्त । २ ।

(३) तइयस्स उक्खेवश्रो । वीरपुरे णामं णयरे । मणोरमे उज्ञाण वीरकण्हे जक्खे, मित्ते राया सिरीदेवी सुजाए कुमारे । दलसिरी पामोक्खाण पंचसयाकन्ना । सामी समोसरिए । पुञ्चभव पुच्छा । उसुयारे णयरे उसुदत्ते गाहावई पुण्कदते अणगारे पडिलाभिए मणस्साउए निबद्धे इह उष्वणे जाव महाविदेहे वासे सिज्ज़हिति ५ ।

इह सुहविवागस्स तइय अजभयण समत्त । ३ ।

(४) चउत्थस्स उक्खेवश्रो । विजयपुरे णयरे । णंदणधणं उज्ञाणं, श्रसोगो जक्खो । वासवदत्ते राया । कण्हसिरी देवी । सुवासवे शुमारे । भद्रा पामोक्खाणं पंचसया जाव पुञ्चभव पुच्छा कोंसंबी णयरीं धणपालो राया । वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह उष्वणे जावे सिद्धे ।

इह सुहविवागस्स चउत्थं अजभयणं समत्तं । ४ ।

(५) पंचमस्स उक्खेवश्रो । सोगधिया णयरी नीलासोगे उज्ञाणं, सुकालो जक्खो । अपडिहय राया, सुकण्हादेवी, महच्चदे कुमारे । तस्स श्रहंदत्ता भारिया, जिणदासो पुत्तो । तित्थयरागमणं जिणदासो पुञ्चभव पुच्छा । मज्जमिया णयरी, मेहरहे राया । सुघम्मे अणगारे-पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्स पंचमं अजभयण समत्तं । ५ ।

(६) छटुस्स उक्खेवश्चो । कणगयुरे णयरे सेयासोये उज्जाण । वीरभद्रो जक्खो । पियच्चदे राया । सुभद्रादेवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरीदेवी पामोक्खाणं पचसया । तित्थय-रागमणं । घणवई जुवरायपत्ते जाव पुच्चभव पुच्छा । मणिव-इया णयरी । भित्ते राया संमूहिविजय अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ ६ ॥

इह सुहविवागस्स छटु अज्ञयण समत्तं । ६ ।

(७) सत्तमस्स उक्खेवश्चो । महापुरे णयरे । रत्तासोगे उज्जाणे । रत्तपाऊ जक्खो । बले राया, सुभद्रादेवी, महाबले कुमारे । रत्तवई पामोक्खाणं पंचसया । तित्थयरागमणं जाव पुच्चभव पुच्छा । मणिपुरे णयरे । णागदत्ते गाहावई । इददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्स सत्तम अज्ञयण समत । ७ ।

(८) अटुमस्स उक्खेवश्चो । सुधोसे णयरे । देवरमणे उज्जाणे । वीरसेणो जक्खो । अज्जुणो राया, रत्तवई देवी, भद्रनदी कुमारे । सिरिदेवी पामोक्खाणं पचसया जाव पुच्चभव पुच्छा । महाधोसे णयरे । धम्मघोसे गाहावई । धम्मसीहे अणगारे । पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्स अटुम अज्ञयण समत्त । ८ ।

(९) नवमस्स उक्खेवश्चो । चपा णयरी । पुण्णभद्रे उज्जाणे पुण्णभद्रो जक्खो । दत्ते राया, रत्तवईदेवी, महचन्दे कुमारे जुवराया । सिरीकन्ता पामोक्खाणं पचसया जाव पुच्चभव पुच्छा । तिगिच्छा णयरी । जियसत्तुराया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्स नवम अज्ञयणं समत्त । ९ ।

(१०) जइ णं भन्ते । दसमस्स उक्खेवश्रो । एवं खलु जंबू । तेणं कालेण तेणं समएण साइए णामं णयरे होत्था । उत्तरकुरु उज्ञाणे, पासामिउ जवखो । मित्तनंदी राया, सिरीकन्ता देवी, वरदत्ते कुमारे । वीरसेणा पामोक्खाणं पचदेवी सया । तित्थ-यरागमणं, सावगधम्म, पुव्वभव पुच्छा । सयदुवारे णयरे । विमलवाहणे राया । धम्मरुई श्रणगारे पडिलाभिए, मणुस्सा-उए निबद्धे, इह उववणे । सेसं जहा सुबाहुस्स चिता जाव पवज्ञा, कप्पतरिए जाव सच्चदुसिद्धे । तओ महाविदेह जहा दृढपइणे जाव सिज्जिहिति ५ । एवं खलु जबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सुहविवागाणं दसमस्स अञ्जभयणस्स श्रययद्दुे पण्णते । सेवं भन्ते, सेव भन्ते त्तिवेमि ।

इइ सुहविवागस्स दसम अञ्जभयण समत्तं ॥ १० ॥

विवागसुयस्स दो सुयखंधा दुहविवागे य सुहविवागे य । तत्थ दुहविवागे दस अञ्जभयणा एकासरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जन्ति । एवं सुहविवागे वि सेसं जहा आयारस्स ॥ १० ॥

॥ इति सुखविपाकमूलम् ॥

उववाई सूत्र

(अन्तिम वाईस गाथाएं)



कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पडिहया ? ।
कहिं बोदि चइत्ता ण, कत्थ गंतूण सिजभइ ॥ १ ॥

श्रलोगे पडिहया सिद्धा, लोयगे य पडिहया ।
इह बोदि चइत्ता ण, तत्थ गतूण सिजभइ ॥ २ ॥

ज सठाण तु इह भव, चय तस्स चरिमसमयमि ।
आसी य पएसधणं, त सठाण तहिं तस्स ॥ ३ ॥

दीहं वा हस्स वा जं, चरिमभवे हवेज्ज सठाणं ।
ततो तिभागहीण, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥

तिण्ण सया तेत्तीसां, धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा ।
एसा खलु सिद्धाण, उवकोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥

चत्तारि य रयणीओ, रयणित्तिभागूणिया य बोधव्वा ।
एसा खलु सिद्धाण, मज्जिभमओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥

एकका य होइ रयणी, साहिया अगुलाइ अटु भवे ।
एसा खलु सिद्धाण, जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥

ओगाहणाए सिद्धा, भवतिभागेण होइ परिहीणा ।
“ सठाणमणित्थर्थं, जरा-मरण-विष्पमुक्काण ॥ ८ ॥

जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणता भवक्षयविमुक्का ।
“ अण्णोण्णसमोगाढा, पुह्हा झब्बे य लोगते ॥ ९ ॥

फुसइ अते सिद्धे, सव्वपएसेहि णियमसो सिद्धा ।
 ते वि असखेज्ञगुणा, देसपएसेहि जे पुद्गा ॥ १० ॥
 असरीरा जोवधणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य ।
 सागारमणागार, लक्खणमेयं तु सिद्धाण ॥ ११ ॥
 केवलणाणुवउत्ता जाति सव्वभावगुणभावे ।
 पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठिअणंतार्हि ॥ १२ ॥
 णवि अतिथ माणुसाणं त, सोक्खं णवि य सव्वदेवाण ।
 ज सिद्धाण सोक्खं, अव्वावाहं उवगयाणं ॥ १३ ॥
 जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्वार्पिडिय अणतगुणं ।
 ण य पावइ मुत्तिसुहं, णं तार्हि वगवग्गूर्हि ॥ १४ ॥
 सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्वार्पिडिओ जइ हवेज्ञा ।
 सोणतवरगभइओ, सव्वागासे ण माएज्ञा ॥ १५ ॥
 जह णाम कोई मिच्छो, णगरगुणे बहुचिहे वियाणतो ।
 ण चएइ परिकहेउ, उवमाए तार्हि असंतीए ॥ १६ ॥
 इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवम णत्थ तस्स ओवम्म ।
 किच्चि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिण सुणह वोच्छ ॥ १७ ॥
 जह सव्वकामगुणियं पुरिसो, भोत्तूण भोयण कोई ।
 तण्हाच्छुहाविमुक्को, अच्छेज्ञ जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥
 इय सव्वकालतित्ता, अतुलं निव्वाणमुक्कगया सिद्धा ।
 सासथमव्वावाहं चिट्ठति, सुही सुहं पत्ता ॥ १९ ॥
 सिद्धति य बुद्धति यं, पारगयति य परंपरगयति ।
 उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असगा य ॥ २० ॥
 णिच्छिणसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबधणविमुक्का ।
 अव्वाह सुक्ख, अणुहोति सासथ सिद्धा ॥ २१ ॥
 अयुलसुहसागरगया, अव्वावाहं अणोवम पत्ता ।
 सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही पत्ता ॥ २२ ॥

सूत्रकृताङ्गसूत्रे

वीरस्तुत्याख्यं षष्ठमध्यनम्

(पुच्छस्मुणं)

पुच्छस्मुणं समणा माहणा य, आगारिणो य परतित्थिआ य ।
 से केइ णेगति हियधम्ममाहु, अलिसं साहुसभिकखयाए ॥१॥
 कहं च णाण कहं दसण से, सील कह नायसुयस्स आसि ? ।
 जाणासि णं भिक्खु जहातहे, अहासुय बूहि जहा णिसतं ॥ २ ॥
 -खेयन्नए से कुसले-महेसी, अणतनाणो य अतदसी ।
 जससिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्म च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥
 उड्ड श्रहे य तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाना ।
 से णिञ्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समिय उदाहु ॥ ४ ॥
 से सब्बदंसी अभिभूयनाणो, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ।
 अणुत्तरे सब्बजगासि विज्ञ, गथा श्रईए अभए अणाऊ ॥ ५ ॥
 से भूइपणो अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणतचक्खु ।
 अणुत्तर तप्पइ सूरिए वा, वहरोयणिन्दे व तम पगासे ॥ ६ ॥
 अणुत्तरं धम्ममिणं, जिणाणं, या मुणी कासव आसुपन्ने ।
 इदेव देवाणं महाभावे, सहस्रया दिवि णं विसिट्टे ॥ ७ ॥
 से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वा वि अणतपारे ।
 अणाविले वा अक्साइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुहमं ॥ ८ ॥
 से वीरिएण पडिपुन्नवीरिए, सुदस वा णगसब्बसेट्टे ।
 सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए गगुणोववेव ॥ ९ ॥
 सयं सहस्राण उ जोयणाण, तिकडगे पंडगवेजयते ।
 से जोयणे वणवइसहस्से, उड्डुसित्तो हेट्ट सहस्रमेग ॥ १० ॥

पुढे णमे चिद्ग्रह सूर्यिवद्विए, जं सूरिया अगुपरिचद्वयति ।
 से हेमवन्ने बहुनदणेय, जसि रति वेदयति महिंदा ॥ ११ ॥
 से पव्वए सद्गमहपगासे, विरायद्व कचणमट्टवन्ने ।
 अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥ १२ ॥
 महीए मज्जमि ठिए णगिदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।
 एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयद्व अच्चिमाली ॥ १३ ॥
 सुदंसणस्त्वेव जसो गिरिस्स, पव्वुच्छृं महतो पष्वयस्स ।
 एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइजसो-दसण-नाणसोले ॥ १४ ॥
 गिरीवरे वा निसहाऽऽययाण, रुयए व सेहु वलयायताणं ।
 तओवमे से जगभूडपन्ने, मुणीण मज्जे तमुशाहु पन्ने ॥ १५ ॥
 अणुत्तरं धम्ममूर्द्दरहत्ता, अणुत्तर भाणवरं भियाइ ।
 सुसुक्षुक्क अपगडसुक्क, सर्खिदुएगतवदातसुक्क ॥ १६ ॥
 अणत्तरग्ग परम महेसी, असेसकम्म स विसोहइत्ता ।
 सिँद्ध गए साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दसणेण ॥ १७ ॥
 रुखेसु णाए जह सामली वा, जसि रह वेदयंति सुवन्ना ।
 वणेसु वा णंदणमाहु सेहु, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
 थणिय व सद्गाण अणुत्तरे उ, चन्द्रो व ताराण महाणुभावे ।
 गंधेस वा चन्दणमाहु सेहुं, एवं मुणीण अपडिन्तमाहु ॥ १९ ॥
 जहा सयंभू उदहीण सेहु, नागेसु वा धरणिदमाहु सेहु ।
 खोअ्रोदए वा रसवेजयते, तवोवहाणे मुणी वेजयते ॥ २० ॥
 हत्थीसु एरावणमाहु नाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गङ्गा ।
 पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादी णिह नायपुत्ते ॥ २१ ॥
 जोहेसु नाए जह बीससेणे, पुष्फेसु वा जह अरविदमाहु ।
 खत्तीण सेहु जह दत्तवद्वके, इसीण सेहु तह बद्धमाणे ॥ २२ ॥

दाणाण सेद्व अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयति ।
 तवेसु वा उत्तमबभचेर, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥

ठिईण सेद्वा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेद्वा ।
 निघ्वाणसेद्वा जह सच्चधम्मा, न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥

पुढोवमे धुणइ विगथगेही, न सएण्णर्हि कुछवइ आसुपन्ने ।
 तरितं समुद्दं च महाभवोघ, अभयकरे वीर अणतचक्खू ॥ २५ ।

कोह च माण च तहेव माय, लोभ चउत्थ अज्भल्थ दोसा ।
 एथारिं वता अरहा महेसी, ए कुछवइ पावण कारवेइ ॥ २६ ॥

किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाण पडियम्म ठाण ।
 से सच्चवाय इइ वेयइत्ता, उवट्टिए सजमद्वीहराय ॥ २७ ॥

से वारिया इत्थी सराइभत्त, उवहाणवं दुक्खखयद्याए ।
 लोग विदित्ता आरं पर च, सच्चं पभू वारिय सच्चवारं ॥ २८ ॥

सोम्मा य धम्म अरहतभासिय, समाहियं अद्वपदोवसुद्व ।
 तं सद्वहाणाय जणा अणाऊ, इदा व देवाहिव आगमिस्सति ॥ २९ ॥

त्ति वेमि ॥



मौक्षमार्ग-नामकम्

एकादश-अध्ययनम्



कथरे मग्ने श्रव्यखाए, महाणेण मईमया !

जं मग्नं उज्जु पावित्ता, श्रोह तरइ दुत्तरं ॥ १ ॥
तं मग्नं पणुत्तरं सिद्धं, सद्वदुक्खविमोक्खणं ।

जाणासि णं जहा भिक्खू, तं णो बूहि महामुणी ॥ २ ॥
जह रणो केइ पुच्छज्ञा, देवा श्रद्धुव माणुसा ।

तेसि तु कथर मग्नं, आइक्खेज्ञ ? कहाहि रणो ॥ ३ ॥
जह रणो केइ पुच्छज्ञा, देवा श्रद्धुव माणुसा ।

तेसिम पडिसाहिज्ञा, मग्नसारं सुणेह मे ॥ ४ ॥
अणुपुव्वेण महाघोर कासवेण पवेइय ।

जमायाथ इओ पुच्चं, समुहं ववहारिणो ॥ ५ ॥
अत्तरिसु तरतेगे, तरिस्सति अणागया ।

त सोज्ञा पडिवक्खामि, जतबो तं सुरेह मे ॥ ६ ॥
पुढवीजीवा पूढो सत्ता, आउजीवा तहाजगणी ।

वाउजीवा पूढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥ ७ ॥
अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया ।

एयावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्ञुई ॥ ८ ॥
सच्चाहिं अणुजुत्तीहि, मझम पडिलेहिया ।

सच्चे श्रवकंतदुक्खा य, अओ सच्चे न हिसया ॥ ९ ॥
एव खु णाणिणो सार, जं न हिसइ किचण ।

अहिसासमयं, चेव, एतावंत वियाणिया ॥ १० ॥

उड्ढ श्रहे य तिरियं, जे केइ तसथावरा ।
 सब्बत्थ विरई विज्ञा, सति निव्वाणमाहिय ॥ ११ ॥

पभू दोसे निराकिञ्चा, ण विरुज्जेञ्ज केणई ।
 मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अतसो ॥ १२ ॥

सबुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसण चरे ।
 एसणासमिए णिच्चं, वज्ञयते अणेसण ॥ १३ ॥

भूपाइं च समारंभ, तमुद्दित्सा य ज कड ।
 तारिसं तु न गिष्ठेज्ञा, अन्नपाणं सुसंजए ॥ १४ ॥

पूइकम्मं न सेविज्ञा, एस धम्मे दुसीमओ ।
 जं किचि अभिक्खेज्ञा, सब्बसो तं न कप्पए ॥ १५ ॥

हणंत णाणुजाणेज्ञा, आयगुत्ते जिइदिए ।
 छाणाइ संति सड्ढीण, गामेसु नगरेसु वा ॥ १६ ॥

तहा गिर समारब्भ, अत्थि पुण्णति णो वए ।
 अहवा णत्थि पुण्णंति, एवमेय महब्भय ॥ १७ ॥

दाणदृया य जे पाणा, हम्मति तस-थावरा ।
 लैसि सारक्खणदृग्गए, तम्हा अत्थि त्ति णो वए ॥ १८ ॥

जैसि त उवक्पंति, अन्नपाण तहाविह ।
 लैसि लाभतरायंति, तम्हा णत्थि त्ति णो वए ॥ १९ ॥

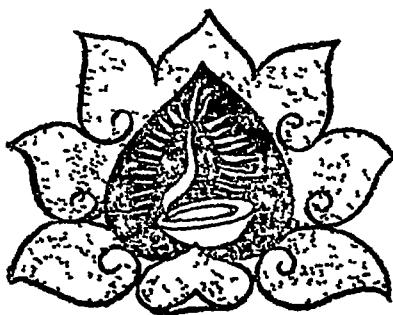
जे य दाणं पससति, वहमिच्छति पाणिणं ।
 जे य ण पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करति ते ॥ २० ॥

दुहश्रोवि ते ण भासति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ।
 आयं रयस्स हेच्चा णं, निव्वाण पाडणति ते ॥ २१ ॥

निव्वाण परम बुद्धा, जवखत्ताण व चदिमा ।
 तम्हा सया जए दते, निव्वाण सधए मुणी ॥ २२ ॥
 वुजभमाणाण पाणाण, किच्चन्ताण सकम्मुणा ।
 प्राघाइ साहु त दीव, पतिहुसा पचुच्चइ ॥ २३ ॥
 श्रायगुत्ते सया इत्ते, भिन्नसोए प्रणासवे ।
 जे धर्मं सुद्धमव्वाइ, पडिपुन्नमणेलिसं ॥ २४ ॥
 तमेव श्रविजाणन्ता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो ।
 बुद्धामो त्ति य मन्नंता, अंत एते समाहिए ॥ २५ ॥
 ते य दीयोदग चेव, तमुद्दिस्सा य ज कड ।
 भोच्चा भाण भियायति, श्रखेयन्नाऽसमाहिया ॥ २६ ॥
 जहा ढका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही ।
 मच्छेसर्ण भियायति, भाण ते कलुसाहमा ॥ २७ ॥
 एवं तु समणा एगे, मिच्छद्विट्ठी अणारिया ।
 विसएसर्ण भियायति, कंका वा कलुसाहमा ॥ २८ ॥
 सुद्धं मग विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मइ ।
 उम्मगगया दुवखं, घायमेसति त तहा ॥ २९ ॥
 जहा आसाविंग, नाव, जाइश्रंधो दुर्लहिया ।
 इच्छइ पारमागतुं, सतरा य विसीयइ ॥ ३० ॥
 एव तु समणा एगे, मिच्छद्विट्ठी अणारिया ।
 सौयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महबभयं ॥ ३१ ॥
 हमं च धर्ममायाय, कासवेण पवेदित ।
 तरे सौय महाघोरं, अत्तत्त्वाए परिव्वए ॥ ३२ ॥
 विरए गामधर्मेहि, जे कैई जगई जगा ।
 तैस अत्तवमायाए, थामं कुव्व परिव्वए ॥ ३३ ॥

अहमाण च मायं च, तं परिस्त्राय पंडिए ।
 सव्वमेयं णिराकिञ्चा, णिव्वाण संघए मुणी ॥ ३४ ॥
 संघए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे ।
 उवहाणवीरिए भिक्खू, कोह माण ण पत्थए ॥ ३५ ॥
 जे य बुद्धा अतिकक्ता, जे य बुद्धा अणागया ।
 संति तेसि पइट्टाणं, सूयाण जगई जहा ॥ ३६ ॥
 अह ण वयमावन्न, फासा उच्चावया फुसे ।
 ण तेसु विणिहण्णेज्ञा, वाएण व महागिरी ॥ ३७ ॥
 सबुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसण चरे ।
 निच्छुडे कालमाकंखी, एवं (य) केवलिणो मय ॥ ३८ ॥

॥ मोक्षमार्गनामक एकादशाध्ययनम् ॥





✽ उत्तरज्ञायण-सुत्तं ✽



अहं विणयसुयं पदम् अज्ञायणं

संजोगा विष्पुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणय पाउकरिस्सामि, आणुपुच्चि सुणेह मे ॥ १ ॥

आणानिद्वेसकरे, गुरुणमुववायकारए ।
इगियागारसपन्ने, से विणीए त्ति बुझइ ॥ २ ॥

आणाऽनिद्वेसकरे, गुरुणमणुववायकारए ।
पडिणीए असबुद्धे, अविणीए त्ति बुझइ ॥ ३ ॥

जहा सुणो पूइकण्णी, निककसिज्जइ सव्वसो ।
एव दुस्सोलपडिणीए, मुहरी निककसिज्जइ ॥ ४ ॥

कणकुण्डग चइत्ताण, विट्ठं भुजइ सूयरे ।
एवं सील चइत्ताण, दुस्सोले रमइ मिए ॥ ५ ॥

सुणिया भाव साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥

तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलमेज्जओ ।
बुद्धपुत्ते^१ नियागट्टी, न निककसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥

निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाण अन्तिए सया ।
 अद्भुत्ताणि सिविक्ष्मा, निरद्वाणि उ वज्ञेऽ ॥ ८ ॥
 अणुसासिओ न कुप्पिज्ञा, खंति सेविज्ञ पण्डिए ।
 खुड्डेहि सह ससगि, हासं कीड च वज्ञेऽ ॥ ९ ॥
 मा य चण्डालिय कासी, बहुयं मा य आलवे ।
 कालेण य अहिज्ञिता, तओ झाइज्ञ एगगो ॥ १० ॥
 आहच्च चण्डालियं कट्टु, न निष्ठविज्ञ कयाइ^१ वि ।
 कडं कडे त्ति भासेज्ञा, अकडं नो कडे त्ति य ॥ ११ ॥
 मा गलियस्सेव कसं, वयणभिच्छे पुणो पुणो ।
 कसं व दट्ठुमाइणो, पावगं परिवज्ञेऽ ॥ १२ ॥

अणासवा थूलवया कुसीला,
 मिर्दिपि चण्डं पकरिन्ति सीसा ।
 चित्ताणुया लहु दख्खोववेया,
 पसायए ते हु दुरासयंपि ॥ १३ ॥

नापुट्टो वागरे किंचि, पुट्टो वा नालियं वए ।
 कोहं असच्चं कुवेज्ञा, धारेज्ञा यियमप्पियं ॥ १४ ॥
 अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुहमो ।
 अप्पा दन्तो मुही होइ, अर्स्स लोए परत्य य ॥ १५ ॥
 वरं मे अप्पा दन्तो, सजमेण तवेण य ।
 माहं परर्हि दम्मंतो, बंधणेहि वहेहि य ॥ १६ ॥
 पडिणीय च बुद्धाण, वाया अदुव कम्मुणा ।
 आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्ञा कयाइ वि ॥ १७ ॥

न पक्खश्च न पुरश्चो, नैव किञ्चाण पिदुश्चो ।
 न जुजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे तो पडिस्सुणे ॥ १८ ॥
 नैव पलहृत्थयं कुञ्चा, पक्खपिण्ड च सजए ।
 पाए पसारिए वावि, न चिह्ने गुरुणन्तिए ॥ १९ ॥
 आयरिएहि वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
 पसायपेही^१ नियागट्टी, उवचिह्ने गुरु सया ॥ २० ॥
 आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊण्ठासण घीरो, जओ जत्त पडिस्सुणे ॥ २१ ॥
 आसणगओ न पुच्छेज्जा, नैव सेज्जागओ कयाइ वि^२ ।
 आगम्भमुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छेज्जा पजलीउडो ॥ २२ ॥
 एवं विणयज्ञुत्तस्स, सुत्तं अत्थ च तदुभय ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥ २३ ॥
 मुस परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणि वए ।
 भासादोसं परिहरे, माय च वज्जए सया ॥ २४ ॥
 न लवेज्ज पुट्टो सावज्ज, न निरट्ट न मम्मय ।
 श्रध्यणट्टा परट्टा वा, उभयस्सन्तरेण वा ॥ २५ ॥
 समरेसु श्रगारेसु, सन्धीसु य महापहे^३ ।
 एगो एगत्थए सर्द्धि, नैव चिह्ने न सलवे ॥ २६ ॥
 जं मे बुद्धाणुसासन्ति, सीएण फलसेण वा ।
 मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥ २७ ॥
 शणुसासणमोवायं, दुङ्कडस्स य चोयणं ।
 हियं तं मणिइ पणो, वेसं होइ असाहुणो ॥ २८ ॥

^१ पसायट्टी । ^२. कया । ^{३.} गिहसघिसु श्र महापहेसु ।

हिय विगयभया बुद्धा, फरसपि^१ श्रणुसासण ।
 वेस्स त होइ मूढाणं, खन्तिसोहिकर पथ ॥ २६ ॥
 आसणे उवचिद्देज्ञा, श्रणुच्चेऽकुक्कुए थिरे ।
 अप्पुट्टाई निरुट्टाई, निसीएङ्गप्पकुक्कुए ॥ ३० ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
 श्रकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥ ३१ ॥
 परिवाडीए न चिद्देज्ञा, भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
 पडिरुवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥ ३२ ॥
 नाइदूरमणासन्ने, नडन्नेसि चक्खुफासओ ।
 एगो चिद्देज्ज भत्तटु,^२ लघित्ता त नडिक्कमे ॥ ३३ ॥
 नाइउच्चे न नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुयं परकड पिण्ड, पडिगाहेज्ञ सजए ॥ ३४ ॥
 अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि सवुडे ।
 समय सजए भुजे, जय अपरिसाडिय ॥ ३५ ॥
 सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुणिट्टिए सुलट्टित्ति, सावज्ज वज्जए मुण्णी ॥ ३६ ॥
 रमए पण्डए सास, हय भद्दं व वाहए ।
 बालं सम्मइ सासतो, गलियस्स व वाहए ॥ ३७ ॥
 खड्डया^३ मे चवेडा मे, श्रक्षोसा य वहा य मे ।
 कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्टित्ति मन्नइ ॥ ३८ ॥
 पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नइ ।
 पावदिट्टिउ अप्पाणं, सास दासि^४ त्ति मन्नइ ॥ ३९ ॥

१. फर-समप्पणुसासणं ।

२. भत्तट्टा । ३ खड्डयाहिं चवेडाहिं अपकोसेहिं वहेहिं य । ४. दासंव ।

न कोवए श्रायरियं, अप्पाणपि न कोवए ।
 बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥ ४० ॥
 श्रायरियं कुविय नज्जा, पत्तिएण पसायए ।
 विज्ञभवेज्ज पंजलीउडो, वएझ न पुणोत्ति य ॥ ४१ ॥
 घस्मज्जियं च ववहार, बुद्धेहायरिय सया ।
 तसायरत्तो ववहारं, गरह नाभिगच्छइ ॥ ४२ ॥
 मणोगयं ववकगयं, जाणित्तायरियस्स उ ।
 तं परिगिज्भ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥
 वित्ते श्रचोइए निच्चं, खिष्पं हवइ सुचोइए ।
 जहोवइहु सुकयं, किच्चाइं कुववइ सया ॥ ४४ ॥
 नज्जा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए ।
 हवइ किच्चाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा ॥ ४५ ॥
 पुज्जा जस्स पसीयति, संबुद्धा पुव्वसंथुया ।
 पसन्ना लाभइस्सति, चिडलं श्रद्धियं सुयं ॥ ४६ ॥
 स पुज्जसत्थे सुविणीय ससए,
 मणोरुई चिट्ठइ कम्मसपया^३ ।
 तवोसमायारि-समाहिसंबुडे,
 महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥ ४७ ॥
 स देवगंधव्वमणुस्सपूइए,
 चइत्तु देहं मलपकपुव्वयं ।
 सिद्धे वा हवइ सासए,
 देवे वा अप्परए महिंडीए ॥ ४८ ॥
 । त्ति बेमि ।

। विणयसुयं नाम पढम श्रज्ञभूयण समत्त ।

१. पसन्ने थामय करे । २. मणिच्छियं सपथमुत्तमं गय ।

। श्रह दुइअं परीसहजभयणं ।

सुयं मे आउस । तेण भगवया एवमक्खायं—इह खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया ? जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ।

कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया ? जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?

इमे ते खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा, त जहा-

दिग्ंघापरीसहे १, पिवासापरीसहे २, सीयपरीसहे ३, उसिणपरीसहे ४, दंसमसयपरीसहे ५, श्रवेलपरीसहे ६, श्रङ्घ-परीसहे ७, इत्योपरीसहे ८, चरियापरीसहे ९, निसीहियापरीसहे १०, सेज्जापरीसहे ११, अक्कोमपरिसहे १२, वहपरीसहे १३, जायणापरीसहे १४, अलाभपरीसहे १५, रोगपरीसहे १६ तणफास~, परीसहे १७, जल्लपरीसहे १८, सक्कारपुरक्कार परीसहे १९, पन्नापरीसहे २०, अन्नाणपरीसहे २१, दसणपरीसहे २२ ।

परीसहाण पविभत्ती, कासवेण पवेइया ।

त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुञ्चि सुणेह मे ॥ १ ॥

दिग्ंघापरिगणै^१ देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं ।

न छिदे न छिदावए, न पए न पयावए ॥ २ ॥

कालीपञ्चग-सकासे, किसे धमणिसतए ।

मायन्ने असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥ ३ ॥

^१ दिग्ंघापरियावेण ।

तथो पृष्ठो पिवासाए, दोगुच्छी लज्जसंजए ।
 सीओदग न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥
 छिन्नावाएसु पथेसु, आउरे सुपिवासिए ।
 परिसुक्कमुहाऽदीजे, त तितिक्खे परीसह ॥ ५ ॥
 चरतं विरयं लूह, सीह फुसइ एगया ।
 नाइवेल मुणी गच्छे, सोच्चा णं जिणसासण ॥ ६ ॥
 न मे निवारण अत्थ, छवित्ताण न विज्जइ ।
 अह तु अर्मि सेवामि, इइ भिक्खू न चित्तए ॥ ७ ॥
 उसिणपरियावेण, परिदाहेण तज्जिए ।
 घिसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ८ ॥
 उण्हाहितत्तो मेहावी, सिणाण नो वि पत्थए ।
 गाय नो परिसिचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पय ॥ ९ ॥
 पृष्ठो य दंसमसर्हिं, समरे व महामुणो ।
 तागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ॥ १० ॥
 न सत्तसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए ।
 उवेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंस-सोणिय ॥ ११ ॥
 परिजुण्णेहि वत्थेहि, होक्खामि ति अचेलए ।
 श्रद्धुवा सचेलए होक्ख, इइ भिक्खू न चित्तए ॥ १२ ॥
 एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया ।
 एयं घस्मं हियं नज्जा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥
 गामाणुगामं रीयतं, अणगारं अर्किच्छण ।
 अरई अणुप्पवेसेज्जा, त तितिक्खे परीसह ॥ १४ ॥

१. सब्बत्तो य परिव्वए ।

अरहं पितृशो किञ्चावा, विरए, आयरकिञ्चाए ।
धर्मारामे निरारम्भे, उवसते मुणी चरे ॥ १५ ॥

सगो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थशो ।
नो तार्हि विणिहम्मेज्ञा, चरेज्ञतगवेसए ॥ १७ ॥

एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।
गमे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥

असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्ञा परिग्रहं ।
अससत्तो गिहत्थर्थाहि, अणिएओ परिव्वए ॥ १९ ॥

सुसाणे सुन्नगारे वा, रखमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्ञा, न य वित्तासए परं ॥ २० ॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसगाभिधारए ।
संकामीओ न गच्छेज्ञा, उट्टित्ता अन्नमासण ॥ २१ ॥

उच्चावयाहि सेज्जाहि, तवस्सी भिक्खू थामवं ।
नाइवेल विहन्निज्ञा, पावदिट्टी विहन्नइ ॥ २२ ॥

पद्मिक्कूवस्सयं लद्धं, कल्लाणमदुवा पावयं ।
किमेगराइ करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥ २३ ॥

श्रवकोसेज्ञा परे भिक्खुं, न तेसि पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाण, तम्हा भिक्खू न सजले ॥ २४ ॥

सोज्ञाणं फरुसा भासा, दारुणा गमकण्टगा ।
तु सिणीओ उवेहेज्ञा, न ताओ मणसीकरे ॥ २५ ॥

हओ न संजले भिक्खू, मर्णपि न पओसए ।
तितिक्खं परम नच्चा, भिक्खू धर्म विच्चितए ॥ २६ ॥

समणं सजय दत, हणिज्ञा कोइ कत्थई ।
 नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एव पेहेज्ज सजए^१ ॥ २७ ॥
 दुक्करं खलु भो निच्च, श्रणगारस्स भिक्खुणो ।
 सच्च से जाइय होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥ २८ ॥
 गोयःगोपविद्वस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
 सेओ अगारवासुत्ति, इह भिक्खू न चितए ॥ २९ ॥
 परेसु घासमेसेज्ञा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
 लद्वे पिण्डे अलद्वे वा, नाणुतप्पेज्ञ पंडिए^२ ॥ ३० ॥
 अज्जेवाहं न लब्धामि, अवि लाभो सुए सिया ।
 जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो त न तज्जए ॥ ३१ ॥
 नच्चा उप्पइयं दुखखं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
 अदीणो थावए पन्न, पुढो तथडहियासए ॥ ३२ ॥
 तेहच्छं नाभिनंदेज्ञा सचिक्खत्तगवेसए ।
 एव खु तस्स सामण्ण, ज न कुज्ञा न कारवे ॥ ३३ ॥
 अचेलगस्स ल्लहस्स, संजयस्स तवस्सिणो ।
 तणेसु सयमाणस्स, हुज्ञा गायविराहणा ॥ ३४ ॥
 आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा ।
 एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥ ३५ ॥
 किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
 घिसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥ ३६ ॥
 वेएज्जा निज्ञरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं ।
 जावसरोरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥ ३७ ॥

१ ण त पेहे असाहुव २. लद्वे पिण्डे आहरिज्ञा अलद्वे नाणु-
 तप्पए ।

अभिवायणमब्भुद्गाणं, सामो दुःखा निमत्तण ।
जे ताइ पडिसेवन्ति, न तेर्सि पीहए मुणी ॥ ३८ ॥

अणुक्षकसाई अपिच्छेष, अन्ताएसी अलोकुए ।
रसेसु नाणुगिज्ञेज्ञा, नाणुतप्पेज्ञं पन्नव ॥ ३९ ॥

से नूण भए पुच्च, कम्माईणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥

अह पच्छा उइज्ञन्ति, कम्माईणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं, नज्ञा कम्मविवागय ॥ ४१ ॥

निरदुगम्मि विरओ, मेहुणाश्रो सुसबुडो ।
जो सक्ख नाभिजाणामि, धम्म कल्लाणपावग ॥ ४२ ॥

तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्ञओ ।
एवं पि विहरओ मे, छउम न नियद्वइ ॥ ४३ ॥

नतिथ नूण परे लोए, इड्ढी वावि तवस्सणो ।
श्रदुवा वच्चिओमित्ति, इइ भिक्खू न चितए ॥ ४४ ॥

श्रभू जिणा अतिथ जिणा, श्रदुवावि भविस्सइ ।
भुस ते एवमाहसु, इइ भिक्खू न चितए ॥ ४५ ॥

एए परीसहा सच्चै, कासवैण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्ञा, पुट्ठो केणइ कण्हुई त्ति देसि ॥ ४६ ॥

। दुइअ परीसहज्ञक्यण समत्त ॥२॥

॥ अह तइअं चाउरगिज्ज श्रज्ञभयणं ॥

चत्तारि परमगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्वा, संजमम्मि य वीरियं ॥ १ ॥

समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।
 कस्मा नाणाविहा कट्ठु, पुढो विस्संभिया पया ॥ २ ॥
 एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ।
 एगया आसुरं कायं, अहाकस्मैहं गच्छइ ॥ ३ ॥
 एगया खत्तिश्रो होइ, तओ चण्डालवुक्कसो ।
 तओ कीडपयगो य, तओ कुन्थु पिवोलिया ॥ ४ ॥
 एवमावद्वजोणीसु, पाणिणो कस्मकिविसा ।
 न निविज्ञन्ति ससारे, सव्वद्वैसु व खत्तिया ॥ ५ ॥
 कस्मसर्गेहि संमूढा, दुकिखया बहुवेयणा ।
 अमाणुसासु जोणोसु, विणिहस्मन्ति पाणिणो ॥ ६ ॥
 कस्माण तु पहाणाए, आणुपुच्ची कयाई उ ।
 जीवा सोहिमणुप्त्ता, आयथति मणुस्सयं ॥ ७ ॥
 माणुस्स विगह लद्ध, सुई धस्मस्स दुल्लहा ।
 जं सोच्चा पडिवज्ञन्ति, तव खतिमहसय ॥ ८ ॥
 आहच्च सवणं लद्धु सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउय मग्गं, बहुवे परिभस्सइ ॥ ९ ॥
 सुइं च लद्धु सद्ध च, वीरियं पुण दुल्लहं ।
 बहुवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्ञए ॥ १० ॥
 माणुसत्तमि आयाओ, जो धस्मं सोज्ज सद्धहे ।
 तवस्ती वीरियं लद्धु, सबुडे निद्धुणे रयं ॥ ११ ॥
 सोही उज्जुयसूयस्स, धस्मो सुद्धस्स चिट्ठइ ।
 निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तिव पावए ॥ १२ ॥

विग्निच कम्मुणो हेउ, जसं सच्चिणु खतिए ।
सरीर पाढव हिच्चा, उड्ढ पदकमए दिस ॥ १३ ॥

विसालसेहि सीलेहि. जकवा उत्तरउत्तरा ।
महासुकका व दिप्पता, मन्ता अपुणज्ज्व ॥ १४ ॥

अधिया देवकामाण, कामरूपविउच्चिणो ।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठति, पुच्चावाससया बहु ॥ १५ ॥
तत्थ ठिच्चा जहाठाण, जकवा श्राउकव्वए चुया ।
उर्वेति माणुस जोर्ण, से दसगे भिजायए ॥ १६ ॥

खित्त वत्यु हिरण्ण च, पसवो दासपोरुस ।
चत्तारि कामखधाण, तत्थ से उववज्ज्व ॥ १७ ॥
मित्तव नाइव होइ, उच्चागोए य वणव ।
अप्पायके महापन्ने, अभिजाए जसो बले ॥ १८ ॥

भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरुवे अहाउयं ।
पुच्च विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहि बुज्जया ॥ १९ ॥

चउरग दुल्लह नच्चा', सजम पडिवज्ज्या ।
तवसा धुयकम्मसे, सिद्धे हवइ सासए ति बेमि ॥ २० ॥

॥ तइम चाउरगिज्ज अज्ञभयण समत्त ॥

॥ अह चउत्थं असंखय अज्ञभयण ॥

असखय जीविय मा पमायए,
जरोवणीयस्स हु नत्थ ताण ।

एव विद्याणाहि जणे पमत्ते,
किन्तु विहिसा अजया गहिति ॥ १ ॥

जै पावकस्मेहि धर्ण मणूसा,
समाधयती अमङ्ग गहाय ।

पहाय ते पासपद्विए नरे,
वेराणुबद्धा नरय उर्विति ॥ २ ॥

तेणे जहा सधिमुहे गहीए,
सकम्मुणा किच्चवइ पावकारी ।

एव पया पेच्च इह च लोए,
कडाण कम्माण न मोक्ख अतिथि ॥ ३ ॥

ससारमावन्न परस्स अट्टा,
साहारणं ज च करेह कम्म ।

कम्मस्स तै तस्स उ वेयकाले,
न बधवा बंधवय उर्विति ॥ ४ ॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते,
इममि लोए अदुवा परत्था ।

दीवप्पणहुेव अणतमोहे,
नेयाउयं दट्टुमदट्टुमेव ॥ ५ ॥

सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी,
न वीससे पडिय आसुपणे ।

घोरा मुहुत्ता अबलं सरोर,
भारडपक्खीव चरेऽपमत्ते ॥ ६ ॥

चरे पयाइं 'परिसकमाणो,
ज किंचि पास इह मन्नमाणो ।

लाभतरे जीविष बूहइत्ता,
 पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥
 द्वद्व निरोहेण उचेह मोक्खं,
 श्रासे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
 पुच्छाइ वासाइ चरेऽप्पमत्ते,
 तम्हा मुणी खिप्पमुवेह मोक्ख ॥ ८ ॥
 स पुच्छमेवं न लभेज्जु पच्छा,
 एसोवमा सासथवाइयाणं ।
 विसीयह सिद्धिले श्राउयम्मि,
 कालोवणीए सरोरस्स भेण ॥ ९ ॥
 खिप्पं न सक्केह विवेगमेड,
 तम्हा समुद्भाय पहाय कामे ।
 समिच्च लोयं समया महेसी,
 अप्पाणरक्खी चरेऽप्पमत्ते ॥ १० ॥
 मुहुं मुहुं मोहगुणे जयतं,
 श्रणेगरुवा समण चरत,
 फासा फुसन्ति असमजसं च,
 न तेसि भिक्खू भणसा पउस्से ॥ ११ ॥
 मन्दा य फासा बहुलोहणिज्ञा,
 तहप्पगारेसु सणं न कुञ्जा ।
 रक्खिज्ञ कोह विणएज्ञमाणं,
 माय न सेवेज्ञ पहेज्ञ लोह ॥ १२ ॥
 जे सखया तुच्छपरप्पवाई,
 ते पिञ्जदोसाणुगया परज्ञामा ।

ए अहम्मे ति दुगु छमाणो,
कखे गुणे जाव सरीरभेउ, ति बेमि ॥१३॥

॥ इय श्रसखव णाम चउत्थ अज्भयण समत्तं ॥

अह अकाममरणिज्जं पञ्चम अज्भयण

अण्णवसि महोहसि, एगे तिणे^१ दुरुत्तरे ।
तत्थ एगे^२ महापन्ने, इम पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥
सन्तिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणन्तिया ।
अकाममरणं चेव, सकाममरणे तहा ॥ २ ॥
दालाण अकाम तु, मरण असइ भवे ।
पण्डियाणं सकाम तु, उवकोसेण सइ भवे ॥ ३ ॥
तत्थिम पठम ठाणं, महावीरेण देसियं ।
कामगिद्वे जहा बाले, भिसं कूराइ कुच्चवइ ॥ ४ ॥
जे गिद्वे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छइ ।
न मे दिद्वे परे लोए, चक्खुदिद्वा इमा रई ॥ ५ ॥
हत्थागया इसे कामा, कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
जणेण सर्द्धि होक्खामि, इड बाले पगबमइ ।
कामभोगाणुराएण, केसं संपडिवज्जइ ॥ ७ ॥
तश्चो से दण्ड समारभइ, तसेसु थावरेसु य ।
अट्टाए य अणट्टाए, भूयगामं विहिसइ ॥ ८ ॥

हिसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुजमाणे सुर मस, सेयमेयति मन्नह ॥ ६ ॥
 कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिढे य इत्थिसु ।
 दुहग्रो मलं सचिणइ, सिसुणागूव्व र्मद्वयं ॥ १० ॥
 तप्रो पुटो आयकेण, गिलाणो परितप्पइ ।
 पभीओ परलोगस्स, कस्माणुष्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥
 सुया मे नरए ठाणा, असीलाण च जा गई ।.
 बालाण कूरकम्माण, पगाढा जत्थ देयणा ॥ १२ ॥
 तत्थोववाइय ठाग, जहा मे तमणुस्सुयं ।
 श्रहकम्मेहि गच्छन्तो, सो पच्छा परितप्पइ ॥ १३ ॥
 जहा सागडिओ जाण, सम हिच्चा महापह ।
 विसमं मरगमोडणो, अक्खे भरगम्मि सोयइ ॥ १४ ॥
 एव धन्म विउङ्कम्म, श्रहन्म पडिवङ्गिया ।
 बाले मच्चुमुह पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयइ ॥ १५ ॥
 तओ से मरणन्तम्मि, बाले सतसइ भया ।
 अकाममरण मरइ, धुत्ते व कलिणा जिए ॥ १६ ॥
 एयं अकाममरण, बालाण तु पवेइय ।
 इत्तो सकाममरण, पण्डियाणं सुणेह मे ॥ १७ ॥
 मरण पि सपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुय ।
 विष्पसण्णमणाघायं, संजयाणं वुसीमओ ॥ १८ ॥
 न इमं सब्बेसु भिक्खुसु, न इमं सब्बेसुगारिसु ।
 नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो ॥ १९ ॥
 सन्ति एगोहि भिक्खुहिं, गारत्था संजमुत्तरा ।
 गारत्थेहि य सब्बेहि, साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥

चीराजिण नगिणिं, जडी सघाडिमुण्डिणं ।
एयाणि वि न तायति, दुस्सीलं परियागयं ॥ २१ ॥

पिंडोलएव दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ ।
भिक्खाए वा गिहत्ये वा, सुव्वए कम्मइ दिवे ॥ २२ ॥

अगारिसामाइयेगाणि, सङ्घो काएण फासए ।
पोसह दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥ २३ ॥

एवं सिक्खासमावन्ते, गिहवासे वि सुव्वए ।
मुच्चइ छ्रविपन्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं । २४ ।

अह जे संबुद्धे भिक्खू, दोण्ह अन्नयरे सिया ।
सव्वदुक्खपहीणे वा. देवे वावि महिड्दीए ॥ २५ ॥

उत्तराइं विमोहाइं, जुइमन्ताप्युप्वसो ।
समाइण्णाइ जक्खेहि, आवासाइ जससिणो ॥ २६ ॥

दीहाउया इड्डिमन्ता, समिढ्हा कामरूपिणो ।
अहुणोववन्तसंकासा, भुज्ञो अच्चिमालिष्पभा ॥ २७ ॥

ताणि ठाणाणि गच्छति,
सिक्खता संजम तवं ।
भिक्खाए वा गिहत्ये वा
जे सति परिनिवृडा ॥ २८ ॥

तैसि सोज्ञा सपुज्ञाणि, संजयाण वुसीमओ ।
न संतसंति मरणते, सीलवन्ता बहुसुया ॥ २९ ॥

तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए ।
विष्पसोएज्ज मेहावी, तहाम्मएण अप्पण्म ॥ ३० ॥

तओ काले अभिष्पेण, सङ्गी तालिसमतिए ।
 विणएज्ज लोमहरिसं, भेथ देहस्स कखए ॥ ३१ ॥
 अह कालस्मि सपत्ने, श्राघायाय समुस्सय ।
 सकाममरण मरइ, तिण्हमन्नयर मुणो, त्ति वेमि ॥ ३२ ॥
 ३। इश्व श्रकधममरणिज्ज पचम अञ्जभयण समत्त ॥

अह खुड्हागनियठिज्ज छटु अञ्जभयणे

जावन्तडविज्जा पुरिसा, सब्बे ते दुवखसमवा ।
 लुप्पन्ति बहुसो भूढा, ससारस्मि अणतए ॥ १ ॥
 समिक्ख पिण्डए तम्हा, पासेजाइपहे बहू ।
 अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मिँत्ति भूएसु कप्पए ॥ २ ॥
 माया पिया फुहसा भाया, भज्जा पुत्ता य श्रोरसा ।
 नाल ते मम ताणाए, चुप्पतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥
 एथमदु सपेहाए, पासे समियद्दसणे ।
 छिन्द गिँद्धि सिणोह च, न कखे युच्चसथव ॥ ४ ॥
 गवासे मणिकुण्डले, पसवो दासपोरस ।
 सब्बमेयं चइत्ताणे कामरूची भविस्ससि ॥ ५ ॥
 (थावर जैगमं चेव धण धन्ने उवखबर ।
 अच्चमाणस्स कम्मेहिं नाल दुक्खाउ मोयणे ॥)
 अञ्जभयणे सब्बग्रो सब्ब, दिस्स पाणे पियायए ।
 न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥

आदाणं नरय दिस्सं, नायएज्ज तणामवि ।
 दोगुञ्छी अप्पणो पाए, दिन्न भु जेञ्ज भोयणं ॥ ७ ॥
 इहमेगे उ मन्त्रंति, अपच्चवस्थाय पावग ।
 आयस्त्य विदिता ण, सद्वदुक्खा विमुञ्जए ॥ ८ ॥
 भणंता अकरेन्ता य, बन्धमोक्षपइण्णणो ।
 वायावीरियमेत्तेण, समासासेति अप्पयं ॥ ९ ॥
 न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्ञाणुसासणं ।
 विसन्ना पावकम्मेर्हि, बाला पडियमाणिणो ॥ १० ॥
 जे केइ सरीरे सत्ता, वणे रुवे य सद्वसो ।
 मणसा कायवक्केण, सद्वै ते दुक्खसभवा ॥ ११ ॥
 आवन्ना हीहमद्वाण, संसारम्म श्रणतए ।
 तम्हा सद्वदिस पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १२ ॥
 बहिया उड्हमादाय, नावकंखे क्याइ वि ।
 घुव्वकम्मवस्थयद्वाए, इमं देहं समुद्धरे ॥ १३ ॥
 विविच्च' कम्मुणो हेडं, कालकखी परिव्वए ।
 गायं पिडस्स पाणत्स, कड लद्धूण भक्खए ॥ १४ ॥
 सन्निर्हि च न कुव्वेज्ञा, लेवमायाए संजए ।
 पवक्खोपत्त समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ॥ १५ ॥
 एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
 अप्पमत्तो पमत्तेहि, पिण्डवाय गवेसए ॥ १६ ॥
 एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरै
 अरहा नायपुत्ते भगव वेसालिए वियाहिए । त्ति बेमि ॥
 ॥ इय खुड्हागनियठिज छट्ठ अञ्जभक्षण समत्त' ॥

अह एलइज्ज सत्तमं अज्ञयण

जहाऽऽएस समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं ।

ओयण जवस देज्जा पोसेज्जावि सयगणे ॥ १ ॥

तश्चो से पुट्टे परिवृढे, जायमेए महोदरे ।

पीणिए विउले देहे, आएस परिक्खए ॥ २ ॥

जाव न एह आएसे, ताव जोवइ सेझुही ।

अह पत्तम्मि आएसे, सीस छेत्तूण भुज्जइ ॥ ३ ॥

जहा से खलु उरद्दमे, आएसाए समीहिए ।

एव बरले श्रहम्मट्टे, ईहइ निरयाउय ॥ ४ ॥

हिसे बाले मुसावाई, अद्वाणमि चिलोवए ।

अन्नदत्तहरे तेषे, माई क तु हरे सढे ॥ ५ ॥

इत्थीविसथगिद्दे य, महारभपरिगहे ।

भुजमाणे सुर भस, परिवृढे परदमे ॥ ६ ॥

श्रयक्करभोई य, तु दिल्ले चिय लरेहिए ।

आउय नरए कखे, जहाऽऽएस व एलए ॥ ७ ॥

आसण सयणं जाण, वित्त कामे य भु जिया ।

दुस्साहड धण हिच्चा, बहु सचिणिया रय ना द ॥

तश्चो कम्मगुरु जतू, पच्चुपन्नपरायणे ।

आएव अगयरएसे, मरणतम्मि सरेयइ ॥ ८ ॥

तश्चो आउपरिक्खीणे, चुयदेहा विहिंसगा ।

आसुरीय दिस बाला, गच्छति शवसा तम ॥ ९ ॥

जहा कागिणिए हेउं, सहस्र हारए नरो ।
 अपतथं अम्बग भोज्ञा, राया रज्ज तु हारए ॥ ११ ॥
 एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिए ।
 सहस्रगुणियः भुज्ञो, आउ कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥
 अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई ।
 जाणि जीयति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाडए ॥ १३ ॥
 जहा य तिन्नि वणिया, मूल घेत्तूण निगया ।
 एगोऽत्थ लहए लाभं, एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥
 एगो मूल पि हारिता, आगओ तत्थ वाणिओ ।
 ववहारे उवमा एसा, एव धम्मे विजाणह ॥ १५ ॥
 माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवो ।
 मूलच्छेण जीवाण नरगतिरिक्खत्तण धुव ॥ १६ ॥
 दुहओ गई बालस्स, आवईवहमूलिया ।
 देवत माणुसत्त च, ज जिए लोलयासढे ॥ १७ ॥
 तओ जिए सइ होइ, दुविहं दुगाइ गए ।
 दुल्लहा तस्स उम्मगा, अद्वाए सुचिरादवि ॥ १८ ॥
 एव जियं सपेहाए, तुलिया बाल च पण्डियं ।
 मूलिय ते पवेसन्ति, माणुसि जोणिमेन्ति जे ॥ १९ ॥
 वैमायार्हि सिक्खार्हि, जे नरा गिहि सुव्वया ।
 उवेंति माणुस जोणि, कम्मसज्जा हु पाणिणो ॥ २० ॥
 जैसि तु दिउला सिक्खा, मूलिय ते अइच्छया ।
 सीलवन्ता सविसेसा- अदोणा जति देवय ॥ २१ ॥
 एवमदोणवं भिक्खू, आगारि च वियाणिया ।
 कहणू जिज्ञमेलिक्ख, जिज्ञमाणे न सविदे ॥ २२ ॥

जहा कुसगे उदग, समुद्रेण समं मिणे ।
एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिए ॥ २३ ॥

कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धमिम आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउ, जोगखेम न सविदे ॥ २४ ॥

इह कामाणियदृस्स, अत्तटु अवरज्भइ ।
सोच्चा नेयाउयं मग, ज भुज्जो परिभस्सइ ॥ २५ ॥

इह कामाणियदृस्स, अत्तटु नावरज्भइ ।
पूइदेहनिरोहेण, भवे देविति मे सुय ॥ २६ ॥

इड्डी जुई जसो वणो, आउ सुहमणुत्तर ।
भुज्जो जत्य मणुस्सेमु, तत्थ से उववज्जइ ॥ २७ ॥

बालस्स पस्स बालत्त, अहम्म पडिवज्जिया ।
चिच्चा धम्म अहम्मिटु, नरए उववज्जइ ॥ २८ ॥

धीरस्स पस्स धीरत्त, सव्वधम्माणुवत्तिणो' ।
चिच्चा अधम्म धम्मिटु, देवेसु उववज्जइ ॥ २९ ॥

तुलियाण बालभाव, अबाल चेव पण्डए ।
चइऊण बालभाव, अबाल सेवए मुणी । त्ति वेमि ॥ ३० ॥

॥ इय एत्य णाम सत्तम श्रज्जभयण समत्त ॥

अह काविलियं अदुमं श्रज्जभयण

अधुवे असासयमिम,
ससारमिम दुवखपउराए ।

कि नाम होङ्ग त कस्मयं
 जेणाह दुग्गद न गच्छेज्ञा ॥ १ ॥
 विजहित् पुव्वसजोय,
 न सिणेह कर्हिचि कुव्वेज्ञा ।
 असिणेह सिणेहकरेहिं,
 दोसपश्चोनेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
 तो नाणदसणसमग्गो,
 हियनिस्सेसाए सच्चजोवाणं ।
 तेसि विमोक्खणद्वाए,
 भासइ मुणिवरो विग्रयमोहो ॥ ३ ॥
 सच्चं गथं कलह च,
 विष्पजहे तहाविहं भिक्खू ।
 सच्चेसु कामजाएसु,
 पासमाणो न लिष्पइ ताई ॥ ४ ॥
 भोगामिसदोसविसन्ने,
 हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे^१ ।
 बाले य मदिए मूढे,
 बजभइ मच्छिया च खेलस्मि ॥ ५ ॥
 दुष्परिच्छया इसे कामा,
 नो सुजहा अधीरपुरिसेहि ।
 अह सति सुच्चया साहू,
 जे तरति अतर वणिया चा ॥ ६ ॥
 समणा मु एगे वयमाणा,
 पाणवहं मिया अयाणन्ता ।

^१ विवर्जनत्थ ।

मन्दा निरय गच्छति,
 बाला पावियाहिं दिद्वीहिं ॥ ७ ॥
 न हु पाणवहं अणुजाणे,
 मुच्चेज्ज कथाइ सव्वदुक्खाण ।
 एवमारिएहिं अक्खायं,
 जेहिं इमो साहृधम्मो पण्णत्तो ॥८॥
 पाणे य नाइवाएङ्गा,
 से समिए त्ति बुझइ ताई ।
 तओ से पावय कम्म,
 निझाइ उदग व थलाओ ॥९॥
 जगनिस्सर्हि भूएहिं,
 तसनामेहि थावरेहि च ।
 नो तेसिमारमे दड,
 मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥
 सुद्धेसणाश्रो नच्चा ण,
 तत्थ ठवेझ भिक्खु अप्पाण ।
 जायाए धासमेसेझा,
 रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥
 पन्ताणि चेव सेवेझा,
 सीर्यपिंड पुराणकुम्भास ।
 श्रद्धु बुक्स पुलागं वा,
 जवणद्वाए निसेवए मथुं ॥१२॥
 जे लक्खण च सुविण च,
 अङ्गविझं च जे पउजति ।

न हु ते समणा बुद्धति.

एवं आयरिएहि श्रवक्षायं ॥१३॥

इह जीवियं अणियमेत्ता,

पभट्टा समाहिजोएहि ।

ते कामभोगरसगिद्धा,

उववज्जंति आसुरे काए ॥१४॥

तत्तोऽवि य उव्वद्वित्ता,

संसारं बहु अणुपरियडंति ।

बहुकम्मलेवलित्ताणं,

बोही होइ सुदुङ्गहा तेसि ॥१५॥

कसिणेषि जो इमं लोयं,

पडिपुणं द्वलेञ्च इक्कस ।

तेणावि से न संतुस्ते,

इह दुष्पूरए इमे आया ॥१६॥

जहा लाहो तहा लोहो,

लाहा लोहो पचड्डृइ ।

दोमासकय कञ्जं,

कोडीए चि न निट्ठिय ॥१७॥

न रक्खसीसु गिजभेज्ञा,

गडवच्छासुऽणेगचित्तासु ।

जाओ पूरिसं पलोभित्ता,

खेलति जहा व वासेहि ॥१८॥

नारीसु नोवगिजभेज्ञा,

इत्थी विष्पजहे अणगारे ।

धर्मम च पेसलं नज्ञा,
तत्थ ठवेज्ञ भिक्खू अप्पाण ॥१६॥

इत्र एस धर्मे अवखाए,
कविलेण च विसुद्धपत्तेण ।
तरिहिति जे उ काहिति,
तेहि आराहिया दुवे लोगा ॥ त्ति वेमि ॥२०॥
॥ काविलीय श्रद्धम अञ्जभ्यण समत ॥

अह नवमं नमिपव्वज्ञा अञ्जभ्यणं

चहृक्षण देवलोगाश्रो, उववन्नो माणुसमि लोगमि ।
उवसन्तमोहणिज्ञो, सरइ पोराणिय जाइ ॥१॥
जाइ सरितु भयव, सहसबुद्धो अणुत्तरे धर्मे ।
पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमङ्ग नमी राया ॥२॥
से देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगाश्रो वरे भोए ।
भु जित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिज्ञइ ॥३॥
मिहिल सपुरज्जणवय, बलमोरोह च परियण सवं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्तमहिंडीश्रो भयव ॥४॥
कोलाहलगसभूय, आसी मिहिलाए पव्वयन्तमि ।
तइया रायरिसमि, नमिमि अभिणिक्खमतमि ॥५॥
अबुद्धिय रायरिसि, पब्ज्ञाठाणमुत्तम ।
सक्षो माहणरुवेण, इमं वयगमब्बवी ॥६॥

किणु भो अङ्ग मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
 सुव्वन्ति^१ दारुणा सदा, पासाएसु गिहेसु य ॥७॥
 एयमटु निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥८॥
 मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
 पत्तपुष्पफलोवेए, बहूण बहुगुणे सया ॥९॥
 वाएण हीरमाणम्म, चेइयम्म मणोरमे ।
 दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदति भो ! खगा ॥१०॥
 एयमटु निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविदो इणमब्बवी ॥११॥
 एस अग्गी य वाऊ य, एय डज्झइ मंदिर ।
 भयवं अन्तेउरं तेण, कीस णं नावपेक्खह ॥१२॥
 एयमटु निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥१३॥
 सुहं वसामो जीवामो, जेसि मो नत्थ किंचण ।
 मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचण ॥१४॥
 चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
 पियं न विज्ञए किंचि, अप्पियं पि नविज्ञए ॥१५॥
 बहुं खु मुणिणो भहुं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
 सब्बओ विष्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥१६॥
 एयमटु निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविदो इणमब्बवी ॥१७॥

१ सुच्चन्ति ।

पागार कारइत्ताणं, गोपुरद्वालगाणि य ।
उस्सूलगसयग्धीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥१८॥

एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायारसी, देविद इणमब्बवी ॥१९॥

सद्वं नगर किञ्चा, तवसवरमगल ।
खर्ति निउणपागार, तिगुत्त दुष्पवसय ॥२०॥

धणु परकम किञ्चा, जीव च इरिय सया ।
धिइ च केयण किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥२१॥

तवनारायजुत्तेणं, भित्तूण कम्मकचुय ।
मुणी विगयसगामो, भवाओ परिसुच्चए ॥२२॥

एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविन्दो इणमब्बवी ॥२३॥

पासाए कारइत्ताण, वडूमाणगिहाणि य ।
बालगगपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२४॥

एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्द इणमब्बवी ॥२५॥

ससयं खलु सो कुणइ, जो मगे कुणइ घर ।
जत्येव गन्तुमिच्छेज्ञा, तत्थ कुव्वेज्ञ सासय ॥२६॥

एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविन्दो इणमब्बवी ॥२७॥

आमोसे लोमहारे य, गठिमेए य तक्करे ।
नगरस्स खेम काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२८॥

एयमदुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥२६॥
 असइं तु मणुस्सेहि, मिच्छा दंडो पउजए ।
 अकारिणोइत्थ बजभंति, मुच्चए कारओ जणो ॥३०॥

एयमदुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिस, देविन्दो इणमब्बवो ॥३१॥

जे केइ पत्थिवा तुजभं, नानमति नराहिवा !
 वसे ते ठावइत्ता ण, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥

एयमदुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥३३॥
 जो सहस्स सहस्साण, संगामे दुझए जिणे ।
 एगं जिणेज्ज अप्पण, एस से परमो जओ ॥३४॥

अप्पाणसेव जुजभाहि, कि ते जुजभेण बजभओ ?
 अप्पणा चेव अप्पाण, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥

पर्चिदियाणि कोहं, माण मायं तहेव लोह च ।
 दुज्जय चेव अप्पाण, सब्बं अप्पे जिए जिय ॥३६॥

एयमदुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसि, देविन्दो इणमब्बवी ॥३७॥

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे ।
 दच्चा भोच्चा य जिह्वा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥

एयमदुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥३९॥

जो सहस्र सहस्राणं, मासे मासे गव दए ।
 तस्स वि संजमो सेश्रो, अदिन्तस्स वि किञ्चण ॥४०॥
 एयमहु निसामित्ता, हेऊकारणचोइश्रो ।
 तश्रो नर्मि रायरिसि, देविन्दो इणमब्बवी ॥४१॥
 घोरासमं चइत्ताण, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
 इहेव पोसहरश्रो, भवाहि मणुयाहिवा ! ॥४२॥
 एयमहु निसामित्ता, हेऊकारणचोइश्रो ।
 तश्रो नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४३॥
 मासे मासे तु जो बाली, कुसग्गेण तु भुजए ।
 न सो सुश्रवायधम्मस्स, कलं श्रग्धइ सोलर्सि ॥४४॥
 एयमहु निसामित्ता, हेऊकारणचोइश्रो ।
 तश्रो नर्मि रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४५॥
 हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कसं दूसं च वाहण ।
 कोसं बड्डावइत्ताण, तश्रो गच्छसि खत्तिया ! ॥४६॥
 एयमहु निसामित्ता, हेऊकारण चोइश्रो ।
 तश्रो नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४७॥
 सुवण्णरूपस्स उ पव्यया भवे,
 सिया हु केलाससमा शसखया ।
 नरस्स लुद्धस्स न तेहि किञ्चि,
 इच्छा हु आगाससमा अणतिया ॥४८॥
 पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
 पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्ञा तव घरे ॥४९॥
 एयमहु निसामित्ता, हेऊकारणचोइश्रो ।
 तश्रो नर्मि रायरिसि, देविन्दो इणमब्बवी ॥५०॥

अच्छेरयसदभुद्दए, भोए चयसि पत्थिवा ।
 असन्ते कामे पत्थेसि, सकप्येण विहम्मसि ॥५६॥
 एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नसी रायसिसी, देव्विंदं इणमब्बवी ॥५७॥
 सल्लं कासा विसं कासा, कासा आसीविसोवसा ।
 कामे पत्थेमाणा, आकामा जति दोगाइ ॥५८॥
 अहे वयति कोहेण, माणेण अहमा गई ।
 माया गइपडिगधाओ, लोहाओ दुहओ भय ॥५९॥
 अवउज्जिभउण माहणहवं, विउच्चिउण इन्दत्तं ।
 वन्दइ अभित्थुणत्तो, इमाहि महुराहि वगूर्हि ॥५५॥
 अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
 अहो ते निरक्षिया माया. अहो लोहो वसीकओ ॥५६॥
 अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु महवं ।
 अहो ते उत्तमा खन्तो, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥
 इहं सि उत्तमो भन्ते, पेच्चा' होहिसि उत्तमो ।
 लोगुत्तमुत्तम ठाण, सिँद्ध गच्छसि नीरओ ॥५८॥
 एवं अभित्थुणतो, रायर्सिं उत्तमाए सद्वाए ।
 पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो चन्द्र उत्तमो ॥५९॥
 तो वंदिउण पाए, चक्कंकुसलवखणे मुणिवरस्स ।
 आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडो ॥६०॥
 नमी नमेइ अप्पाणं. सक्खं सक्केण चोइओ ।
 चइउण गेहं च वेदेही, सामणे पञ्जुवढिओ ॥६१॥

एवं करेति संबुद्धा, पण्डिया पवित्रकथणा ।
विणियदृति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि, त्तिवेमि ॥६२॥

॥ इह नमीपववज्ञा नवम अञ्जभयण समत्त ॥

अह दुमपत्तय दसमं अञ्जभयण

दुमपत्तए पहुरए जहा,
निवडइ राहगणाण श्रद्धए ।
एव मणुयाण जीविय,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १ ॥

कुसगो जह ओसविन्दुए,
योवं चिढुइ लम्बमाणए ।
एवं मणुयाण जीविय,
समय गोयम ! मा पमायए ॥ २ ॥

इह इत्तरियमि आउए,
जीवियए बहुपच्चवायए ।
विहृणाहि रयं पुरे कढं,
समय गोयम ! मा पमायए ॥ ३ ॥

दुल्लहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो,
समय गोयम ! मा पमायए ॥ ४ ॥

पुढविकायमझगओ,
उष्कोसं जीवो उ सवसे ।
कालं सखाईय,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ५ ॥

आउङ्कायमइगओ,
उङ्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥६॥

तैउङ्कायमइगओ,
उङ्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥७॥

वाउङ्कायमइगओ,
उङ्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥८॥

घणस्सइकायमइगओ,
उङ्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमण्नतदुरन्तयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥९॥

बैइंदियकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
काल संखिज्जुसन्नियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥

तैइंदिकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
काल संखिज्जुसन्नियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥११॥

चउर्दियकायमइगओ,
उक्कोस जीवो उ सवसे ।
कालं सखिस्त्रसन्निय,
समय गोयम ! मा पमायए ॥१२॥

पर्चिदियकायमइगओ,
उक्कोस जीवो उ सवसे ।
सत्तद्वभवगहणे,
समय गोयम ! मा पमायए ॥१३॥

देवे नेरइए य श्रङ्गगओ,
उक्कोस जीवो उ सवसे ।
इककेक्कभवगहणे,
समय गोयम ! मा पमायए ॥१४॥

एवं भवससारे,
ससरइ सुहासुहेहि कम्मेहि ।
जीवो पमायबहुलो,
समय गोयम ! मा पमायए ॥१५॥

लद्धूण वि माणुसत्तण,
आरिन्त्त पुणरावि दुल्लह ।
बहवे दसुया मिलकुया,
समय गोयम ! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूण वि आरियत्तण,
अहीणपञ्चेदियर हु दुल्लह ।
विगलिंदियरा हु दीसइ,
समय गोयम ! मा पमायए ॥१७॥

श्रहीणपंचेदियतं पि से लहे,
 उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
 कुतित्थनिसेवए जणे,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूण वि उत्तमं सुइ,
 सद्हणा पुणराबि दुल्लहा ।
 मिच्छत्तनिसेवए जणे,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥१९॥

धम्म पि हु सद्हन्तया,
 दुल्लह्या काएण फासया ।
 इह कामगुणेहि मुच्छया,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२०॥

परिजूरङ्ग ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवति ते ।
 से सोयबले य हायङ्ग,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२१॥

परिजूरङ्ग ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवति ते ।
 से चकखुबले य हायङ्ग,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२२॥

परिजूरङ्ग ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवति ते ।
 से धाणबले य हायङ्ग,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२३॥

परिजूरद्द ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरथा हवति ते ।
 से जिबभबले य हायइ,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२४॥

परिजूरद्द ते सरीरय,
 केसा पण्डुरथा हवति ते ।
 से फासधले य हायइ,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरद्द ते सरीरय,
 केसा पण्डुरथा हवति ते ।
 से सव्वबले य हायइ,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरड्दे गण्डे विसूइया,
 श्राथेंका विविहा फुसंति ते ।
 विहड्द विद्धसह ते सरीरय,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

चोच्छन्द सिणेहमप्यणो,
 कुमुयं सारद्य च पाणिय ।
 से सव्वसिणेहर्वज्ञिए,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिज्जाण घणे च भारियं,
 पव्वइश्चो हि सि अणमारिय ।
 सा वन्त पुणो वि आइए,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

श्रवउज्जिभय मित्तबन्धवं,
विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइय गवेसए,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अझ दिस्सइ,
बहुमए दिस्सइ मगदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

श्रवसोहिय कण्टगापह,
ओइण्णो सि पहं महालय ।
गच्छसि मग विसोहिया,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३२॥

शबले जह भारवाहए,
मा मगो विसमेऽवगाहिया ।
एच्छा पच्छाणुताचए,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३३॥

तिण्णो हु सि अण्णवं महं,
कि पुण चिटुसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३४॥

अकलेवरसेणि उस्सया,
सेमं च सिवं अणुत्तर,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे,
 गामगए नगरे व संजए ।
 सतिमग्ग च बूहए,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥३६॥
 बुद्धस्स निसम्म भासिय,
 सुकहियमटुपओवसोहिय ।
 राग दोस च छिन्दिया,
 सिद्धिगइं गए गोयमे, त्तिबेमि ॥३७॥
 ॥ इइ दुमपत्तय दसम अर्जभ्यण समत्त ॥

अह बहुस्सुयपुज्जं जाम एगारसं अर्जभ्यणं
 संजोगा विष्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
 आयार पाउकरिस्सामि, आणुपुविं सुषेह मे ॥१॥
 जे यावि होइ निव्विज्जे, यद्वे लुद्वे अणिगग्हे ।
 अभिक्खण उल्लवइ, अविणीए अबहुस्सुए ॥२॥
 अह पच्चाहिं ठाणेहिं, जेर्हि सिक्खा न लब्भह ।
 थभा कोहा' पमाएण, रोगेणालस्सएण य ॥३॥
 अह श्रद्धाहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलि त्ति बुच्चइ ।
 अहस्सिरे सथा दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥४॥
 नासीले न विसीले, न सिथा अइलोलुए ।
 अकोहणे सञ्चरए, सिक्खासीलि त्ति बुच्चइ ॥५॥
 अह चोहसर्हि ठाणेहिं, चट्टमाणे उ सजए ।
 अविणीए बुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छह ॥६॥

अभिक्खण कोही हवइ, पबन्धं च पकुच्चइ ।
मेत्तिज्ञमाणो वमइ, सुयं लद्धूण मज्जइ ॥७॥

अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पइ ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावय ॥८॥
पद्मणवाई दुहिले, थद्वे लुद्वे अणिगगहे ।
असविभागो अवियत्ते, अविणीए त्ति बुच्चइ ॥९॥

अह पन्नरसहि ठाणेहि, सुविणीए त्ति बुच्चइ ।
नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥१०॥

अप्पं च अहिक्खवइ, पबन्धं च न कुच्चइ ।
मेत्तिज्ञमाणो भयइ, सुय लद्धुं न मज्जइ ॥११॥

न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पइ ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासइ ॥१२॥
कलहडमरवज्जिए, बुद्वे अभिजाइगे ।
हिरिम पडिसंलीणे, सुविणीए त्ति बुच्चइ ॥१३॥

वसे गुरुकुले णिच्चं, जोगव उवहाणवं ।
पियंकरे पियवाई, से सिखं लद्धूमरिहइ ॥१४॥

जहा संखम्मि पयं, निहिय दुहश्रो वि विरायइ ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धर्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥

जहा से कम्बोयाणं, आइणे कथए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥१६॥
जहाइणसमालृढे, सूरे दढपरकक्से ।
उभश्रो नन्दिघोसेण, एव हवइ बहुस्सुए ॥१७॥

जहा करेणुपरिकिणे, कु जरे सद्विहायणे ।
 बलवते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥
 जहा से तिखर्वासिगे, जायखन्धे विरायइ ।
 वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥

 जहा से तिखदाढे, उदगे दुप्पहसए ।
 सीहे मिथाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥
 जहा से वासुदेवे, सखचकगयाघरे ।
 अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥
 जहा से चाउरन्ते, चक्कवटीमहिड्विए ।
 चोद्दसरयणाहिवई, एव हवइ बहुस्सुए ॥२२॥

 जहा से सहस्रक्षे, वज्रपाणी पुरन्दरे ।
 सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥

 जहा से तिमिरविद्धसे, उच्चिद्धन्ते दिवायरे ।
 जलन्ते इव तेण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥
 जहा से उडुवई चन्दे, नक्खत्तपरिवारिए ।
 पडिपुणे पुण्णमासिए एव हवइ बहुस्सुए ॥२५॥

 जहा से सामाइयाण, कोट्टागारे सुरक्षिए ।
 नाणाधन्पडिपुणे, एव हवइ बहुस्सुए ॥२६॥

 जहा सा दुमाण पवरा, जबू नाम सुदसणा ।
 अणादियस्स देवस्स, एव हवइ बहुस्सुए ॥२७॥

 जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरगमा ।
 सीया नौलवन्तपवहा, एव हवइ बहुस्सुए ॥२८॥

जहा से नगाण पवरे, सुभं मन्दरे गिरी ।
 नाणोसहिपञ्चलिए, एव हवइ बहुस्सुए ॥२९॥

जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खश्रोदए ।
 नाणारथणपडियुणे, एव हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

समुद्रगंभीरसमा दुरासया,
 अचक्किया केणइ दुप्पहसया ।
 सुयस्स पुणा विजलस्स ताइणो,
 खवित्तु कम्मं गडमुत्तम गया ॥३१॥

तम्हा सुयमहिडिजा, उत्तमटुगवेसए ।
 जेणप्पाणं पर चेव, सिंद्धि सपाउणेज्जासि, त्ति बेमि ॥३२॥

॥ इह वहूस्सुयपुज्ज णाम एगारस अज्ञयण समत्त ॥

अह हरिएसिज्ज बारहं अज्ञयणं
 सोवागकुलसंभूश्रो, गुणुत्तरधरो मुणी ।
 हरिएसबलो नाम, आसी भिक्खू जिइन्दश्रो ॥१॥

इरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य ।
 जओ आयाणनिक्खेवे, सजओ सुसमाहिश्रो ॥२॥

मणगुत्तो, वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दश्रो ।
 भिक्खट्टा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडमुवडिश्रो ॥३॥

त पासिऊणं एज्जन्तं, तवेण परिसोसिय ।
 पन्तोवहिउवगरणं, उवहसन्ति अणारिया ॥४॥

जाइमयपडिथद्वा, हिसगा अजिइन्दिया ।
 अवम्भचारिणो बाला, इम वयणमब्बवो ॥५॥

कथरे आगच्छइ दित्तरुवे ?
 काले विगराले फोकनासे ।
 श्रोमचेलए पसुपिसायमूए,
 सकरदूस परिहरिय कण्ठे ॥६॥

कथरे तुम इय अदसंज्ञजे ?
 काए व आसा इहमागओसि ?
 श्रोमचेलया पसुपिसायमूया,
 गच्छ खलाहि किमिहं ठिओऽसि ॥७॥
 जषखे ताँह तिन्दुयरुक्खवासी,
 श्रणुकम्पश्रो तस्स महामुणिस्स ।
 पच्छायइत्ता नियग सरीरं,
 इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥८॥

समणो अहं सजओ वम्भयारी,
 विरओ घणपयणपरिगहाओ ।
 परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले,
 अङ्गनस्स अट्टा इहमागओमि ॥९॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,
 अन्नं पमूयं भवयाणमेयं ।
 जाणाहि मे जायण जीविणु ति,
 सेसावसेस लहउ तवस्सी ॥१७॥

उवक्खडं भोयण माहणाण,
 अत्तट्टियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
 न ऊ वयं एरिसमन्नपाण,
 दाहामु तुज्जभ किमिहं ठिओ सि ? ॥११॥

थलेसु बोयाहं ववन्ति कासगा,
 तहेव निन्नेसु य श्राससाए ।
 एथाए सद्ग्राए दलाह मज्ज्ञं,
 आराहए पुण्णमिण खु खित्तं ॥१२॥
 खेत्ताणि अम्हं चिइयाणि लोए,
 जहिं पकिधणा विरुहन्ति पुणा ।
 जे माहणा जाइविज्ञोववेया,
 ताइं तु खित्ताइ सुपेसलाइ ॥१३॥
 कोहो य माणो य वहो य जैसि,
 मोस अदत्तं च परिग्रह च ।
 ते माहणा जाइविज्ञाविहीणा,
 ताइ तु खित्ताइं सुपावयाइ ॥१४॥
 तुबमेत्थ भो भारधरा गिराणं,
 अटुं न जाणेह अहिज्ञ वेए ।
 उच्चावयाइ मुणिणो चरन्ति,
 ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइं ॥१५॥
 अञ्जक्षावयाण पडिकूलभासी;
 पभाससे किं नु सगासि अम्हं ।
 अवि एयं विणस्सउ अन्नपाण,
 न य णं दाहामु तुम नियण्ठा ! ॥१६॥
 समिईहि मज्ज्ञं सुसमाहियस्स,
 गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
 जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्ञं,
 किमज्ञ जल्नाण लहित्थ लाहं ? ॥१७॥

के इत्थ खत्ता उवजोइया वा,
अजभावया वा सह खण्डएहि ? ।
एय खु दण्डेण फलएण^१ हन्ता,
कण्ठमिम घेतूण खलेज्ज जो ण ॥१८॥

अजभावयाण वयण सुणेत्ता,
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव,
समागया त ईंस तालयन्ति ॥१९॥

रन्नो तहि कोसलियस्स धूया,
भद्रति नामेण अणिन्दियगी ।
त पासिया सजयहम्ममाणं,
कुद्दे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥

देवाभिग्रोगेण निश्रोइएणं,
दिन्ना मु रन्ना मणसा न भाया ।
नरिन्ददेविन्ददभिवन्दिएण,
जेणामिम वंता इसिणा स एसो ॥२१॥

एसो हु सो उगतवो महप्पा,
जिइन्दिग्रो सजग्रो बम्भयारी ।
जो मे तथा नेच्छइ दिल्लमार्ण,
पितणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥

महाजसो एस महाणुभागो,
घोरव्वश्रो घोरपरकमो य ।

मा एयं हीलेह अहोलणिज्जं,
मा सब्वे तेण मे निद्वेज्ञा ॥२३॥

एयाइ तीसे वयणाइ सोज्ञा,
पत्तीइ भद्राइ सुभासियाइ ।
इसिस्स वेयावडियद्वयाए,
जवखा कुमारे विणिवारयन्ति ॥२४॥

ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्षे,
असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते,
पासित्तु भद्रा इणमाहु भुज्ञो ॥२५॥

गिरि नहेहि खणह,
अय दत्तेहि खायह ।
जायतेय पाएहि हणह,
जे भिक्खुं श्रवमन्नह ॥२६॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी,
घोरववश्रो घोरपरक्कमो य ।
अगर्ण व पक्खन्द पयंगसेणा,
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥

सीसेण एय सरण उवेह,
समागया सव्वजणेण तुब्मे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धण वा,
लोगपि एसो कुविश्रो डहेज्ञा ॥२८॥

शवहेडियपिद्विसउत्त मगे,
पसारिया बाहु अकम्मचेट्टे ।

निवेदियच्छ्वे रुहिरं वमन्ते,
उद्धंसुहे निगग्यजीहनेते ! ॥२६॥

ते पासिथा खण्डयकटुभूए,
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसि पसाएङ्ग सभारियाओ,
हीलं च निन्द च खमाह भन्ते ॥३०॥

बालेहि शूढोहि अयाणएर्हि,
ज हीलया तस्स खमाह भन्ते !
महृप्पसाथा इसिणो हवन्ति,
न हु मुषी कोवपरा हवन्ति ॥३१॥

पुँध्व च इण्हि च श्रणागयं च,
मणप्पश्चोसो न मे अतिथ कोइ ।
जश्क्षाहा हु वेयावडियं करेन्ति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

अत्थं च धन्मं च वियाणमाणा,
तुव्वभे न वि कृप्पह भृहपन्ना ।
तुव्वभं तु पाए सरणं उवेसो,
समागया सब्बजणेण अम्हे ॥३३॥

अच्चेमु ते महाभाग,
न ते किञ्चि न अञ्जिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूर,
नाणा-वजण-सजुयं ॥३४॥

इम च मे अतिथ पभूयमक्ष,
 त भुंजू अम्ह अणुगहट्टा ।
 बादं ति पदिच्छइ भत्त पाणं,
 मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥
 तहियं गन्धोदयपुष्कवासं,
 दिव्वा तहिं वसुहारा य बुट्टा ।
 पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं,
 आगासे अहो दाणं च घुट्टुं ॥३६॥
 सक्ख खु दीसइ तबोविसेसो,
 न दीसइ जाइविसेस कोई ।
 सोवागपुत्तं हरिएससाहु,
 जस्सेरिसा इड्डि महाणुभागा ॥३७॥
 कि माहणा ! जोइसमारभन्ता,
 उदएण सोर्हि बहिया विमग्गहा ।
 जं मग्गहा बाहिरिय विसोहिं,
 न ल सुविट्टुं कुसला वयन्ति ॥३८॥
 कुसं च जूब तणकटुमिंग,
 सायं च पायं उदग फुसन्ता ।
 पाणाइं सूयाइं विहेड्यन्ता,
 भुज्जो वि मन्दा पगरेह पाव ॥३९॥
 कहं घरे भिक्खु ! वयं जयामो.
 पावाइ कम्माइ पुणोल्लयामो ।
 अक्खाहि जे सजय ! जक्खपूङ्या,
 कहं सुइट्टुं कुसला वयन्ति ॥४०॥

छङ्गीवकाए असमारभन्ता,

मोसं शदतं च असेवमाणा ।

परिगगह इत्थश्चो माण मायं,

एयं परिज्ञाय चरंति दत्ता ॥४१॥

सुसबुडा पञ्चाहि सवरेहि,

इह जीवियं अणवकखमाणा ।

बोसहुकाया सुहच्चतदेहा,

महाजय जयइ जज्ञसिहु ॥४२॥

के ते जोई के व ते जोइठाणो ?

काते सुया किं च ते कारिसंग ?

एहा य ते कथरा सन्ति भिक्खु ?

कथरेण होमेण हुणासि जोइ ? ॥४३॥

तवो जोई जीवो जोइठाण,

जोगा [सुया सरीरं कारिसमं ।

कम्मेहा संजमजोगसन्ति,

होमं हुणामि इसिणं पसत्यं ॥४४॥

के ते हरए के य ते सन्तितिथे ?

कहिं सिणाश्चो व रय जहासि ?

आइवख ये संजय ! जवखपूह्या,

इच्छामो नाउ भवश्चो सगासे ॥४५॥

धम्मे हरए बम्भे सन्तितिथे,

अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।

जहिंसिणाश्चो विमलो विसुद्धो,

सुसीइमूश्चो पजहामि दोस ॥४६॥

एयं सिणाण कुसलेहि दिंहं,
महासिणाण इसिणं पसत्थं ।
जर्हि सिण्हाया विमला विसुद्धा,
महारिसी उत्तम ठाण पत्ते, त्ति वेमि ॥४७॥

॥ इइ हरिएसिज्ज बारसमज्जभयण समत ॥

अहु चित्तसम्भूद्दज्ज तेरहमं श्रज्जभयणं

जाईपराजिश्चो खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणापुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माश्चो ॥ १ ॥

कम्पिल्ले सम्भूश्चो, चित्तो पुण जाश्चो पुरिमतालम्मि ।
सेट्टिकुलम्मि विसाले, धम्म सोळण पद्वद्दश्चो ॥ २ ॥

कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुखफलविवारं, कहन्ति ते एक्षमेक्षस्स ॥ ३ ॥

चक्कवट्टी महिङ्गीश्चो, बम्भदत्तो महायसो ।
भायर बहुमाणेण, इम वयणमब्बवी ॥ ४ ॥

आसीमो भायरा दोवि, अन्नमन्नवसा गुगा ।
अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥ ५ ॥

दासा दसणे आसी, मिया कार्लिजरे नगे ।
हंसा मयगतीराए, सोवागा कासिभूमिए ॥ ६ ॥

देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिङ्गिया ।
इमा नो छट्टिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विच्चिन्तिया ।
तेसि फेलविवागेण, विष्प्रोगमुवागया ॥ ८ ॥

सञ्चासोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
ते ग्रन्थ परिभुंजामो, कि नु चित्ते वि से तहा ? ॥१॥

सब्दं सुचिण सफल नराण,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तर्मेहि,
आया ममं पुणफलोववेए ॥१०॥

जाणाहि सभूय ! महाणुभाग,
महिड्युय पुणफलोववेय ।
चित्त पि जाणाहि तहेव राय,
इड्ढी जुई [तस्स वि य प्पभूया ॥११॥

महत्थरूवा	वयणप्पभूया,
	गाहाणुगीया नरसघमञ्चे ।
ज भिक्खुणो	सीलगुणोववेया,
	हहु जयते समणोमि जाओ ॥१२॥
उच्चोयए	भहु कक्के य षम्मे,
	पदेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं	गिह चित्तधणप्पभूयं,
	पसाहि पचालगुणोववेयं ॥१३॥
नहैंहि	गौएहि य चाइएहि,
	सारीजणाहि परिवारयन्तरे ।
भुजाहि	भोगाइ इमाइ भिक्खु !
	मम रोयइ पञ्चन्ना हु दुक्खं ॥१४॥
त	पुष्पनेहेण क्याणुराय,
	वराहिव कामगुणेसु गिर्दं ।

धर्मस्तिसओ तस्त हिघाणुपेही,
 चित्तो इमं वयणमुदाहरित्या ॥१५॥
 सत्त्वं विलवियं गीयं,
 सत्त्वं नहुं विडम्बियं ।
 सत्त्वे आभरणा भारा,
 सत्त्वे कामा दुहावहा ॥१६॥
 बालाभिरामेसु दुहावहेसु,
 न तं चुह कामगुणेसु रायं !
 विरत्तकामाण तवैविणाण,
 जं भिक्खुणं सीलगुणे रथाण ॥१७॥
 नर्दि ! जाई अहमा नराण,
 सोवागाजाई दुहओ गथाण ।
 जहि वय सत्त्वजप्तस्स वैस्सा,
 वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥१८॥
 तीसे य जाई उ पावियाए,
 दुच्छ्रामु सोवागनिवेसणेसु ।
 सत्त्वस्स लोगस्त्त दुगच्छिल्ला,
 इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥१९॥
 सो दाणिसि राय ! महाणुभागो,
 महिडिभ्रो पुणफलोववेओ ।
 अइतु भोगाइं असासयाइं,
 आदाणहेडं अभिणिक्षमाहि ॥२०॥
 इह जीविए राय ! असासयस्मि,
 वणियं तु पुणाइं अकुच्चमाणो ।

से सोयह मच्चुमुहोवणीए,
थम्म अकाऊण परसि लोए ॥२१॥

जहेह सोहो व मिय गहाय,
मच्चू नर नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया,
कालम्मि तम्मसहरा भवन्ति ॥२२॥

न तस्स दुख्खं विभयन्ति नाइओ,
न मित्तवग्गा न सुया न बधवा ।

एको सथं पञ्चणुहोइ दुख्ख,
कल्लारमेवं शणुजग्ग कम्म ॥२३॥

चिन्ना द्वृपथं च चउप्पथं च,
खेत गिहं धणधन्नं च सध्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
पर भव सुन्दर पावग वा ॥२४॥

त एषकगं तुच्छसरीरम से,
चिर्झगय इहिय उ पावगेण ।
भज्जा य पुत्तावि य नायओय,
दायारमन्न शणुसकमन्ति ॥२५॥

उवणिज्जइ जीवियमप्पमाये,
वण्ण जरा हरइ नरस्स राय ।
यचालराया । वयण सुणाहि,
मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥२६॥

अहं पि जाणामि जहेह साहू,
जं मे तुमं साहसि वक्षेयं ।

भोगा इमे संगकरो हवन्ति,
लै दुःख्या अद्भुतो अम्हारिसेहि ॥२७॥

हत्यणपुरम्मि चित्ता,
दद्युयं नरवयं महिडिद्यं ।
कामभोगेसु गिद्धेण,
नियाषससुहं कठं ॥२८॥

तस्य मे अपडिक्कलतस्य,
इमं एयारिसं कलं
ज्ञाणमाणो वि जं धम्मं,
कामभोगेसु मुच्छिश्रो ॥२९॥

नामो जहा पंकजलावसन्नो,
दद्युं थल नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा,
न भिक्खुणो भग्ममणुद्वयामो ॥३०॥

अच्चेइ कालो तूरन्तिराइश्चो,
न यावि भोगा पुरिसाण निज्ञा ।
उविद्यु भोगा पुरिसं चयन्ति
दुमं जहा खीणफलं व पक्ष्यते ॥३१॥

जह तं सि भोगे चइउं असत्तो,
अज्जाइ कम्माइ करेहि रायं !
धम्मे ठिशो सद्वपयाणुकम्पो,
तो होहिसि देवो इशो विउवी ॥३२॥
न तुज्जभ भोगे चइक्कण बुढो,
गिद्धोजसि अग्ररम्भपरिगाहेसु ।

मोहं कओ एत्तिउ विष्पलावो,
गच्छामि रायं ! आमन्तिश्चोसि ॥३३॥

पचाल राया वि य बम्भदत्तो,
साहुस्स तस्स वयण अकाउ ।
अणुत्तरे भुजिय कामभोगे,
अणुत्तरे सो नरए पविद्वो ॥३४॥

चित्तोवि कामेहि विरत्तकामो,
उदगच्छारित्ततबो महेसी ।
अणुत्तरं सजमं पालइत्ता,
अणुत्तरं सिद्धिगइं गश्चो, त्ति वेमि ॥३५॥

॥ इह चित्तसम्भूइच्छ तेरसमन्सयण समस्त ॥

अह उसुयारिज्जं चोद्दहम अञ्जभयणं
देवा भवित्ताण पुरे भवस्मि,
केह चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे,
खाए समिद्वे सुरलोगरम्भे ॥१॥

सकम्मसेसेण पुराकएणं,
कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निलिखणसारभया जहाय,
जिर्णिदमग्ग सरणं पवन्ना ॥२॥

पुमत्तमागम्भ कुमार हो वि,
पुरोहियो तस्स जसा य पत्ती ।

विसालकित्ति य तहे सुयारो,
रायत्थ देवी कमलावर्ड य ॥३॥

जाईजरामच्चुभयाभिभूया,
बर्हि विहाराभिनिविठुचित्ता ।
संसारचक्रस्स विमोक्षणद्वा,
दद्धूण ते कामगुणे विरक्ता ॥४॥
पियपुत्तगा दुन्नि वि माहणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइ,
तहा सुचिण्ण तवसंजमं च ॥५॥

ते कामभरेगेसु असल्लमाणा,
माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्षाभिकंखी अभिजायसद्वा,
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥६॥
असासयं दद्धू इम विहारं,
बहुश्रन्तराय न य दीहमाऊ ।
तम्हा गिर्हिसि न रइ लहामो,
श्रामन्तयामो चरिस्सामु मोण ॥७॥
अह तायगे तत्थ भुणीण तेसि,
तवस्स वाघायकर वयासो ।
इमं वयं वेयविश्वो वयन्ति,
जहा न होइ असुयाण लोगे ॥८॥
अहिञ्च वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिठुण्प गिर्हिसि जाया ।

भोज्ञाण भोए सह इत्थियाहि,
आरण्णगा होइ मुणी पसत्था ॥१॥

सोयगिणा आयगुणित्वणेण,
मोहणिला पञ्चलणाहिएण ।

सतत्तभावं परितप्पमाण,
लालप्पमाण बहुहा बहु च ॥१०॥

पुरोहिय त कमसोऽणुणन्त,
निनमतयन्त च सुए धणेण ।

जहकमं कामगुणेहि चेव,
कुमारगा ते पसमिक्ख वषकं ॥११॥

वेया अहीया न भवन्ति ताण,
भुत्ता दिया निन्ति तम तमेण ।

जाया य पुत्ता न हवन्ति ताण,
को एगाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥

खण्मित्तसुखा बहुकालदुखा,
पश्चामदुखा श्रणिगाम सुखा ।

संसारमोक्खस्स विपक्खभूया,
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥

परिष्वयन्ते अणियत्तकामे,
अहो य राओ परितप्पमाणे ।

अन्तप्पमत्ते धणमेसमाणे,
पप्पोति मच्चु पुरिसे जर च ॥१४॥

इम च मे अत्थ इम च नत्थ,
इमं च मे किञ्च इम शकिञ्च ।

तं एवमेयं लातप्पमाणं,
 हरा हरति ति कहं पमाणो ॥१५॥
 चरणं पभूय, सह इत्यियाहिं,
 सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
 तव कए तप्पइ जस्स लोगो,
 तं सच्चसाहीणमिमेव तुव्वभ ॥१६॥
 धणेण कि धमधुराहिगारे,
 सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
 समपा भविस्त्सामु गुणोहधारी,
 वहिविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥१७॥
 जहा य अग्नी अरणी असन्तो,
 खीरे घयं तेज्जमहातिलेसु ।
 एमेव जाया सरीरसि सत्ता,
 समुच्छइ नासइ नावचिढ्हे ॥१८॥
 नो इन्द्रियगोजभ अमुतभावा,
 अमुतभावा वि य होइ लिङ्गो ।
 अज्ञेयहेउ च त्रियस्स वन्धो,
 ससारहेउ च वयन्ति वन्धं ॥१९॥
 जहा वयं धम्म अजाणमाणा,
 पावं पुरा कस्मसकासि मोह ॥
 ओरुज्जभमाणा परिरक्षयन्ता,
 तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥
 अब्भाहृयम्म
 सच्चश्रो लोगम्म,
 परिवारिए ।

अमोहाहिं पडन्तीहि,
 गिहंसि न रहं लभे ॥२१॥
 केण अब्भाहश्चो लोगो ?
 केण वा परिवारिश्चो ?
 का वा अमोहा बुत्ता ?
 जाया चिन्तावरो हुमे ॥२२॥
 मच्चुणाऽब्भाहश्चो लोगो,
 जराए परिवारिश्चो ।
 अमोहा रथणी बुत्ता,
 एवं ताय । विजाणह ॥२३॥
 जा जा वच्चइ रथणी ।
 न सा पडिनियत्तइ,
 अहम्मं कुणमाणस्स,
 अफला जन्ति राइश्चो ॥२४॥
 जा जा वच्चइ रथणी,
 न सा पडिनियत्तइ ।
 धम्मं च कुणमाणस्स,
 सफला जन्ति राइश्चो ॥२५॥
 एगश्चो संवसित्ताणं,
 दुहश्चो सम्मतसंजुया ।
 पच्छा जाया गमिस्सामो,
 भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥
 जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं,
 जस्स वज्ञत्थि पलायण ।

जो जाणे न मरिस्सामि,
 सो हु क्खे सुए सिया ॥२७॥
 अज्जेव धम्म पडिवस्त्रयामो,
 जहिं पवन्ना न पुणदभवामो ।
 अणागयं नेव य ग्रत्थि किची,
 सद्ध खमं णो विणइत्तु रागं ॥२८॥
 पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
 वासिद्वि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
 साहाहि रुवखो लहए समाहिं,
 छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु ॥२९॥
 पंखाविहूणोव जहेव पक्खो,
 भिज्जविहूणोव रणे नरिन्दो ।
 विवन्नसारो वणिअब्ब पोए,
 पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥
 सुसभिया कामगुणे इमे ते,
 संपिण्डिया अगगरसप्पस्या ।
 शुंजामु ता कामगुणे पगामं,
 पच्छा गमिस्सामु पहाणमगं ॥३१॥
 भुत्ता रत्ता भोइ ! जहाइ णे वझो,
 न जीवियट्टा पजहामि भोए ।
 लाभ अलाभं च सुहं च दुक्खं ।
 संचिक्खमाणो चरिस्सामि जोण ॥३२॥
 मा हू तुम सोयरियाण सम्भरे,
 जुणो व हंसो पडिसोत्तगामी ।

भुंजाहि भोगाइ मए समार्ण,
दुखखं खु भिक्खायरिया विहारो ॥३३॥

जहा य भोई तप्युय भुयंगो,
निम्मोर्याणि हिच्च पलेइ मुत्तो ।

एमेए जाया पयहन्ति भोए,
ते हं कह नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥

छिन्दित्तु जाल अबल व रोहिया,
मच्छा जहा कामगुणे पहाए ।
घोरेयसीला तवसा उदारा,
धीरा हु भिक्खा चरियं चरन्ति ॥३५॥

नहैव कुंचा समझक्कमन्ता,
तथाणि जालाणि दलित्तु हसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मञ्ज्ञ,
ते ह कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥

पुरोहियं तं ससुय सदार,
सोऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।

कुङ्गुम्बसारं वित्तलुत्तम च,
राय अभिक्ख समुवाय देवी ॥३७॥

वन्तासी' पुरिसो राय !
न सो होइ पससिशो ।

माहणेण परिच्छत्त,
धणं आदाउभिच्छ्रसि ॥३८॥

सब्ब जग जइ तुहं,
सब्बं वावि धणं भवे ।

सच्चं पि ते अपस्तुतं,
 नेव ताण य तं तव ॥३६॥
 मरिहिति रायं ! जया तया वा,
 मणोरमे कामगुणे पहाय ।
 एक्षो हु धर्ममो नरदेव ! ताण,
 न विज्ञाइ अन्तमिहेह किंचि ॥४०॥
 नाह रमे पवित्राणि पजरे वा,
 सताणछिन्ना चरिस्सामि मोण ।
 श्रकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा,
 परिगहारम्भनियत्तदोसा ॥४१॥

दद्वगिणा जहा रणे, डजभमाणेसु जन्तु ।
 अन्ने सत्ता पमोयन्ति, रागद्वोसवसं गया ॥४२॥
 एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया ।
 डजभमाणं न बुजभामो, रागद्वोसगिणा जगं ॥४३॥
 भोगे भोज्ञा वमित्ता य, लहुसूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥४४॥
 इमे य बद्धा फदंति, मम हत्थङ्गमागया ।
 वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥
 सामिसं कुलल दिस्स, वज्भमाणं निरामिस ।
 आमिसं सब्बमुजिभत्ता, विहरिस्सामो निरामिसा ॥४६॥
 गिद्धोवमा उ नज्ञा ण, कामे ससारवड्ढणे ॥
 उरगो सुवण्णपासेव, सकमाणो तणु चरे ॥४७॥
 नागोव्व बन्धणं छित्ता, अप्पणो वसर्हि वए ।
 एयं पत्थं महारायं, उस्सुयारि त्ति मे सुय ॥४८॥

चइत्ता विउल रज्ज, कामभोगे य दुःखे ।
 निविसया निरामिसा, निन्नेहा निष्परिग्गहा ॥४६॥

सम्मं धम्म वियाणिता, चिन्ना कामगुणे वरे ।
 तव पगिजभहवक्खायं, धोरं धोरपरवक्मा ॥५०॥

एवं ते कमसो बुद्धा, सब्बे धम्मपरायणा ।
 जम्ममच्चुभउविग्गा, दुखस्सन्तगवेसिणो ॥५१॥

सासणे विगयमोहाण, पुर्विव भावण भाविया ।
 अचिरेणेव कालेण, दुखस्सन्तमुवागया ॥५२॥

राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिंशो ।
 माहणी दारगा चेव, सब्बे ते परनिवुडे, त्तिबेमि ॥५३॥

इय चउद्दसमजभयण समता ।

अह सभिक्खू पञ्चदह श्रजभयणं
 भोण चरिस्सामि समिच्च धम्म,
 सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
 सथव जहिज्ज श्रकामकामे,
 श्रन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥१॥

राश्रोवरय चरेज्ज लाढे,
 विगए वेयवियाथरक्षितए ।
 पन्ने श्रभिभूय सद्वदसी,
 जे कम्हिति न मुच्छए स भिक्खू ॥२॥

अक्रोसवहं विद्वत् धीरे,
 मुणी चरे लाढे निष्ठमायगुत्ते ।
 अव्वगगमणे असपहिट्टे,
 जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥३॥

पन्तं सयणासण भइत्ता,
 सीउण्हं विविह च दंसमसग ।
 अव्वगगमणे असपहिट्टे,
 जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥४॥

नो सककडमिच्छ्र्हीं न पूयं,
 नो वि य वन्दणग कुओ पसंस ?
 से संजए सुब्बए तवस्सी,
 सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥५॥

जेण पुणं जहाइ जीविथ,
 मोहं वा कसिण नियच्छ्र्हइ ।
 नरनार्ह पजहे सया तवस्सी,
 न य कोळहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥

छिन्न सर भोममन्तलिकख,
 सुमिणं लवखणदण्डवत्थुविज्ञ ।
 श्रंगवियार सरस्स विजय,
 जे विज्ञाहि न जोवइ स भिक्खू ॥७॥

मन्तं मूल विविहं वेज्ञचिन्त,
 वमणविरेयणधमणेत्तसिणाण ।

आउरे सरण तिगिच्छयं च,
त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥८॥
खत्तियगणउग्गरायपुत्ता,

माहणभोईय विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेर्सि वयइ सिलोगपूय,
त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥९॥

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा,
अप्पव्वइएण व संथया हविज्ञा ।
तेर्सि इहलोइयफलद्वा,
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥

सयणासण-पाण-भोयण,
विविह खाइमसाइमं परेर्सि ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे,
जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥

ज किंचि आहारपाणग,
विविहं खाइमसाइमं परेर्सि लद्धु ।
जो त तिविहेण नाणुकम्पे,
भणवयकायसुसबुडे जे स भिक्खू ॥१२॥

शायामग चेव जवोदणं च,
सीय सोवोरजवोदणं च ।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु,
पन्तकुलाइ परिव्वए स भिक्खू ॥१३॥

सदा विविहा भवन्ति लोए,
दिव्वा माणुसंगा तहा तिरच्छा ।
भीमा भयभेरवा उराला,
सोच्चा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥

वाद विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेयाणुगए य कोविधप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदसी,
उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥

असिध्पजीवी अगिहे अमित्ते,
जिइन्दिए सव्वश्रो विध्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहु अप्पभक्खी,
चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू त्तिवेमि ॥१६॥
॥ इश्र सभिक्खुय पन्नरसममजभयण समत्त ॥

अह बम्भचेरसमाहिठाणा णामं सोलसम अजभयण

सुयं मे आउस ! तेणं भगवया एवमव्याय—इह खलु
थेरेहि भगवन्तेहि दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू
सोच्चा निसम्म संजमबहुले, सवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते
गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्ञा ।

कयरे खलु ते थेरेहि भगवन्तेहि दस बम्भचेरसमाहिठाणा
पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहि-
बहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्ञा ?

इमे खलु ते थेरेहि भगवतेर्हि दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिकखू सोच्चा निसम्म संजमबहुले. संवरबहुले, समाहिबहुले गुत्ते, गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्ञा त जहा :—

विवित्ताइं सयणासणाइ सेवित्ता^१ हवइ से निगन्थे। नो इत्थी-पसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइ सेवित्ता हवह से निगन्थे। तं कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थिपसु-पण्डगससत्ताइं सयणासणाइ सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भ-चेरे सका व कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्ज्ञा, भेदं वा लभेज्ञा, उम्माय वा पाउण्ड्ज्ञा, दीलकालिय वा रोगायक हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ घम्माओ वा भसेज्ञा। तम्हा नो इत्थिपसुपण्डग-संसत्ताइं सयणासणाइ सेवित्ता हवइ से निगन्थे ॥१॥

नो इत्थीण कह कहित्ता हवइ से निगन्थे। तं कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीण कहं कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्ज्ञा, भेद वा लभेज्ञा, उम्माय वा पाउण्ड्ज्ञा, दीह-कालिय वा रोगायक हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ घम्माओ वा भसेज्ञा। तम्हा नो इत्थीण कह कहेज्ञा ॥२॥

नो इत्थीण सद्धि सन्निसेज्ञागए विहरित्ता हवइ से निग-न्थे। त कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीर्हि सद्धि सन्निसेज्ञागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्ज्ञा, भेद वा लभेज्ञा, उम्माय वा पाउण्ड्ज्ञा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ घम्माओ वा भसेज्ञा। तम्हा खलु नो निगन्थे इत्थीर्हि सद्धि सन्निसेज्ञागए विहरेज्ञा ॥३॥

नो इत्थीणं इन्दियाइ मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निजभाइत्ता हवइ से निगन्थे । त कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणीरमाइं आलोएमाणस्स निजभायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिञ्चा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिञ्चा, दीहकालिय वा रोगायंक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइं मनोरमाइं आलोएज्जा ॥४॥

नो इत्थीण कुहुन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कूइयसद्वं वा, रुइयसद्वं वा, गोयसद्वं वा, हसियसद्वं वा, थणियसद्वं वा, कन्दियसद्वं वा, विलवियसद्वं वा, सुणित्ता हवइ से निगन्थे । तं कहमिति चे ? आयरियाह, निगन्थस्स खलु हत्थीण कुहुन्तरसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कूइयसद्वं वा, रुइयसद्वं वा, गोयसद्वं वा, हसियसद्वं वा, थणियसद्वं वा, कन्दियसद्वं वा, विलवियसद्वं वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, विइगिच्छा वा, समुप्पज्जिञ्चा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायंक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे इत्थीणं कुहुन्तरंसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कूइयसद्वं वा, रुइयसद्वं वा, गोयसद्वं वा, हसियसद्वं वा, थणियसद्वं वा, कन्दियसद्वं वा, विलवियसद्वं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो निगन्थे, पुव्वरय, पुव्वकीलियं, अणुसरित्ता हवइ से निगन्थे । तं कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका

वा, कखा वा, विइगिच्छा वा, समुप्पज्जिज्ञा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हृवेज्जा, केवलिपन्नत्ताश्रो धम्माश्रो वा भसेज्जा । तस्मा खलु नो निगन्थे पुष्टवरय पुच्चकोलिय अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीय आहार आहरित्ता हृवइ से निगन्थे । त कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु पणीय आहारं आहर-रेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्ञा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हृवेज्जा, केवलिपन्नत्ताश्रो धम्माश्रो वा भसेज्जा । तस्मा खलु नो निगन्थे यणीयं आहार आहारेज्जा ॥७॥

नो अङ्गमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हृवइ से निगन्थे । त कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्थस्स खलु अङ्गमायाए पाणभोयण आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्ञा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हृवेज्जा, केवलिपन्नत्ताश्रो धम्माश्रो वा भसेज्जा । तस्मा खलु नो निगन्थे अङ्गमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसागुवाई हृवइ से निगन्थे । त कहमिति चे ? आयरियाह—विभूसावत्तिए विभूसियसरोरे इत्थिजणस्स अभिलस-मिणजे हृवइ, तथो ए इत्थिजणेण अभिलसिज्जमणस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्ञा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगाय-

यंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ घम्माओ वा भसेज्जा । तस्मा/खलु नो निरान्ते विभूसाणुवाई हविज्जा ॥६॥

नो सहरूवरसगन्धफासाणुवाई हवइ से निगन्ते । तं कहमिति चे ? आयरियाह—निगन्त्यस्स खलु सहरूवरसगन्ध-फासाणुवाईस्स बभच्चेरे सका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाडणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ घम्माओ, वा भसेज्जा । तस्मा खलु नो निगन्ते सहरूवरसगन्धफासा-णुवाई भवेज्जा । दसमे बम्भच्चेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥

भवन्ति इथं सिलोगा तंजहा—

जं विवित्तमणाइणं, रहियं इत्थिजणेण य ।

बम्भच्चेरस्स रक्खट्टा, आलयं तु निसेवए ॥१॥

मणपल्हायजणणी, कामरागविवड्णी ।

बम्भच्चेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥२॥

समं च संथवं थीर्हि, संकहं च अभिक्खण ।

बम्भच्चेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥३॥

अंगपच्चंगसंठाण, चार्ख्लवियपेहियं ।

बम्भच्चेररओ थीण, चक्कुगिज्ञभं विवज्जए ॥४॥

कूइयं रहयं गीयं हसियं थणियं कन्दियं ।

बम्भच्चेररओ थीण, सोयगेज्ञभं विवज्जए ॥५॥

हास किङ्गुं रह दप्पं, सहसावित्तासियाणि य ।

बम्भच्चेररओ थीण, नाणुचिन्ते कयाइ चि ॥६॥

पणीय भत्तपाण तु, खिप्पं मयविवद्वृणं ।
 बम्भचेररश्चो भिक्खू, निञ्चसो परिवज्ञेषु ॥७॥
 धम्मलद्ध मिथ काले, जत्तत्थ पणिहाणव ।
 नाइमत्त तु भुजेज्ञा, बम्भचेररश्चो सथा ॥८॥
 विभूस परिवज्ञेज्ञा, सरीरपरिसण्डण ।
 बम्भचेररश्चो भिक्खू, सिंगारत्थ न धारए ॥९॥
 सहे रुवे य गन्धे य, रसे फासे तहेव य ।
 पचविहे कामगुणे, निञ्चसो परिवज्ञेषु ॥१०॥
 आलश्चो शीजणाङ्गणो, शीकहा या मणोरमा ।
 सथवो वेव नारीणं, तार्सि इन्दियदरिसण ॥११॥
 कूड्यं रुह्यं गोयं, हासभुत्तासियाणि य ।
 पणीय भत्तपाण च, अहमाय पाणभोयण ॥१२॥
 गत्तभूसणमिदुं च, कामभोगा य दुःख्या ।
 नरससत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥१३॥
 दुःखेकामभोगे य, निञ्चसो परिवज्ञेषु ।
 संकटाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्ञा पणिहाणव ॥१४॥
 धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइम धम्मसारही ।
 धम्मारामरते दन्ते, बम्भचेरसमाहिए ॥१५॥
 देवदाणवगत्थवा, जक्खरक्खसकिन्नरा ।
 बम्भयार्हं नमसन्ति, दुक्कर जे करन्ति त ॥१६॥
 'ऐस धम्मे धुवे निञ्चे, सासए जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्जन्ति चाणेण, सिज्जन्ति तहावरे, त्ति वेमि ॥१७॥
 ॥ इम बम्भचेरसमाहिठाणा णाम सोलसममज्जयण समत्त ॥

अह पावसमणिज्ज सत्तदह अज्ञभयणं

जे केइ उ पव्वइए नियंठे,
धम्मं सुणिता विणओववन्ने ।
सुदुल्लह लहिउ बोहिलाभं,
विहरेज्ज पच्छा य जहासुह तु ॥१॥

सेज्जा दढा पाउरण मि अतिथ,
उप्पज्जइ भोत्तुं तहेव पाउ ।
जाणामि जं वट्टुइ आउसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥२॥

जे केई पव्वइए, निदासीले पगामसो ।
भोज्जा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥३॥

आथरियउबज्जाएर्ह, सुयं विणय च गाहिए ।
ते चेव लिंखसइ बाले, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥४॥

आथरियउबज्जायाण, सम्म न पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥५॥

सम्महमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजाए सजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥६॥

सथार फलग पीढं, निसज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमञ्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥७॥

दवदवस्स चरइ, पमत्ते य अभिक्खणं ।
उल्लघणे य चण्डे य, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥८॥

पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्जभइ पायकम्बल ।
पडिलेहाश्रणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥९॥

पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया ।
 गुरुं परिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१०॥
 बहुमाई पमुहरी, थद्वे लुद्वे अणिगगहे ।
 असविभागो अवियते', पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥११॥
 विवाद च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा ।
 वुगहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१२॥
 अथिरासणे कुवकुइए, जत्य तत्थ निसीयह ।
 आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१३॥
 ससरक्खपाए सुवह, सेज्ज न पडिलेहह ।
 सथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१४॥
 दुद्धदहीविगईश्रो, आहारेइ अभिक्खणं ।
 अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१५॥
 अत्यन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खण ।
 चोइश्रो पडिचोएइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१६॥
 आयरियपरिच्चाई, परपासण्डसेवए ।
 गाणगणिए दुवसूए, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१७॥
 सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहसि वावरे ।
 निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१८॥
 सन्नाइपिण्डं जेमेइ, नेच्छइ सामुदाणिय ।
 गिहिनिसेज्ज च वाहेइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१९॥
 एयारिसे पचकुसीलसुवृडे,
 रुवधरे मुणिपवराण हेट्टिमे ।

अर्थसि लोए विसमेव गरहिए,
न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥

जे बझए एए सया उ दोसे,
से सुव्वए होइ मुणीण मज्जे ।
अर्थसि लोए अमय व पूइए,
आराहए लोगमिण तहा पर, त्ति बेमि ॥२१॥
॥ इम्र पावसमणिज्ज सत्तरसमज्जभयण समत्त ॥

अह संजइज्जं श्रद्धारहमं श्रज्जभयणं

कम्पिल्ले नयरे राया, उद्दिष्णबलवाहणे ।
नामेण संजए नाम, मिगच्च उवरिगगए ॥१॥
हयाणोए गयाणोए, रहाणोए तहेव य ।
पायताणोए महया, सच्चओ परिवारिए ॥२॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुझाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छए ॥३॥
अह केसरम्भि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्जकायज्जकाणसंजुत्ते, धम्मज्जकाणं भियायइ ॥४॥
अफ्फोवमण्डवम्भि, भायइ क्खवियासवे ।
तस्सागए मिए पास, वहेइ से नराहिवे ॥५॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्भ सो तर्हि ।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासइ ॥६॥

अह राया तत्थ सभन्तो, अणगारो मणाहओ ।
 मए उ मन्दपुणेण, रसगिद्वेण घतुण ॥७॥
 आसं विसज्जाहत्ताण, अणगारस्स सो निचो ।
 विणएण वन्दए पाए, भगव ! एत्थ मे खमे ॥८॥
 अह मोणेण सो भगव, अणगारे क्षाणमस्तिष्ठ ।
 रायाणं न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्वुओ ॥९॥
 सजओ अहममीति, भगव ! वाहरहि मे ।
 कुद्वे तेएण, अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥
 अभओ पत्थिवा ! तुब्म, अभयदाया भवाहि ।
 अणिच्चे जीवलोगमि, कि हिसाए पसज्जसि ? ॥११॥
 जया सब्ब परिच्छज्ज, गतब्बमवस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगमि, कि रज्जमि पसज्जसि ? ॥१२॥
 जीवियं चेव रूव च, विज्जुसपायच्चल ।
 जत्थ त मुज्जसि राय ! पेज्जत्थ नावबुज्जसे ॥१३॥
 द'राशि य सुया चेव, मित्ता य तह बन्धवा ।
 जीवन्तमणुजीवन्ति, मय नाणुवयन्ति य ॥१४॥
 नीहरति मय पुत्ता, पियर परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते, बन्धू राय ! तव चरे ॥१५॥
 तओ तेणज्जिए दब्बे, दारे य परिरक्खिए ।
 कीलन्तिडन्ने नरा राय ! हट्टुतुट्टुमलंकिया ॥१६॥
 तेणावि जं कयं कम्म, सुह व जइ वा दुह ।
 कम्मुणा तेण सजुत्तो, गच्छइ उ परं भव ॥१७॥

सोउठण तस्स सो धम्मं, श्रणगारस्स अन्तिए ।
 महया संवेगनिवेय, समावज्ञो नराहिवो ॥१८॥
 संजओ चइजं रझं, निक्षत्तो जिणसासणे ।
 गद्भालिस्स भगवओ, श्रणगारस्स अन्तिए ॥१९॥
 चिज्ञा रहुं पब्बइए, खत्तिए परिभासइ ।
 जहा ते दीसई रुव, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥
 किं नामे किं गोत्ते कस्सहुआए व माहणे ।
 कह पडियरसि बुद्धे, कह विणीए ति बुच्चसि ?॥२१॥
 सजओ नाम नामेण, तहा गोत्तेण गोयमो ?
 गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥
 किरिय श्रकिरिय विणयं, श्रन्नाणं च महामुणी ।
 एएहिं चउर्हिं ठाणर्हिं, मेयन्ने किं पभासइ ॥२३॥
 इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए ।
 विज्जाचरणसंपन्ने, सच्च्ये सच्चपरक्षमे ॥२४॥
 पडन्ति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो ।
 दिव्व च गइं गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥
 मायावुइयमेयं तु, मुसा भासा निरत्थिया ।
 सजमसाणो वि श्रहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥
 सव्वेए विझया मज्जं, मिच्छादिट्टी श्रणारिया ।
 विज्जमाण परे लोए, सम्म जाणामि श्रप्पणं ॥२७॥
 श्रहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवसे ।
 जा सा पालिमहापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥

से चुए वम्भलोगाश्चो, माणुस्स भवमागए ।
अप्पणो य परेंसि च, आउ जाणे जहा तहा ॥२६॥

नाणारुद्ध च छन्दं च, परिवज्जेञ्च सजए ।
अणट्टा जे य सद्वत्था, इइ विज्जामणुसचरे ॥३०॥

पडिककमामि पसिणाणं, परमतेहिं व पुणो ।
अहो उट्टिए अहोरायं, इइ विज्जा तब चरे ॥३१॥

जं च मे पुच्छसी काले, सम सुद्धेण चेयसा ।
ताइ पाउकरे बुद्धे, त नाण जिणसासणे ॥३२॥

किरिय च रोयइ धीरे, अकिरिय परिवज्जए ।
दिट्टीए दिट्टिसम्पन्ने, धम्म घरसु डुच्चर ॥३३॥

एयं पुण्णपयं सोऽवा, अथधम्मोवसोहिय ।
भरहो वि भारह वास, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥३४॥

सगरो वि सागरन्त, भरहवास नराहिवो ।
इस्सरिय केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिवृडे ॥३५॥

चहत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्डिश्चो ।
पव्वज्जमबुवगश्चो, मधव नाम महाजसो ॥३६॥

सणकुमारो मणुस्तिसन्दो, चक्कवट्टी महिड्डिश्चो ।
पुत रज्जे ठवेझण, सो वि राया तब चरे ॥३७॥

चहत्ता भारहं वास, चक्कवट्टी महिड्डिश्चो ।
सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्ती गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खागरायवसभो, कुन्थ् नाम नर्सरो ।
 विक्खायकित्ती भगव, पत्तो गइमण्त्तर ॥३३॥
 सागरन्तं चइत्ताणं, भरह नरवरीसरो ।
 श्ररो य अरय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥४०॥
 चइत्ता भारह वास, चइत्ता बलवाहणं ।
 चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे ॥४१॥
 एगच्छ्रतं पसाहित्ता, महि माणनिसूरणो ।
 हरिसेणो मणुस्तिस्तदो, पत्तो गइमणुत्तर ॥४२॥
 अन्त्तिओ रायसहस्रेहि, सुपरिच्छाई दमं चरे ।
 जयनामो जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तर ॥४३॥
 दसण्णरञ्जं सुदियं चइत्ताण मुणी चरे ।
 दसण्णभद्रो निक्खन्तो, सङ्ख सङ्खेण चोइओ ॥४४॥
 नमी नमेह श्रप्याण, सङ्खं सङ्खेण चोइओ ।
 चइउण गेह बइदेही, सामणे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥
 करकण्डू कलिगेसु, पंचालेसु य दुमुहो ।
 नमी राया विदेहेसु, गन्धारेसु य नमाई ॥४६॥
 एए नरिन्दवसभा, निक्खन्ता जिणसासणे ।
 मुत्ते रज्जे ठवेऊण, सामणे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥
 सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे ।
 उदायणो पब्बइओ, पत्तो गइमणुत्तर ॥४८॥
 तहेव कासिराया वि, सेओ सञ्चपरक्कमे ।
 कामभोगे परिच्छ्र, पहणे कम्ममहावण ॥४९॥
 तहेव विजओ राया, अणटूकिति^१ पब्बए ।
 रज्जं तु मुणसमिद्ध, पयहितु महाजसो ॥५०॥

१. मुक्खगश्चो अणुत्तर । २. चक्खवट्ठी महिड्डिओ । ३. अणटू०

तहेबुग्ग तब किच्चा, श्रव्वक्षिखत्तेष चेयसा ।
 महब्दलो रथरिसी, आदाय सिरसा सिरि ॥५१॥

कह धीरे अहेऊहि, उम्मत्ते व भर्हि चरे ?
 एए, विसेसमादग्य, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥

अन्नन्तचियाणखमा, सच्चा मे भरसिया वई ।
 अतरिसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणगग्या ॥५३॥

कहि धीरे अहेऊहि, अत्ताण परियवसे ।
 नववसंगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए, ति वेमि ॥५४॥

॥ सजइच्च अठारहममञ्जभ्यण समत् ॥

मियापुसीयं एगूणवोसइमं अज्ञभ्यणं

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्ञाणसोहिए ।
 राया बलभट्टि, मिया तस्सगमाहिसी ॥१॥

तेसि पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते ति विस्सुए ।

अम्मापित्तण दइए, जुवराया दमोसरे ॥२॥

नन्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिर्हि ।
 देवो दोगुन्दगो वेव, निच्च मूङ्घमाणसो ॥३॥

मणिरयणकोट्टिमत्तले, पासायालोयणट्टिश्रो ।
 आलोएह नगरस्स, चउक्कतियचच्चरे ॥४॥

अह तत्थ अइच्छन्त, पासह समणसंजयं ।
 तवनियमसंजमधर, सीलड्डु गुणशागरं ॥५॥

त पेहइ मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
 कहिं मन्नेरिस रूव, दिट्ठपुच्च भए पुरा ॥६॥
 साहुस्स दरिसणे तस्स, अजभवसाणमिम सोहणे ।
 मोह गयस्स सन्तस्स, जाइसरण समुष्पन्न ॥७॥

(देवलोगचुओ सतो माणुसं भवमागओ ।
 सन्निनाणसमुष्पन्ने जाइ सरइ पुराणियं ॥)
 जाईसरणे समुष्पन्ने, मियापुत्ते महिड्डीए ।
 सरइ पोराणियं जाइं, सामण च पुरा कय ॥८॥
 विसएहि अरञ्जन्तो, रज्जन्तो संजममि य ।
 श्रम्मापियरमुवागम्म, इम वयणमब्बवी ॥९॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
 नरएसु दुख च तिरिक्खजोणिस् ।
 निच्छिवणकामो मि महणवाओ,
 अणुजाणह पव्वइस्सामि श्रम्मो ! ॥१०॥

श्रम्मताय । भए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
 पच्छा कडुयविवागा, अणुबन्धदुहावहा ॥११॥

इम सरोरं अणिच्च, असुइ असुइसंभव ।
 असासयावासमिण, दुक्खकेसाण भायण ॥१२॥

असासए सरोर्मि, रइ नोवलभामह ।
 पच्छा पुरा व चइयच्चै, फेणबुबुयसन्निभे ॥१३॥

माणुसत्ते असार्मि, वाहीरोगाण आलए ।
 जरामरणघत्थमि, खणपि न रमामह ॥१४॥

जम्म दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
 अहो! दुक्खो हु संसारो, जन्थ कीसन्ति जन्तुणो ॥१५॥
 खेतं वत्थुं हिरण्ण च, पुत्तदार च बन्धवा ।
 चहत्ताणं इम देहं, गन्तव्यमवस्स मे ॥१६॥
 जहा किस्पागफलाण, परिणामो न सुन्दरो ।
 एवं भ्रुत्ताण भोगाण, परिणामो न सुन्दरो ॥१७॥
 अद्धाणं जो महंत तु, अप्पाहेश्चो पवस्त्रः ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिश्चो ॥१८॥
 एवं धम्म अकाऊण, जो गच्छइ पर भवं ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ, वाहीरोर्गेहि पीडिश्चो ॥१९॥
 अद्धाणं जो महत तु, सपाहेश्चो पवस्त्रः ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवस्त्रिश्चो ॥२०॥
 एवं धम्म पि काऊण, जो गच्छइ परं भव ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥२१॥
 जहा गेहे पलित्तस्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
 सारभण्डाणि नीणेइ, असारं अवउज्जभइ ॥२२॥
 एव लोए पलित्तस्मि, जराए मरणेण य ।
 अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्मेहि अणुमन्तिश्चो ॥२३॥
 त बिन्तस्मापियरो, सामणं पुत्त ! दुच्चरं ।
 गुणाण तु सहस्साइ, धारेयव्वाइ भिक्खुणा^१ ॥२४॥
 समया सव्वमूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
 पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्कर ॥२५॥

१ मिक्खुणो ।

निञ्चकालप्पमत्तेण, मुसावायविवज्ज्ञण ।
 भासियव्वं हिय सच्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥२६॥
 दन्तसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्ज्ञण ।
 ग्रणवज्जेसणिज्ज्ञस्स, गिण्हणा अवि दुक्कर ॥२७॥
 विरई अबम्भचेरस्स, कामभोगरसन्तुणा ।
 उग्गं महव्वय बम्भं, धारेयव्वं सुदुक्कर ॥२८॥
 धणाधन्नपेसवग्गेसु, परिगगहविवज्ज्ञण ।
 सव्वारम्भपरिच्चाओ, निम्ममत्त सुदुक्कर ॥२९॥
 चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्ज्ञणा ।
 सज्जिहीसच्चश्रो चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्कर ॥३०॥
 छुहा तण्हा य सीउण्ह. दसमसग्रवेयणा ।
 श्रक्षोसा दुखसेज्जा य, तणकासा जज्ज्ञमेव य ॥३१॥
 तालणा तज्जणा चेव, वहबन्धपरीसहा ।
 दुखं भिक्खायरिया, जायणा य श्रलाभया ॥३२॥
 कावोया जा इमा वित्ती, केसलोश्रो य दारुणो ।
 दुख बम्भव्वय घोर, धारेउ य महप्पणो ॥३३॥
 सुहोइश्रो तुम पुत्ता, ! सुकुमालो सुमज्जिश्रो ।
 न हुसि पम्भू तुमं पुत्ता, सामणमणुपालिय ॥३४॥
 जावज्जीवमविस्सामो, गुणाण तु महबरो ।
 गुरु उ लोहभारव्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥३५॥
 आगासे गगसोउव्व, पडिसोउव्व दुत्तरो ।
 बाहाहि सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३६॥

वालुया कवले चेव, निरस्साए उसेज्जमे ।
 असिधारागमण चेव, दुक्कर चरित त्वो ॥३४॥
 अहीवेगन्तद्वीए, चरिते पुत्त ! दुक्करे ।
 जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्कर ॥३५॥
 जहा अग्निसिहा दित्ता, पाउ होइ सुदुक्करा ।
 तहा दुक्कर करेउ जे, तारुण्णे समणत्तण ॥३६॥
 जहा दुख भरेउ जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।
 तहा दुखं करेउ जे, कोवेण समणत्तण ॥४०॥
 जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करो मन्दरो गिरी ।
 तहा निहुयनीसक, दुक्कर समणत्तण ॥४१॥
 जहा भुयाहि तरित, दुक्कर रथणायरो ।
 तहा अणुवसन्तेण, दुक्कर दमसागरो ॥४२॥
 भुज माणुस्सए भोगे, पचलक्खणए तुम ।
 भुत्तभोगी तश्रो जाया ! पच्छा घम्म चरिस्ससि ॥४३॥
 सो बेइ अम्मापियरो, एकमेय जहा फुडे ।
 इह लोए विष्विवासस्स, नहिय किचिवि दुक्कर ॥४४॥
 सारीरमाणसा चेव, वेयणाश्रो अनन्तसो ।
 मए सोढाश्रो भीमाश्रो, असइ दुखभयाणि य ॥४५॥
 जरामरणकन्तारे, चाउरन्ने भयगरे ।
 मए सोढाणि भीमरणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥
 जहा इह श्रगणी उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणो तर्हि ।
 न्नरसु वेयणा उण्हा, असाया वैद्यया मए ॥४७॥

जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणन्तगुणे तर्हं ।

नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेद्या मए ॥४८॥

कन्दन्तो कंदुकुम्भासु, उड्डुपाओ अहोसिरे ।

हुयासणे, जलन्तमिम, पक्षपुच्चो अणन्तसो ॥४९॥

महादवगिगसंकासे, मरुमि वद्रवालुए ।

कदम्बवालुयाए य, दड्डुपुच्चो अणन्तसो ॥५०॥

रसन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्ढ बद्धो अबन्धवो ।

करवत्तकरक्याईहि, छिपुच्चो अणन्तसो ॥५१॥

अहितिक्खक्षटगाइणे, तुंगे सिम्बलिपायवे ।

खेविय पासबद्धेण, कड्ढोकड्डाहि दुक्कर ॥५२॥

महाजन्तेसु उच्छू वा, आरसन्तो सुमेरव ।

पीलिशो मि सकम्मेहि, पावकम्मो अणतसो ॥५३॥

कूवन्तो कोलसुणएहि, सामेहि सबलेहि य ।

पाडिशो फालिशो छिशो, विघ्फुरन्तो अणेगसो ॥५४॥

असीहि अयसिवणाहि, भल्लेहि यद्विसेहि य ।

छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, श्रोइणो पावकम्मणा ॥५५॥

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए ।

चोइशो तोत्तजुत्तोहि, रोज्झो वा जह पाडिशो ॥५६॥

हुयासणे जलन्तमिम, चियासु महिसो विव ।

दड्ढो पक्षो य अवसो, पावकम्मेहि पाविशो ॥५७॥

बला संडासतुण्डोहि, लोहतुण्डोहि पविखहि ।

विलुत्तो विलवत्तोऽहं, हंकगिद्वेहिऽणन्तसो ॥५८॥

उववन्नो ।

तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयर्णि नहिं ।
 जल पाहति चिन्तन्तो, खुरधाराहिं विवाइश्रो ॥५८॥
 उण्हाभितत्तो स्पष्टतो, असिपत्त महावण ।
 असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुञ्चो श्रणेगसो ॥५९॥
 मुगरेरहिं मुसढीहिं, सूलेहिं मुसलेहिं य ।
 गयासभगगत्तेहिं, पत्त दुक्ख श्रणन्तसो ॥६०॥
 खुरेहिं तिक्ष्वधाराहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य ।
 कप्पियम्रो फालिश्रो छिन्नो, उक्कितो य श्रणेगसो ॥६१॥
 पासेहिं कूडजालेहिं, मिश्रो वा अवसो श्रह ।
 चाहिश्रो बद्धरुद्धो य, बहुसों चेव विवाइश्रो ॥६२॥
 गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो श्रह ।
 उल्लिश्रो फालिश्रो गहिश्रो, मारिणो य श्रणन्तसो ॥६३॥
 विदसएहिं जालेहिं, लेप्त्वाहिं सउणो विव ।
 गहिश्रो लग्नो बद्धो य, मारिश्रो य श्रणन्तसो ॥६४॥
 कुहाडफरसुमाईहिं, वड्डईहिं दुमो विव ।
 कुट्टिश्रो फालिश्रो छिन्नो, तच्छिश्रो य श्रणन्तसो ॥६५॥
 चवेडमुट्टिमाईहिं कुमारेहिं, अय पित्र ।
 ताडिश्रो कुट्टिश्रो भिन्नो, चुणिन्नो य श्रणन्तसो ॥६६॥
 तत्ताइं तम्बलोहाइ, तउयाइ सीसयाणि य ।
 पाइश्रो कलकलन्ताइ, आरसतो सुमेरव ॥६७॥
 तुहं पियाइं ससाइ, खण्डरइ सोलगाणि य ।
 खाविश्रो मि समंसाइ, अग्निवण्णाइङ्गेगसो ॥६८॥

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महौणि य ।
पाहश्चो मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥

निञ्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेह्या मए ॥७१॥

तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
महबभयाओ भीमाओ, नरएसु वेह्या मए ॥७२॥

जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसन्ति वेयणा ।
एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥

सध्वभवेसु श्रस्साया, वेयणा वेह्या मए ।
निमेसन्तरमित्तं पि, ज साता नत्थि वेयणा ॥७४॥

तं बिन्तङ्गमापियरो, छन्देण पुत्त ! पव्वया ।
नवर पुण सामणे, दुक्ख निष्पडिकम्मया ॥७५॥

सौ बेइ अम्मापियरो ! एवमेयं जहा फुड ।
पडिकम्मं को कुणइ, अरणे मियपकिलण ॥७६॥

एंगब्बौए अरणे व, जहा उ चरइ मिर्गे ।
एवं धम्म चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥

जया मिगस्स आयंको, महारण्मिजायइ ।
अच्छत रुक्खमूलंमि, को णं ताहै तिगिच्छइ ॥७८॥

को वा से ओसह देइ, को वा से पुच्छइ सुह ?
को से भत्त च पाणं वा, आहरित्तु पणामए ? ॥७९॥

जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं ।
भज्जपाणस्स अहुए, वल्लराणि सराणि य ॥८०॥

खाइत्ता पाणियं पाउ, वल्लरेहि सरेहि य ।
 मिगचारिय चरित्ता ण, गच्छइ मिगचारिय ॥द१॥
 एवं समुद्दिशो भिक्खू, एवमेव श्रणेगए^१ ।
 मिगचारियं चरित्ता ण, उड्ढ पङ्कमइ दिस ॥द२॥

जहा मिए एग श्रणेगचारी,
 श्रणेगवासे धुवगोयरे य ।
 एवं मुणी गोपरिय पविष्टे,
 नो हीलए नो वि य लिंसएझा ॥द३॥

मिगचारिय चरिस्सामि, एव पुत्ता^२ । जहासुह ।
 अभ्मापिऊहिङ्गाश्रो, जहाइ उर्वहि तश्रो ॥द४॥
 मियचारिय चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्षणि ।
 तुब्मेहि अब्भणन्नाश्रो^३, गच्छ पुत्त । जहासुह ॥द५॥

एवं सो अभ्मापियरो, श्रणुमाणित्ताण बहुविह ।
 ममतं छिन्दइ ताहे, महानागो व्व कचुय ॥द६॥
 इड्ही वित्त च मित्ते य, पुत्तदार च नायश्रो ।
 रेणुय व पडे लगां, निदधुणित्ताण निगाश्रो ॥द७॥

पंचमहव्वयजुत्तो पचसमिश्रो तिगुत्तिगुत्तो य ।
 सनिभन्तरबाहिरए तवोकम्ममि उज्जुश्रो ॥द८॥
 निम्ममो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो ।
 समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥द९॥
 लाभालाभे सुहे दुखे, जीविए मरणे तहा ।
 समो निन्दापससासु, तहा माणावमाणश्रो ॥द१०॥

१ श्रणिएयणे । २ अभ्म । ३ जुन्नाश्रो ।

गारवेसुं कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हाससोगाश्रो, अनियाणो अबन्धणो ॥६१॥

अणिस्सिश्रो इह लोए, परलोए अणिस्सिश्रो ।
वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥६२॥

अप्पसत्थेहि दारेहि, सव्वश्रो पिहियासवे ।
अजभप्पज्ञाणजोगेहि, पसत्थदनसासणे ॥६३॥

एवं नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य ।
भावणाहि य सुद्धाहि, सम्म भावितु अप्पयं ॥६४॥

बहुयाणि उ वासाणि, सामणमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धि पत्तो श्रणुत्तर ॥६५॥

एवं करन्ति संबुद्धा, पण्डया पवियक्खणा ।
विणिध्रुन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥६६॥

महाप्पभावस्स महाजसस्स,
मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं ।

तवप्पहाणं चरियं च उत्तम,
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुत ॥६७॥

वियाणिया दुक्खविवद्धण धणं,
ममत्तबन्ध च महाभयावह ।
सुहावहं धम्मधुरं श्रणुत्तर,
धारेज्ञ निव्वाणगुणावह महं, त्ति बेमि ॥६८॥

॥ मियापुत्तीय एगूणवीसइममजभयण समत ॥

अह महानियठिज्जं वीसइम अञ्जभूयणं

सिद्धाण नमो किञ्चा, सजयाण च भावश्चो ।

अत्थधम्मगद्द तच्च, अणुसिद्धिं सुणेह मे ॥१॥

पमूयरयणो राया, सेणिश्चो मगहाहिवो ।

विहारजत्त निज्ञाश्चो, मणिकुर्च्छसि चेइए ॥२॥

नाणाङ्गुमलयाइण्ण, नाणापक्षिलनिसेविय ।

नाणाकुसुमसंछन्न, उज्जाण नन्दणोवम ॥३॥

तत्य सो पासइ साहुं, सजयं सुसमाहिय ।

निसन्न रुवमूलम्मि, सुकुमाल सुहोइय ॥४॥

तस्स रुव तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए ।

अञ्जन्तपरमो आसी, अउलो रुवविम्हश्चो ॥५॥

अहो वणो अहो रुव, अहो अञ्जस्स सोमया ।

अहो खन्ती अहो मुत्तो, अहो भोगे असगया ॥६॥

तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिण ।

नाइद्वारमणासन्ने, पजलो पडिपुच्छइ ॥७॥

तरुणो सि अञ्जो । पववइश्चो, भोगकालम्मि सजया ।

उवद्धिश्चो सि सामणे, एयमहु सुणेमि ता ॥८॥

अणाहोमि महाराय ! नाहो मङ्ग न विज्ञद ।

अणुकम्पग सुहिं वावि, कच्चि नाभिसमेमह' ॥९॥

तश्चो सो पहसिश्चो राया, सेणिश्चो मगहाहिवो ।

एव ते इडिदमन्तस्स, कहं नाहो न विज्ञइ ? ॥१०॥

होमि नाहो भयताण, भोगे भुंजाहि सजया !

मित्तनाइपरिबुडो, माणुस्स खु सुद्दलहं ॥११॥

अप्यना वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिका ।
अप्यना अणाहो सन्तो, कह' नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥

एव वुत्तो नरिन्दो सो, सुसभन्तो सुविम्हिश्चो ।
वयण आसुयपुच्च, साहुणा विम्हयन्निश्चो ॥१३॥
अस्सा हृथी मणुस्सा मे, पुर अन्तेउर च मे ।
भु जामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरिय च मे ॥१४॥
एरिसे सम्पदगम्मिम, सच्चकामसमधिए ।
कह अणाहो भवइ, मा हु भन्ते ! मुस वए ॥१५॥
न तुम जाणे अणाहस्स, अत्थ पोत्थ च पत्तिवा ।
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहि वा ॥१६॥
सुणेह मे महाराय, अच्चक्षित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवइ, जहा मेश्च पवत्तिय ॥१७॥
कोसम्बी नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्ज्म, पभूयधणसच्चश्चो ॥१८॥
पढ़मे वए महाराय ! अउला मे अच्छवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सच्चगत्तेसु पत्तिवा ॥१९॥
सत्थ जहा परमतिक्ख, सरीरविवरतरे ।
आबीलिङ्ग^१ अरो कुद्धो, एव मे अच्छवेयणा ॥२०॥
तिय मे अन्तरिच्छ्य च, उत्तमग च पीड़ह ।
इन्द्रासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥
उवट्टिया मे आयरिया, विज्ञामन्ततिगिच्छया ।
अबीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥२२॥

ते मे तिगिच्छं कुच्चन्ति, चाउप्पाय जहाहियं ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्ज्ञ श्रणाहया ॥२३॥
 पिया मे सब्बसारपि, दिज्ञाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्ज्ञ श्रणाहया ॥२४॥
 माया य मे महाराय! पुत्तसोगदृहद्विया ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्ज्ञ श्रणाहया ॥२५॥
 भायरो मे महाराय! सगाजेट्टकणिद्वगा ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्ज्ञ श्रणाहया ॥२६॥
 भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्टकणिद्वगा ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्ज्ञ श्रणाहया ॥२७॥
 भारिया मे महाराय! अणुरत्ता अणुव्वया ।
 असुपुण्णोहि नयण्णोहि, उर मे पर्विसचइ ॥२८॥
 अन्न पाण च एहाण च, गन्धमल्लविलेवण ।
 मए नाथमणाय वा, सा वाला नेवभु जइ ॥२९॥
 खण पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्टइ ।
 न य दुख्खा विमोएइ, एसा मज्ज्ञ श्रणाहया ॥३०॥
 तओ हं एवमाहसु, दुख्खमाहु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुभविज जे, ससारम्मि अणन्तए ॥३१॥
 सइं च जइ मुच्चेज्ञा, वेयणा विडला इओ ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो, पब्बए अणगारिय ॥३२॥
 एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा !
 परियत्तत्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥

त अग्रो कल्ले पभायमिम्, आपुचिछत्ताण बन्धवे ।
 खन्तो इन्तो निरारस्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥
 ततो हं नाहो जाअग्रो, अप्पणो य परस्स य ।
 सव्वेंसि चेव भूयाण, तसाण थावराण य ॥३५॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा घेण्, अप्पा मे नन्दण वण ॥३६॥
 अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तमित्तं च, दुप्पट्टियसुपट्टिअ ॥३७॥
 इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !

तमेगच्चित्तो निहुअग्रो सुगेहि ।
 नियण्ठधम्म लहियाण वि जहा,
 सोयन्ति एगे ब्रहुकायरा नरा ॥३८॥
 जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं,
 सम्म च नो फासयइ पमाया ।
 अनिग्रहप्पा य रसेसु गिछे,
 न मूलअग्रो छिंदइ बन्धण से ॥३९॥
 आउत्तया जस्स न अत्थि काङ्ग,
 इरियाए भासाए तहेसणाए ।
 आयाणनिक्खेवदुगछणाए,
 न धीरजायं^१ अणुजाइ मगं ॥४०॥
 चिर पि से मुण्डरुई भवित्ता,
 अथिरव्वए तवनियमेहि भट्टे ।
 चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता,
 न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥

पोले व मुट्ठी जह से असारे,
अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेहलियप्पगासे,
अमहरघए होइ हु जाणएसु ॥४२॥

कुसीललिंग इह धारइत्ता,
इसिजभयं जीविय बूहइत्ता ।
असजए संजयलप्पमाणो,
विणिधायमागच्छइ से चिरपि ॥४३॥

विस तु पीय जह कालकूडं,
हणाइ सत्थ जह कुगाहीय ।
एसो वि फस्मो विसओववज्ञो,
हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥४४॥

जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे,
निसित्त कोउहल सपाढे ।
कुहेडविज्ञासवदारजीवी,
न गच्छइ सरणं तम्मि काले ॥४५॥

तमतमेखोव उ से असीले,
सथा झूही विप्परियासुवेइ ।
सधावइ नरगतिरिकलजोर्णि,
मोण विराहित्तु असाहूर्वे ॥४६॥

उहेसिय कीयगडं नियांगं,
न मुचइ किर्कच अणेसणिज्ज ।
अगरी विवा सब्बभक्खो भवित्ता,
इत्तो चुए गच्छइ कट्टू पाव ॥४७॥

न तं अरी कठछेत्ता करेह,
 ज से करे श्रप्पणिया दुरप्पया ।
 से नाहिं मच्चु मुहं तु पत्ते,
 पच्छाभितावेण दयाविहृणो ॥४८॥

निरद्विया नगरुई उ तस्स,
 जे उत्तमद्वे विवज्ञासमेह ।
 इमे वि से नत्यं परे वि लोए,
 दुहिंश्रो वि से सिज्जइ तत्यं लोए ॥४९॥

एमेवज्हा छन्दकुसीलरूपे,
 मग्ग विराहेत् जिणुत्तमाण ।
 कुररी विवा भोगरसाणुगिद्वा.
 निरद्वूसोया परितावमेह ॥५०॥

सोज्ज्वाण मेहावि ! सुभासियं इमं.
 श्रणुसासण नाणगुणोववेय ।
 मग्गं कुसीलाण जहाय सच्च,
 महानियठाण वए पहेण ॥५१॥

चरित्तमायारगुणन्निए तओ ।
 श्रणुत्तर सज्जम पालिया णं ।
 निरासवे सखवियाण कम्म,
 उवेह ठाणं विडलुत्तमं धुवं ॥५२॥

एकुगदन्तेऽवि महातवोधणे,
 महामुणी महापइन्ने महायसे ।
 महानियण्ठज्जमिण महासुयं,
 से काहए महया चित्थरेण ॥५३॥

तुद्वो य सेणिश्चो राया,
इणमुदाहुं कथंजली ।
अणाहत्ते जहामूयं,
सुट्ठु मे उवदंसिय ॥५४॥

तुजम्भं सुलद्व खु मणुस्सजम्म,
लाभा सुलद्वा य तुमे महेसी !
तुब्मे सणाहा य सबन्धवा य,
ज मे ठिया मग्नि जिणुत्तमाण ॥५५॥

तंसि नाहो अणाहाणं,
सच्चमूयाण सजया !
खामेभि ते महाभाग !
इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥

पुच्छङ्कण मए तुब्भ,
भाणविर्घो उ जो कश्चो ।
निमन्तिथा य भोगेहि,
तं सच्च मरिसेहि मे ॥५७॥

एव थुणित्ताण स रायसीहो,
अणगारसीहुं परमाइ भत्तिए ।
सम्मोरोहो सपरियणो सबन्धवो,
धर्ममाणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥

ऊससियंरोसकूवो,
काऊण य पयाहिण ।
अभिवन्दिङ्ण सिरसा,
अइयाओ नराहिवो ॥५९॥

इयरो वि गुणसमिद्धो,
तिगुत्तिगृत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विध्पमुक्तो,
विहरइ वसुह विगयमोहो, त्तिवेमि ॥६०॥

॥ महानियठिज्ज बीसइममज्जयण समत्त ॥

अह समुद्धपालोयं एगबीसइमं अज्जयणं
चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ, सीसे स उ महृष्णो ॥ १ ॥

निगन्थे पावयणे, सावए से वि कोविए ।
पोएण ववहरन्ते, पिहुण्डं नगरमागए ॥ २ ॥

पिहुण्डे ववहरन्तस्स. वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्त पइगिज्ञभ, सदेसमह पतिथओ ॥ ३ ॥

अह पालियस्स घरिणि, समुद्धमिम पसवइ ।
अह बालए तहि जाए, समुद्धपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥

खेमेण आगए चम्प, सावए वाणिए घर ।
संवङ्गइ तस्स [घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खइ नीइकोविए ।
जोच्चणेण य सपन्ने, सुरुवे पियदसणे ॥६॥

तस्स रूववइं भज्ज, पिया आरोइ रूविँण ।
पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥७॥

अह अन्नथा कथाई, पासायालोयणे ठिश्चो ।
वज्ञभमण्डणसोभागं, वज्ञभ पासइ वज्ञभगं ॥८॥

त पासिइण सविग्गो,^१ समुद्रपालो हणभब्बवी ।
अहोऽसुहारण कम्माण, निज्ञाण पावग इम ॥९॥
सबुद्धो सो तर्हि भगव, परमसवेगमागश्चो ।
आपुच्छऽस्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥

जहितु सगं च महाकिलेस,
महन्तमोह कसिण भयावह ।
परियायधम्म चऽभिरोयएज्ञा,
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥

अर्हिससच्चं च अतेणग च,
तत्तो य बम्मे अपरिगहं च ।
पडिवज्ञिया पचमहव्याणि,
चरिज्ञ धम्म जिणदेसिय विझ ॥१२॥
सघ्वेहि भूर्एहि दयाणुकंपी,
खन्तिकवमे सजयबम्भयारी ।
सावज्ञजोग परिवज्ञयन्तो,
चरिज्ञ भिक्खु सुसमाहिइन्दिए ॥१३॥

कालेण काल विहरेज्ज रह्ये,
बलाबल जाणिय अप्पणो य ।
सीहो व सहेण न सतसेज्जा,
वयजोग सुज्ञा न असव्भमाहु ॥१४॥

उवेहमाणे उ परिव्वइङ्गा,
पियमप्तिप्य सब्ब तितिव्वखइङ्गा ।
न सब्ब सव्वत्थऽभिरोयइङ्गा,
न यावि पूय गरह च संजय ॥१५॥
अणेगच्छन्दा इहं माणवेहिं,
जे भावन्नो सपगरेह भिक्खु ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा,
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे,
सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खु,
सगामसीसे इव नागराया ॥१७॥

सीओसिणा दंसमसा य फासा,
आयंका विविहा फुसन्ति वेहं ।
अकुकुओ तत्थऽहियासएज्जा,
रयाइ खेविज्ज पुरे कयाइ ॥१८॥

पहाय राग च तहेव दोसं,
मोह च भिक्खु सययं वियंखणो ।
मेरुव्व वाएण अकम्पमाणो,
परोसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥

अणुन्नए नावणए महेसी,
न यावि पूयं गरह च सजए ।
से उज्जुभावं पडिवज्ज, संजए,
निव्वाणमग्ग विरए उवेह ॥२०॥

प्रसद्वरहस्ये पहीणसथवे,
विरए आयहिए पहाणवो ।
परमदृपएहं चिदृष्ट,
छिन्नसोए अममे अकिचणे ॥२१॥

विवित्तलयणाइ भएङ्ग ताई,
निरोवलेवाइ असथडाइ ।

इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं,
काएण फासेझ परोसहाइ ॥२२॥

सन्माणनाणोवगए महेसी,
अणुत्तरं चरित धन्मसचय ।

अणुत्तरे नाणधरे जससी,
ओभासइ सूरिए बडन्तलिक्खे ॥२३॥

दुविहं खवेऊण य पुण्णपाव,
निरगणे सव्वश्रो विष्पमुक्के ।

तरिता समूह व महाभवोह,
समूहपाले अपुण्णागम गए, त्तिबेमि ॥२४॥

॥ समूहपालिय एगवीसइममज्ञभयण समत ॥

अह रहनेमिज्जं बावीसइम श्रीज्ञभयणे

सोरियपूरस्मिन् नयरे, आसि राया महिडिढए ।
चसुदेवुत्ति नामेण, रायलक्खणसज्जुए ॥१॥

तस्स भज्ञा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा ।
ताँसि द्वोणह दुवे पुत्ता, इट्टा राम केसवा ॥२॥

सोरियपुरस्मि नयरे, आसि राया महिंद्रेण ।
 समुद्रविजय नामं, रायलक्षणसञ्जुए ॥३॥
 तस्स भज्ञा सिद्धा नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगव अरिदुनेमि त्ति, लोगनाहे दभीसरे ॥४॥
 सोऽरिदुनेमिनामो उ, लक्षणस्सरसञ्जुओ ।
 अद्गुसहस्रलक्षणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥५॥
 वज्ञरिसहस्रघयणो, समचउरसो भसोयरो ।
 तस्स रायमई कन्नं, भज्जं जायइ केसवो ॥६॥
 अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी ।
 सब्बलक्षणसपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥७॥
 अहाह जणश्चो तीसे, वासुदेवं महिंद्रयं ।
 इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं ददामिझह ॥८॥
 सब्बोसहीहिं एहविश्चो, कय-कोउयमंगलो ।
 दिव्वज्जुयलपरिहिश्चो, आभरणेहिं विसूसिश्चो ॥९॥
 मत्तं च गन्धहत्य, वासुदेवस्स जेटुग ।
 आरुढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहु ॥१०॥
 अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए ।
 दसारचक्केण य सो, सब्बश्चो परिवारिश्चो ॥११॥
 चउरंगिणोए सेणाए, रहयाए जहक्कमं ।
 तुडियाण सन्निनाएण, दिव्वेण गगणं फुसे ॥१२॥
 एयारिसाए इडिंदेण, जुत्तीए उत्तमाइ य ।
 नियगाश्चो भवणाश्चो, निज्ञाश्चो विष्वपुंगवो ॥१३॥

अह सो तत्य निज्ञन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाढेहि पंजरेहि च, सन्निरुद्धे सुदुक्षिवए ॥१४॥

जीवियन्त तु सम्पत्ते, मसट्टा भक्षियव्वए ।
पासित्ता से महापन्ने, सार्हि इणमब्बवी ॥१५॥

कस्स अट्टा इमे पाणा, एए सच्चे सुहेसिणो ।
वाढेहि पंजरेहि च, सन्निरुद्धा य अच्छहि ? ॥१६॥

अह सारही तओ भणइ, एए भद्वा उ पाणिणो ।
तुजभ किवाह कज्जम्मि, भोयावेउ बहु जण ॥१७॥

सोऊण तस्स वयण, बहुपाणिविणासण ।
चिन्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिश्चो ॥१८॥

जइ भजभ कारणा एए, हम्मन्ति सुवहू जिया ।
न मे एयं तु निस्सेस, परलोगे भविस्सइ ॥१९॥

सो कुण्डलाण जुयल, सुतग च महायसो ।
आभारणाणि य सब्बाणि, सारहिस्स पणामए ॥२०॥

मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइय समोइण्णा ।
सविंड्ढीइ सपरिसा, निक्खमण तस्स काउ जे ॥२१॥

देवमणुस्सपरिबुडो, सीयारयण तओ समारूढो ।
निक्खमिय बारगाओ, रेवयम्मि ठिश्चो भगव ॥२२॥

उज्जाण सपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ ।
साहस्सीइ परिबुडो, अह निक्खमइ उ चित्तार्हि ॥२३॥

अह से सुगन्धगन्धीए, तुरिय मउअकुंचिए ।
सयमेव लुचइ केसे, पचमुट्टीहि समाहिष्ठो ॥२४॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छ्यभणोरहं तुरियं, पावसु त दमीसरा ! ॥२५॥

नाणेण दसणेण च, चरित्तेण तहेव य ।
खंतीए मुत्तीए वड्माणो भवाहि य ॥२६॥

एवं ते रामकेसवा, दसारा य वहू जणो ।
अरिदुणोर्मि वन्दिता, अभिगया वारगार्मिर ॥२७॥

सोङ्ग रायकन्ता, पद्वज्जं सा जिणस्स उ ।
तीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुच्छ्या ॥२८॥

राईमई विचिन्तेइ, धिरत्यु मम जीवियं ।
जाझं हं तेण परिस्त्रिता, सेयं पद्वइउं मम ॥२९॥

अह सा भमरसन्निभे, कुञ्जफणगप्पसाहिए ।
सथमेव लुंचइ केसे, धिमती ववस्तिया ॥३०॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
ससारसागरं घोरं तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥३१॥

सा पद्वइया सन्ती, पद्वावेसी तर्हि बहुं ।
सथण परियणं वेव, सोलवन्ता वहुस्सुया ॥३२॥

गिरिरेवतयं जन्ती, वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारस्मि, अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥

चौवराई विसारन्ती, जहा जायति पासिया ।
रहमेमि भमाचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥

भीया य सा तर्हि दद्धुं, एगन्ते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउ संगोप्तुं, वेवमाणी निसीयइ ॥३५॥

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दिविजयगश्चो ।
 भीयं पवेविय दद्धु, इम वक्कं उदाहरे ॥३६॥
 रहनेमी श्रहं भद्दे ! सुल्वे ! चारुभासिणी !!
 मम भयाहि सुयणु ! न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥
 एहि ता भु जिमो भोए, माणुस्स खु सुदुल्लह ।
 भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिणमग्ग चरिस्समो ॥३८॥
 दद्धुण र् नेमि त, भगुजोयपराजिय ।
 रायमई श्रस्मभन्ता, श्रप्पाण सवरे तहि ॥३९॥
 अह सा रायवरकन्ना, सुद्धिया नियमव्वए ।
 जाई कुलं च सील च, रक्खमाणी तय वए ॥४०॥
 जइ सि रुवेण वेसमणो, ललिएण नलकूवरो ।
 तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्ख पुरदरो ॥४१॥
 (पक्खदे जलिअं लोइ, धूमकेउ दुरासय ।
 नेच्छन्ति वंतयं भोत्तु, कुले जाया श्रगधणे ॥)
 धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा ।
 वन्त इच्छसि आवेउ, सेय ते मरणं भवे ॥४२॥
 अहं च भोगरायस्स, तं च सि अन्धगवण्हणो ।
 मा कुले गधणा होमो, संजम निहुओ चर ॥४३॥
 जइ तं काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
 वायाविद्धो व्व हढो, श्रद्धिश्रप्पा भविस्ससि ॥४४॥
 गोवालो भण्डवालो वा, जहा तद्वचणिस्सरो ।
 एवं श्रणिस्सरो त पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥
 (कोहं माणं निगिण्हत्ता, माय लोभ च सब्बसो ।
 इदियाइं वसे काउं, श्रप्पाण उवसहरे ॥)

तीसे सो वयण सोऽ्मा, सजयाएं सुभासियं ।
 अकुसेण जहा नागो, धर्मे संपडिवाह्न्द्रो ॥४६॥
 मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिह्निद्वाह्न्द्रो ।
 सामण्ण निज्ञल फासे, जावज्ञीवं दद्वच्वाह्न्द्रो ॥४७॥
 उगं तव चरित्ताणं, जाया दुष्णि वि केवली ।
 सच्च कर्म खवित्ताणं, सिंद्वि पत्ता श्रणुत्तर ॥४८॥
 एव करेन्ति सबुद्धा, पण्डिया पवियवखणा ।
 विणियद्वृन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो, त्ति बेमि ॥४९॥
 ॥ रहनेमिज्जं वावीसममज्जयणं समत्त ॥

अह केसिगोयमिज्जं तेवीसुइमं अज्जयण

जिरो पासित्ति नामेण, अरहा'लोगपूह्न्द्रो ।
 संबुद्धप्पा य सच्चवन्तु धर्मतित्ययरे जिरो ॥ १ ॥
 तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
 केसो कुमारसमणे, विज्ञाचरणपारगे ॥ २ ॥
 ओहिनाणसुए बुद्धे, सोससधसमाउले ।
 गामाणुगाम रीयन्ते, सावत्तिथ 'पुरमागए ॥ ३ ॥
 तिन्दुयं नाम उज्जाण, तम्मि नगरमण्डले ।
 फासुए सिज्ञसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥
 अह तेरोव कालेण धर्मतित्ययरे जिणे ।
 भगव बद्धमाणि त्ति, सच्चलोगम्मि विसुए ॥ ५ ॥
 लोयविसुए । सच्चवन्तु सच्चदसी य, धर्मतित्यस्स देसुए ।

तस्स लोगपदीवस्स, आसि सीसे महायसे ।
 भगवं गोयमे नाम, विज्ञाचरणपारए ॥६॥
 बारसगविङ्ग बुद्धे, सीससध-समाउले ।
 गामाणुगाम रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए ॥७॥
 कोट्टुगं नाम उज्ज्वाणं, तस्मि नगरमण्डले ।
 फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुचागए ॥८॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभश्चो वि तत्थ विहर्सु, श्लौणा सुसमाहिया ॥९॥
 उभश्चो सीससधाण, सजयाण तवस्त्विषण ।
 तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवताण ताइण ॥१०॥
 केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो ?
 श्रायारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥
 चाउज्ज्वामो य जो धम्मो, जो इमो पचसिक्खश्चो ।
 देसिश्चो बद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥
 अचेलश्चो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरत्तरो ।
 एगकज्ज्ञपवन्नाण, विसेसे कि तु कारण ? ॥१३॥
 अह ते तत्थ सीसाण, विज्ञाय पवितक्षिय ।
 समागमे क्यमई, उभश्चो केसिगोयमा । १४॥
 गोयमे पडिरुवन्नू, सीससधसमाउले ।
 जेद्गु कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुय वणमागश्चो ॥१५॥
 केसी कुमारसमणे, गोयम दिस्समागयं ।
 पडिरुव पडिवत्ति, सम्म सपडिवज्ज्वइ ॥१६॥

पलाल फासु अं तत्य पचमं कुसतणाणि य ।
 गोयमस्स निसेज्ञाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥
 केसी कमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभओ निस्पणा सोहन्ति, चन्दसूरसमप्पभा ॥१८॥
 समागया बहु तत्य, पासण्डा कोउया मिया ।
 गिहत्थाण अणेगाओ, साहसीओ तमागया ॥१९॥
 देवदाणवगन्धव्वा, जवखरखसकिन्नरा ।
 अदिस्ताण च भूयाण, आसी तत्य समागमो ॥२०॥
 पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
 तओ केसि बुवतं तु, गोप्रमो इणमब्बवी ॥२१॥
 पुच्छ भन्ते ! जहिच्छं ते, केसि^३ गोयमब्बवी ।
 तओ केसी अणुज्ञाए, गोयम इणमब्बवी ॥२२॥
 चाउज्ञामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिकिखश्र ।
 देसओ वढ्माणेण, पासेण य महामुणी ॥२३॥
 एगकङ्गपदन्नाणं, विसेसे कि नु कारण ?
 धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पञ्चओ न ते ? ॥२४॥
 तओ केसि बुवत्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
 पन्ना समिक्षए धम्मं, तत्ते, तत्तविणिच्छयं ॥२५॥
 पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा व पच्छिमा ।
 मज्जिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥
 पुरिमाण दुन्विसुजभो उ, चरिमाण दुरण्पालमो ।
 कप्पो मज्जिमगाणं तु, सुविसुजभो सुपालओ ॥२७॥
 । सिया । २ गोयमी केसिमब्बवी ।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मञ्ज, तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥

अचेलगो य जो घम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ बद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥२९॥

एगकञ्चपवन्नाण विसेसे कि तु 'कारण ।
लिंगे दुखिहे मेहावी, कहं विष्पञ्चओ न ते ? ॥३०॥

केसिमेव बुवाण तु, गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म, घम्मसाहणमिच्छ्य ॥३१॥

पञ्चपत्थ च लोगस्स, नाणाविहविगत्पर्ण ।
जत्तत्यं गहगत्थ च, लोगे लिंगपश्चोयण ॥३२॥

अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसद्भूयसाहणा ।
नाणं च दसणं चेव चरित्त चेव निच्छाए ॥३३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मञ्ज, त मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥

अणेगाण सहस्राणं, मञ्जे चिट्ठसि गोयमा !
ते य ते अभिगच्छन्ति, कहु ते निज्ञिया तुमे ? ॥३५॥

एगे जिए जिया पंच, पच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताण, सच्चसत्तू जिरामहं ॥३६॥

सत् य इह के बुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसि बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥३७॥

एगत्पा अजिए सत्, कसाया इंदियाणि य ।
ते जिणितु जहानायं, विहरामि अह मुणी ॥३८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्जं, त मे कहसु गोयमा ! ॥३६॥
 दीसन्ति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।
 मुक्षपासो लहुबूझो, कह तं विहरसि मुणी ? ॥४०॥
 ते पासे सब्बतो छिता, निहन्तूण उवायओ ।
 मुक्षपासो लहुबूझो, विहरामि अह मुणी ॥४१॥
 पासा य इइ के वुत्ता ? केसो गोयममब्बवी ।
 केसिमेव बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥
 रगहोसादग्रो तिच्चा, नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिन्दिता जहानयं, विहरामि जहक्कमं ॥४३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्जं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥४४॥
 अन्तोहिययसंभूया, लया चिढ्हुइ गोयमा ! ।
 फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥४५॥
 त लयं सब्बसो छिता, उद्धरिया समूलियं ।
 विहरामि जहानयं, मुक्षो मि विसभक्खणं ॥४६॥
 लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४७॥
 भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
 तमुछितु जहानयं, विहरामि जहासुहं ॥४८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्जं, तं मे क गोयमा ! ॥४९॥

सपञ्जलिया धोरा, श्रगी चिह्नीइ गोयमा ! ।
 जे डहन्ति सरीरत्था, कहं विज्ञाविया तुमे ? ॥५०॥
 महामेहप्पसूयाओ, गिजभ वारि जलुत्तम ।
 सिचामि सथयं तेऽ', सित्ता नो व उहन्ति मे ॥५१॥
 श्रगी य इह के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेव बुवन्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥
 कसाया अगिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जल ।
 सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥५३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्तो वि ससओ मज्जभ, त मे कहसु गोयमा ! ॥५४॥
 अय साहसिङ्गो भीमो, दुद्धस्सो परिधावइ ।
 जंसि गोयम ! आरुङ्गो, कह तेण हीरसि ? ॥५५॥
 पधावन्तं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहिय ।
 न मे गच्छइ उम्मग, मग च पडिवज्जइ ॥५६॥
 आसे य इह के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥
 मणो साहसिङ्गो भीमो, दुद्धस्सो परिधावइ ।
 त सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिखाइ कन्यगं ॥५८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्तो वि ससओ मज्जभ, त मे कहसु गोयमा ! ॥५९॥
 कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जन्तुणो ।
 अद्वाणे 'कह वहन्ते, त न नाससि गोयमा ! ॥६०॥
 जे य मगेण गच्छन्ति, जे य उम्मगपट्टिया ।
 ते सब्बे वेइया मज्जभं, तो न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥

गगे य इइ के बुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥
 कुप्पवर्णपासङ्घो सव्वे उम्मगपट्टिया ।
 सम्भग तु जिणकखाथ एज मगे हि उत्तमे ॥६३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो वि ससओ मज्ज्ञ तं मे कहसु गोयमा । ॥६४॥
 महाउदगवेगेण, बुज्जमणाण पाणिण ।
 सरण गई पह्डा य, दीव क मशसि मुणी ! ॥६५॥
 अत्य एगो महादीवो, वारिमज्ज्ञे महालओ ।
 महाउदवेगस्स, गई तत्थ न विज्जह ॥६६॥
 दीवे य इइ के बुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेव बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६७॥
 जरामरणवेगेण बुज्जमणाण पाणिण ।
 धम्मो दीवो पह्डा य, गई सरणमूत्तमं ॥६८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो वि ससओ मज्ज्ञ, त मे कहसु गोयमा ! ॥६९॥
 अणवसि महोहंसि, नावा विपरिधावह ।
 जंसि गोयम ! आरूढो, कह पार गमिस्ससि ? ॥७०॥
 जा उ श्रस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणो ।
 जा निरस्साविण नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥
 नावा य इइ का बुत्ता ?, केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥
 सरीरसाहु नाव त्ति, जीवो बुच्चह नाविओ ।
 ससारो अणवो बुतो, जं तरंति महेसिणो ॥७३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसश्चो इमो ।
अन्नो वि संसश्चो मञ्चक, त मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥

अन्धयारे तमे घोरे, चिट्ठन्ति पाणिणो ब्रू ।
को करिस्सइ उज्ज्ञोयं ? सव्वलोयम्मि पाणिण ॥७५॥

उगश्चो विमलो भाणू, सव्वलो पभकरो ।
सो करिस्सइ उज्ज्ञोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥७६॥

भाणूय इइ के बुत्ते ?, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७७॥

उगश्चो खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभवत्तरो ।
सो करिस्सइ उज्ज्ञोयं, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥७८॥

‘साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसश्चो इमो ।
अन्नो वि संसश्चो मञ्चक, त मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥

सारीरमाणसे दुक्खे, बज्जभमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाह, ठाण कि मन्नसे मुणी ? ॥८०॥

अत्थ एगं धुवं ठाणं, लोगगम्मि दुराख्य ।
जत्थ नत्य जरा मञ्च्च, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥

ठाणे य इइ के बुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥८२॥

निव्वाण ति अब्राह ति, सिद्धी लोगगमेव य ।
खेम सिवं शणाबाह, ज चरति महेतिणो ॥८३॥

त ठाण सासय वास, लोगगम्मि दुराख्य ।
जं सपत्ता न सोयन्ति, भवोहन्तकरा मुणी ! ॥८४॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 नमो ते संसारीत !, सच्चसुत्तमहोदही ॥८५॥

एव तु संसए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे ।
 अभिवन्दिता सिरसा, गोयम तु सहायसं ॥८६॥

पचमहव्यथधस्मं, पडिवज्ञइ भावओ ।
 पुरिमस्स पच्छमम्मि, मगे तत्थ सुहावहे ॥८७॥

केसीगोयमओ निव्वं, तम्मि आसि समागमे ।
 सुयसीलसमुक्करिसो, महत्थविणिच्छओ ॥८८॥

तोसिया परिसा सच्चा, सम्मग समुद्रिया ।
 सयुथा ते पसीयतु, भयव केसिगोयमे, त्ति वेमि ॥८९॥

॥ इय केसिगोयमिज्ज तेइसममज्जयण समत्त ॥

अह समिईओ णाम चउबोसइमं अर्जभयणं

अहु पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
 पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तोउ आहिया ॥ १ ॥

इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय ।
 मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अहुमा ॥ २ ॥

एयाओ अहु समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 दुवालसंग जिणवखार्य, मायं जत्थ उ पवयण ॥ ३ ॥

आलम्बणेण कालेण, मर्गेण जयणाइ य ।
 चउकारणपरिसुद्धं, सजए इरियं रिए ॥ ४ ॥

तत्थ आलम्बणं नार्ण, दसर्ण चरण तहा ।
 काले य दिवसे बुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥
 दब्बश्रो खेत्तश्रो चेव, कालश्रो भावश्रो तहा ।
 जयणा चउच्चिहा बुत्ता, त मे कित्तयश्रो सुण ॥६॥
 दब्बश्रो चकखुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तश्रो ।
 कालश्रो जाव रीझ्जा, उवउत्ते य भावश्रो ॥७॥
 इन्दियत्थे विवज्जित्ता, सज्भाय चेव पचहा ।
 तस्मुत्ती तप्पुरङ्कारे, उवउत्ते रिय रिए ॥८॥
 कोहे माणे य मायाए, लोमे य उवउत्तया ।
 हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥९॥
 एथाइं श्रहु ठाणाइ, परिवज्जितु सजए ।
 असावज्ज मिय काले, भास भासिज्ज पन्नव ॥१०॥
 गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणा य जा ।
 आहारोवहिसेज्जाए, एए तिज्जि विसोहए ॥११॥
 उग्गमुप्पायण पढमे, बोए सोहेज्ज एसण ।
 परिभोयम्मि चउङ्क, विसोहेज्ज जय जई ॥१२॥
 ओहोवहोवग्गहिय, भण्डग दुविह मुणी ।
 गिणहन्तो निकिखवन्तो य, पउजेज्ज इम विर्हि ॥१३॥
 चकखुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जय जई ।
 आयए निकिखवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥१४॥
 उज्ज्वार पासवणं, खेल सिघाणजल्लिय ।
 आहार उर्वहि देह, प्रन्नं वावि तहाविहं ॥१५॥
 अणावायमसलोए, अणावाए चेव होइ सलोए ।
 आवायमसलोए, आवाए चेव सलोए ॥१६॥

श्रणावायमसलोए, परस्साणुवघाइए ।
 समे अजभुसिरे वावि, अचिरकलकयम्मि य ॥१७॥
 वित्थणे दूरमोगाढे, नासन्ने विलवज्जिए ।
 तसपाणबोयरहिए, उच्चाराईणि बोसिरे ॥१८॥
 एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो य तओ गुत्तीओ, बोच्छामि अणुपुच्चसो ॥१९॥
 सज्जा तहेव मोसा य, सज्जामोसा तहेव य ।
 चउत्थी असज्जमोसा य, मणगुत्ती चउच्चिहा ॥२०॥
 सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
 मण पवत्तमाण तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२१॥
 सज्जा तहेव मोसा य, सज्जामोसा तहेव य ।
 चउत्थी असज्जमोसा य, बइगुत्ती चउच्चिहा ॥२२॥
 सरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
 वय पवत्तमाण तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२३॥
 ठाण निसीयगे चेव, तहेव य तुयदृणे ।
 उल्लंघणपल्लघणे, इन्दियाण य जुजणे ॥२४॥
 सरम्भसमारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य ।
 कायं पवत्तमाण तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥
 एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
 गुत्ती नियत्तणे बुत्ता, असुभत्येसु सच्चसो ॥२६॥
 एसा पवयणमाया, जे सम्मं श्रायरे मुणी ।
 सो खिप्पं सच्चससारा, विप्पमूङ्गइ पण्डिए, त्तिबेमि ॥२७॥

॥ इय समिईओ चउब्रीमहमपञ्चयण समत ॥

अह जन्नइज्ज पंचबोसइमं अर्जभयणं

माहणकुलसभूश्चो, आसि विष्पो महायसो ।
 जायाई जमजज्ञम्मि, जयघोसि त्ति नामश्चो ॥ १ ॥
 इन्दियगामनिगगाही, मगगामी महामुणी ।
 गामाणुगाम रीयन्ते, पत्तो वाणारसि पुर्ँ ॥ २ ॥
 वाणरसीए बहिया, उज्ज्वाणम्मि मणोरमे ।
 फासुए सेज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥
 अह तेणेव कालेण, पुरोए तत्थ माहणे ।
 विजयघोसि त्ति नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥ ४ ॥
 अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
 विजयघोसस्स जज्ञम्मि, भिक्खमट्टा उवट्टिए ॥ ५ ॥
 समुवट्टिय तहिं सन्त, जायगो पड़िसेहए ।
 न हु दाहामि ते भिक्ख, भिक्खू ! जायाहि अज्ञश्चो ॥ ६ ॥
 जे य वेदविज्ञ विष्पा, जज्ञट्टा य जे दिया ।
 जोइसंगविज्ञ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥
 जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 तैसि अज्ञमिण देय, भो भिक्खू ! सब्बकामिय ॥८॥
 सो तत्थ एव पड़िसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
 न वि रुट्टो न वि तुट्टो, उत्तमट्टगवेसश्चा ॥९॥
 नज्जट्टं पाणहेउ वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
 तैसि विमोक्खणट्टाए, इम वयणमन्ववी ॥१०॥

नवि जाणासि वेयमुहं, नवि चन्नाण जं मुहं ।
 नवखत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥
 जे समत्या समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 न ते तुमं वियाणसि, अहं जाणासि तो भण ॥१२॥
 तस्सक्खेदपमुक्त्वं तु, अच्यन्तो तहि दिश्रो ।
 सपरिस्तो पंजली होउ, पुच्छइ तं महामृण ॥१३॥
 वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं ।
 नवखत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥१४॥
 जे समत्या समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 एयं मे संसय सच्चं, साहू ! कहसु पुच्छओ ॥१५॥
 अग्निगृहत्तमुहा वेया, जन्नट्टी वेयसा मुहं ।
 नवखत्ताण मृहं चन्दो, धम्मणं कासवो मुहं ॥१६॥
 जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ति पजलीड़डा ।
 वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥
 अजाणगा जन्नवाई, विज्ञामाहणसंपया ।
 गूढा सज्जायतवसा, भासच्छन्ना इवगिणो ॥१८॥
 जो लोए दम्भणो चुत्तो, अग्नी वा महिओ जहा ।
 सया कुसलसंदिङ्, तं वयं बूम माहण ॥१९॥
 जो न सद्गृह आगत्तुं, पच्चयन्तो न सोयइ ।
 रमइ अज्ञवयणम्मि, तं वयं बूम माहण ॥२०॥
 जायरूबं जहामहुं, निष्ठुन्तसलपावरं ।
 रागदोसभयाईयं, तं वयं बूम माहण ॥२१॥
 तवस्तियं किसं दन्तं, अवच्चियमससोणियं ।
 सुव्यय पत्तनिव्वाण, तं वयं बूम माहण ॥२२॥

तसपाणे वियाणेत्ता, सगहेण य थावरे ।
 जो न हिसइ तिविहेण, त वय बूम माहण ॥२३॥
 कोहा व जइ वर हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
 मुस न वयइ जो उ, तं वय बूम माहण ॥२४॥
 चित्तमन्तमचित्त वा, अप्प या जइ वा बहु ।
 न गिणहइ अदत्त जो, त वय बूम माहण ॥२५॥
 दिव्वमाणुस्स-तेरिच्छ, जो न सेवइ मेहुण ।
 मणसा कायवक्केण, त वयं बूम माहण ॥२६॥
 जहा पोम जले जाय, नोवलिप्पइ वारिणा ।
 एव श्रालित्तो कामेहि, त वय बूम माहण ॥२७॥
 अलोलुय मुहाजीवि, श्रणगार अर्किचण ।
 अससत्त गिहत्येसु, त वय बूम माहण ॥२८॥
 जहित्ता पुव्वसजोग, नाइसगे य बन्धवे ।
 जो सज्जइ एएसु', तं वय बूम माहण ॥२९॥
 पसुबन्धा सब्बवेया य, जटु च पावकस्मुणा ।
 न त तायन्ति दुस्सील, कस्मणि बलवन्ति हि ॥३०॥
 न वि मुष्ठिएण समणो, न श्रोकारेण बस्मणो ।
 न मुणी रण्णवासेण, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥
 समयाए समणो होइ, बस्मचरेण बस्मणो ।
 नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥
 कस्मुणा बस्मणो होइ, कस्मुणा होइ खतिश्चो ।
 वहस्सो कस्मुणा होइ, सुद्धो हवइ कस्मुणा ॥३३॥

एए पाउकरे बुद्धे, जैहिं होइ सिणायओ ।
 सब्बकम्मविणिम्मुक्कं, त वयं बूम माहण ॥३४॥
 एवं गुणसमाउत्ता, जे भवन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥
 एव तु ससए छिन्ने, विजयघोसे य माहरो ।
 समुदाय तओ तं तु, जयघोस महामुणि ॥३६॥
 तुद्धे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयजली ।
 माहणत्त जहासूय, सुद्धु मे उवदंसियं ॥३७॥
 तुब्बे जइया जन्माण, तुब्बे वेथविऊ विऊ ।
 जोइसगविऊ तुब्बे, तुब्बे धम्माण पारगा ॥३८॥
 तुब्बे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 तमणुगगहं करेहऽमहं, भिक्खेण भिस्खु उत्तमा ॥३९॥
 न कज्जं मज्जभ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसु दिया !
 मा भमिहिसि भयावद्दृ, घोरे ससारसागरे ॥४०॥
 उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पइ ।
 भोगी भमइ ससारे, अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥
 उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टियासया ।
 दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लगड ॥४२॥
 एवं लगन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
 विरत्ता उ न लगन्ति, जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥
 एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए ।
 अगुणगारस्स निक्खन्तो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥

खवित्ता पुव्वकस्माइ, संजमेण तवेण य ।
जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तर, त्ति बेमि ॥४५॥

॥ इह जन्नहर्ज णाम पचबीसइम अञ्जभयण समत्त ॥

अह सामायारी णाम छब्बीसइम अञ्जभयणं

सामायारि पवक्खामि, सब्बदुक्खविमोक्खर्णि ।
ज चरित्ताण निगन्था, तिणा ससारसागर ॥ १ ॥
पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥
पचमी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छटुओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य, तहक्कारो य शट्टमो ॥ ३ ॥
अब्बुद्धाणं च नवम, दसमा उवसपदा ।
एसा दसगा साहृण, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥
गमणे आवस्सिय कुञ्जा, ठाणे कुञ्जा निसीहिय ।
आपुच्छण सयकरणे, परकरणे पडिपुच्छण ॥ ५ ॥
छन्दणा दब्बजाएण इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥
अब्बुद्धाण गुरुपूया, अच्छणे उवसपदा ।
एव दुपचसजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥
पुव्विल्लम्भि चउध्भाए, आइच्चम्भि समुद्धिए ।
भण्डय पडिलेहिता, वन्दित्ता य तओ गुरु ॥ ८ ॥

पुच्छिञ्चापंजलीउडो, किं कायव्व मए इह ।
 इच्छ निश्रोइउ भन्ते । वेयावच्चे व सज्जाए ॥ ६ ॥
 वेयावच्चे निउत्तेण, कायव्व श्रगिलायश्रो ।
 सज्जाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविसोद्धरणे ॥ १० ॥
 द्विवस्स स चउरो भागे, कुञ्जा भिक्षू वियक्षणो ।
 तश्रो उत्तरगुणे कुञ्जा, द्विणभागेसु चउसु वि ॥ ११ ॥
 पठम पोरिसि सज्जाय, बीय भाण भियायई ।
 तइयाए भिक्षायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्जायं ॥ १२ ॥
 आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउपया ।
 चित्तासोएसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥
 श्रगुल सत्तरत्तेण, पक्खेण च दुश्रगुलं ।
 वहुए हायए वावि, मासेण चउरगुलं ॥ १४ ॥
 आसाढबहुलपक्खे, भहवए कत्तिए य पोसे य ।
 फग्गुणवइसाहेसु य, बोद्धव्वा' ओमरत्ताश्रो ॥ १५ ॥
 जेहुआमूले आसाढसावरणे, छहिं श्रगुलेहिं पडिलेहा ।
 श्रहुहिं बिइयतियमि, तइए दस श्रहुहिं चउत्थे ॥ १६ ॥
 रक्ति पि चउरो भागे, भिक्षू कुञ्जा वियक्षणो ।
 तश्रो उत्तरगुणे कुञ्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥
 पठम पोरिसि सज्जाय, बीय भाण भियायई ।
 तइयाए निहमोक्खं तु, चउत्थी भुज्ञो वि सज्जाय ॥ १८ ॥
 जं नेह जया रक्ति, नक्खत्त तम्मि नहचउब्बाए ।
 सपत्ते विरमेज्ञा, सज्जाय पश्रोसकालम्मि ॥ १९ ॥

तमसेव य नवक्षत्ते, गयणचउभागसावसेसम्म ।
 वेरत्तियंपि काल, पडिलेहित्ता मुणी कुञ्जा ॥२०॥
 पुच्चिल्लम्मि चउभाए, पडिलेहित्ताण भण्डय ।
 गुरुं वन्दित्तु सज्जाय कुञ्जा दुक्खविमोक्खणि ॥२१॥
 पोरिसोए चउभाए, वन्दित्ताण तथो गुरुं ।
 अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायण पडिलेहए ॥२२ ।
 मुहपोत्ति पडिलेहित्ता, पडिलेहिञ्ज गोच्छग ।
 गोच्छगलइयगुलिश्रो, वत्थाइ पडिलेहए ॥२३॥
 उद्धु थिरं अतुरिय, पुढ्र ता वत्थमेव पडिलेहे ।
 तो बिद्य पष्टोडे, तइय च पुणो पमञ्जिज्ञा ॥२४ ।
 अणाञ्जाविय अवलिय, अणागुवन्धिममोसर्ल चेव ।
 छ्वप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहण ॥२५॥
 आरभडा सम्मद्वा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
 पष्टोडणा चउत्थी, विकिलत्ता वेइया छ्डो ॥२६॥
 पसिद्धिलपलम्बलोला, एगा मोसा अणोगरुवधुणा ।
 कुणाइ पमाणिपमाय, सकियगणाणोवग कुञ्जा ॥२७॥
 अणूणाइरित्तपटिलेहा, अविवज्ञासा तहेव य ।
 पढम पय पसत्थ, सेसाणि य अप्पसत्थाइ ॥२८॥
 पडिलेहण कुणान्तो, मिहो कह कुणाइ जणवयकह वा ।
 देइ व पञ्चक्खाण, वाएइ सय पडिच्छइ वा ॥२९॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ वणस्सइ-तसाण ।
 पडिलेहणापमत्तो छण्ह पि विराहश्रो होइ ॥३०॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ वणस्सइ-तसाण ।
 पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्षश्रो होइ ॥३१॥

तइयाए पोरिसीए, भत्त पाणं गवेसए ।
 छुण्ह अन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुद्दिए ॥३२॥
 वेयणवेयावच्चे, इरियह्वाए य सजमह्वाए ।
 तह पाणवत्तियाए, छटुं पुण धम्नचिन्ताए ॥३३॥
 निरगन्थो धिइमन्तो निरगन्थो वि न करेज्ञ छाँहि चेव ।
 ठाणेहि उ इमेहि, अणाइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥
 आयके उवसगे, तितिक्खया बस्भचेरगुत्तोसु ।
 पाणिदया तवहेड, सरीर वोच्छेयणह्वाए ॥३५॥
 अवसेस भडग गिजभं, चकखुसा पडिलेहए ।
 परमद्वजोयणाओ, विहार विहरए मुणी ॥३६॥
 चउतथीए पोरिसीए, निकिखवित्ताण भायण ।
 सजभायं तओ कुञ्जा, सब्बभावविभावण ॥३७॥
 पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्ज तु पडिलेहए ॥३८॥
 पासवणुञ्जारभूमि च, पडिलेहिज्ञ जय जई ।
 काउस्सग तओ कुञ्जा, सब्बदुक्खविमोक्खण ॥३९॥
 देवसियं च श्रइयार, चिन्तिज्ञा अणुपुव्वसो ।
 नाणे य दसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥४०॥
 पारियकाउस्सगो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 देवसियं तु श्रइयार, आलोएज्ञ जक्कम्म ॥४१॥
 पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरु ।
 काउस्सगं तओ कुञ्जा, सब्बदुक्खविमोक्खण ॥४२॥

पारियकाउस्सगो,^१ वन्दित्ताण तश्चो गुरुं ।
 थुइमगल च काऊण, काल सपडिलेहए ॥४३॥
 पढमं पोरिसि सजभाय, वितिय, खाण भियायई ।
 तइयाए निहमोख तु, सजभाय तु चउत्तिये ॥४४॥
 पोरिसीए चउत्थीए, काल तु पडिलेहिया ।
 सजभाय तु तश्चो कुज्जा, अबोहन्तो असजए ॥४५॥
 पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तश्चो गुरु ।
 पडिक्कमित्तु कालस्स, काल तु पडिलेहए ॥४६॥
 श्रागए कायचुस्सगो, सब्बदुखविमोखरणो ।
 काउस्सगग तश्चो कुज्जा सब्बदुखविमोखरण ॥४७॥
 राइय च अइयार, चिन्तिष्ठ अणुपुच्चवसो ।
 नाणमि दसणमि य, चरित्तमि तवमि य ॥४८॥
 पारियकाउस्सगो, वन्दित्ताण तश्चो गुरु ।
 राइय तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कम ॥४९॥
 पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दित्ताण तश्चो गुरु ।
 काउस्सगग तश्चो कुज्जा, सब्बदुखविमोखरण ॥५०॥
 कि तव पडिवज्जामि, एव तत्थ विचिन्तए ।
 कउस्सग तु पारित्ता, वन्दएस^२ तश्चो गुरुं ॥५१॥
 पारियकाउस्सगो, वन्दित्ताण तश्चो गुरु ।
 तव तु पडिवज्जेज्जा, कुज्जा सिद्धाण सथवं ॥५२॥
 एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
 जं चरित्ता बहू जीवा, तिणा ससारसागर ॥५३॥
 ॥ इह सामायारी णाम छब्बीसइम अञ्जभृत्यण समत ॥

१ सिद्धाण सथव किच्चा । २. करिज्जा जिणसथवं ।

अह खलुकिर्जं णाम सत्तबोसद्दमं अञ्जभयणं

थेरे गणहरे गग्ने, मुणी आसि विसारए ।

आइप्पे गणिभावम्मि, समाहि पडिसंधए ॥ १ ॥

वह्ने वहमाणस्स, कतार अइवत्तए ।

जोगे वहमाणस्स, ससारो अइवत्तए ॥ २ ॥

खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सइ ।

असनाहि य वेएइ, तोत्तओ से य भज्जइ ॥ ३ ॥

एगं डसइ पुच्छम्मि, एग विन्धइ भिक्खरणं ।

एगो भजइ समिल, एगो उप्पहपट्टिओ ॥ ४ ॥

एगो पडइ पासेण, निवेसइ निवज्जइ ।

उक्कुइइ उफिडइ, सढे वालगवी वए ॥ ५ ॥

माई मुखेण पडइ, कुछे गच्छइ पडिप्पहं ।

मयलक्खेण चिट्ठइ, वेगेण य पहावइ ॥ ६ ॥

छिन्नाले छिन्दइ सिल्लि, दुहन्तो भंजए जुगं ।

सेवि य सुसुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए ॥ ७ ॥

खलु का लारिसा जोझा, दुस्सीसा वि हु तारिसा ।

जोइया दम्मजाणम्मि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥ ८ ॥

इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।

सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥

भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्दे ।

एग आणुसासम्मि, हैऊहिं कारणेहि य ॥ १० ॥

सो वि अन्तरभासिल्लो, दोसमेव पकुच्चवइ ।

आयरियाण तु वयण, पडिकूलेइभिक्खरणं ॥ ११ ॥

न सा मम विद्याणाइ, न य सा मज्ज्ञ दाहिइ ।
 निगगया होहिइ मन्ने, साहू अन्नोत्थ वज्ज्वउ ॥१२॥
 पेसिया पलिउचन्ति, ते परियन्ति समन्तश्चो ।
 रायविर्द्धु च मन्नता, करेन्ति भिउडि भुहे ॥१३॥
 वाइया सगहिया चेव, भत्तपाणेहि पोसिया ।
 जायपकखा जहा हसा, पङ्कमति दिसो दिसि ॥१४॥
 श्रह सारही विचिन्तेइ, खलु केहि समागश्चो ।
 कि मज्ज्ञ दुदुसीसेहि, श्रप्ता मे अवसीधइ ॥१५॥
 जारिसा मम सीसाश्चो, तारिसा गलिगद्धहा ।
 गलिगद्धहे जहित्ताण, दढ पगिणहइ तव ॥१६॥
 मिउमद्वसपन्नो, गम्भोरो सुसमाहिश्चो ।
 विहरइ महिं महप्ता, सीलभूएण श्रप्तणा ॥१७॥

॥ इइ खलुंकिज्ज णाम सत्तबीस इम अञ्जभयण समत्त ॥

श्रह मोक्खमगगई णाम श्रट्टाबीसइमं अञ्जभयण
 मोक्खमगगई तच्च, सुणेह जिणभासिय ।
 चउकारणसजुत्त, नाणदसणलक्खण ॥१॥
 नाण च दंसण चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
 एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहि वरदसिर्हि ॥२॥
 नाण च दसण चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
 एय मग्गमणुप्तत्ता, जीवा गच्छन्ति सोगइ ॥३॥

तत् । पंचविहं नाण, सुय आभिनिकोहिथ ।
 ओहिनाणं तु तइय, मणनाण च केवल ॥४॥
 एयं पंचविह नाण, दब्बाण य गुणाण य ।
 पञ्चवाण य सध्वेर्सि, नाण नाणीहि देसिय ॥५॥
 गुण-गमासओ दब्बं, एगदब्बस्तिसया गुणा ।
 लक्खणं पञ्जवाण तु उभओ अस्तिसया भवे ॥६॥
 धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुगलजन्तवो ।
 एस लोगो त्ति पञ्चतो, जिणेहि वरदंसिहि ॥७॥
 धम्मो अहम्मो आगासं, दब्ब इक्किक्कमाहिथ ।
 श्रणन्ताणि य दब्बाणि, कालो पुगलजन्तवो ॥८॥
 गइलखणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलखणो ।
 भायणं सब्बदब्बाणं, नहं ओगाहलखण ॥९॥
 वत्तणालखणो कालो, जीवो उवओगलखणो ।
 नाणेण दसणेण च, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥
 नाणं च दसण चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
 वीरिय श्रवओगो य, एय जीवस्स लक्खण ॥११॥
 सहन्धयार-उज्ज्वोओ, पहा छायातवे इ वा ।
 वण्णरसगन्धफासा, पुगलाण तु लक्खणं ॥१२॥
 एगतं च पुहतं च, संखा संठाणमेव य ।
 संजोगा य विभागा य, पञ्चवाणं तु लक्खणं ॥१३॥
 जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावासवो तहा ।
 संवरो निञ्चरा भोक्खो, सन्त्तेए तहिया नव ॥१४॥

तहियण तु भावाण, सब्बावे उवएसण ।
 भावेणं सद्दहन्तस्स, सम्मत त वियाहिय ॥१५॥
 निसगुवएसर्हई, आणर्हई सुत्तवीयर्हइमेव ।
 अभिगमवित्थारर्हई, किरिया-सखेव-धम्मर्हई ॥१६॥.
 भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्यपाव च ।
 सहसम्मइयासवसंवरो य रोएइ उ निस्सगो ॥१७॥
 जो जिणदिट्ठे भावे, चउन्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
 एमेव नन्ह हति य, स निसगर्हइ त्ति नायब्बो ॥१८॥
 एए चेव उ भावे, उवझट्ठे जो परेण सद्दहइ ।
 छउमत्थेण जिणेण व, उवएसर्हई त्ति नायब्बो ॥१९॥
 रागो दोसो मोहो, अज्ञाणैजस्स अवगय होइ ।
 आणाए रोयतो, सो खलु आणार्हई नाम ॥२०॥
 जो सुत्तमहिज्जन्तो, सुएण ओगाहइ उ सम्मत ।
 अगेण वाहिरेण वा, सो सुत्तर्हइ त्ति नायब्बो ॥२१॥
 एगेण अणेगाइ, पयाइं जो पसरह उ सम्मते ।
 उदएव्व तेल्लविन्हू, सो वीयर्हइ त्ति नायब्बो ॥२२॥
 सो होइ अभिगमर्हई, सुयनाणं जेण श्रत्थओ दिट्ठुं ।
 एक्कारस अगाइं, पडणग दिट्ठिवाओ य ॥२३॥
 दव्वाण सब्बभावा, सट्वप्पमाणेहि जस्स उवलद्वा ।
 सब्बाहि नयविहीहि य, वित्थारर्हइ त्ति नायब्बो ॥२४॥
 दंसणनाणचरित्ते, तवविणए सब्बसमिइगुत्तीसु ।
 जो किरियाभावर्हई, सो खलु किरियार्हई नाम ॥२५॥

अणभिग्गहियकुद्दी, सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
 अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहियो य सेसेसु ॥२६॥
 जो अतिथकायधम्म, सुयधम्म खलु चरित्तधम्मं च ।
 सद्दहइ जिणाभिहिय, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥

 परमत्थसथवो वा, सुदिद्वपरमत्थसेवणा वा वि ।
 वावन्नकुदंसणवज्जुणा, य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥
 नत्थ चरित्तं सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्व ।
 सम्मत्तचग्नित्ताइ, जुगवं पुव्वं व समत्तं ॥२९॥

 नादसणिस्स नाण,
 नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
 अगुणिस्स नत्थ मोक्खो,
 नत्थ अमोक्खस्स निव्वाण ॥३०॥

 निसंकिय-निकंकिय, निव्वितिगिच्छ अमूढदिद्दी य ।
 उवबूहथिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अटु ॥३१॥
 सामाइयत्थ पढमं, छेओवटावण भवे विइयं ।
 परिहारविसुद्धीय, सुहुम तह संपरायं च ॥३२॥
 शक्सायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
 एय चयरित्तकर, चारित्त होइ आहियं ॥३३॥
 तवो य दुविहो बुत्तो, वाहिरदभन्तरो तहा ।
 बाहिरो छविहो बुत्तो, एवमधंतरो तवो ॥३४॥
 नाणेण जाणइ भावे, दसणेण य सद्दहे ।
 चरित्तेण निगिष्ठाइ, तवेण परिसुज्भइ ॥३५॥

खदिता पुन्वक्त्वा इ मंजेण तदेष च ।
 सन्वदुक्तव्यपृष्ठीणां पक्षनन्दि नहेस्मिन् त्ति वेनि ॥३६॥
 ॥ इदं सोऽन्तर्गतं इति कृत्वा इति शब्दाद्यत वाचो ॥

अहं सम्मतपरवक्त्वं एगूणतीसइम अल्पयन्

मुर्यं मे आउस ! तेष भगवया एवनक्त्वायं—इह खलु
 सम्मतपरक्त्वे नाम अस्मये ननरोप भगवया भहावीरेत्तं
 कासदेवं पवेइए. तं ममं नहित्ता. पत्तइत्ता. रोयइत्ता.
 फार्मित्ता पालइत्ता. तीरित्ता. निराइत्ता सोहित्ता. आराहित्ता.
 आगाए अभ्युपालइत्ता वहवे जीवा मिव्यन्ति. बुद्धित्ति मुच्छित्ति,
 परिनिव्वायन्ति. सन्वदुक्तव्यपमन्त करेत्ति । तस्य एं अपनहु
 एवमाहित्तिइ तं जहा :—

तदेषे १ निव्वेदे २ वन्मनष्टा ३ गुर्वाहम्नियनुत्सप्या ४
 आतोपयनया ५ निव्वणया ६ गरहपया ७ सानाइए = चटव्वी-
 सत्यवे ८ वन्वपए १० पडिक्कनो ११ काउस्त्वे १२ पहु-
 क्त्वाये १३ अवयुईमंगले १४ बालपडिनेहणया १५ पायच्छित्त-
 करये १६ खनाक्तवया १७ न्तक्काए १८ वायवया १९ पडि-
 मुच्छियनया २० पडियहुपया २१ अपुष्पेहु २२ वन्मनहा २३
 सुधस्त आराहणया २४ एगम्यमपत्तिवेनपय २५ नवमे २६
 तदे २७ बोदाये २८ सुहम्मद २९ अरडिङ्गु ॥ ३० विविन्द-
 स्यपत्तमन्तेवया ३१ विवियहुपया ३२ सनोग्यमवृत्ताये ३३
 उवहिपत्तक्त्वाये ३५ आहारपत्तवरजाये ३५ कत्तायपत्तक्त्वक्त्वाये ३६

जोगपञ्चकखाणे ३७ सरीरपञ्चकखाणे ३८ सहायपच्चकखाणे ३९
 भत्तपच्चकखाणे ४० सदभावपञ्चकखाणे ४१ पडिरुवणया ४२
 वेयावच्चे ४३ सब्बगुणसंपणया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६
 मृत्ती ४७ मद्वे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१
 जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५
 मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधार-
 णया ५८ नाणसपन्नया ५९ दंसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
 सोइदियनिगहे ६२ चकिखन्दियनिगहे ६३ घाणिन्दिय-
 निगहे ६४ जिविभन्दियनिगहे ६५ फासिन्दियनिगहे ६६ कोह-
 विजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७०
 पेञ्चदोसमिच्छादसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकस्मया ॥७३॥

सवेगेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? सवेगेण अणुत्तर धम्म-
 -सद्ध जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए सवेगं हृव्वमागच्छइ ।
 अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । नव च कम्म न
 बन्धइ । तप्पञ्चइय च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दसणाराहए
 भवइ । दसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव
 भवगगहणेणं सिजभइ^१ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो
 भवगगहणं नाइक्कमइ ॥१॥

निवेएणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? निवेएणं दिव्वमाणुस-
 -तेरच्छएसु कामभोगेतु निव्वेय हृव्वमागच्छइ, सब्बविस-
 -एसु विरज्जइ । सब्बविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चायं
 करेइ । आरम्भपरिच्चायं करेमाणे ससारमगं वोच्छन्दइ,
 सिद्धिमगग पडिवन्ने य भवइ ॥२॥

१ सिजभन्ति, बुजभन्ति, मुच्चन्ति, परिनिव्वायन्ति, सब्बदुक्खा-
 -गमंत करेति । २ आरम्भपरिग्रहपरि ।

धम्मसद्वाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? धम्मसद्वाए ण सायासोक्षेसु रज्जमाणे विरञ्ज्ञइ । आगारधम्म च णं चयइ । प्रणगारिए ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण छेयणभेयण-सज्जोगाईं वोच्छेय करेइ प्रव्वावाहं च ण सुह निवत्तेइ ॥३॥

गुरुसाहाम्मियसुस्सूसणयाए ण भन्ते । जीवे कि जण-वइ ? गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए विणयपडिवत्ति जणयइ । विणयपडिवन्ने य ण जीवे प्रणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गर्हाश्रो निरुम्भइ । वण्णसजलणभत्ति-वहुमाणयाए मणुस्सदेवगर्हाश्रो निबन्धइ, सिद्धि सोगाइ च, विसोहेइ । पसत्थाइ च ण विणयमूलाइ सव्वकञ्जाइ साहेइ अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥४॥

आलोयणाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छादसणसल्लाणं मोक्षमग्गविग्धाणं झण-तसंसारबन्धणाण^१ उद्धरण करेइ । उज्जुभाव च जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ने य ण जीवे प्रमाई इत्थीवेयनपुंसगवेय च न बन्धइ । पुव्वबद्धं च ण निज्जरेइ ॥५॥

निन्दणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ । पच्छाणृतावेण विरञ्जमाणे करणगुण-सेठि पडिवज्जइ । करणगुणसेढीपडिवन्ने य ण प्रणगारे मोह-णिज्जं कम्म उग्धाएइ ॥६॥

गरहणयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ? गरहणयाए अपुर-क्कार जणयइ । अपुरक्कारगए ण जीवे अप्पसत्थेहितो जोर्गेहितो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ । पसत्थजोगपडिवन्ने य णं प्रणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥७॥

सामाइएणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? समाइएण साच-
ज्ञजोगविरइं जणयइ ॥८॥

चउब्बीसत्थएणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ । चउब्बीसत्थ-
एण दसणविसोहि जणयइ ॥९॥

वन्दणएणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? वन्दणएणं नीया-
गोय कम्मं खवेइ । उच्चागोय कम्मं निवन्धइ' । सोहग्ग चणं
श्रपडिहयं आणाफल निघवत्तेइ । दाहिणभाव चणं जण-
यइ ॥१०॥

पडिक्कमणेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? पडिक्कमणेण
वयछिद्दाणि पिहेइ । पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे
श्रसबलचरित्ते श्रद्धुसु पवयणमायासु उवडत्ते अपुहत्ते सुप्पणि-
हिदिए' विहरइ ॥११॥

काउसगेणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? काउसगेणं
तीयपडुप्पन्न पायच्छित्त विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे
निवुयहियए ओहरियभरुव भारवहे पसत्थजभाणोवगए'
सुह सुहेणं विहरइ ॥१२॥

पच्चकखाणेणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? पच्चकखाणेणं
आसवदाराइं निरुभइ । पच्चकखाणेणं इच्छानिरोह जणयइ ।
इच्छानिरोहं गए यणं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए
विहरइ ॥१३॥

थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? थवथुइमगलेण नाण-

दसणचरित्तवोहिलाभ जणयइ । नाणदसणचरित्तवोहिलाभसपन्ने य
ण जीवे अन्तकिरिय कप्पविमाणोववत्तिग आराहणं आरा-
हेइ ॥१४॥

कालपडिलेहणयाए ण दुभन्ते । जीवे कि जणयइ ?
कालपडिलेहणेण णाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥१५॥

पायच्छ्रुत्तकरणेण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? पा० पाव-
विसोहि जणयइ, निरइयारे यावि भवइ । सम्म च ण पाय-
च्छ्रुत्त पडिवज्ञमाणो मग्ग च मग्गफल च विसोहेइ, आयार
च आयारफल च आराहेइ ॥१६॥

खमावणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? ख० पलहा-
यणभाव जणयइ । पलहायणभावमुवगए य सच्चपाणभूय-
जीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगए य जीवे
भावविसेहि काऊण निवभए भवइ ॥१७॥

सजभाएण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? स० णाणावरणिज्ज
कम्म खवेइ ॥१८॥

वायणाए ण भन्ते । जोवे कि जणयइ ? वा० निजजर जण-
यइ । सुयस्स य श्रणुसज्जणाए श्रणासायणाए वट्टए । सुयस्स
श्रणुसज्जणाए श्रणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्म श्रवलम्बवइ ।
तित्थधम्म श्रवलम्बमाणे महानिज्जरे महापञ्चवसाणे भवइ ॥१९॥

पडिपुच्छणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? प० सुत्त-
त्थतदुभयाइ विसोहेइ । कखामोहणिज्ज कम्म वोच्छ्रुन्दइ ॥२०॥

परियट्टणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? प० वज-
णाइ जणयइ, वजणलर्द्ध च उप्पाएइ ॥२१॥

अगुप्येहाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? अ० आउय-

वज्ञाओ तत्तकम्पगडीओ धरियबन्धरणबद्धाओ सिद्धिलबन्धण-
बद्धाओ पकरेइ । दीहकालटुइयाओ हस्सकालठिइयाओ पकरेइ ।
(तच्चाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । (बहुपएसगाओ अप्प-
पएसगाओ पकरेइ) त्राउय च ण कम्मं सिया बन्धइ, सिया नो
बन्धइ । असायादेयणिज्ज चण कम्मं नो भुज्जो २ उच्चिराइ ।
अणाइय च ण अणवदग दीहमद्ध चाउरन्तं ससारकान्तारं खिप्पासेव
वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? ध० कम्मनिज्जरे
जणयइ । धम्मकहाए णं पावयणं पभावेइ । पवयणपञ्चावेण जीवे
आगमेसस्य भद्रत्ताए कम्मं निबन्धइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? सु०
अन्नाणं खवेइ न य सकिलिस्सइ ॥२४॥

एगगगमणसनिवेसणयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? ए०
चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

संजमएणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? स० अणणहयत्त
जणयइ ॥२६॥

तवेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? तवेण वोदारणं जण-
यइ ॥२७॥

वोदारणेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? वो० अकिरियं जण-
यइ । अकिरियाए भवित्ता तम्रो पच्छा सिज्जइ, बुज्जइ, मुज्जइ,
परिनिव्वायइ, सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥२८॥

सुहसाएणं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? स० अणुस्सुयत्त
जणयइ । अणुस्सुयाए ण जीवे अणुकम्पए, अणुब्भडे, विगयसोगे
चरित्तमोहणिज्ज कम्मं खवेइ ॥२९॥

अप्पडिबद्धयाए ण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? अ० निस्स-
गत जणयइ । निस्सगतेण जीवे एगे एगगच्चित्ते दिथा य, तुझो
य श्रसञ्जसारो अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥३०॥

विवित्तसयणासणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? वि०
चरित्तगुर्ति जणयइ । चरित्तगुर्ते य ण जीवे विवित्ताहारे दहचरित्तो
एगन्तरए मोक्षभावपडिवन्ने अद्विहकम्मगठि निखरेइ ॥३१॥

विनियटृणयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? वि० पाव-
कम्माण अकरणयाए श्रद्धुद्वृइ । पुच्चवद्धाण य निखरणयाए
पाव नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरन्त ससारकन्तार वीइ-
वयइ ॥३२॥

संभोगपञ्चक्षाणेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? स० आल-
म्बणाइ खवेइ । निरालम्बणस्त य आयथट्टिया जोगा भवन्ति ।
सएण लाभेण सतुस्सइ, परलाभ् नो आसादेइ, परलाभ नो तककेइ,
नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अलिभसइ । परलाभ अणासाएमाणे
अतक्केमाणे अपीहमाणे, अपत्थेमाणे, अणभिलसमाणे दुच्च
सुहसेज्ज उवसपञ्जित्ता ण विहरइ ॥३३॥

उवहिपञ्चक्षाणेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? उ० अपनि-
मन्थ जणयइ । निरुवहिए ण जीवे निकक्खी उवहिमन्तरेण य न
सकिलिस्सइ ॥३४॥

आहारपञ्चक्षाणेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? आ०
जीवियाससप्पओग वोच्छन्दइ । जीवियाससप्पओग वोच्छन्दित्ता
जीवे आहारमन्तरेण न सकिलिस्सइ ॥३५॥

कसायपञ्चक्षाणेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? क० वीय-

रागभावं जणयइ । वीपरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे सम-
सुहुदुखेभवइ ॥३६॥

जोगपञ्चकखाणेण भन्ते । जीवे किं जणयइ । जो० श्रजोगतं
जणयइ । श्रजोगी ण जीवे नवं कम्म न वन्धइ, पुच्चबद्ध
निष्ठरेइ ॥३७॥

सरीरपञ्चकखाणेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? स० सिद्धा-
इसयगृणकित्तण नित्वत्तेह । सिद्धाइसयगुणसपन्ने य ण जीवे
लोगगमुवगए परमसुही भवइ ॥३८॥

सहायपञ्चकखाणेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? स० एगी-
भाव जणयइ । एगीभावभूए य ण जीवे एगत्त भावेमाणे अप्पसहै,
अप्पभर्भे, अप्पकलहे, अप्पकसाए, अप्पतुमतुभे, संजमबहुले, सवर-
बहुले, समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्तपच्चकखाणेण भन्ते ? जीवे किं जणयइ ? भ० अणेगाइं
भवसयाइं निरुमभइ ॥४०॥

सबभावपञ्चकखाणेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? स० अनि-
र्यहृं जणयइ । अनियद्विपडिवन्ने य शणगारे चत्तारि केवली-
कम्मसे खवेइ, त जहा—वेयणिञ्ज़, आउय नाम गोय । तओ पच्छा
सिजभइ, बुज्भइ, मुज्जइ जाव सच्चदुखखाणमन्त करेइ ॥४१॥

पडिरुवयाए णं भन्ते । जीवे किं जणयइ ? प० लाघविर्य
जणयइ । लघुभूए ण जीवे अप्पमत्ते, पागडलिगे, पसत्थर्लिगे,
विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सबवपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिञ्ज़-
रुवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए, विउलतवसमिइसमन्नागए यावि
भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? वे० तित्थयरनाम-
गोत्त कम्म निबन्धइ ॥४३॥

सद्वगुणसपन्नयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? स०
अपुणरावर्ति जणयइ । अपुणरावर्ति पत्तए य ण जीवे सारीर-
माणसाण दुखखाणं नो भागी भवइ ॥४४॥

वीयरागयाए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? वी० नेहाणुब-
न्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छन्दइ, मणुज्ञामणुन्नेसु
सहफरिसरूपरसगन्धेसु^१ चेव विरज्जइ ॥४५॥

खन्तीए ण भन्ते । जीवे कि जणयइ ? खन्तीए परीसहे
जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए ण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? मु० अर्किचण
जणयइ । अर्किचणे य जीवे अत्थलोक्याण पुरिसाण अपत्थ-
णिज्ञो भवइ ॥४७॥

अज्ञवयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ? अ० काउज्जुयय,
भावुज्जुयय, भासुज्जुयय, अविसवायण जणयइ । अविसवायण-
सपन्नयाए ण जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मह्वयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ? म० अणुस्सि-
यत्त जणयइ । अणुस्सियत्तेण जीवे मिडमह्वसपन्ने श्रद्धु
मयटाणाइ निटावेइ ॥४९॥

भावसच्चेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? भा० भावविसोहि
जणयइ । भावविसोहिए वटूमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तरस
धम्मस्स आराहणयाए श्रवभुट्टैइ । अरहन्तपन्नत्तरस्स धम्मस्स
आराहणयाए श्रवभुट्टिता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

^१ मु सचित्ताचित्तमीसएमु ।

करणसच्चेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ । क० करणसत्ति जणयइ । करणसच्चे वहुमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि भवइ ॥५१॥

जोगसच्चेण भन्ते ! जीवे कि जणयइ । जो० जोग विसो-हेइ ॥५२॥

मणुगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? म० जीवे एगरां जणयइ । एगरगच्छते ण जीवे मणगुत्ते संजमारा-हए भवइ ॥५३॥

वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? व० निच्चिया-रत्तं जणयइ । निच्चियारे णं जीवे वइगुत्ते अञ्जस्त्वपजोगसाहण-जुत्ते यावि विहरइ ॥५४॥

कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? का० सवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो पादासवनिरोहं करेइ ॥५५॥

मणसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? म० एगरां जणयइ । एगरां जणइत्ता नाणपञ्चवे जणयइ । नाण-पञ्चवे जणइत्ता सम्मत विसोहेइ, मिच्छत्तं च निञ्चरेइ ॥५६॥

वयसमाहारणयाए भंते ! जीवे कि जणयइ ? व० वयसा-हारणदसणपञ्चवे विसोहेइ । वयसाहारणदसणपञ्चवे विसो-हित्ता चुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, डुलहबोहियत्तं निञ्चरेइ ॥५७॥

कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? का० चरित्तपञ्चवे विसोहेइ । चरित्तपञ्चवे विसोहित्ता अहवञ्चाय-चरित्त विसोहेइ । अहवञ्चायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलि-कम्मसे खवेइ । तथो पच्छा सिजभइ, बुजभइ, मुच्चइ, परि-निव्वाइ, सच्चदुक्खाणभन्तं करेइ ॥५८॥

नाणसंपन्नयाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? ना० जोवे
सध्वभावाहिगम जणयइ । नाणसपन्ने जीवे चाउरन्ते ससार-
कन्तारे न विणस्सइ ।

जहासूई ससुत्ता पडिया न विणस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते ससारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे सयाउणइ, ससमयपरसमय-
विसारए य असधायणिज्जे भवइ ॥५४॥

दसणसपन्नयाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? द० भव-
मिच्छत्तद्येयण करेइ, पर न विजभायइ । पर अविजभाएमाणे
श्रणृत्तरेण नाणदसणेण श्रप्पाण सजोएमाणे सम्म भावे-
माणे विहरइ ॥६०॥

चरित्तसपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? च० सेलेसी-
भाव जप्पयइ । सेलेसि पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलि-
कम्मसे खवेइ । तश्चो पच्छा सिज्जहइ, बुज्जहइ, मुख्हइ, परि-
निवायइ, सध्वदुखखाणमन्त करेइ ॥६१॥

सोइन्द्रियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? सो० मणु-
ज्ञामणुन्नेसु सद्वेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइय कम्म
च ण न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्जरेइ ॥६२॥

चकिलन्दियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? च० मणु-
ज्ञामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइय च ण
कम्म न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिन्दियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? घा० मणु-
ज्ञामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जप्पयइ, तप्पच्चइय च ण
कम्म न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्जरेइ ॥६४॥

जिदिभन्दियनिगगहेण भते ! जीवे कि जणयइ ? जि० मणु-
न्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिगगह जणयइ, तप्पच्चइय च णं
कम्मं न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्ञरेइ ॥६५॥

फासिन्दियनिगगहेण भते ! जीवे कि जणयइ ? फा० मणु-
न्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिगगह जणयइ, तप्पच्चइयं च णं
कम्मं न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्ञरेइ ॥६६॥

कोहविजएण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? को० खर्नित जण-
यइ, कोहवेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ, पुच्चबद्धं च निज्ञरेइ ॥६७॥

माणविजएण भते ! जीवे कि जणयइ ? मा० महूव जणयइ,
माणवेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ, पुच्चबद्धं च निज्ञरेइ ॥६८॥

मायाविजएण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? मा० अज्ञवं जण-
यइ, मायावेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्ञरेइ ॥६९॥

लोभविजएण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ? लो० संतोसं
जणयइ. लोभवेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ, पुच्चबद्ध च निज्ञरेइ ॥७०॥

पिज्जुद्दोसमिच्छादसणविजएण भन्ते ! जीवे कि जणयइ ?
पि० नाणदसणचरित्ताराहणयाए श्रब्बुट्टेइ । अटुविहस्स
कम्मस्स कम्मगणित्विमोयणयाए तप्पहमयाए जहाणुपुच्चवीए
अटुवीसइविहं मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ, पञ्चविहं नाणावर-
णिज्जं, नवविहं दसणावरणिज्ज, चचविहं अन्तराइय, एए
तिन्नि वि कम्मसे जुगव खवेइ । तथो पच्छा अणुत्तर, कसिणं,
पडिपुण, निरावरण, वितिमिरं, विसुद्धं, लोगालोगप्पभाव, केवल-
वरनाणदसणं समुष्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ, ताव ईरिया-
वहियं कम्म 'निबन्धइ, सुहफरिसं दुसमयठिइय । तं पढम-
समए बछ, विझ्यसमए वेह्य, तझ्यसमए निज्जणं, त बछं,

पुढु उदीरियं वेइय निजिण्ण सेयाले य अकम्म यावि भवइ ॥७१॥

अहाउय पालइत्ता अन्तोमुहुतद्वावसेसाए जोगनिरोह करेमाणे सुहुमकिरिय अप्पडिवाइ सुक्रजभाण भायमाणे तप्पठमयाए मणजोग निरुभइ, वयजोगं निरुभइ, कायजोग निरुभइ आणपाणनिरोह करेइ, ईसि पचहस्सवखरुच्चारणद्वाए य णं श्रणगारे समुच्छिन्नकिरिय अनियट्टिसुक्रजभाणं भियाय-माणे वेयणिज्ज आउय नाम गोत्त च एए चत्तारि कम्मसे जुगवं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालियतेयकम्माइ सब्बाहिं विष्पजहणाहिं विष्प-जहित्ता उज्जुसेडिपत्ते, अफुसमाणगई उड्ढ एगसमएण अविगहेण तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिजभइ, बुजभइ, जाव अत करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मतपरकम्मस्स अञ्जभयणस्स ग्रहु समणेण भगवया महावीरेण आघविए, पन्नविए, पळविए, दसिए, निदसिए, उवदसिए, त्ति बेमि ॥७४॥

॥ इय सम्मतपरकमे णाम एगूतीमइम अञ्जभयण समत्त ॥

अह तवमगं तीसइम अञ्जभयण

जहा उ पावग कम्म, रागदोससमज्जिय ।

खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगगमणो सुण ॥१॥

पाणिवहमुसावापा प्रदत्तमेहुणपरिगग्हा विरओ ।

राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥२॥

पचसमिश्रो तिगुत्तो, श्रकसाओ जिइन्दओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥३॥

एर्एस तु विवद्वासे, रागदोससमज्जिय ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगगमणो सुण ॥४॥

जहा महातलायस्स, संनिरुद्धे जलागमे ।
उर्स्सचणाए तवणाए, कमेण सोसणा भवे ॥५॥

एवं तु सजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसचियं कम्म, तवसा निझरिज्जइ ॥६॥

सो तवो दुविहो द्वित्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छविहो बुत्तो, एवमव्भन्तरो तवो ॥७॥

अणसणमूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिज्ञाओ ।
कायकिलेसो संलीणया य बज्जो तवो होइ ॥८॥

इत्तरियमरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे ।
इत्तरिया सावकंखा, निरवकखा उ बिइज्जिया ॥९॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छविहो ।
सेद्धितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥१०॥

तत्तो य वग्गवग्गो, पचमो छहुओ पइण्णतवो ।
मणइच्छयचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिशो ॥११॥

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिशा ।
सवियारमवियारा, कायचिद्दु पई भवे ॥१२॥

अहवा सपरिकम्मा, अवरिकम्मा य आहिया ।
तीहारिमनोहारी, आहारच्छेशो दोसु वि ॥१३॥

श्रोमोयरण पंचहा, समासेण विषयाहियं ।
 दव्वश्रो खेत्तकालेण, भावेण पञ्चवेहि य ॥१४॥
 जो जस्स उ आहारो, तत्तो श्रोम तु जो करे ।
 जहन्नेणेग-सित्थाई, एव दव्वेण उ भवे ॥१५॥
 गामे नगरे तह रायहाणि-निगमे य आगरे पल्ली ।
 खेडे कब्बड दोणमुह-पद्मण-मङ्गल-सवाहे ॥१६॥
 आसमपए विहारे, सन्निवेसे समाय-घोसे य ।
 अलिसेणाखन्धारे, सत्थे सवट्ट-कोट्टे य ॥१७॥
 वाडेसु य रन्थासु व, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्तं ।
 कप्पइ उ एवमाइ, एव खेत्तेण उ भवे ॥१८॥
 पेडा य श्रद्धपेडा, गोमुत्ति पथगवीहिया चेव ।
 सम्बुद्धावद्वाययगन्तुं पञ्चागया, छट्टा ॥१९॥
 दिवसस्स पोर्सीण, चउण्हपि उ जन्तिश्रो भवे कालो ।
 एव चरमाणो खलु, कालोमाण मुण्येयव्व ॥२०॥
 श्रहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसन्तो ।
 चउभागूणाए वा, एवं कालेण उ भवे ॥२१॥
 इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिश्रो वाऽनलंकिश्रो वावि ।
 अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥२२॥
 अन्नेण विसेसेण, वणेण भावमणुमुयन्ते उ ।
 एवं चरमाणो खलु, भावोमाण मुण्येयध्वं ॥२३॥
 दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य, आहिया उ जे भावा ।
 एएहि श्रोमचरश्रो, पञ्चवचरश्रो भवे भिकखू ॥२४॥

अद्विहोयरगं तु, तहा सत्तेव एसणा ।
 अभिभाहा य जे अन्ते, भिक्षायस्त्यमाहिया ॥२५॥
 खीरदहिसप्तमाई, पणीय पणभोयण ।
 परिवज्ञणं रसाणं तु, भणियं रसविवज्ञणं ॥२६॥

ठाणा वोरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा ।
 उग्गा जहा घरिज्ञन्ति, काघकिलेस तमाहियं ॥२७॥

एगन्तमणावाइ, इत्थी-पसु-विवज्ञिए ।
 तयणासणसेवणया, विवित्तसयणासणं ॥२८॥

एसो बाहिरंगतवो, समासेण क्वियाहिओ ।
 अद्विभन्तरं तव एत्तो, वुच्छामि अणुपुच्चसो ॥२९॥
 पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्जाओ ।
 झाणं च द्रिउसगो, एसो अद्विभन्तरो तवो ॥३०॥

आलोयणारिहाइयं, पायच्छित्तं तु दसविहं ,
 जं भिक्खू वहइ सम्म, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥
 अद्भूद्गाणं अजलिकरणं, तहेवासणदायणं ।
 गुरुभत्तिभावसुसूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

आथरियमाईए वेयावज्ञम्मि दसविहे ।
 आसेवणं जहाथाम, वेयावच्चं तमाहियं ॥३३॥

वायणा पृच्छणा चेव, तहेव परियदृणा ।
 अणुप्पेहा घम्मकहा, सज्जाओ पञ्चहा भवे ॥३४॥

अद्वृहद्वाणि वज्ञिता, झाएज्ञा सुसमाहिए ।
 घम्मसुक्काइं झणाइ, झाणं तं तु ब्रुहा वए ॥३५॥

सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे ।
 कायस्स विउस्सगो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥
 एवं तवं तु दुविह, जे सम्म आयरे मुणी ।
 सो खिप्पं सब्बससारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ, त्ति बेमि ॥३७॥

॥ इय तवमश्च नाम तीसइम अञ्जभयण समत्ते ॥

अह चरणविही नामं एगतीसइम अञ्जभयणं

चरणविहिं पवक्खामि, जौवस्स उ सुहावह ।
 जं चरित्ता बहू जीवा, तिणा ससारसागर ॥१॥

एगओ विरह कुज्ञा, एगओ य पवत्तण । " "
 असजमे निर्यत्त च, संजमे य पवत्तण ॥२॥

रागदोसे य दो पावे, पावकम्मप्पवत्तणे ।
 जे भिक्खू रुभइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥३॥

दण्डाणं गारवाण च, सङ्घाणं च तियं तिय ।
 जे भिक्खू चयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥४॥

दिव्वे य जे उवसगो, तहा तेरिच्छ-माणुसे ।
 जे भिक्खू सहइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥५॥

विगहा-कसाय-सन्नाणं, भाणाणं च दुय तहा ।
 जे भिक्खू वज्ञइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥६॥

वएमु इन्दियत्थेमु, समिर्मु किरियामु य ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहार-कारणे ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥८॥
 पिण्डोग्गह-पडिमासु, भयट्टाणेसु सत्तमु ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥९॥
 मदेसु बम्भगत्तीसु, भिक्खूधम्ममिम दसविहे ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१०॥
 उवासगाणां पडिमासु, भिक्खूण पडिमासु य ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥११॥
 किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मएसु य ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१२॥
 गाहासोलसएहि, तहा असजमम्मिय य ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१३॥
 वम्भम्मि नायज्ञभयणेसु, ठाणेसु यऽसमाहिए ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१४॥
 एगवीसाए सबले, बावीसाए परोसहे ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१५॥
 तेवीसाइ सूयगडे, रुवाहिएसु सुरेसु ।
 जे भिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१६॥
 पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाईण ।
 जे मिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१७॥
 अणगारगुणेहि च, पगप्पम्मि तहेव व ।
 जे मिक्खू जयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१८॥

पावसुयपसगेसु, मोहट्टाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१९॥
सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥२०॥
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयइ सया ।
शिष्प सो सब्बससारा, विष्पमुच्चइ पण्डओ, ति वेमि ॥२१॥
॥ इय चरणविही नाम एगतीसइम अञ्जभ्यण समत ॥

अह पमाथट्टाणं बत्तीसइम अञ्जभ्यण

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स,
सब्बस्स द्रुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता,
सुणह एगन्तहिय हियत्थ ॥१॥
नाणस्स सब्बस्स पगासणाए,
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य सखएर्ण,
एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्ख ॥२॥
तस्सेस मरगो युरुविद्धसेवा,
विवज्जणा वालजणस्स द्वूरा ।
सञ्ज्ञाय-एगन्तनिसेवणा य,
सुत्तत्थसचिन्तणया धिई य ॥३॥
आहारमिच्छे मियमेसणिज्ज,
सहायमिच्छे चिउणत्थबुद्धि ।

निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोगं,
 सम हिकामे समणे तवस्सी ॥४॥
 न वा लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एगो वि पावाइं विवर्जयतोऽ,
 विहरेज्ज कामेसु असञ्जमाणो ॥५॥
 जहा य अङ्गप्पभवा बलागा,
 अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहायथणं खु तण्हा,
 मोहं च तण्हायथणं वयन्ति ॥६॥
 रागो य दोसो वि य कम्भवीयं,
 कम्भं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
 कम्भं च जाइमरणस्स मूलं,
 दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥७॥
 दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो,
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
 लोहो हओ जस्स न किचणाइ ॥८॥
 रागं च दोसं च तहेव मोहं,
 चद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
 जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा,
 ते कित्तइस्सामि अहाणुपुर्विव ॥९॥
 रसा पगामं न निसेवियव्वा,
 पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।

दित्तं च कामा सम्भिद्वन्ति,
कुम जहा साउफल व प्रखो ॥१०॥

जहा दवग्गो पउरिल्ल्यणे वणे,
समारुओ नोवसम उवेह ।

एविन्हियग्गो वि पगामभोइणे,
न बम्भयारिस्स हियाय कस्सइ ॥११॥

विविज्ञसेज्ञासणजन्तियाणं,
ओमासणाणं दमिइन्दियाण ॥

न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं,
पराइश्रो वाहिरिवोसहेहे ॥१२॥

जहा विरालावसहस्स मूले,
न मूसगाणं वसही पसत्था ॥

एमेव इत्थीनिलयस्स सज्जे,
न बम्भयारिस्स खमरे विवासो ॥१३॥

न रुचलग्वण विलासहासं,
न जपिय इंगियपेहिय वा ।

इत्थीण चित्तसि निवेसइत्ता,
दद्धु ववस्से ससणे तवस्सी ॥१४॥

शद्वंसण चेव शपत्थणं च,
श्चिन्तण चेव शकित्तण च ।

इत्थीज्ञणसारियज्ञकाणजुग्ग,
हिय सथा बम्भवए रथाणं ॥१५॥

काम तु देवीहि विभूसियाहिं,
न चाइया खोभइउ तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहिय ति नच्चा,
विवित्तवासो मुणीणं पसत्थो ॥१६॥

मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स,
ससारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए,
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

एए य सगे समझक्कमित्ता,
सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता,
नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्ख,
सब्बस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि,
तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥१९॥

जहा य किम्पागफला मणोरमा,
रसेण वणेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्हए जीविए पच्चमाणा,
एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इंदियाणं विसया मणुज्ञा,
न तेसु भावं निसिरे कथाइ ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्ञा,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

चकखुस्स रुवं गहणं वयन्ति,
 त रागहेउ तु मणुज्ञमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुज्ञमाहु,
 समो य जो तेसु स वीथरागो ॥२२॥

रुवस्स चकखु गहण वयन्ति,
 चकखुस्स रुव गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुज्ञमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुज्ञमाहु ॥२३॥

रुवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व,
 अकालिय पावइ से विणास ।
 रागाउरे से जह वा पयगे,
 आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥२४॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्व,
 तसि खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू,
 न किञ्चि रुव अवरज्ञभइ से ॥२५॥

एगन्तरते रहरसि रुवे,
 अतालिसे से कुणइ पओस ।
 दुखस्स सम्पीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पइ तेण मुणी विरागो ॥२६॥

रुवाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिसइणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिहु ॥२७॥

रुवाणुवाएण परिगहेण,
 उप्यायणे रक्खणसञ्चिओगे ।
 वए विश्रोगे य कहं सुहं से,
 सम्भोगकाले य अतित्तलाभे ॥२८॥

रुवे अतित्ते य परिगहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले श्राययइ अदत्त ॥२९॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रुवे अतित्तस्स परिगहे य ।
 सायामुसं वहुइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुखखा न विमुच्चह्य से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पयोगकाले य दुहो दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 रुवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥

रुवाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होङ्ग कयाइ किञ्चि ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुखं,
 निव्वत्तइ जस्स कएण दुखं ॥३२॥

एमेब रुवम्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुखोहप्रपराओ ।
 पदुट्टचित्तो य चिणाइ कस्म,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥

रुदे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्ज्ञे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणी पत्तास ॥३४॥
 सोयस्स सद्ग गहण वयन्ति,
 त रागहेउ तु मणुञ्जमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुञ्जमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरागो ॥३५॥
 सहस्स सोय गहणं वयन्ति,
 सोयस्स सद्ग गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुञ्जमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुञ्जमाहु ॥३६॥
 सहेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व,
 अकालिय पावह से विणासं ।
 रागाउरे हरिणभिगे व मुद्दे,
 सद्ग अतिते समुवेइ मच्चुं ॥३७॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिव्व,
 तंसि क्षणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुहन्तदोसेण सएण जन्तू,
 न किञ्चि सद्ग अवरज्जहइ से ॥३८॥
 एगन्तरते रुहरंसि सद्ग,
 अतालिसे से कुणह पओसं ।
 दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पइ तेण मुणी विरागो ॥३९॥

सद्बाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिसइङणेगहवे
 चित्तहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिटु ॥४०॥

सद्बाणुवाएण परिगहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्धिओगे ।
 वए विश्रोगे य रह सुह से,
 सभागकाले य अतित्तलामे ॥४१॥

सहे अतित्ते य परिगहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्द्वि ।
 अतुर्द्विदेसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययइ अदत्त ॥४२॥

तणहाभिसूयस्स अदत्तहारिणो,
 सहे अतित्तस्स परिगहे य ।
 मायामुसं वड्हइ लोभदोसा,
 तत्यावि दुक्खा न विमुच्छइ से ॥४३॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पश्चोगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययन्तो,
 सहे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥

सद्बाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होङ्ग कथाइ किचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निवत्तइ जस्स कएण दुबल ॥४५॥

एमेव सहस्रिम गश्रो पश्चोस,
 उवेह दुक्खोहपरपराश्रो ।
 पदुद्धचित्तो य चिणाइ कर्म,
 ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥४६॥

सहै विरत्तो मणुश्रो विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्ज्ञे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥४७॥

घाणस्स गन्ध गहण वयन्ति,
 त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥

गन्धस्स घाण गहण वयन्ति
 घाणस्स गध गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गन्धेसु जो गिद्धिमुवेह तिव्व,
 अकालिय पावह से विणास ।
 रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे,
 सप्पे बिलाश्रो विव निक्खमते ॥५०॥

जे यावि दोस समुवेह तिव्व,
 तसि क्खणे से उ उवेह दुक्ख ।
 दुहन्तदोसेण सएण जन्तु,
 न किंचि गन्ध अवरज्ञह से ॥५१॥

एगन्तरत्ते रुहरसि गन्धे,
 अतालिसे से कुणइ पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पइ तेण मुणी विरागो ॥५२॥

गन्धाणुगासाणुगाए य जीवे,
 चराचरे हिंसइङ्गेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तदुगुरु किलिटु ॥५३॥

गन्धाणुवाएण परिगाहेण,
 उष्पायणे रक्खणसज्जिओगे ।
 वए विओगे य कहं सुह से,
 संभोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥५४॥

गन्धे अतित्ते य परिगगहृम्बि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्द्वि ।
 अतुर्द्विदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले श्राययइ अदत्तं ॥५५॥

तण्हाभिमूयस्स अदत्तहारिणो,
 गन्धे अतित्तस्स परिगगहे य ।
 मायामुसं वड्डइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्छइ से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्यश्रो य,
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कतो सुह होङ्ग क्याइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निववत्तइ जस्स कएण दुक्ख ॥५८॥

 एमेव गःधम्म गश्चो पश्चोस,
 उवेइ दुक्खोहपरपराश्चो ।
 पदुट्ठिचित्तो य चिणाइ कम्म,
 जं से पुणो होइ दुह विवागे ॥५९॥

 गन्धे विरत्तो मणुश्चो विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पइ भवमज्जके वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥६०॥

 जिब्भाए रस गहणं वयन्ति,
 तं रागहेउ तु मणुज्ञमाहु ।
 तं दोसहेउ अमणुज्ञमाहु,
 समो य जो तेसु स वीथरागो ॥६१॥

 रसस्त जिब्भ गहण वयन्ति,
 जिब्भाए रस गहणं वयन्ति ।
 रागस्त हेउ समणुज्ञमाहु,
 दोसस्त हेउ अमणुज्ञमाहु ॥६२॥

 रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालिय पावइ से विणासं ।
 रागाउरे वडिसविभन्नकाए,
 मच्छे जहा आमिसभोगगिछे ॥६३॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्व,
 तंसि खणे से उ उवेइ दुक्कलं ।
 दुहन्तदोसेण सएण जन्तू,
 न किंचि रस श्रबरजभइ से ॥६४॥
 एगन्तरत्ते रहरसि रसे,
 अतालिसे से कुणइ पओसं ।
 दुखखस्स संपीलमुवेइ वाले,
 न लिष्पइ तेण सुणी विरागो ॥६५॥
 रसाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ वाले,
 पीलेइ अत्तदुगुरु किलिद्वे ॥६६॥
 रसाणुवाएण परिगगहेण,
 उप्पायणे रवखणसन्निओगे ।
 वए विश्रोगे य कह सुहं से,
 सभोगकाले य अतित्तलामे ? ॥६७॥
 रसे अतित्ते य परिगगहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्दु ।
 अतुद्विदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आयथइ अदत्तं ॥६८॥
 तण्हाभिभूयस्स अदंतहरिणो,
 रसे अदत्तस्स परिगगहे य ।
 मायामुसं वड्डइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुखखा न विमुच्चइ से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्यग्नो य,
पश्चोगकाले य दुही दुरन्ते ।
एव अदत्ताणि समाययन्ते,
रसे अतित्तो दुहिग्नो अशिस्सो ॥७०॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एव,
कत्तो सुह होङ्ग क्याइ किचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुखल,
निवत्तई जस्स कएण दुख ॥७१॥

एमेव रसम्मि गग्नो पश्चोस,
उवेइ दुखोहपरपरग्नो ।
पदुदुचित्ते य चिणाइ कम्म,
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो मणुग्नो विसोगरे,
एण दुखोहपरपरेण ।

न लिप्पइ भवमज्ज्ञे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥७३॥

कायस्स फास गहण वयन्ति,
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउ अमणुन्नमाहु.
समो य जो तेसु स बीयरागो ॥७४॥

फासस्स काय गहण वयन्ति,
कायस्स फासं गहण वयन्ति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥७५॥

फासेसु जो गिद्धि मुवेइ तिव्वं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे सीयजलावसन्ने,
 गाहगहीए महिसे विवन्ने ॥७६॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
 तंसि खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुहन्तदोसेण सएण जन्तू,
 न किचि फास अवरुजभइ से ॥७७॥
 एगन्तरत्ते रहरसि फासे,
 अतालिसे से कुणइ पओसं ।
 दुखखस्स सपीलमुवेइ वाले,
 न लिप्पई तेण सुणी विरागो ॥७८॥
 फासाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ वाले,
 पीलेइ अत्तद्गुरु किलिट्टे ॥७९॥
 फासाणुवाएण परिगहेण,
 उप्पायणे रखणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहं सुह से,
 संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥८०॥
 फासे अतित्ते य परिगहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्टि ।
 अतुट्टिदोसेण डुही परस्स,
 लोभाविले आययइ अदर्तं ॥८१॥

तण्हाभिमूयस्स अदत्तहारिणो,
 फासे अतित्तस्स परिगग्हे य ।
 मायामुसं वड्डइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुखान विमुच्चइ से ॥८२॥
 मोसस्स पच्छा य पुरत्थग्रो य,
 पश्चोगकाले य दुही दुरते ।
 एवं अदत्ताणि समायथन्तो,
 फासे अतित्तो दुहिग्रो अणिस्सो ॥८३॥
 फासाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कर्त्तो सुह होज्ज कयाइ किचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्तइ जस्स कएण दुख्व ॥८४॥
 एमेव फासम्मि गग्रो पश्चोस,
 उवेइ दुखोहपरपराग्रो ।
 पदुद्धचित्तो य विणाइ कम्म,
 ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥८५॥
 फासे विरत्तो मणुग्रो विसोगे,
 एएण दुखोहपरपरेण ।
 न लप्पइ भवमज्ज्ञे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥८६॥
 मणस्स भावं गहणं वयन्ति,
 तं रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीपरागो ॥८७॥

भावस्स मण गहणं वयन्ति,
 मणस्स भाव गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥६८॥
 भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालिय पावइ से विणास ।
 रागाउरे कामणुरेसु गिढ्डे,
 करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥६९॥
 जे यावि दोस समुवेइ तिव्वं,
 तंसि खणे से उ उवेइ दुखख ।
 दुदन्तदोसेण सएण जन्तु,
 न किचि भाव अवरुजभइ से ॥७०॥
 एगन्तरत्ते रुहरंसि भावे,
 अतालिसे से कुणइ पओसं ।
 दुखस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पइ तेण मुणो विरागो ॥७१॥
 भावाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिसइणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तद्गुरु किलिद्वे ॥७२॥
 भावाणुवाएण परिगहेण,
 उध्यायणे रखणसन्तिअओगे ।
 वए विश्रोगे य कहं सुहं से,
 सभोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥७३॥

भावे अतित्ते य परिगगहम्य,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्द्वि ।
 अतुद्विदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले शाययइ अदत्त ॥६४॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 भावे अतित्तस्स परिगगहे य ।
 मायामुस वड्डुइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्छइ से ॥६५॥

मोसस्स पच्छाय पुरत्थओ य,
 यशोगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययन्तो,
 भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥६६॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुहं होङ्ग कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निवत्तइ जस्स कएरण दुक्खं ॥६७॥

एमेव भावस्मि गश्चो पश्चोस,
 उवेइ दुक्खोहपर पराश्चो ।
 एदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्म,
 जं से पुणे होइ दृह विवागे ॥६८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएरण दुक्खोहपरपरेण ।
 व लिप्पइ भवमज्भे वि सन्तो.
 ज्ञलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥६९॥

एविन्दियत्या य सणस्स अत्या,
 दुक्खस्स हेतु मणुयस्स रागिणो ।
 ते चेव थोवं पि क्याइ दुक्खं,
 न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥१००॥

त कामभोगा समयं उवेन्ति,
 न यावि भोगा विगड़ उवेन्ति ।
 जे तप्पश्रोसी य परिगही य,
 सो तेसु मोहा विगड़ उवेड़ ॥१०१॥

कोहं च माणं च तहेव माय,
 लोहं दुगुच्छं अरइं रइं च ।
 हासं भयं सोगपुमित्यवेयं,
 नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥

आवज्ञइ एवमणेगरुवे,
 एवविहे कामगुणेसु सत्तो ।
 अन्ते य एयप्पभवे विसेसे,
 कारुण्णदीणे हिरिसे वइस्से ॥१०३॥

कप्पं न इच्छ्यज्ज सहायलिच्छू,
 पच्छाणुतावेण तवप्पभाव ।
 एव वियारे अमियप्पयारे,
 आवज्ञइ इन्दियचोरवस्से ॥१०४॥

तओ से जायन्ति पश्चोयणाइ,
 निमज्जित मोहमहणवम्मि ।
 सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्वा,
 तप्पज्जयं ज्जमए य रागी ॥१०५॥

विरक्षुभाणस्स य इन्दियस्था,
 सद्गाइया तावइयप्पगारा ।
 न तस्स सव्वे वि मणुन्नय वा,
 निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥
 एवं ससकप्पविकप्पणासु,
 संजायइ समयमुवट्टियस्स ।
 अत्थे य सकप्पयश्रो तश्रो से,
 पहीयए कामगुरोसु तण्हा ॥१०७॥
 स वीयरागो कयसच्चकिञ्चो,
 खवेइ नाणावरण खणेण ।
 तहेव ज दसणमावरेइ,
 ज चन्तराय पकरेइ कम्म ॥१०८॥
 सव्व तश्रो जाणइ पासए य,
 अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 आणासवे भाणसमाहिजुत्ते,
 आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥
 सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुङ्को,
 ज वाहइ सयय जन्तुमेयं ।
 द्वीहामयं विप्पमुङ्को पसत्थो,
 तो होइ श्चचन्तसुही कथत्थो ॥११०॥
 अणाइकालप्पभवस्स एसो,
 सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
 वियाहिश्रो जं समुविच्च सत्ता,
 कमेण श्चचन्तसुही भवन्ति, त्ति वेमि ॥१११॥
 ५। इय पमायट्टाण णाम वत्तीसहमं अजभयण समत्त ।

अह कम्मप्यथडी णाम तेत्तीसइमं अञ्जक्षयणं

अद्वुं कम्माइं वोच्छामि, आणुपुर्विं जहक्कम ।
जेहि बद्धो अयं जीवो, ससारे परिवद्वृङ् ॥१॥

नाणस्सावरणिज्ञं, दंसणावरणं तहा ।
वैयणिज्ज तहा मोह, आउकम्मं तहेव य ॥२॥

नामकम्म च गोयं च, अन्तरायं तहेव य ।
एवमेपाइं कम्माइ, अद्वैव उ समासओ ॥३॥

नाणावरण पञ्चविह, सुयं आभिणिदोहियं ।
ओहिनार्ण च तइय, मणनाण च केवल ॥४॥

निद्वा तहेव पयला, निद्वानिद्वा पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धो उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥

चक्खुमचक्खु ओहिस्स, दसणे केवले य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्य, नायव्वं दंसणावरण ॥६॥

वैयणीयंपि य दुविहं सायमसाय च आहिय ।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥

मोहणिज्जपि च दुविहं, दसणे चरणे तहा ।
दसणे तिविह बुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥८॥

सम्मत चेव मिच्छत्त, सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाश्रो तिज्जि पयडोश्रो, मोहणिज्ञस्स दसणे ॥९॥

चरित्तमोहणं कम्म, दुविहं तु वियाहिय ।
कसायमोहणिज्ज तु, नोकसायं तहेव य ॥१०॥

सोलसविहभेण, कम्म तु कसायज ।
 सत्तविहं नवविह वा, कम्म च नोकसायजं ॥११॥
 नेरइय-तिरिक्षाउ, मणुस्ताउ तहेव य ।
 देवाउय चउत्थ तु, आउकम्म चउच्चिह ॥१२॥
 नामकम्मं तु दुविह, सुहमसुह च आहिय ।
 सुभस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥
 गोयं कम्मं दुविहं, उच्च नीयं च आहियं ।
 उच्चं अद्विह होइ, एव नीय पि आहिय ॥१४॥
 दाणे लाभे य भोगे ए, उवभोगे वीरिए तहा ।
 पञ्चविहमन्तराय, समासेण वियाहिय ॥१५॥
 एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
 पएसग खेत्तकाले य, भाव च उत्तर सुण ॥१६॥
 सब्वेसि चेव कम्माण, पएसगमणन्तग ।
 गंठियसत्ताईय', अन्तो सिद्धाण आहियं ॥१७॥
 सब्वजीवाण कम्म तु, संगहे छहिसागय ।
 सब्वेसु वि पएसेमु, सब्व सब्वेण बद्धगं ॥१८॥
 उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ ।
 उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१९॥
 श्रावरणिज्ञाण दुण्हपि, वेयणिज्जे तहेव य ।
 अन्तराए य कम्मम्मि, ठिइ एसा वियाहिया ॥२०॥
 उदहीसरिसनामाण, सत्तरि कोडिकोडिओ ।
 भोहणिज्ञास्स उक्कोसा, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥२१॥

तेत्तीस सागरोवमा, उङ्कोसेण वियाहिया ।
 ठिइ उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥२२॥

उद्दीपिरिसनामाण, बीसई कोडिकोडिओ ।
 नामगोत्ताणं उङ्कोसा, अहुमूहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

सिद्धाण्णन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ ।
 सब्बेसु वि पएसगं, सब्बजीवेसु इच्छयं ॥२४॥

तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया ।
 एएसि संवरे चेव, खवणे य जए बुहो, त्ति वेमि ॥२५॥

॥ इय कम्पप्यही नाम तेत्तीसइमं अजभयणं समत्तं ॥३३॥

अह लेसजभयणं णाम चोत्तीसइमं अजभयणं
 लेसजभयणं पवक्खासि, आणुपुञ्च जहक्कमं ।
 छण्हपि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥१॥

नामाइ वण्णरसगन्धफासपरिणामलक्खणं ।
 ठाणं ठिइं गइ चाडं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥

किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य ।
 सुक्कलेसा य छट्टा य, नामाइं तु जहक्कमं ॥३॥

जीमूयनिद्वसंकासा, गवलरिद्वगसन्निभा ।
 खंजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥

नीलासोगसकासा, चासपिच्छसमप्पभा ।
 वेरुलियनिद्वसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥

अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
 पारेवयगीदनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥६॥

हिंगुलयधाउसकासा, तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुण्डपईवनिभा, तेउलेसा उ वणश्चो ॥७॥

हरियालभेय सकासा, हलिहाभेयसमप्पभा' ।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वणश्चो ॥८॥

संखककुन्दसङ्कासा, खीरपूरसमप्पभा ।
रथयहारसकासा, सुक्कलेसा उ वणश्चो ॥९॥

जह कदुयतुम्बगरसो,
निम्बरसो कदुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥

जह तिकदुयस्स य रसो,
तिक्खो जह हत्थिपिष्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥

जह तरुणअम्बगरसो,
तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसश्चो ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो उ काऊण नायव्वो ॥१२॥

जह परिणयम्बगरसो,
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसश्चो ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो उ तेऊण नायव्वो ॥१३॥

वरवारुणीए व रसो,
विविहाण व आसदाण जारिसओ ।

महुमेरयस्स व रसो,
एत्तो पम्हाए परएण ॥१४॥

खज्जूरमुद्दिघरसो, खोररसो खंडसक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणतगुणो, रसो उ सुक्राए ना यव्वो ॥१५॥

जह गोपडस्स गधो, सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तो वि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण ॥१६॥

जह सुरहिकुसुमगंधो गधवासाण पिस्समाणाण ।
एत्तो वि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिष्ठं पि ॥१७॥

जह करगयस्स फासो, गोजिबभाए य सागपत्ताण ।
एत्तो वि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण ॥१८॥

जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाण ।
एत्तो वि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिष्ठं पि ॥१९॥

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्सीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाण होइ परिणामो ॥२०॥

पचासवप्पवत्तो, तीर्हि श्रगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिव्वारभपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥२१॥

निद्धन्धसपरिणामो, निस्ससो अजिइन्दिओ ।
एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेस तु परिणमे ॥२२॥

इस्साअमरिसअतंचो, अविज्ञमाया अहीरिया ।
गिढ्डो पओसे य सढे, पमत्ते रसलोल्लुए ॥२३॥

(सायगवेसए य) आरम्भाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिंश्च नरो
एयजोगसमाउत्तो, नीललेस तु परिणमे ॥२४॥

वके वकसमायारे, नियहुले अणुज्ञुए ।
पलिउच्चगओर्वाहिए, मिच्छदिवृष्टि अणारिए ॥२५॥

उप्फालगदुट्टवाई य, तेणे यावि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो, काऊलेस तु परिणमे ॥२६॥

नीयावित्ती अच्चवले, अमाई अकुऊहले ।
विणीयविणए दन्ते, जोगव उवहाणव ॥२७॥

पियधम्मे दहधम्मेऽवज्ञभीरु विए ।
एयजोगसमाउत्तो, तेउलेस तु परिणमे ॥२८॥

पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए ।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगव उवहाणव ॥२९॥

तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए ।
एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे ॥३०॥

अहृरुद्धाणि वज्ञित्ता, धम्ममुक्त्ताणि भायए ।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥

सरागे वीयरागे वा, उवसन्ते जिइन्दिए ।
एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेस तु परिणमे ॥३२॥

असखिज्ञाणोसप्तिणीण, उस्सप्तिणीण जे समया ।
सखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाह ॥३३॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिङ्ग, नायव्वा किणहलेसाए ॥३४॥

मुहुतद्वं तु जहन्ना, दस उद्दही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिइ, नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥

मुहुतद्वं तु जहन्ना, तिणुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिइ, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥

मुहुतद्वं तु जहन्ना, दोणुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिइ, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥

मुहुतद्वं तु जहन्ना दस होन्ति य सागरा मुहुतहिया ।
उक्कोसा होइ ठिइ, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

मुहुतद्वं तु जहन्ना, तेत्तीस सागरा मुहुतहिया ।
उक्कोसा होइ ठिइ, नायव्वा सुक्खलेसाए ॥३९॥

एसा खलु लेसाण, ओहेण ठिइ उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गइसु एत्तो, लेसाण ठिइ तु वोच्छामि ॥४०॥

दस वाससहस्राइ, काऊए ठिइ जहन्निया होइ ।
तिणुदही पलिओवम, असखभाग च उक्कोसा ॥४१॥

तिणुदही पलिओवममसंखभागो जहन्नेण नीलठिइ ।
दस उद्दही पलिओवम-असंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

दसउद्दही पलिओवम, असखभाग जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइ उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥

एसा नेरइयाण लेसाण, ठिइ उ वण्णिया होइ ।
तेण पर वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाण ॥४४॥

अन्तोमुहुतमद्व, लेसाण ठिइ जर्हि जर्हि जाउ ।
तिरियाण नराण वा, वज्जित्ता कैवल लेसं ॥४५॥

मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, उक्षोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
 नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्लेसाए ॥४६॥

एसा तिरियनराण,
 लेसाण ठिइ उ वण्णिया होइ ।
 तेण पर वोच्छामि,
 लेसाण ठिइ उ देवाण ॥४७॥

दस वाससहस्राइ,
 किण्हाए ठिइ जहन्निया होइ ।
 पलियमसख्जुइमो,
 उक्षोसो होइ किण्हाए ॥४८॥

जा किण्हाए ठिइ खलु,
 उक्षोसा सा उ समयमब्भहिया ।
 जहन्नेण नीलाए,
 पलियमसख च उक्षोसा ॥४९॥

जा नीलाए ठिइ खलु,
 उक्षोसा सा उ समयमब्भहिया ।
 जहन्नेण काऊए,
 पलियमसंखं च उक्षोसा ॥५०॥

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाण ।
 भवणवझ-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणियाणं च ॥५१॥

पलिओवम जहन्ना, उक्षोसा सागरा उ दुन्नहिशा ।
 पलियमसखेजेण, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥

दसवासमहस्राइ, तेऊए ठिइ जहन्निया होइ ।
 दुन्नुदही पलिओवमशसखभागं च उक्षोसा ॥५३॥

जा तेऊए ठिइ खलु,

उङ्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेण पम्हाए,

दस उ मुहुत्ताहियाइ उङ्कोसा ॥५४॥

जा पम्हाए ठिइ खलु, उङ्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेण सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ श्रहमलेसाओ ।

एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५६॥

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धमलेसाओ ।

एयाहि तिहि वि जीवो, सुग्गइ उववज्जइ ॥५७॥

लेसाहि सब्बाहि, पढमे समयम्मि परिणयाहि तु ।

न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अर्तिथ जीवस्स ॥५८॥

लेसाहि सब्बाहि, चरिमे समर्यामि परिणयाहि तु ।

न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥

अन्तमुहुत्तम्मि गए, अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।

लेसाहि परिणयाहि, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥६०॥

तम्हा एयासि लेसाण, अणुभावं वियाणिया ।

अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्टिए मुणो, त्ति बेमि ॥६१॥

॥ इय लेसज्जभयण णाम चउत्तीसम श्रज्जभयण समत्त ॥

अह अणगारिज्ज णाम पंचतीसइमं श्रज्जभयणं

सुणेह मे एगगमणा, मग्ग बुद्धेहि देसिय ।

जमायरन्तो भिक्खू, दुखाणन्तकरे भवे ॥१॥

गिहवास परिच्चज्ञ, पवज्ञामस्सिए मुणी ।
 इमे सगे वियाणिङ्ग, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥२॥
 तहेव हिंस अलिय, चोञ्ज अबम्भसेवण ।
 इच्छाकाम च लोभ च, सजओ परिवज्ञए ॥३॥
 मणोहर चित्तघरं, मल्लधूवेण वासिय ।
 सकवाड पण्डुरुल्लोयं, मणसावि न पत्थए ॥४॥
 इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए ।
 दुक्कराइ निवारेऽ, कामरागविवद्धृणे ॥५॥
 सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कश्चो ।
 पहरिके परकडे वा, वास तत्थाभिरोयए ॥६॥
 फासुयम्मि श्रणाबाहे, इत्थीहि शणभिद्दुए ।
 तत्य सकप्पे वास, भिक्खू परमसजए ॥७॥
 न सयं गिहाइ कुविज्ञा, णेव अन्नेहिं कारए ।
 गिहकम्मसमारम्भे, भूयाण दिस्सए वहो ॥८॥
 तसाण थावराण च, सुहुमाण बादराण य ।
 तम्हा गिहसमारम्भं, सजओ परिवज्ञए ॥९॥
 तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
 पाणभूयदयद्वाए, न पए न पयावए ॥१०॥
 जलधन्ननिस्तिया जीवा, पुढीकटुनिस्तिया ।
 हम्मन्ति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥
 विसप्पे सव्वश्चो धारे, बहुपाणिविणासणे ।
 नत्य जोइसमे सत्ये, तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥

१. सञ्चणुदें ।

हिरण्णं, जायरूपं च. मणसा वि न पत्थए ।
समलेद्गुकचणे भिक्खू, विरए कयविककए ॥१३॥

किणन्तो कइओ होइ, विकिकणन्तो य वाणओ ।
कयविककयन्मि वद्गुन्तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥१४॥

भिकिखयव्व न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविककओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥

समुयाण उछ्मेसिज्जा, जहा-सुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभस्मि सत्तुठे, पिण्डबाय चरे मुणी ॥१६॥

अलोले न रसे गिछे, जिभादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्टाए भुजिज्ञा, जवणट्टाए महामुणी ॥१७॥

श्रवण रथणं चेव, वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्हीसक्कारसम्माण, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥

सुकक्जस्काण झियाएज्ञा, अणियाणे अकिञ्चणे ।
वोसट्टकाए विहरेज्ञा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

निज्जूहिङ्कण आहारं, कालधस्मे उवट्टिए ।
जहिङ्कण^१ माणुस बोन्दि, पहु दुकखा विमुच्छइ ॥२०॥

निम्ममे निरहंकारे, बोयरागो अणासवो ।
सपत्तो केवल नाणं, सासय परिणिव्वुए, त्ति बेमि ॥२१॥

॥ इय अणगार नाम पचतीसहस्रञ्जभ्यण समत्त ॥३५॥

१ चहिङ्कण ।

अह जीवाजीवविभक्ती णाम छत्तीसझेम अर्जभयण

जीवाजीवविभक्ति सुणोह मे, एगमणा इश्व्रो ।
 ज जाणिऊण भिकखू, सम्म जयइ सजमे ॥१॥

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए ।
 अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥२॥

दववश्वो खेत्तश्वो चेव, कालश्वो भावश्वो तहा ।
 पर्खणा तेसि भवे, जीवाणमजीवाण य ॥३॥

रूविणो चेव रूबी य, अजीवा दुविहा भवे ।
 अरूबी दसहा ब्रुत्ता, रूविणो य चउविहा ॥४॥

धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए ।
 अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥५॥

आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ।
 अद्वासमए चेव, अरूबी दसहा भवे ॥६॥

धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
 लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥

धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाहया ।
 अपञ्जवसिया चेव, सब्बद्व तु वियाहिए ॥८॥

समएवि सन्तइ पप्प, एवमेव वियाहिए ।
 आएस पप्प साईए, सपञ्जवसिएवि य ॥९॥

खन्धा य खन्धदेसा य, तप्पएसा तहेव य ।
 परमाणुणो य वोधव्वा, रूविणो य चउविहा ॥१०॥

एगत्तेण पुहत्तेण, खन्दा य परमाणु य ।
लोणगदेसे लोण य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसि वुच्छं चउव्विह ॥१२॥
संतइ पप्प तेणाई, अप्पज्जवसियावि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सप्पज्जवसिया वि य ॥१३॥

असंखकालमुक्कोसं, एकको समश्चो जहन्नयं ।
अजीवाण य रूबीण, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥
अणन्तकालमुक्कोस, एकको समश्चो जहन्नय ।
अजीवाण य रूबीण, अन्तरेय वियाहिय ॥१५॥
वण्णश्चो गन्धश्चो चेव, रसश्चो फासश्चो तहा ।
सठाणश्चो य विन्नेश्चो, परिणामो तेसि पंचहा ॥१६॥

वण्णश्चो परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया, हलिदा सुकिला तहा ॥१७॥

गन्धश्चो परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।
सुदिभगन्धपरिणामा, दुविभगन्धा तहेव य ॥१८॥

रसश्चो परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
तित्तकडुयकसाया, अम्बिला महुरा तहा ॥१९॥
फासश्चो परिणया जे उ, अहुहा ते पकित्तिया ।
कवखडा मउआ चेव, गरुया लहुआ तहा ॥२०॥
सीधा उण्हा न निढ़ा य, तहा लुक्खा य आहिया ।
इर फासपरिणया एए, पुगला समुदाहिया ॥२१॥

संठाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया ।
 परिमडला य वद्वा य, तसा चउरसमायया ॥२२॥
 वणओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२३॥
 वणओ जे भवे तीले, भइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२४॥
 वणओ लोहिए जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२५॥
 वणओ पीए जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२६॥
 वणओ सुकिकले जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२७॥
 गन्धओ जे भवे सुबभी, भइए से उ वणओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२८॥
 गन्धओ जे भवे दुबभी, भइए से उ वणओ ।
 रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२९॥
 रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३०॥
 रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३१॥
 रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३२॥

रसओ अस्तित्वे जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३३॥
 रसओ महुरए जे उ भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३४॥
 फासओ कवखडे जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३५॥
 फासओ मडए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३६॥
 फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३७॥
 फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३८॥
 फासए सीयए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥३९॥
 फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥४०॥
 फासओ निढ्हए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥४१॥
 फासओ लुकखए जे उ, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥४२॥
 परिमण्डलसंठाणे, भइए से उ वणओ ।
 गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४३॥

संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वणओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४४॥
संठाणओ भवे ससे, भइए से उ वणओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४५॥

संठाणओ य चउरसे, भइए से उ वणओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४६॥

जे आधयसठाणे, भइए से उ वणओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४७॥

एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।
इत्तो जीवविभत्ति, बुच्छामि अणुपुब्वसो ॥४८॥
ससारतथा य सिद्धा य, द्विविहा जीवा वियाहिया ।
सिद्धा जेगविहा वृत्ता, त मे कित्तयश्रो सुण ॥४९॥

इत्थीपुरिससिद्धा य, तहेव य नपु सगा ।
सर्लिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥५०॥

उककोसोगाहणाए य, जहन्नमजिभमाइ य ।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्भिम जलभिम य ॥५१॥

दस य नपुंसएमु, वीस इत्थियासु य ।
पुरिसेसु य अद्वसयं, समएणेगेण सिजभइ ॥५२॥

चत्तारि य गिहिलिंगे, अन्नलिंगे दसेद ।
सर्लिंगेण अद्वसय, समएणेगेण सिजभइ ॥५३॥

उककोसोगाहणाए य, सिजभन्ते जुगदं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्जें अद्वुत्तर सय ॥५४॥

चउरुडूलोए, य डुबे समुद्रे,
तओ जले वीसमहे तहेव य ।

सयं च अट्टुत्तरं तिरियलोए,
समएणेगेण सिजभइ धुवं ॥५५॥

कर्हि पडिहया सिद्धा ?, कर्हि सिद्धा पइहिया ?
कर्हि बोन्दि, चइत्ताण ?, कत्थ गन्तूण सिजभइ ? ॥५६॥

अलोए पडिहया सिद्धा, लोयगे य पइहिया ।
इह बोन्दि चइत्ताण, तत्थ गन्तूण सिजभइ ॥५७॥

बारसहि जोयर्णेहि, सव्वट्टुसुवर्ि भवे ।
ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसठिया ॥५८॥

पणयालसयसहस्रा, जोयणार्ण तु आयथा ।
तावइय चेव वित्थणा, तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥

अट्टुजोयणबाहल्ला, सा मज्जभिस वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते, मच्छपत्ताउ तणुययरी ॥६०॥

अज्जुणसुवण्णगमई,
सा पुढवी निम्मला सहावेण ।

उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य,
भणियां जिणवरेहि ॥६१॥

संखककू दसकासा, पण्डुरा, निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयन्तो उ वियाहिओ ॥६२॥

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥

तथ सिद्धा महाभागा, लोगगम्मि पद्धिया ।
 भवप्पवंचशो मुक्का, सिर्द्धि वरगइ गया ॥६४॥
 उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ ।
 तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥
 एगत्तेण साईया, अपञ्चवसियावि य ।
 पुहत्तेण अणाइया, अपञ्चवसियावि य ॥६६॥
 श्रहविणो जीवधणा, नाणदसणसन्निया ।
 अउल सुह सपन्ना, उबमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥
 लोगगदेसे ते सच्चे, नाणदसणसन्निया ।
 ससारपारनितिथणा, सिर्द्धि वरगइ गया ॥६८॥
 संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
 तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तर्हि ॥६९॥
 पुढवी आउजीवा य, तहेव य बणस्सई ।
 इच्छेए थावरा तिविहा, तैसं मैए सुणेह मे ॥७०॥
 दुविहा उ पुढवीजीवा, सुहमा बायरा तहा ।
 पञ्चतमपञ्चता, एवमैए दुहाँ पुणो ॥७१॥
 बायरा जे उ पञ्चता, दुविहा ते वियाहिया ।
 सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तर्हि ॥७२॥
 किण्हा नीला य रुहिरा य, हलिदा सुविकला तहा ।
 पण्डुपणगमद्यिया, खरा छत्तीसइविहा ॥७३॥
 पुढवी य सक्करा बालुया य,
 उबले सिला य लोणूसे ।

चयन्त्व
तउय-सीसग,
रूप-सुवण्णे य वइरे य ॥७४॥

हस्तियाले हिगुलए,
मणोसिता सासगंजण-पवाले ।
अब्भपडलब्भवालूय,
बायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जुए य रुयरे. अंके पलिहे य लोहियक्ते य ।
सरगय-ससारगल्ले. भुयमोयग-इन्दनीले य ॥७६॥

चन्दण गेरुय हंसगढमे, पुलए सोगन्धिए य बोधव्वे ।
चन्दप्पह-न्वेहलिए, जलकन्ते सूरकते य ॥७७॥

एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमनाणता, सुहुमा तत्य वियाहिया ॥७८॥

सुहुमा य सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसि चउच्चिहं ॥७९॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सप्प्ज्ञवसियावि य ॥८०॥

बादीससहस्राइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं. अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।
कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडम्मि सए काए, पुढविजोकाण अन्तरं ॥८३॥

एर्द्देस वण्णप्रो चेव, गन्धग्रो रसफासश्रो ।
संठाणादेसश्रो वावि, विहाणाइँ सहस्ससो ॥८४॥

दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पञ्चत्तमपञ्चत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥८५॥

बायरा जे उ पञ्चत्ता, पचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से य, हरतण् महिया हिमे ॥८६॥

एगविहमणाणता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सब्बलोगस्मि, लोगदेसे य बायरा ॥८७॥

सतइ पप्पणाईया, अपञ्चवसियावि ।
ठिं पडुच्चसाईया, सपञ्जवसियावि य ॥८८॥

सत्तेव सहस्साइँ, वासाणुककोसिया भवे ।
आउठिई आऊण, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥८९॥

असंखकालमुककोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
कायठिई आऊण, त कायं तु अमुचओ ॥९०॥

अणन्तकालमुककोस, अन्तो मुहुत्त जहन्नय ।
विजाडस्मि सए काए, आऊजीवाण अन्तर ॥९१॥

एर्द्देस वण्णश्रो चेव, गन्धग्रो रसफासश्रो ।
संठाणादेसश्रो वावि, विहाणाइँ सहस्ससो ॥९२॥

दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।
पञ्चत्तमपञ्चत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥९३॥

बायरा जे उ पञ्चत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरोरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥९४॥

पत्तेगसरीराओऽणेगहा, ते पकित्तिया ।
 स्वखा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥६५॥

वलया पव्वगा^१ कुहुणा जलरुहा ओसहो तहा ।
 हरियकाया बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥६६॥

साहारणसरीराओऽणेगहा, ते पकित्तिया ।
 आलुए मूलए चेव, सिगबेरे तहेव य ॥६७॥

हिरिली सिरिली सस्सरिली, जावई केयकन्दली ।
 पलण्डुलसणकन्दे य, कन्दली य कहुद्वाए ॥६८॥

लोहिणी हूयत्थी हूय, कुहगा य तहेव य ।
 कण्हे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥६९॥

अस्सकणी य बोधव्वा, सीहकणी तहेव य ।
 मुसुण्डी य हलिद्वा य, णेगहा एवमायओ ॥१००॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥

संतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥

दस चेव सहस्राइं, चासाणुक्कोसिया भवे ।
 वप्पफ्कईण आउ तु अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१०३॥

अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं ।
 कायठिई पणगाणं, त काय तु अमुंचओ ॥१०४॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नन् ।
 विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥१०५॥

एएसि वणश्रो चेव, गन्धश्रो रसफासश्रो ।
 सठाणादेसश्रो वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥
 इच्छेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे, बुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥
 तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा ।
 इच्छेए तसा तिविहा, तेसि भेए सुणेह मे ॥१०८॥
 दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा ।
 पञ्जत्तमपञ्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
 वायरा जे उ पञ्जत्ताणेगहा ते वियाहिया ।
 इगाले मुस्मुरे श्रगणी, श्रज्जिजाला तहेव य ॥११०॥
 उक्का विज्ञु य बोधव्वा णेगहा एवमायश्रो ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
 सुहुमा सब्बलोगस्मि, लोगद्वेषे य वायरा ।
 इत्तो कालविभाग तु, तेसि बुच्छं चउच्चिवह ॥ ११२ ॥
 सतइ पप्पडणाईया, श्रपञ्जवसियावि य ।
 ठिइ पडुच्च साइया सपञ्जवसियावि य ॥११३॥
 तिष्णेव श्रहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई तेऊण, अन्तोमुहुत्त जहन्तिया ॥११४॥
 असंखकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्तय ।
 कायठिई तेऊण, त कायं तु अमुचश्रो ॥११५॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्तय ।
 विजढस्मि सए काए, तेऊजीवाण अन्तर ॥११६॥

एर्सि वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
सठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्सो ॥१७॥

दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१८॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पक्तिया ।
उक्कलिया मण्डलिया, घणगुंजा सुद्धवाया य ॥१९॥

सवद्वगवाये य, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥२०॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसि बुच्छं चउच्चिहं ॥२१॥

सन्तइ पप्पणाईया, अपञ्जवसियावि य ।
ठिइ पहुच्च साईया, सपञ्जवसियावि य ॥२२॥

तिणोव सहस्साइ, वासाणुकोसिया भवे ।
आउठिई वाऊण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥२३॥

असखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं ।
कायठिई वाऊण, त काय तु अमुंचओ ॥२४॥

अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
विजहम्मि सए काए, वाऊजीवाण अन्तरं ॥२५॥

एर्सि वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्सो ॥२६॥

उराला तसा जे उ, चउहा ते पक्तिया ।
बेइन्दिया-तेइन्दिया-चउरो पचिन्दिया तहा ॥२७॥

वेइन्द्रिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पञ्चतपमञ्जस्ता, तेसि भेए सुणेह मे ॥१२८॥
 किमिणो सोमञ्जला चेव, श्रलसा माइवाहया ।
 वासीमुहा य सिपिया, सखा सखणगा तहा ॥१२९॥
 पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा ।
 जलुगा जालगा चेव, चन्दणा य तहेव य ॥१३०॥
 इह वेइन्द्रिया, एएङ्गेहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया ॥१३१॥
 सतइ पप्पडणाईया अपञ्जवसियावि य ।
 ठिइ पङ्कुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१३२॥
 वासाइ बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
 वेइन्द्रिय आउठिई अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१३३॥
 सखिञ्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
 वेइन्द्रियकायठिई, त कायं तु अमु चओ ॥१३४॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं ।
 वेइन्द्रियजीवाणं, अन्तर च वियाहिय ॥१३५॥
 एएसि वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१३६॥
 तेइन्द्रिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पञ्चतमपञ्जस्ता, तेसि भेए सुणेह मे ॥१३७॥
 कुन्त्युपिवीलिउड्डसा, उक्कलुद्देहिया तहा ।
 तणहारकट्टहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥

कथ्यासद्गुर्मिजा य, तिदुगा तउसीमजगा ।
 सदावरी य गृम्मी य, बोवव्वा इन्दगाइया ॥१३६॥

इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया ॥१४०॥

सतइं पप्पडणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिं पहुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१४१॥

एगूणपण्णहोरत्ता, उङ्कोसेण वियाहिया ।
 तेइन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥

संखिझकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 तेइन्दियकायठिई, त कायं तु अमु चओ ॥१४३॥

शणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 तेइन्दियजीवाण, अतर तु वियाहियं ॥१४४॥

एएसि वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वादि, विहाणाइं सहस्रसो ॥१४५॥

चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसि भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगातहर्व ।
 भमरे कोडपयगे य, ढिकुणे ककणे तहा ॥१४७॥

कुवकुडे सिगिरीडी य, नन्वावत्ते य विच्छुए ।
 डोले भिगीरीडी य, विरिली अच्छवेहए ॥१४८॥

अच्छले माहए अच्छरोडए,
 विचित्ते चित्तपत्तए ।

उहिंजलिया जलकारी य,
नीया तन्तवयाहिया ॥१४८॥

इय चउरिन्दिया एए, उणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया ॥१५०॥

सतइ पष्पडणाईया, अपञ्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपञ्जवसिया वि य ॥१५१॥

छच्छेव मासाड, उक्कोसेण द्वियाहिया ।
चउरिन्दिय आउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥

सखिञ्चकालमुङ्कोस, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
चउरिन्दियकायठिई, तं कायं तु अमु चओ ॥१५३॥

अणन्तकालमुङ्कोस, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।
चउरिन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहिय ॥१५४॥

एएसि वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणा देसओ वावि, विहाणाइ सहस्रसो ॥१५५॥

पंचिन्दिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया ।
नेरइयतिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ॥१५६॥

नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
रथणाभ-सङ्काराभा य वालुयाभा य आहिया ॥१५७॥

पकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा ।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥

. तववगाहिया । २ लोगस्स एगा देसम्मि, ते सब्बे परिकित्तिमा ।

लोगस्स एगदेसम्म, ते सब्बे उ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, बोच्छ तेर्सि चउव्विह ॥१५६॥
 संतइ पप्पाऽणाईया, अपञ्जवसियावि य ।
 ठिइं पदुच्च साइया, सपञ्जवसियावि य ॥१६०॥
 सागरोवमेग तु उक्कोसेण वियाहिया ।
 पढमाए जहन्नेण, दसवाससहस्रिया ॥१६१॥
 तिणेव सागरा उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 दोच्चाए जहन्नेण, एग तु सागरोवम ॥१६२॥
 सत्तेव सागरा उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 तइयाए जहन्नेण, तिणेव सागरोवमा ॥१६३॥
 दस सागरोवमा उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥
 सत्तरस सागरा उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पचमाए जहन्नेण, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥
 बावीस सागरा उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 छट्टीए जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥
 तेत्तीस सागरा उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 सत्तमाए जहन्नेण, बावीस सागरोवमा ॥१६७॥
 जा चेव य आउठिई, नेरइयाण वियाहिया ।
 सा तेर्सि कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नयं ।
 विजङ्घम्मि सए काए, नेरइयाण तु अन्तर ॥१६९॥

एएस वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
सठाणा देसओ वावि, विहाणाइ सहस्सो ॥१७०॥

पचिन्दियतिरिक्खाओ,
दुविहा ते वियाहिया ।
समुच्छिमतिरिक्खाओ,
गब्भवक्षन्तिया तहा ॥१७१॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा ।
नहयराय बोधव्वा, तेर्सि भेए सुणेह मे ॥१७२॥
मच्छा य कच्छभा य, गाहा भगरा तहा ।
सुसुमारा य बोधव्वा, पचहा जलयराहिया ॥१७३॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्य वियाहिया ।
एत्तो काल विभाग तु, बोच्छ तेर्सि चउच्चिह ॥१७४॥
सतइ पप्पडणाईया, अपञ्जवसिया वि य ।
ठिइ पहुच्च साईया, सपञ्जवसिया वि य ॥१७५॥

एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई जलयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥१७६॥
पुव्वकोडिपुहुत्त तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई जलयराण अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥१७७॥

अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढम्मि सए काए, जलयराण तु अन्तर ॥१८८॥

(एएस वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्सओ ॥)

पलिओवमस्स भागो, असखेज्ञइमो भवे ।
 आउठिई खह्यराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१६०॥
 असखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया ।
 पुद्वकोडिपुहुत्त, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१६१॥
 कायथिई खह्यराण, अन्तर तेसिम भवे ।
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥१६२॥
 एएसि वणन्नो चेव, गन्धओ रसफासश्चो ।
 संठाणादेसश्चो वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१६३॥
 मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयश्चो सुण ।
 समुच्छिमा य मणुया, गवभवक्कन्तिया तहा ॥१६४॥
 गवभवक्कन्तिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
 कम्मअकम्मभूमा य, ग्रन्तरद्वीवया तहा ॥१६५॥
 पन्नरस तीसविहा, भेया अदुबीसइ ।
 सखा उ कमसो तेसि, इह एसा वियाहिया ॥१६६॥
 समुच्छिमाण एसेव, भेश्चो होइ वियाहियो ।
 लोगस्स एगदेसम्मि, ते सब्वे वि वियाहिया ॥१६७॥
 सतइ पञ्चणाईया, अपञ्चवसियावि य ।
 ठिई पञ्च साईया, सपञ्चवसियावि य ॥१६८॥
 पलिओवमाइ तिणिवि, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई मणुयाण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१६९॥
 पलिओवमाइ तिणिउ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पुद्वकोडिपुहुत्तेण, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥२००॥

कायथिर्दि मणुयाणं, अन्तर तेसिम भवे ।
 अणन्तकालमुक्षोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्तय ॥२०१॥
 एएसं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्रसो ॥२०२॥
 देवा चउविहा ब्रुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्ज्व वाणमन्तर-जोइस-वेमाणिया तहा ॥२०३॥
 दसहा उ भवणवासी, अदुहा वणचारिणो ।
 पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०४॥

असुरा नागसुवण्णा,
 विज्जू अग्नी वियाहिया ।
 दीबोदहिदिसा वाया,
 थणिया भवणवासिणो ॥२०५॥
 पिसायभूया जखा य,
 रखखसा किन्नरा किपुरिसा ।
 महोरगा य गन्धव्वा,
 अदुविहा वाणमन्तरा ॥२०६॥
 चन्दा सूरा य नक्खत्ता,
 गहा तारागणा तहा ।
 ठियाः विचारिणो चेव,
 पचहा जोइसालया ॥२०७॥

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
 कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ॥२०८॥
 कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मीसाणगा तहा ।
 सण्कुमारमाहिन्दा, बम्भलोगा य लन्तगा ॥२०९॥

महासुक्षा संहसरारा, आणया पाणया तहा,
आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१०॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्ञगाणुत्तरा चेव, गेविज्ञा नवदिहा तहि ॥२११॥

हेट्टिमाहेट्टिमा चेव, हेट्टिमा मज्जभमा तहा ।
हेट्टिमाउवरिमा चेव, मज्जभमाहेट्टिमा तहा ॥२१२॥

मज्जभमामज्जभमा चेव,
मज्जभमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्टिमा चेव,
उवरिमामज्जभमा तहा ॥२१३॥

उवरिमाउवरिमा चेव, इय गेविज्ञगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥२१४॥

सब्बत्थसिद्धगा चेव, पचहाणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एएङेगहा एवमायओ ॥२१५॥

लरेगस्स एगदेसम्भि, ते सब्बेवि वियाहिया ।
इत्तो कालविभाग तु, ब्रुच्छ तेर्सि चउब्बिह ॥२१६॥

संतइ पप्पणाईया, अपञ्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपञ्जवसियावि य ॥२१७॥

साहिय सागरं एकक उङ्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्ञाण जहन्नेण, दसवाससहस्रिया ॥२१८॥

(पलिओवम दो ऊणा, उङ्कोसेण वियाहिया ।
असुरिन्द्रवज्जेताज, जहन्ना दमनहस्सगा ॥)

पलिओवमभेग तु, उङ्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराण जहन्नेण, दसवासत्सहस्रिया ॥२१८॥

पलिओवमभेग तु, वासलवेण साहियं ।
पलिओवमद्वभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२०॥

दो चेव सागराइं, उङ्कोसेण वियाहिया ।
तोहम्मम्मि जहन्नेण, एगं च पलिओवम ॥२२१॥

सागरा साहिया दुन्नि, उङ्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेण, साहियं पलिओवम ॥२२२॥

सागराणि य सत्तेव, उङ्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेण, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२३॥

साहिया सागरा सत्त, उदकोसेण ठिई भवे ।
साहिन्दम्मि जहन्नेण, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२४॥

दस चेव सागराइ । उङ्कोसेण ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेण सत्त उ सागरोवमा ॥२२५॥

चउदससागराइं, उङ्कोसेण ठिई भवे ।
लन्तगम्मि जहन्नेण, दस उ सागरोवमा ॥२२६॥

सत्तरम्भसागराइ, उङ्कोसेण ठिई भवे ।
महासुद्दले जहन्नेण, चौहस सागरोवमा ॥२२७॥

श्रद्धारस्त सागराइ, उङ्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्रारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥२२८॥

सागरा श्रज्ञवीतं तु, उङ्कोसेण ठिई भवे ।
आणयम्मि जहन्नेण, श्रद्धारस सागरोवमा ॥२२९॥

वीस तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयम्मि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥२३०॥

 सागरा इक्कवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥२३१॥

 बावीसं सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३२॥

 तेवीससागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढमम्मि जहन्नेण, बावीस मागरोवमा ॥२३३॥

 चउवीसं सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बिइयम्मि जहन्नेण, तेवीस सागरोवमा ॥२३४॥

 पणवीस मागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तइयमि जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥२३५॥

 छवीसं सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउत्थम्मि जहन्नेण, सागरा पणवीसई ॥२३६॥

 सागरा सत्तवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पञ्चमम्मि जहन्नेण, सागरा उ छवीसई ॥२३७॥

 सागरा अद्ववीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 छद्वम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ॥२३८॥

 सागरा अउणतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अद्ववीनई ॥२३९॥

 तीस तु सागराइ, उक्कासेण ठिई भवे ।
 अद्वमम्मि जहन्नेण, सागरा अउणतीसई ॥२४०॥

सागरा इकतीस तू, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥२४१॥
 तेत्तीसा सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउसुंपि विजयाईसु, जहन्नेणेकतीसई ॥२४२॥
 अजहन्नमणूवकोस, तेत्तीसं सागरोवमा ।
 महाद्विमाणे सव्वहु, ठिई एसा वियाहिया ॥२४३॥
 जा चेव उ आउठिई, देवाण तु वियाहिया ।
 सा तेसि कायठिई, जहशमुक्कोसिया भवे ॥२४४॥
 अणन्तकालमुवकोसं, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
 विजदम्मि सए काए, देवाण हुज्ज अन्तर ॥२४५॥
 एएसि वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्रसो ॥२४६॥
 (अणन्तकालमुवकोसं, वासपुहुत्तं जहन्नग ।
 आणयाई वप्पाण गेविज्जाण तु अन्तर ॥
 संखिज्जसागर्खकोसं, वासपुहुत्त जहन्नग ।
 अणुत्तराण य देवाण अन्तर तु वियाहिया)
 ससारत्था य सिद्धाय, इय जीवा वियाहिया ।
 रुविणो चेवङ्गवीय, शजीवा दुविहावि य ॥२४७॥
 इय जीवमजीवे य, सोऽन्ना सद्विहृण य ।
 सव्वनयाणमणूमए, रमेज्ज सजमे भुणी ॥२४८॥
 तओ वहूण वासाणि, सामणमणूपालिय ।
 इसेण कमजोरेण, अप्पाण सलिहे मुणी ॥२४९॥
 वारसेव उ वासाई, सलेहुङ्गोसिया भवे ।
 संवरच्छरमजिभमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५०॥

पढ़मे वासचउङ्गमिम्, विगई-निज्जूहण करे ।
विईए वासचउङ्गमिम्, विवित्त तु तब चरे ॥२५१॥

एगन्तरमायाम कट्टु, सवच्छरे दुवे ।
तओ सवच्छरद्व तु, नाइविगिट्टु तब चरे ॥२५२॥

तओ सवच्छरद्व तु, विगिट्टु तु तब चरे ।
परिभिय चेव आयाम, तम्मि सवच्छरे करे ॥२५३॥

कोडी सहियमायाम, कट्टु सवच्छरे मुणी ।
मासद्वमासिएण तु, आहारेण तब चरे ॥२५४॥

कन्दप्पमाभिश्रोग च,
किञ्चित्सिय मोहमासुरतं च ।

एयाउ दुर्गईश्रो,
मरणमिम् विराहिया हुन्ति ॥२५५॥

मिच्छादसणरत्ता, सनियाणा उ हिसगा ।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसि पुण दुल्लहा बोही ॥२५६॥

सम्मद्व सणरत्ता, अनियाणा सुक्लेसमोगाढा ।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसि सुलहा भवे बोही ॥२५७॥

मिच्छादसणरत्ता,
सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा,
तेसि पुण दुल्लहा बोही ॥२५८॥

जिणवयणे श्रणुरत्ता, जिणवयण जे करेन्ति भावेण ।
शमला असकिलिट्टा, ते हुन्ति परित्तससारी ॥२५९॥

बालमरणाणि बहुतो,
 अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
 मरिहन्ति ते वराया,
 जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥२६०॥

बहुग्रामविज्ञाणा, समाहितप्पायगा य गुणगाही ।
 एएण कारणेण, अरिहा आलोयण सोउं ॥२६१॥

कन्दप्पकुकुयाइ, तह सीलसहाव-हसणविगहाइ ।
 विम्हावेन्तोवि पर, कन्दप्प भावणं कुणइ ॥२६२॥

मन्ताज्ञोग काउ, भूइकम्म च जे पउजन्ति ।
 साय-रस-इड्डिहेउ, ग्रभिश्वोगं भावण कुणइ ॥२६३॥

नाणस्स केवलीण, धम्मायरियस्स सघसाहूण ।
 माई अवण्णवाई, किविसिय भावणं कुणइ ॥२६४॥

अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्म होइ पडिसेवी ।
 एएहि कारणेहि, आसुरिय भावण कुणइ ॥२६५॥

सत्थगहण विसभक्खण च,
 जलणं च जलपवेसो य ।

शणायार-भण्डसेवी,

जम्मणमरणाणि बधन्ति ॥२६६॥

इय पाउकरे बुढे, नायए परिनिव्वुए ।

छत्तीस उत्तरज्ञाए, भवसिद्धियसवुडे' त्ति बेमि ॥ २६७॥

॥ इयं जीवाजीवविभत्ती णाम छत्तीसहम अज्ञभ्यण समत्त ॥३६॥

॥ उत्तरज्ञभ्यणसुत्तं समत्तं ॥

सिरी नंदीसुत्तं

३५४

जयइ जगजीवजोणी-वियाणओ जगगुरु जगाणदो ।
 जगणाहो जगवधू, जयइ जगप्पियामहो भयव ॥१॥

जयइ सुआण पभवो, तित्थयराण श्रपच्छमो जयइ ।
 जयइ गुरु लोगाण, जयइ महापा महावीरो ॥२॥

भद्र सब्बजगुज्जोयगस्स, भद्र जिणस्स वीरस्स ।
 भद्र सुरासुरनमसियस्स, भद्रं धुयरयस्स ॥३॥

गुणभवणगहण सुयरयण-भरिय दसणविसुद्धरत्थामा ।
 सधनगर । भद्रं ते, श्रखडचारित्तपागारा ॥४॥

सजम-त्व-तु बारयस्स, नमो सम्मतपारियल्लस्स ।
 श्रपडिचक्कस्स जश्रो, होउ सया सधचक्कस्स ॥५॥

भद्र सीलपडागूसियस्स, तवनियमतुरयजुत्तस्स ।
 सघरहस्स भगवश्रो, सज्भायसुनन्दिघोसस्स ॥६॥

कम्मरयजलोहविणिगयस्स, सुयरयणदोहनालस्स ।
 पच महव्वयथिरकन्नियस्म, गुणकेसरालस्स ॥७॥

सावगजणमहुअर'-परिवुडस्स, जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
 सधपउमस्स भद्रं, समणगणसहस्सपत्तस्स ॥८॥

तवसजममयलछण, श्रकिरियराहुमुहुद्धरिस निच्च ।
 जय सधचद निम्मलसम्मतविसुद्धजोणहागा ॥९॥

१. महुपरि

परतित्थियगहपहनासगस्स, तवतेयदित्तलेसस्स ।
 नाणुज्ञोयस्स जए ! भद्र दमसधसूरस्स ॥१०॥
 भद्र धिइवेलापरिगयस्स, सजभायजोगमगरस्स ।
 अक्षोहस्स भगवओ, संघसमुद्दस्स रुदस्स ॥११॥
 सम्मदसण-वरवइर-दढ़ुडगाढा-वगाढ-पेढस्स ।
 घम्मवर-रथणमडिय-चामीयर-मेहलागस्स ॥१२॥
 नियमूसियकणयसिलादलुज्जल-जलतचित्तकूडस्स ।
 नदणवणमणहर-सुरभिसील गधुद्धुमायस्स ॥१३॥
 जीवदयासुं दरकदरुद्दरियमुणिवरमइदइन्नस्स ।
 हेउसय-धाउ-पगलंत-रथणदित्तोसहि-गुहस्स ॥१४॥
 संवरवरजलपगलियउज्जरपविरायमाणहारस्स ।
 सावगजण-पउररवत-मोरनच्चत-कुहरस्स ॥१५॥
 विणयनयपवरमुणिवरफुरतविज्जुज्जलतसिहरस्स ।
 विविहगुणकप्परुखगफलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥
 नाणवररथणदिप्पंत-कतवेरुलिय-विमलचूलस्स ।
 वंदामि विणयपणओ, सघमहामदरगिरिस्स ॥१७॥
 क्षेगुणरथणुज्जलकडय, सीलसुगधि-तवमडिडद्वेसं ।
 सुयबारसगसिहर सघमहामंदरं वदे ! ॥१८॥
 क्षेनगररहचक्कपउमे, चदे सूरे समुद्दमेरुम्मि ।
 जो उवमिज्जइ सयय, त सघगुणायरं वदे ॥१९॥
 [वदे] उसभ अजिय, सभवमभिनंदणसुमइसुप्पभसुपासं ।
 ससिपुष्पदतसीयलसिज्जसं वासुपुज्ज च ॥२०॥
 क्षेटीकायां तु न ।

विमलमणत य धर्म, सर्वं कु थं अर च मर्ज्जि च ।
 मुनिसुव्वयनमिनेमि, पास तह वद्धमाण च ॥२१॥
 पढमित्थ इदभूई, बोए पुण होइ अग्गभूइत्ति ।
 तइए य वाउभूई, तओ वियते सुहम्मे य ॥२२॥
 मडिअ-मोरियपुत्ते, अकपिए चेव अयलभाया य ।
 मेश्रज्जे य पहासे, गणहरा हुति वीरस्स ॥२३॥
 निव्वुइपहसासणय, जयइ सया सव्वभावदेसणय ।
 कुसभयमयनासणय, जिणिदवरवीरसासणय ॥२४॥
 सुहम्म अग्गिवेसाण, जबुनाम च कासव ।
 पभवं कच्चायण वन्दे । वच्छ सिज्ज भव तहा ॥२५॥
 जसभद्व तु गिय वन्दे, सभूय चेव माढर ।
 भद्रबाहु च पाइन्न, थूलभद्व च गोयमं ॥२६॥
 एलावज्जसगोत्त, वन्दामि महागिरि सुहर्त्थ च ।
 तत्तो कोसियगोत्त, बहुलस्स सरिव्वय वन्दे ॥२७॥
 हारियगुत्त साइ च, वन्दिमो हारिय च सामज्ज ।
 वन्दे कोसियगोत्त, सडिल्ल अज्जीयधर ॥२८॥
 तिसमुद्धायकित्ति, दीवसमुद्वे सु गहियपेयाल ।
 वन्दे अज्जसमुद्व, अक्खुभियसमुद्वगभीर ॥२९॥
 भणग करग भरग, पभावग णाण-दसणगुणाण ।
 वन्दामि अज्जमगु, सुयसागरपारग धीर ॥३०॥
 क्षेवन्दामि अज्जधम्म, तत्तो वन्दे य भद्रगुत्त च ।
 तत्तो य अज्जवइर तवनियमगुणेहि वइरसम ॥३१॥
 क्षेत्रचिच्छन्हनास्तु दीकाया न वत्तन्ते ।

क्षेत्रदामि अज्ञरक्षित्यखमणे. रक्षित्य चरित्सवत्से ।
 रयणकरडंगभूओ, अणुओगो रक्षित्त्वो लेहिं ॥३२॥
 नाणम्भि दंसणम्भि य, तवचिणए णिज्ञकालमुज्जुतं ।
 अज्जं नंदिलखमणं, सिरसा वन्दे पत्तमणं ॥३३॥

 वहुउ वायगदसो जसवंसो अज्ञनागहृथीण ।
 वागरणकरणभंगिय, कम्मपयडोपहाणाण ॥३४॥
 जच्चजणधाउ-समप्पहाणमुद्दिय-कुवलयनिहाण ।
 वहुउ वाययवसो - रेवइनक्खत्तनामाण ॥३५॥

 प्रयलपुरा णिक्खते, कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
 बंभदीवगसीहे, वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥३६॥
 जेसि इमो अणुओगो, पयरइ अज्ञावि अड्डभरहम्भि ।
 बहुनयरनिगयजसे, से वदे खदिलायरिए ॥३७॥

 तत्तो हिमवंतमहंतविक्कमे, धिइपरक्कममणंते ।
 सज्जायमणतधरे, हिमवते वदिमो सिरसा ॥३८॥
 कालियसुय-अणुओगस्स धारए, धारए य पुच्छाण ।
 हिमवतखमासमणे, वदे णागज्जुणायरिये ॥३९॥

 मिउमह्वसंपन्ने, अणुपुर्विं वायगत्तण पत्ते ।
 ओहसुय समायारे, नागज्जुणवायए वदे ॥४०॥

 *गोविवाण पि नमो, अणुओगविउलधारिणदाण ।
 णिच्च खंतिदयाण, पर्वणे दुल्लभिदाण ॥४१॥

 *तत्तो य भूयदिन्न निच्चं, तव संजमे अनिविवणं ।
 पंडियजण सामणं, वंदामि सजमविहणुं ॥४२॥

वरकणगतविध-चंपगविमउलवरकमल-गदभसरिवज्ञे ।

भवियजणहियथदइए, दयागुणविसारए धीरे ॥४३॥

अङ्गुभरहप्पहाणे, बहुबिहसज्जभायसुमुणिय पहाणे ।

अणुओगियवरवसभे, नाइलकुलवस-नंदिकरे ॥४४॥

जगभूयहियपगब्बे', वदेझहं भूयदिन्नमायरिए ।

भव-भयबुच्छैयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीण ॥४५॥

सुमुणियनिज्जानिच्चं, सुमुणिय सुत्तथधारयं बन्दे ।

सबभावुबभावण्या', तत्थ लोहिज्जणामाण ॥४६॥

अत्थमहत्यखाराणि, सुसमणबक्खाणकहणनिवाणि ।

पयईए महुरवाणि पयओ पणमामि दूसगाणि ॥४७॥

तवनियम-सच्च-संजम-विणयज्जुव-खंतिमहृव-रयाणि ।

सील गुणगद्वियाण, अणुओगज्जुगप्पहाणाण ॥४८॥

सुकुमालकोमलतले, तैसि पणमामि लक्खणपसत्थै ।

पाए पावयणीण.. पडिच्छयसएहि पणिवद्दै ॥४९॥

जे अन्ने भगवंते कालियसुय-आणुओगिए धीरे ।

ते पणमिठण सिरसा, नाणस्स परुवण घोच्छं ॥५०॥

सेल-घण', कुडग', चालणि', परिपूणग', हस', महिस' मेसेय' ।

मसग', जलूग', बिराली'', जाहग'', गो'', सेरी'', आभीरी'' ॥१॥

सा समासओ निविहा पन्नता, तं जहा—जाणिया, श्रजाणिया,
दुव्वियड्हा जाणिया जहा, गाहा ।

खोरमिव जहा हंसा, जे घुट्टन्ति इह गुरुगुणसमिढा ।

दोसे य विवज्जति त, जाणसु जाणिय परिस ॥२॥

१. सूपहियपगब्बे । २. वदेझहं लेहिच्च सबभावुबभावणा णिच्चं ।

अजाणिया जहा—

जा होइ पगइमहुरा, मियछावयसीह कुवकुडयभूआ।
रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥३॥

दुन्वियझु जहा—

न य णत्थइ निम्भाओ, न य पुच्छइ परिभवस्सदोसेण ।
वत्तिथव वायपुणो फुट्टइ गाभिल्लयवियझु ॥४॥
सूत्रं नाण पंचविह पण्णतं, तं जहा—शाभिणिबोहियनाणं,
सुयनाण, ओहिनाण, मणेपञ्चवनाण, केवलनाणं ॥सू० १॥

तं समासओ दुविहं पण्णत, तं जहा—पञ्चक्खं च परोक्ख
च ॥सू० २॥

से कि तं पञ्चक्खं ? पञ्चक्ख दुविहं पण्णतं, तं जहा—
इदियपञ्चक्ख, नोइन्दियपञ्चक्खं च ॥सू० ३॥

से कि तं इदियपञ्चक्खं ? इन्दियपञ्चक्खं पंचविहं पण्णतं
त जहा—सोइन्दियपञ्चक्खं, चर्किखदियपञ्चक्खं, धार्णिदियपञ्चक्खं,
जिडिदियपञ्चक्खं, फार्सिदियपञ्चक्खं, से तं इदियपञ्चक्खं
॥सू० ४॥

से कि तं नोइन्दियपञ्चक्खं ? नोइन्दियपञ्चक्खं तिविहं
पण्णतं त जहा—ओहिनाणपञ्चक्खं, मणपञ्चवनाणफञ्चक्खं,
केवलनाणञ्चक्खं ॥सू० ५॥

से कि तं ओहिनाणपञ्चक्ख ? ओहिनाणपञ्चक्खं दुविहं
पण्णत, त जहा—भवपञ्चइय च खाओवसमियं च ॥सू० ६॥

से कि तं भदपञ्चइय ? भवपञ्चइय दुण्ह, तं जहा—देवाण य
नेरइयाण य ॥सू० ७॥

से कि तं खओवसमियं ? खओवसमिय दुण्ह, त जहा—
मणूसाण य पंचेदियतिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खओवसमियं ?
ओवसमियं तथावरणिञ्जाणं कम्माण उदिष्णाण खएण, अण-

दिणाण उवसमेण ओहिनाणं समुपञ्चइ ॥सू० दा।

अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुपञ्चइ, त समासओ छविह पण्णत्त, त जहा—आणुगामिय^१, अणाणुगामिय^२, वङ्माणय^३, हीयमाणय^४, पडिवाइय^५, अप्पडिवाइय^६ ॥सू० दा।

से कि त आणुगामिय ओहिनाण ? आणुगामियं ओहिनाणं दुविह पण्णत्त, त जहा—अंतगय च मज्भगय च । से कि त अतगय ? अतगय तिविह पण्णत्त त जहा—पुरओ अतगय, मगगओ अतगय, पासओ अतगय । से कि त पुरओ अतगय ? पुरओ अतगय—से जहानामए केई पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा अलाय वा मर्णि वा पईवं वा जोइ वा पुरओ काउ पणुल्लेमाणे २ गच्छज्ञा, से तं पुरओ अतगयं । से कि तं मगगओ अतगयं ? मगगओ अतग—से जहानामए केई पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा अलाय वा मर्णि वा पईवं वा जोइ वा मगगओ काउ अणुकड्डेमाणे २ गच्छज्ञा, से तं मगगओ अंतगय । से कि त पासओ अतगय ? पासओ अतगय—से जहानामए केई पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा श्रालाय वा मर्णि वा पईवं वा जोइ वा पासओ काउ परिकड्डेमाणे २ गच्छज्ञा, से तं पासओ अंतगय, से त अतगय । से कि त मज्भगय ? मज्भगय से जहानामए केई पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा अलाय वा मर्णि वा पईवं वा जोइ वा मत्थए काउ समुच्चहमाणे २ गच्छज्ञा से त मज्भगयं । अंतगयस्स मज्भगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अतगएण ओहिनाणेण पुरओ चेव संखिज्ञाणि वा प्रसखेज्ञाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, मगगओ अतगएण ओहिनाणेणं भगगओ चेव संखिज्ञाणि वा असंखिज्ञाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । पासओ अंतगएण ओहिनाणेण पासओ चेव संखिज्ञाणि वा प्रसंखिज्ञाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । मज्भगएण ओहिनाणेणं सध्वओ समता संखिज्ञाणि वा असंखिज्ञाणि वा जोयणाइं जाणइ

पासइ । से तं श्राणुगामियं ओहिनाण ॥सू० १०॥

से कि त श्राणुगामिय ओहिनाण ? श्राणुगामियं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एगं महत जोइटाणं काउं त्रस्सेव जोइटाणस्स परिपेरतेहि परिपेरतेहि परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइटाण पासइ, अशत्थगए न पासइ, एवामेव श्राणुगामियं ओहिनाण जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अशत्थगए ण पासइ, से तं श्राणुगामियं ओहिनाण ॥सू० ११॥

से कि तं बड़ुमाणयं ओहिनाण ? बड़ुमाणयं ओहिनाण पसत्थेसु अजभवसापटाणेसु बड़ुमाणस्स बड़ुमाणचरित्तस्स विसुज्भमाणस्स विसुज्भमाणचरित्तस्स सध्वथो समता ओहो बड़ुइ, गाह—

जावइया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।

ओगाहणा जहज्जा ओहीखित जहन्नं तु ॥१॥

सध्वबहुआगणजीवा निरतरं जत्तिय भरिजंसु ।

खित्त सध्वदिसाग परमोहीखेत्त निहिटो ॥२॥

अंगुलमावलियाणं भागमसखिज्ज दोसु संखिज्जा ।

अंगुलमावलिअतो आवलिया अंगुलपुहुत्त ॥३॥

हत्थर्मि मुहुत्तंतो, दिवसन्तो गाउयम्मि बोद्धव्वो ।

जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पञ्चवीसाओ ॥४॥

भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुदीवम्मि साहिश्रो मासो ।

वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥५॥

सखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्धावि हुंति सखिज्जा ।

कालम्मि असखिज्जे दीवसमुद्धा उ भद्रयव्वा ॥६॥

काले चउण्हबुड्डी, कालो भइयब्बु खित्तबुड्डीए ।
बुड्डीए दव्वपञ्च, भइयब्बा खित्तकालो उ ॥७॥

सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयर हवइ खित्त ।
अगुलसेढीमित्ते, ओसपिणोओ असखिज्ञा ॥८॥

से तं बड्डमाणय ओहिनाण ॥सू० १२॥
से कि त होयमाणय ओहिनाण ?

हीयमाण ओहिनाण अप्पसत्थेर्हि अजभवसायद्वाणेर्हि बद्ध-
माणस्स बद्धमाणचरित्तस्स सकिलिस्समाणस्स सकिलिस्स-
माणचरित्तस्स सव्वश्चो समन्ता ओही परिहायइ से त हीयमाण
ओहिनाण ॥१३॥

से कि त पडिवाइओहिनाण ?

पडिवाइओहिनाण जहणेण अगुलस्स असखिज्ञयभाग
वा सखिज्ञयभाग वा वालग वा वालगपुहुत्त वा लिघख वा
लिक्खपुहुत्त वा, जूय वा जूयपुहुत्त वा, जव वा जवपुहुत्त वा,
अगुल वा अगुलपुहुत्त वा, पाय वा पायपुहुत्त वा, विहृत्थ वा
विहृत्थपुहुत्त वा, रयणि वा रयणिपुहुत्त वा, कुच्छ वा कुच्छ-
पुहुत्त वा, घणु वा घणुपुहुत्त वा, गाउश्र वा गाउयपुहुत्त वा
जोयण वा जोयणपुहुत्त वा, जोयणसय वा जोयणसयपुहुत्त वा,
जोयणसहस्स वा जोयणसहस्सपुहुत्त वा, जोयणलक्ख वा
जोयणलक्खपुहुत्त वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहुत्त वा
जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहुत्त, वा जोयणम-
खिज्ज वा जोयणसखिज्ञपुहुत्तं वा, जोयणअसत्तेज्जं वा जोय-
णअसखेज्जपुहुत्त वा उक्कोसेण लोग वा पासित्ताणं पडिवइज्ञा ।
से त पडिवाइओहिनाण ॥१४॥

से कि त श्रपडिवाइ-ओहिनाण ?

अपडिवाइ-ओहिनाणं-जेण अलोगस्स एगमवि आगा-
सपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइओहिनाण । से-
त अपडिवाइ ओहिनाण ॥१५॥

त समासश्चो चउच्चिहं पण्णत्त, तजहा-दव्वओ, खित्तओ,
कालओ, भावओ । तत्थ दव्वश्चो णं ओहिनाणी जहन्नेण
श्रणताइ रुचिदव्वाइ जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाइ अलोगे
लोगप्पमाण-मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ । कालओ णं ओहि-
नाणी जहन्नेण आवालियाए असखिज्जयभाग जाणइ पासइ,
उक्कोसेण असखिज्जाश्चो उस्सप्पिणीश्चो अवसप्पिणीश्चो अईय-
मणागय च कालं जाणइ पासइ । भावक्षो णं ओहिनाणी
जहन्नेण श्रणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण वि श्रणते भावे
जाणइ पासइ । सच्चभावाणमणंतभाग जाणइ पासइ ॥१६॥

ओही भवपच्चइश्चो गुणपच्चइश्चो य वण्णिश्चो दुविहो ।

तस्स य बहू विगापा दव्वे खित्ते य काले य ॥१७॥

नेरइयदेवतित्थकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुंति ।

पासति सच्चश्चो खलु सेसा देसेण पासति ॥१८॥

से त्त ओहिनाणपञ्चक्ष

से कि त मणपञ्चवनाणे ? मणपञ्चवणाणे णं भन्ते ! कि
मणुस्साण उपज्जइ अमणुस्साण ?

गोयमा ! मणुस्साण, नो अमणुस्साण ?

जइ मणुस्साण कि समुच्छिममणुस्साण, गढभवकंतिय-
मणुस्साण ?

गोयमा ! नो समुच्छिममणुस्साण उपज्जइ, गढभवकंतिय-
मणुस्साण !

जह गबभवककतियमणुस्साण कि कम्मभूमियगवभवककंतिय-
मणुस्साण, अकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण, अन्तरदोवग-
गबभवककतिय मणुस्साण ?

गोयमा ! कम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण, नो अकम्म-
भूमियगवभवककतियमणुस्साण, नो अन्तरदोवगगवभवककतिय-
मणुस्साण ।

जह कम्मभूमियगवभवककतिय मणुस्साण, कि सखिज्ज-
वासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण असखिज्जवासाउय-
कम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण ?

गोयमा ! सखिज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणु-
स्साण, नो असखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण ।

जह संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण कि
पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण, अप-
ज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण ?

गोयमा ! पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवक
कतियमणुस्साण, नो अपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभ-
वककंतियमणुस्साण ।

जह पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतिय-
मणुस्साण, कि सम्मद्विपज्जत्तगसेज्जवासाउयकम्म-
भूमियगवभवककतियमणुस्साण, मिच्छद्विपज्जत्तगसखेज्ज-
वासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण, सम्ममिच्छद्विप-
पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगवभवककतियमणुस्साण ?

गोयमा ! सम्मद्विपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गवभवककतियमणुस्साण, नो मिच्छद्विपज्जत्तगसेज्जवासा-

उयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुस्साणं, नो सम्ममिछ्छदिहि-
पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं ।

जह सम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भ-
वककंतियमणुसाण कि सज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासा-
उयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं असज्यसम्महिद्वि-
पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं, संज्या-
सज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियम-
णुसाण ?

गोयमा ! संज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्म-
भूमियगद्भवककंतियमणुसाणं, नो असंज्यसम्महिद्विपज्जत्त-
गसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं, नो संज्या-
संज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियम-
णुसाणं ।

जह सज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गद्भवककंतियमणुसाणं, कि पमत्तसज्यसम्महिद्विपज्जत्तग-
संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं, अप्पमत्तस-
ज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणु -
साण ?

गोयमा ! अप्पमत्त-संज्य-सम्महिद्विप-ज्जत्तग-संखेज्जवासा-
उय-कम्मभूमिय-गद्भवककंतियमणुसाणं, नो पमत्तसंज्यसम्म-
हिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं ।

जह अप्पमत्तसज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्म-
भूमियगद्भवककंतियमणुसाणं, कि इड्डीपत्तअप्पमत्तसंज्यस-
म्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगद्भवककंतियमणुसाणं,
अणिड्डोपत्तअप्पमत्तसंज्यसम्महिद्विपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमि-

यगबभवक्षं तियमणुसाणं ?

गोयमा ! इहुपत्त-श्रप्पमस्त-सजय-सम्मद्विहु-पञ्चतग-सखेज्जवासा-
उय-कम्मभूमिय-गदभवक्षं तियमसाणुण, नो शणिहुपत्त-श्रप्पमस्त-सजय-
सम्मद्विहु-पञ्चतग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गदभवक्षं तियमणुस्सा-
णं मणपज्जवनाणं समुपञ्चइ ॥सू० १७॥

तं च दुविह उपज्जइ, तं जहा—उज्जुमर्द्द य विउलमर्द्द य ।
त समासओ चउच्चिवह पञ्चतं, त जहा—दव्वओ, खितओ, कालओ,
भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं उज्जुमर्द्द अणते अणतपएसिए खंधे जाणइ,
पासइ, ते चेव विउलमर्द्द अद्वभहियतराए, विउलतराए, विसुद्धतराए,
वितिमिरतराए जाणइ, पासइ ।

खितओ णं उज्जुमर्द्द जहन्नेण अँगुलस्स श्रसखेज्जयभागं
उक्कोसेण अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहे-
द्विल्ले खुड्हगप्परे, उड्ड जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं
जाव अंतोमणुस्सखित्ते अहुआइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पञ्चरससु
कम्मभूमिसु, तीसाए अकम्मभूमिसु, छप्पन्नाए अन्तरदीवगेसु
सन्निपंचेदियाणं पञ्चतयाण मणोगए भावे जाणइ, पासइ ।
त चेव विउलमर्द्द अहुआइज्जेहिमंगुलेहि अद्वभहियतर, विउलतरं
विसुद्धतर, वितिमिरतराग खेत्तं जाणइ, पासइ ।

कालओ णं उज्जुमर्द्द जहन्नेण पलिओवमस्स श्रसखिज्जय-
भागं, उक्कोसेष्विपि पलिओवमस्स श्रसखिज्जयभागं अतीयमणा-
गय वा काल जाणइ, पासइ । त चेव विउलमर्द्द अद्वभहियतरागं,
विउलतराग, विसुद्धतरागं, वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ।

भावओ णं उज्जुमर्द्द अणते भावे जाणइ, पासइ, सद्य-

भावाणं श्रणतभाग जाणइ, पासइ । तं चेव विउलमई अब्भहिय-
तराग, विउलतरागं, विसुद्धतराग, वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ ।

मणपञ्जवनाणं पुण, जणमणपरिच्छियत्थ-पागडणं ।

माणुसखित्तनिबद्ध, गुणपञ्चइय चरित्तवओ ॥ ११ ॥

से त्तं मणपञ्जवनाणं ॥ सू० १८॥

से कि त केवलनाण ? केवलनाण दुविहं पन्नतं, तं जहा—
भवत्थकेवलनाणं च, सिद्धकेवलनाणं च । से कि तं भवत्थकेवलनाण ?
भवत्थकेवलनाण दुविहं पणतं, तं जहा—सजोगि-भवत्थकेवलनाणं
च, अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च ।

से कि त सजोगि-भवत्थकेवलनाण ?

सजोगि-भवत्थकेवलनाण दुविहं पणतं, त जहा—पढमसमय-
सजोगि-भवत्थकेवलनाण च, अपढमसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाण
च । अहवा चरमसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाण च, अचरमसमय-
सजोगि-भवत्थकेवलनाणं च । से त्तं सजोगि-भवत्थकेवलनाण ।

से कि तं अजोगि-भवत्थकेवलनाण ?

अजोगि-भवत्थ-केवलनाण दुविहं पन्नतं, त जहा—पढमसमय-
अजोगि-भवत्थ-केवलनाणं च, अपढमसमय-अजोगि-भवत्थ-केवलनाण
च । अहवा चरमस-मयअजोगि-भवत्थकेवलनाणं च, अचरमसमय-
अजोगि-भवत्थकेवलनाण च । से त्तं अजोगि-भवत्थ-केवलनाण । से त्तं-
भवत्थकेवलनाण ॥ सू० १६॥

से कि तं सिद्धकेवलनाण ? सिद्धकेवलनाण दुविहं पणतं,
तं जहा—श्रणतरसिद्धकेवलनाण च, परंपरसिद्धकेवलनाणं च
॥ सू० २०॥

से कि तं श्रणतरसिद्धकेवलनाण ? श्रणतरसिद्धकेवलनाणं

पन्नरसविहं पण्णतं, तं जहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयंबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्ध-सिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा ७, इतिर्लिंगसिद्धा ८, पुरिसर्लिंगसिद्धा ९, नपुंसर्लिंगसिद्धा १०, सर्लिंगसिद्धा ११, अन्नर्लिंगसिद्धा १२, गिहि-लिंगसिद्धा १३, एगसिद्धा १४, आणेगसिद्धा १५, से तं आणतरसिद्ध-केवलनाणं ॥सू० २१॥

से कि तं परंपरसिद्धकेवलनाणं ? परंपरसिद्धकेवलनाण श्रणेगविह पण्णतं, तं जहा—अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयसिद्धा, सखिज्ञसमय-सिद्धा, असविज्ञसमयसिद्धा, अणंतसमयसिद्धा, से त परपरसिद्ध-केवलनाणं ।

तं समासओ चउव्विह पण्णत, तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ ण केवलनाणी सद्वदव्वाइ जाणइ, पासइ । खित्तओ ण केवलनाणी सद्व खित्त जाणइ, पासइ । कालओ ण केवलनाणी सद्व कालं जाणइ, पासइ । भावओ ण केवलनाणी सद्वे भावे जाणइ, पासइ ।

अहु सद्व दव्वपरिणामभाव-विण्णत्तिकारणमणत ।

सासयमप्पडिवाई, एगविहं केवलं नाण ॥१२॥ सू० २२ ॥

केवलनाणेणज्ञ्ये, नाउ जे तत्थ पण्णवणजोगे ।

ते भासइ तित्थयरो, वईजोगमुयं हवइ सेस ॥ १३ ॥

से त केवलनाणं । से तं नोइंदियपञ्चक्षय । से त पञ्चक्षयनाण ॥ सू० ॥ २३ ॥

से कि त परोक्षनाणं ? परोक्षनाणं दुविह पण्णतं, तं जहा—आभिणवोहियनाणपरोक्ष च, सुयनाणपरोक्ष च । नत्य आभिण-बोहियनाण तत्य सुयनाण, जत्य सुयनाणं तत्य आभिणवोहियनाण

दोऽवि एयाइं अणमणमणुगयाइं । तहवि पुण इत्य आयरिया नाणतं
पणवयंति—अभिनिवुजभइति आभिणबोहियनाणं, सुणेइति सुयं;
मइपुव्वं जेष सुय, न मई सुयपुव्विया ॥ सू० २४ ॥

अविसेसिया मई, मइनाणं च मइअन्नाणं च । विसेसिया
सम्भद्धिट्टिस मई मइनाणं, मिच्छद्धिट्टिस मई मइअणाणं । अवि-
सेसिय सुयं, सुयनाण च सुयअन्नाणं च । विसेसियं सुयं, सम्भद्धिट्टिस
सुयं सुयनाणं, मिच्छद्धिट्टिस सुय सुयअन्नाणं ॥ सू० २५ ॥

से कि तं आभिणबोहियनाणं ? आभिणबोहियनाणं दुविहं
पणतं, तं जहा—सुयनिस्सियं च, असुनिस्सियं च । से कि तं
असुयनिस्सियं ? असुयनिस्सियं चउव्विहं पणतं, त जहा—
उप्पत्तिया १, वेणइया २, कम्मिया ३, परिणामिया ४ ।

बुद्धी च चउव्विहा बुत्ता, पचमा नोवलब्बइ ॥ १४ ॥ सू० २६ ॥

पुञ्चमद्विमस्सुयमवेइय-तक्खणविसुद्धगहियत्था ।

अब्बाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ १५ ॥

भरह-सिल-मिठ-कुक्कुड-तिल-वालुय-हत्थी-अगड-वणसंडे ।

पायस-श्रड्या-पत्ते-खाडहिला-पंच पिअरो य ॥ १६ ॥

भरहसिल-पणिय-रुवखे-खुड्ग-पड-सरड-काय-उज्जारे ।

गयघयण-गोल-खभे-खुड्ग-मग्गि-त्थि-पइ-पुत्ते ॥ १७ ॥

महुसित्थ-मुहि-अंके-नाणए-भिक्खु-चेडगनिहाणे ।

सिक्खा य अत्यसत्थे-इच्छा^१ य, गहं-सयसहस्से ॥ १८ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।

उभओलोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १९ ॥

निमित्ते अत्यसत्थे य, लेहे गणिए य कूव-अस्से य ।

गढ्म-लक्खण-गठी, अगए-रहिए य गणिया य ॥ २० ॥

सीपा साडी दीहं च, तणं श्रवसव्वयं च कुंचस्स ।
निव्वोदए य गोणे, घोडगपडण च रुखाश्रो ॥२१॥

उदश्रोगद्विसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥२२॥

हेरण्णिए-करिसए, कोलिय-डोवे य, मुत्ति, घय-पवए ।
तुन्नाए - वड्डी य - पूयइ - घड - चित्तकारे य ॥२३॥

श्रणुमाणहेउद्वित्तसाहिया, वयविवागपरिणामा ।
हियनिस्सेयस-फलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥२४॥

अभए-सिट्टि-कुमारे, देवी-उदिओदए हवइ राया ।
साहू य नदिसेणे, घणदत्ते-सावग-श्रमच्छे ॥२५॥

खमए-श्रमच्छपुत्ते, चाणकके चेव थूलभद्दे य ।
नासिकसु दरिनदे, वयरे-परिणामबुद्धीए ॥२६॥

चलणाहण-श्रामडे-मणी य सप्पे य, खण्णि-शूर्भिदे ।
परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥२७॥

से तं अस्युनिस्तिय ।

से कि तं सुयनिस्तिय ?

सुयनिस्तिय चउच्चिह पण्णत, तंजहा—उगगहे, ईहा, श्रवाश्रो,
धारणा ॥सू० २७॥

से कि तं उगगहे ?

उगगहे दुविहे पण्णते, तं जहा—श्रयुगगहे य, वजणुगगहे य
सू० ॥ २८ ॥

से कि तं वजणुगगहे

वंजणुगगहे चउच्चिह पण्णते, तं जहा—सोइदियवजणुगगहे,

धार्णिदिवंजणुग्नहे, जिंभदिवंजणुग्नहे, फार्सिदिवंजणुग्नहे ॥सू० २६॥

से कि तं अत्थुग्नहे ?

अत्थुग्नहे छव्वहे पणत्ते, तं जहा—सोइंदियअत्थुग्नहे, चक्किदियअत्थुग्नहे, धार्णिदियअत्थुग्नहे, जिंभदियअत्थुग्नहे, फार्सिदियअत्थुग्नहे, नोइंदियअत्थुग्नहे ॥सू० ३०॥

तस्य एमे एगट्टिया नाणाघोसा, नाणावंजणा पंच नामधिज्ञा भवति. तं जहा—ओरेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा । से त्त उग्नहे ॥सू० ३१॥

से कि त ईहा ? ईहा छव्वहा पणत्ता, तं जहा—सोइंदियईहा, चक्किदियईहा, धार्णिदियईहा, जिंभदियईहा, फार्सिदियईहा, नोइंदियईहा । तीसे एमे एगट्टिया नाणाघोसा, नाणावंजणा पंच नामधिज्ञा भवति, तं जहा—आभोगणया, मगणया, गवेसणया, चिता, वीमसा । से त्त ईहा ॥सू० ३२॥

से कि तं अवाए ? अवाए छव्वहे पणत्ते, तं जहा—सोइंदियअवाए, चक्किदियअवाए, धार्णिदियअवाए, जिंभदियअवाए, फार्सिदियअवाए, नोइंदियअवाए । तस्य एमे एगट्टिया नाणाघोसा, नाणावंजणा पंच नामधिज्ञा भवन्ति, तं जहा—आउदृणया, पञ्चाउदृणया. अवाए, बुद्धी, विष्णाणे, से त्त अवाए ॥सू० ३३॥

से कि तं धारणा ?

धारणा छव्वहा पणत्ता, तं जहा—सोइदियधारणा, चक्किदियधारणा, धार्णिदियधारणा, जिंभदियधारणा, फार्सिदियधारणा, नोइंदियधारणा । तीसे एमे एगट्टिया नाणाघोसा,

नाणावजणा पच नामधिज्ञा भवति, त जहा—धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्टा, कोट्टे । से त धारणा ॥ सू० ३४॥

उगगहे इङ्क्षसमइए, अतोमुहुत्तिया ईहा, अतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल ॥सू० ३५॥

एव अट्टावीसइविहस्स आभिणिवोहियनाणस्स वजणु-
महस्स पर्लवण करिस्सामि पडिबोहगदिट्टुतेण, मल्लगदिट्टुतेण य ।

से किं तं पडिबोहगदिट्टुतेण ?

पडिबोहगदिट्टुतेण—से जहानामए केइ पुरिसे कचि पुरिसं
सुतं पडिबोहिज्ञा, अभुगा । अभुगत्ति ॥ तथ्य चोयगे पञ्चवय एवं
वयासी—कि एगसमयपविट्टा पुगला गहणमागच्छति ? दुस-
मयपविट्टा पुगला गहणमागच्छति ? जाव दससमयपविट्टा
पुगला गहणमागच्छति ?, सखिज्ञसमयपविट्टा पुगला
गहणमागच्छति ?, श्रसखिज्ञसमयपविट्टा पुगला गहणमा-
गच्छति ?, एव वयत चोयगं पणवए एव वयासी—नो एग-
समयपविट्टा पुगला गहणमागच्छति, नो दुसमयपविट्टा पुगला
गहणमागच्छति, जाव नो दससमयपविट्टा पुगला गहणमा-
गच्छति, नो सखिज्ञसमयपविट्टा पुगला गहणमागच्छति;
असखिज्ञसमयपविट्टा पुगला गहणमागच्छति । से तं पडिबोह-
गदिट्टुतेण ।

से कि त मल्लगदिट्टुतेण ?

मल्लगदिट्टुतेण—से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ अब मल्लग
गहाय तत्येग उदगविदू पक्खिविज्ञा, से नट्टे, अण्डेऽवि पक्खिते,
सेऽवि नट्टे, एवं पक्खिप्पमाणेसु-पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगविदू
जे ण त मल्लग रावेहिइति, होही से उदगविन्दू जे ण तसि
मल्लगसि ठाहिति, होही से उदगविन्दू जे ण त मल्लगं

भरिहिति, होही से उदगर्बिदू जेण त मल्लग पवाहेहिति । एवामेव पक्षिवप्पमाणेहिं-पक्षिवप्पमाणेहिं-अणतेहिं पुगगलेहि जाहे त वंजणं पूरियं होइ; ताहे हुंति करेइ, नो चेव ण जाणइ के वि एस सद्गाइ ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्गाइ ? तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ ण धारणं पविसइ, तओ ण धारेइ सखिज्जं वा काल, असखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सहं सुणिज्ञा, तेणं सद्गोत्ति उगगहिए, नो चेव ण जाणइ, के वेस सद्गाइ ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्गे, तओ णं अवायं पविसइ, तओ णं धारेइ, सखेज्जं वा कालं, असखेज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रुवं पासिज्ञा, तेणं रुवत्ति उगगहिए, नो चेव णं जाणइ, के वेस रुवत्ति ? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रुवे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ, सखेज्जं वा कालं, असखेज्जं वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं गंध अगधाइज्ञा, तेणं गंधत्ति उगगहिए, नो चेव ण जाणइ, के वेस गधेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ, सखेज्जं वा कालं, असखेज्जं वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्ञा, तेणं रसोत्ति उगगहिए, नो चेव णं जाणइ, के वेस रसेत्ति ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ, अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ, सखिज्जं वा काल, असखिज्जं वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त फास पडिसवेइझा,
तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ, के वेस फासओत्ति ?
तश्चो ईह पविसइ, तश्चो जाणइ श्रमुगे एस फासे, तश्चो श्रवाय
पविसइ, तश्चो से उवगय हवइ, तश्चो धारण पविसइ, तश्चो
ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त फासं पडिसवेइझा,
तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ, के वेस फासओत्ति ?
तश्चो ईह पविसइ, तश्चो जाणइ, श्रमुगे एस फासे, तश्चो श्रवाय
पविसइ, तश्चो से उवगय हवइ, तश्चो धारण पविसइ, तश्चो
ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सुमिणं पासिझा, तेणं
सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ, के वेस सुमिणेत्ति ?
तश्चो ईह पविसइ, तश्चो जाणइ श्रमुगे एस सुमिणे, तश्चो
श्रवाय पविसइ, तश्चो से उवगय हवइ, तश्चो धारण पविसइ,
तश्चो ण धारेइ सखेज्ज का काल, असखेज्ज वा काल । से त्त
मल्लगद्बुतेण ॥सू० ३६॥

तं समासश्चो चउच्चिवह पण्णत्त, त जहा—दव्वश्चो, खित्तश्चो,
कालश्चो, भावश्चो । तत्य दव्वश्चो णं आभिणिबोहियनाणी
आएसेणं सच्चाइं दव्वाइ जाणइ, न पासइ । खेत्तश्चो ण आभि-
णिबोहियनाणी आएसेण सच्चं खेत्त जाणइ न पासइ । कालश्चो
णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सच्च राल जाणइ, न
पासइ । भावश्चो ण आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सच्चे भावे
जाणइ, न पासइ ।

उग्गह ईहाऽवाश्चो य, धारणा एव हृति चत्तारि ।

आभिणिबोहियनाणस्स, भेयवन्त् समासेण ॥ २८॥

अत्याण^१ उग्गहणम्मि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
ववसायम्मि अवाओ, घरणं पुण धारणं बिन्ति ॥२६॥

उग्गह इकं समय, ईहा-वाया मुहूत्तमद्धं तु ।
कालमसख संखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥३०॥

पुद्धं सुणेइ सह, रुवं पुण पासइ अपुद्धं तु ।
गधं रसं च फास च, बद्धपुद्धं वियागरे ॥३१॥

भासा समसेढीओ, सहं जं सुणइ मीसिय सुणइ ।
बीसेढी पुण सहं, सुणेइ नियमा पराधाए ॥३२॥

ईहा अपोह बीमसा, भगणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिबोहिय ॥३३॥

से त आभिणिबोहियनाणपरोक्ख । से तं मइनाण ॥सू० ३७॥
से किं त सुयनाणपरोक्खं ?

सुयनाणपरोक्ख चोहसविहं पण्णतं तं जहा—अक्खर-
सुयं १, अणक्खरसुयं २, सण्णसुयं ३, असण्णसुयं ४, सम्मसुय
५, मिच्छसुय ६, साइयं ७, अणाइयं ८, सपञ्जवसियं ९, अपञ्ज-
वसिय १०, गमिय ११, अगमिय १२, अगपविद्धं १३, अणगपविद्ध
१४ ॥सू० ३८॥

से किं त अक्खरसुयं ?

अक्खरसुय तिविहं पण्णत, तं जहा—सन्नक्खर, वंजणक्खरं
लद्धि-अक्खर !

से किं त सन्नक्खर ?

१ अत्याणं उग्गहण, च उग्गहं तह वियालणं ईह ।
ववसाय च अवाय घरणं पुण धारणं, बिन्ति ॥१॥

सञ्चक्खर अक्खरस्स संठाणागिई । से तं सन्नक्खरं ।

से किं त वजणक्खर ?

वजणक्खर अक्खरस्स वंजणाभिलावो । से त वजणक्खर ।

से किं त लद्धिअक्खर ?

लद्धि-अक्खर अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खर समुप्पज्जह,
तं जहा—सोइदियलद्धि-अक्खर, चक्किखदिय-लद्धिअक्खर, धाणि-
दियलद्धि-अक्खर, रसणिदियलद्धि-अक्खर, फासिदियलद्धि-
अक्खरं, नोइदियलद्धि-अक्खरं । से त लद्धिअक्खर । से त अक्ख-
रसुयं ॥

से किं तं अणक्खरसुय ?

अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्त, तजहा—

ऊससिय नीससिय, निच्छूढ खासियं च छोय च ।

निर्सिसधियमणुसार, अणक्खरं छेलियाईय ॥३४॥

से तं अणक्खरसुयं ॥सू० ३६॥

से किं त सणिसुय ?

सणिसुयं तिविहं पण्णत्त, तं जहा—कालिओवएसेण, हेऊ-
चएसेण, दिव्विओवएसेण ।

से किं तं कालिओवएसेण ?

कालिओवएसेण—जस्स णं अत्तिय ईहा, अबोहो, मगणा, गवे-
सणा, चिन्ता, वीमसा, से ण सणीति लटभइ । जस्स ण नत्तिय
ईहा, अबोहो, मगणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमसा, से ण असणीति
लटभइ । से तं कालिओवएसेण ।

से कि त हेऊवएसेण ?

हेऊवएसेण जस्स णं अतिथ अभिसधारणपुच्चिया करणसत्ती, से णं सण्णोर्ति लब्भइ । जस्स णं नतिथ अभिसंधारणपुच्चिया करण-सत्ती, से णं असण्णोर्ति लब्भइ । से त्तं हेऊवएसेण ।

से कि त दिट्ठिवाश्रोवएसेण ?

दिट्ठिवाश्रोवएसेण — सण्णिसुयस्स खओवसमेण सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेण असण्णी लब्भइ । से त्त दिट्ठिवाश्रोवए-सेण । से त्त सण्णिसुय । से त्तं असण्णिसुय ॥सू० ४० ॥

से कि त सम्मसुय ?

सम्मसुय ज इम श्ररहंतेर्हि, भगवंतेर्हि, उप्पणनाणदंसणधरेर्हि, तेलुक्कनिरक्खिय-महिय-पूड़ेर्हि, तीय-पदुप्पण-मणागय-जाणर्हि, सध्वण्णूर्हि सध्वदरिसीर्हि पणीय दुवालसगं गणिपिडग, तं जहा—आयारो १, सूयगडो२, ठाणं ३, समवाश्रो ४, विवाहपण्णत्ती ५, नाया-धम्मकहाश्रो ६, उवासगदसाश्रो ७, श्रतगडदसाश्रो ८, अणुत्तरोववाह-इयदसाश्रो ९, पण्हावागरणाहं १०, विवागसुय ११, दिट्ठिवाश्रो १२ । इच्छेयं दुवालसग गणिपिडगं चोद्दसपुच्चिवस्स सम्मसुयं, अभिणदस-पुच्चिवस्स सम्मसुयं, तेण परं भिण्णेसु भयणा । से त्त सम्मसुय ॥सू० ४१ ॥

से कि त मिच्छासुय ?

मिच्छासुयं ज इमं अण्णाणिएर्हि मिच्छादिट्ठिएर्हि, सच्छदबुद्धि-मझविगच्छिय, तं जहा—भारह, रामायणं, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लयं, सगडभहियाश्रो, घोडमुहं, कप्पासिय नागसुहुमं, कणगसज्जरी, वइसेसियं, बुद्धवयणं, नेरासियं, काविलियं, लोगायय, सट्टितंतं, माढर, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली, पुस्सदेवय, लेहं, गणिय, सउणरुयं, नाडयाइ । अहवा—बावत्तरिकलाश्रो, चत्तारि य

वेया संगोवंगा । एयाइ मिच्छदिद्विस्स मिच्छतपरिगहियाइ
मिच्छासुय, एयाइं चेव सम्मदिद्विस्स सम्मतपरिगहियाइ सम्मसुय,
अहवा—मिच्छदिद्विस्स वि एयाइं चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मतहे-
उत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिद्विया तेर्हि चेव समर्हिं चोइया
समाणा केइ सपखदिद्वीश्रो चयति । से त मिच्छासुय ॥ सू० ४२ ॥

से किं त साइ-सपज्जवसिय, अणाइय-अपज्जवसिय च ?

इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडग बुच्छत्तिनयहुयाए साइय-
सपज्जवसियं, अबुच्छत्तिनयहुयाए अणाइय-अपज्जवसिय ।
तं समासश्रो चउच्चिह पण्णत, त जहा—दच्चश्रो, खितश्रो,
कालश्रो, भावश्रो । तत्थ दच्चश्रो णं सम्मसुय एग पुरिसं
पडुच्च साइय-सपज्जवसिप, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइय-
अपज्जवसियं । खेतश्रो ण पच भरहाइ, पचेरवयाइं पडुच्च
साइयं, पचमहाविदेहाइ पडुच्च अणाइय-अपज्जवसिय । कालश्रो
ण उस्सप्पिण ओस्प्पिण च पडुच्च साइय-सपज्जवसियं, नो-
उस्सप्पिण नोओस्प्पिण च पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय ।
भावश्रो णं जे जया जिणपन्नता भावा आघविज्जति, पणवि-
ज्जति, पर्लविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, ते
तया भावे पडुच्च साइय सपज्जवसियं । खाश्रोवसमियं पुण भावं
पडुच्च अणाइयं अपज्जवसिय । अहवा भवसिद्धियस्स सुय
साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइय थप-
ज्जवसिय च, सब्बागासपएसगं सब्बागासपएसर्हि अणतगुणिय-
पज्जववखर निष्फज्जइ, सब्बजीवार्णपि य ण श्रवखरस्स अणत-
भागो निच्छुग्धाडियो, जइ पुण सोऽर्वि आवरिज्जा तेण जीवो
अजीवतं पाविज्जा,—“सुट्ठुचि मेहसमुदए, होइ पभा चद-

सूराणा” । से तं साइयं सपञ्ज्वसिय । से त्त अणाइयं अपञ्ज्व-
सियं ॥सू० ४३॥

से किं तं गमिय ?

गमियं दिव्यिवाश्रो ।

से किं तं अगमियं ?

अगमियं कालियं सुयं । से तं गमियं, से त्त अगमियं ॥

अहवा तं समासओ दुविह पण्णत्तं, त जहा—अंगपविदुं
अंगबाहिरं च । से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं,
त जहा—आवस्सयं च, आवस्सयवइरित्तं च । से किं तं आव-
स्सयं ? आवस्सयं छविह पण्णत्तं, तंजहा—सामाइयं, चउवी-
सत्थओ, वंदणय, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाण, से तं
आवस्सय ।

से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं,
तंजहा—कालियं च, उङ्कालिय च ॥

से किं तं उङ्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेया-
लियं, कपिप्याकपिप्य, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुय, उववाइयं, राय-
पसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं,
नंदी, अणुश्रोगदाराइं, दर्विदत्थओ, तदुलवेयालियं, चन्दाविज्ञभयं,
सूरपण्णत्तो, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छग्गो,
गणिविज्ञा, भाणविभत्तो, मरणविभत्तो, आयविसोही, वीयरागसुयं,
सलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाण, महा-
पच्चक्खाणं, एवमाइ; से तं उक्कालियं ।

से किं तं कालिय ?

कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्ञभयणाइं ।

दसाश्रो, कर्ष्णो, ववहारो, निसीह, महानिसीह, इसिभासियाइ
जम्बूदीवपञ्चती, दीवसागरपञ्चती, चन्दपञ्चती, खुद्धिया विमाण-
पविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती, अगचूलिया, वगचूलिया,
विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणो-
ववाए, वेसमणोववाए, वेलधरोववाए, देविदोववाए, उद्धाणसुए,
समुद्धाणसुए, नागपरियावणियाश्रो, निरयावलियाश्रो कप्पियाश्रो
कप्पवर्डिसियाश्रो, पुष्पक्षूलियाश्रो, वण्हीदसाश्रो,
(आसीविसभावणाण, दिट्ठिविसभावणाण, सुमिणभावणाण, महा-
सुमिणभावणाण, तेयग्निसंगगाण,) एवमाइयाइ चउरासीइ पइन्न-
गसहस्साइ भगवश्रो अरहश्रो उसहस्सामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा
सखिज्ञाइ पइन्नगसहस्साइ मज्जिभमगाण जिणवराण, चोहस पइन्नग-
सहस्साइ भगवश्रो वद्धमाणसामिस्स । अहवा जस्स जत्तिया सीसा
उपत्तियाए, वेणइयाए, कम्मयाए, परिणामियाए चउविहाए
बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइ पइण्णगसहस्साइ, पत्तेयबुद्धावि
तत्तिया चेव । से त्त कालिय । से त्त आवस्सयवहरित्त । से त्त श्रण-
गपविद्धु ॥सू०४४॥

से किं त अगपविद्धु ?

अगपविद्धुं दुवालसविह पण्णत्त, त जहा—आयारो १, सूय-
गडो २, ठाण ३, समवाश्रो ४, विवाहपञ्चती ५, नायाधम्मकहाश्रो ६,
उवासगदसाश्रो ७, अतगडदसाश्रो ८, अणुत्तरोववाइयदसाश्रो ९,
पण्हावागरणाइ १०, विवागसुयं ११, दिट्ठिवाश्रो १२ ॥सू० ४५॥

से किं तं आयारे ? आयारे ण समणाण निगायाण आया-
रंगोयरविणयवेह्यसिक्खाभासाश्रभासाचरणकरणजायामायावित्तीश्रो
आधविज्जति । से समासश्रो पंचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणायारे
दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे । आयारे णं परित्ता

वायणा, संखेज्ञा अणुओगदारा, सखिज्ञा वेढा, संखिज्ञा सिलोगा, सखिज्ञाश्रो निज्जुत्तीश्रो, (सखिज्ञाश्रो सगहणीश्रो) सखिज्ञाश्रो पडिवत्तीश्रो पडिवत्तीश्रो । से ण अंगद्याए पढसे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणुवीस अजभयणा, पंचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीइ समुद्देसण-काला, अद्वारस पयसहस्साइ पयगेण, संखिज्ञा अक्खरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनि-बद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आधविज्जंति, पञ्चविज्जति, परुविज्जंति, दसिज्जंति, निंदंसिज्जति, उवदंसिज्जंति । से एव आया, एव नाया, एवं विणाया, एव चरणकरणपरुवणा आध-विज्ञइ । से तं आयारे १ ॥ सू० ४६ ॥

से किं त सूयगडे ? सूयगडे ण लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जई, सूयगडे ण असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईण, सत्तहीए अणणणीयवाईण, बत्तीसाए वेणईयवाईण, तिणह तेसहाण पासंडिय-सयाण वूह किज्ञा ससंमए ठाविज्ञइ । सूयगडे ण परित्ता वायणा, संखिज्ञा अणुओगदारा, सखेज्ञा वेढा, सखेज्ञा सिलोग, संखिज्ञाश्रो निज्जुज्जीश्रो, (सखिज्ञाश्रो सगहणीश्रो) सखिज्ञाश्रो पडिवत्तीश्रो, से ण अगद्याए बिइए अगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अजभयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयगेण । संखिज्ञा । अक्खरा, अणता गमा, अणंता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनि-बद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आधविज्जति पणविज्ञंति, परुविज्ञ ति, दंसिज्जति, निंदंसिज्जंति, उवदंसिज्जति । से एव आया, एव नाया, एवं विणाया, एवं चरणकरणपरुवणा आधविज्ञइ, से तं सूयगडे २ ॥ सू० ४७ ॥

से कि त ठाणे ? ठाणे ण जीवा ठाविज्जति, अजीवा ठाविज्जति, जीवाजीवा ठाविज्जति, ससमए ठाविज्ञइ, परसमए ठाविज्ञइ, ससमयपरसमए ठाविज्ञइ, लोए ठाविज्जइ, श्वलोए ठाविज्जइ । लोयालोए ठाविज्जइ । ठाणे णं टका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आधविज्जति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए दुड़ीए दसदुआणगविवड़ियाण भावाणं परूवणा आधविज्ञइ । ठाणे ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगट्टयाए तइए अगे, एगे सुयक्खघे, दस अजभयणा एगचीस उद्देसणकाला, एगचीस समुद्देसणकाला, वावत्तरि पयसहस्ता पयगगेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिरणपन्नता भावा आधविज्जति, पन्नविज्ञति, परूविज्ञति दसिज्ञति, निदसिज्ञति, उवदसिज्जति । से एव आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आधविज्ञइ । से त ठाणे ३ ॥ स० ४८ ॥

से कि त समवाए ? समवाए ण जीवा समासिज्ञति, अजीवा समासिज्जति, जीवाजीवा समासिज्जति, ससमए समासिज्ञइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्ञइ, लोए समासिज्ञइ, श्वलोए समासिज्ञइ, लोयालोए समासिज्ञइ । समवाए ण एगाइयाण एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड़ियाण भावाणं परूवणा आधविज्ञइ, दुवालसविहस्त य गणिपिडगस्स पल्लवग्गो समासिज्ञइ । समवायस्त ण परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा मिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ संगहणीओ । संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से ण अंगट्टयाए चउत्थे अगे, एगे सुयक्खधे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले एगे चोयाले सयसहस्रे पयगोण । सखेज्ञा अक्खरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिण-पणता भावा आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति ।

से एव आया, एव नाया, एवं विणाया, एव चरण-करणपरुवणा आघविज्जइ । से त समवाए ४ ॥ सू० ४६ ॥

से कि त विवाहे ? विवाहे ण जीवा विआहिज्जति, अजीवा विआहिज्जति, जीवाजीवा विआहिज्जति, ससमए विआहिज्जति, परसमए विआहिज्जति, ससमयपरसमए विआहिज्जति, लोए विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोयालोए विआहिज्जति । विवाहसह-ण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सलोगा सखिज्जाओ निजुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ सखिज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगट्टयाए पचमे अगे, एगे सुय-क्खधे, एगे साइरेगे अजभयणसए, दस उद्देसगसहस्राइ, दस समुद्देसगसहस्राइ, छत्तीस वागरणसहस्राइ, दो लक्खा अहुआसीइं पयसह-ससाइ पयगोण, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपणता भावा आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति । से एव आया, एवं विणाया, एव चरण-करणपरुवणा आघविज्जइ । से त विवाहे ॥ ५ सू० ५० ॥

से कि त नायाधम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु ण नायाण नगराइ, उज्जायणाइ, चेडाइ, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इडुविसेसा, भोगपरिज्ञाया, पवज्ञाओ, परिआया, सुयपरिगहा,

तवोवहाणाइं, सलेहणाश्रो, भत्तपञ्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइ, देवलोग-गमणाइ, सुकुलपञ्चायाइश्रो, पुणवोहिलाभा, अनकिरियाश्रो य आधविज्जति । दस घम्मकहाण वरगा, तत्थ ण एगमेगाए घम्मकहाए पच पच अवखाइया सथाइ, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पच उवखाइया सथाइ । एगमेगाए उवखाइयाए पच पच अवखाइय-उवखाइयासयाइ । एवमेव सपुव्वावरेण अद्भुताश्रो कहाणगकोडीश्रो हवतिति समखाय । नायाघम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्ञा अणुओगदारा, सखिज्ञा वेढा, सखिज्ञा सिलोगा, सखिज्ञाश्रो निज्जुस्तीभो, संखिज्ञाश्रो सगहणीश्रो, सखिज्ञाश्रो पडिव-त्तीश्रो । से ण अगद्यगाए छट्टे अगे, दो सुयवखधा, एगूणवीस अज्भवणा, एगूणवीम ऊद्देसणकाला एगूणवीस समुद्देसणकाला, सखेज्ञा पयसहस्सा पयरगेण । सखेज्ञा अवखरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणता भावा आधविज्ञति, पणविज्ञति, परुविज्ञति, दसिज्जति, निदसिज्ञति उवदसिज्जति । एव आया, एव नाया, एव विष्णाया । एव चरणकरणपरुवणा आधविज्ञइ । से तं नायाघम्मकहाश्रो ६ ॥ सू० ५१ ॥

से कि त उवासगदसाश्रो ? उवासगदसासु ण समणो-वासयाण नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइ, समोसर-णाइ, रायणो, अम्मापियरो, घम्मायरिया, घम्मकहाश्रो इह-लोड्यपरलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरिज्ञाया, पव्वज्जाश्रो, परिआगा, सुयपरिगहा, तवोवहाणाइ, सीलच्चयगुण-वेरमणपञ्चक्खाण-पोस-होववास-पडिवज्ञणया, पडिमाश्रो, उवसगा, सलेहणाश्रो, भत्त-पञ्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइं, सुकुलपञ्चायाइश्रो, पुणवोहिलाभा, अतकिरियाश्रो य आधविज्ञति । उवासगदनाण परित्ता वायणा, सखेज्ञा अणुओगदारा, सखेज्ञा वेढा, सखेज्ञा सिलोगा,

सखेज्ञाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्ञाओ सगहणीओ, सखेज्ञाओ पडिवत्ती-ओ । से ण अंगद्याए सत्तमे अगे, एगे सुयवखधे, दस अजस्तयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला सखेज्ञा पयसहस्सा पयगेण । संखेज्ञा अवखरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्ञंति, पञ्चविज्ञंति, पर्वविज्ञंति, दसिज्ञंति, निदसिज्जंति, उवदसिज्जंति । से एव आया, एव नाया, एवं विज्ञाया, एव चरणकरण-पर्वणा आघविज्ञइ । से त्त उवासगदसाओ ७ ॥सू० ५२॥

से कि त अतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाण नगराइं, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइं, समोसरणाइ, रायाणो, अस्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरच्छारा, पच्चज्ञाओ, परिआगा, सुयप-रिग्गहा, तबोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपञ्चक्खाणाइ, पाओ-वगमणाइ, अंतकिरियाओ, आघविज्ञंति । अंतगडदसासु ण परित्ता वायणा, सखिज्ञा अणुओगदारा, सखेज्ञा वेढा, संखेज्ञा सिलोगा, सखेज्ञाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्ञाओ सगहणीओ, सखेज्ञाओ पडिवत्तीओ । से ण अगद्यार अद्युमे अगे, एगे सुयवखधे, अद्य वग्गा, अद्य उद्देसणकाला, अद्य समुद्देसणकाला, सखेज्ञा पयसहस्सा पयगेण । सखेज्ञा अवखरा, अणता गमा, अणता पञ्चवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति; उवदसिज्जंति से एव आया एव नाया, एवं विज्ञाया । एवं चरणकरणपर्वणा आघविज्ञइ । से त्त अतगडदसाओ ८ ॥सू० ५३॥

से कि त अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयद-सासु णं अणुत्तरोववाइयण नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अस्मापियरो, धम्मायरिया,

धर्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरि-
च्छागा पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिगहा, तबोवहाणाइँ,
पडिमाओ, उवसगा, सलेहणाओ, भत्तपञ्चवाणाइ, पाओव-
गमणाइ, अणुत्तरोववाइयते उववत्ती, सुकुलपञ्चायाईओ,
पुणबोहिलाभा, अतकिरियाओ, आधविज्जति । अणुत्तरोववा-
इयदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा
वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निजजुत्तीओ, सखेज्जाओ
संगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगद्याए नवमे अगे,
एगे सुयक्खधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसण-
काला । सखेज्जाइँ पयसहस्साइँ पयग्गेण । सखेज्जा अक्खरा,
अणंता गमा, अणंता पञ्चवा, परित्ता तसा अणंता
थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आधविज्जति,
पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदन्नि-
ज्जति । से एव आया, एव नाया, एव विणाया, एव चरणकरण-
परुवणा आधविज्जइ । से त्त अणुत्तरोववाइयदसाओ ह ॥४०५४ ॥

से किं तं पण्हावागरणाइँ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं
पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तर पसिणापसिणसयं
तंजहा—अगुटपसिणाइँ, बाहुपसिणाइँ, अद्वागपसिणाइ, अन्ने
वि विचित्ता विज्जाइसया, नागसुवणोहि सर्द्धि दिव्वा सवाया
आधविज्जति । पण्हावागरणाण परित्ता वायणा, सखेज्जा अण-
ओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा मिलोगा, सखेज्जाओ निजजु-
त्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । मे णं
अगद्याए दसमे अगे; एगे सुयक्खधे, पण्यालीस ग्रजम्यणा,
पण्यालीस उद्देसणकाला, पण्यालीसं समुद्देसणकाला । सखेज्जाइँ
पयसहस्साइ पयग्गेण । सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता
पञ्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाया

जिणपणता भावा आघविज्जति, पणविज्जंति, परुविज्जंति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं चिण्णाया, एवं चरणकरणपर्वणा आघविज्जइ । से तं पण्हावागरणाइ १० ॥ सू० ५५ ॥

से कि त विवागसुयं ? विवागसुए ण सुकडुक्कडाण कम्माण फलविवागे आघविज्जइ । तत्य णं दस दुह विवागा, दस सुहविवागा ।

से कि त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण दुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसंडाइ, चैइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो अम्मापियरो, घम्मायरिया, घम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा । निरयगमणाइ, संसारभवपवचा, दुहपरंपराओ, दुकुलपच्चायाईओ, दुल्लहबोहियत्त आघविज्जइ । से तं दुहविवागा ।

से कि त सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ, चैइयाइ; समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, घम्मायरिया, घम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पच्चज्जाओ, परियागा, सुथपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्षाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जति । विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निजजूतीओ, संखिज्जाओ पडिकत्तीओ । से णं अगट्ट्याए इङ्कारसमे अगे, दो सुयवखंधा, बीस अजभयणा, बीसं उह्देसणकाला, बीसं समुद्देसणकाला, संखिज्जाइ पयसहस्साइ पयमगेण । संखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणता भावा आघविज्जंति पञ्चविज्जति, परुविज्जंति, दसिज्जंति निदसिज्जति, उवदसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं चिण्णाया, एवं

करणपर्वणा आधविज्ञाइ । से त विवागसुयं ११ ॥ सू० ५० ॥

से कि त दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए ण सद्वभावपर्वणा आध-
विज्ञाइ, से समासश्रो पंचविहे पण्णत्ते, त जहा—१ परिकम्मे,
२ मुत्ताइ, ३ पुववगए, ४ श्राणुश्रोगे ५ चूलिया ।

से कि त परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—
१ सिद्धसेणियापरिकम्मे, २ मणुस्ससेणियापरिकम्मे, ३ पुट्ठसेणिया-
परिकम्मे, ४ श्रोगाढसेणियापरिकम्मे, ५ उवमपञ्चणसेणियापरि-
कम्मे । ६ विष्पजहणसेणियापरिकम्मे, ७ चुपाचुयसेणियापरि-
कम्मे ।

से कि त सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे
चउद्दसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ माउगापयाइ, २ एगट्ठियपयाइ,
३ श्रद्धपयाइ, ४ पाढोश्रागासपयाइ^१, ५ केउभूय, ६ रासिवढ़, ७ एग-
गुण, ८ दुगुण, ९ तिगुण, १० केउभूय, ११ पडिगगहो, १२ सत्तारपडि-
गहो, १३ नदावत्त, १४ सिद्धावत्त । से त १ सिद्धसेणियापरिकम्मे ।

से कि त मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउद्द-
सविहे पण्णत्ते, त जहा—१ माउयापयाइ, २ एगट्ठियपयाइ, ३ श्रद्ध-
पयाइ^२, ४ पाढोश्रागासपयाइ, ५ केउभूय, ६ रासिवढ़ ७ एगगुण,
८ दुगुण, ९ तिगुण, १० केउभूय, ११ पडिगगहो, १२ ससारपडिगगहो,
१३ नदावत्त, १४ मणुस्सावत्त । से त मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

से कि त पुट्ठसेणियापरिकम्मे ? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इङ्गारसविहे
पण्णत्ते, त जहा—१ पाढोश्रागासपयाइ, २ केउभूय, ३ रासिवढ़,
४ एगगुण, ५ दुगुण, ६ तिगुण, ७ केउभूय, ८ पडिगगहो, ९ ममारपडि-
गहो, १० नदावत्त, ११ पुट्ठावत्त । से त पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ।

से कि त श्रोगाढसेणियापरिकम्मे ? श्रोगाढसेणियापरिकम्मे इङ्गार-
सविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढोश्रागासपयाइ, २ केउभूय, ३ रामि-

बछ, ४ एगगुण, ५ दुगुण, ६ तिगुणं, ७ केउभूय, ८ पडिग्गहो, ९ ससार-पडिग्गहो, १० नदावत्त, ११ श्रोगाहावत्तं । से तं श्रोगाहसेणियापरिकम्मे ४ ।

से कि त उवसपञ्चणसेणियापरिकम्मे ? उवसपञ्जण-सेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढोश्रागासपयाइ, २ केउभूय, ३ रासिबछ, ४ एगगुण, ५ दुगुण, ६ तिगुण, ७ केउभूयं, ८ पडिग्गहो, ९ ससारपडिग्गहो, १० नदावत्त, ११ उवसपञ्जणावत्त । से त उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

से कि त विष्पजहण-सेणियापरिकम्मे ? विष्पजहणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ पाढोश्रागासपयाइ, २ केउभूय, ३ रासिबछ, ४ एगगुण, ५ दुगुण, ६ तिगुण, ७ केउभूय, ८ पडिग्गहो, ९ संसारपडिग्गहो, १० नदावत्त ११, विष्पजहणावत्तं । से त विष्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

से कि त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, त जहा—१ पाढोश्रागासपयाइ, २ केउभूय, ३ रासिबछ, ४ एगगुण, ५ दुगुण, ६ तिगुण, ७ केउभूयं, ८ पडिग्गहो, ९ ससारपडिग्गहो, १० नदावत्त, ११ चुयाचुयावत्तं । से त चुयाचुय-सेणियापरिकम्मे ७ । छ चउक्कनइयाइ, सत्त तेरासियाइ । से त परिकम्मे १ ।

से कि तं सुत्ताइ ? सुत्ताइ वावीस पन्नत्ताइ, तं जहा—१ उज्जुसुय, २ परिणयापरिणय, ३ बहुभगिय, ४ विजयचरियं, ५ अणंतर, ६ परयर, ७ मासाणं, ८ सजूह, ९ सभिणं, १० आहव्वायं, ११ सोवत्थियावत्त, १२ नंदावत्त, १३ बहुल, १४ पुद्धापुट्ट, १५ वियावत्त, १६ एवभूय, १७ दुयावत्त, १८ वत्तमाणपयं, १९ समभिरुढं,

१ स माण । २-च्चायं ।

२० सव्वश्चोभद्, २१ पसास, २२ दुष्पलिग्यहं, इच्छेइयाइ
बावीस सुत्ताइ^१ छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए;
इच्छेइयाइ बावीस सुत्ताइ^१ अचिन्नच्छेयनइयाणि आजीविषय-
सुत्तपरिवाडीए; इच्छेइयाइ^१ बावीस सुत्ताइ तिगणइयाणि तेरा-
सिय सुत्तपरिवाडीए, इच्छेइयाइ बावीस सुत्ताइ चउक्ननइयाणि
ससमयसुत्तपरिवाडीए। एवामेव सपुव्वावरेण अट्टासीई सुत्ताइ
भवतित्ति भवत्ताय। से त्त सुत्ताइ २॥

से किं तं पुव्वगए? पुव्वगए चउहसविहे पणत्ते, त जहा—
१ उप्पायपुव्व, २ प्रगाणीय, ३ वीरिय, ४ अत्थितत्थिप्पवाय,
५ नाणप्पवाय, ६ सञ्चप्पवाय, ७ आयप्पवाय, ८ कम्मप्पवाय,
९ पच्चव्वाणप्पवाय^१, १० विज्जाणुप्पवाय^१ ११ श्रवभू, १२ पाणाऊ,
१३ किरियाविसाल, १४ लोकांविदुसार। उप्पायपुव्वस्स ण दम
वत्त्यू, चत्तारि चूलियावत्त्यू पणत्ता। अग्गाणोयपुव्वस्स ण
चोहस वत्त्यू; दुवालस चूलियावत्त्यू पणत्ता। वीरियपुव्वस्स
ण अट्ट वत्त्यू अट्ट चूलियावत्त्यू पणत्ता। अत्थितत्थिप्पवाय-
पुव्वस्स ण अट्टारस वत्त्यू दस चूलियावत्त्यू पणत्ता। नाण-
प्पवायपुव्वस्स ण बारस वत्त्यू पणत्ता। सञ्चप्पवायपुव्वस्स
ण दोणि वत्त्यू पणत्ता। आयप्पवायपुव्वस्स ण सोलस वत्त्यू
पणत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स ण तीस वत्त्यू पणत्ता। पच्च-
क्खाणपुव्वस्स ण बीस वत्त्यू पणत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स
ण पन्नरस वत्त्यू पणत्ता। श्रवभूपुव्वस्स ण बारस वत्त्यू पणत्ता।
पाणाऊपुव्वस्स ण तेरस वत्त्यू पणत्ता। किरियाविसाल पुव्वस्स
ण तीस वत्त्यू पणत्ता। लोकांविदुसारपुव्वस्स ण पणुवीस वत्त्यू
पणत्ता, गाहा—

^१ पच्चक्खाण।

१ दस २ चोदस ३ अटु ४ इट्टारसेव ५ बारस ६ दुवे य वत्यूणि ।
७ सोलस ८ तीस ९ वीसा १० पञ्चरस अणुप्पवायम्मि ॥३५॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्यूणि ।

तीसा पुण तेरसमे, चोहसमे पणविसाओ ॥३६॥

१ चत्तारि २ दुवालस ३ अटु ४ चेव दस चेव चुल्लवत्यूणि ।

आइल्लाण चउण्ह, सेसाण चूलिया नत्थि ॥३७॥
से त पुच्चगए ।

से कि त अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पणत्ते, तं जहा—मूलपढ-
माणुओगे; गडियाणुओगे य ।

से कि त मूलपढमाणुओगे ? मूल पढमाणुओगे ण
अरहताण भगवंताण पुच्चभवा, देवलोगगम णाइ,
आउ, चवणाइ, जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरोओ,
पच्चज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि
य, सीसा, गणा, गणहरा, अङ्ग, पवत्तिणीओ । सघस्स चउच्च-
हस्स जं च परिमाण । जिणमणपञ्चवओहिनाणी, सम्मतसुय-
नाणिणो य, वाई । अणुत्तरगई य, उत्तरवेउच्चिणो य मुणिणो ।
जत्तिया सिढ्हा, सिढ्हिपहो जह देसिओ, ज़िर च कालं,
पाओवगया । जे जाह जत्तियाइ भत्ताइ (अणसणाए) छेहता
अतगडे, मुणिवरूत्तमे, तिमिरओघविप्पमुकके, मुक्खसुहमणुत्तरं
च पत्ते । एवमन्ने य एवमाइ भावा मूलपढमाणुओगे कहिया ।
से त मूलपढमाणुओगे ।

से कि त गडियाणुओगे ? गडियाणुओगे—
कुलगरगडियाओ, तित्थयरगडियाओ, चक्रवट्टिगंडि-
याओ, दसारगडियाओ, बल्लदेवगंडियाओ, वासुदेवगडियाओ,
गणधरगडियाओ, भद्रबाहुगंडियाओ, तवोकस्मगंडियाओ, हर्वंस-
गंडियाओ, उस्सप्पिणीगडियाओ, शोसप्पिणीगडियाओ, चित्ततर-

गडियाश्रो, अमर-नर-तिरिय-निरयगद्वयमणविविहृपरियद्वयेसु एव-
माइयाश्रो गडियाश्रो आधविज्ञति पणविज्ञति । से त
गडियाणुश्रोगे । से त शणुश्रोगे ॥ ४ ॥

से किं त चूलियाश्रो ? आइज्ञाण चउष्टु पुच्चाण चूलिया,
सेसाइ पुच्चाइ । अचूलियाइ, से त चूलियाश्रो ।

दिद्विवायस्स ण परित्ता वायणा, सखेज्ञा शणुश्रोगदारा,
संखेज्ञा वेढा, सखेज्ञा सिलोगा, सखेज्ञाश्रो पडिवत्तीश्रो, सखि-
ज्ञाश्रो निज्जुत्तीश्रो, सखेज्ञाश्रो सगहणीश्रो । से ण श्रगद्वयाए
बारसमे श्रगे, एगे सुथक्खघे, चोहस पुच्चाइ, सखेज्ञा वत्यू,
सखेज्ञा चूलवत्यू, सखेज्ञा पाहुडा, सखेज्ञापाहुडपाहुडा, सखेज्ञाश्रो
पाहुडियाश्रो, सखेज्ञाश्रो पाहुडपाहुडियाश्रो, सखेज्ञाइ
पयतहसाइ पयग्नेण । सखेज्ञा अक्खरा, श्रणता गमा, श्रणता
पज्जवा, परित्ता तसा, श्रणता यावरा, सासयकडनि-बद्वनिका-
इया जिणपन्नता भावा आधविज्ञति, पणविज्ञति, पहवि-
ज्जति दसिज्ञति, निर्दसिज्जति, उवदसिज्जति । से एव आया,
एव नाया, एव विण्णाया । एव चरणकरणपरुवणा आधविज्जति
से तं दिद्विवाए १२ ॥ सू० ५७ ॥

इच्छेइयमि दुवालसगे गणिपिडगे श्रणता भावा, श्रणता
अभावा, श्रणता हैऊ, श्रणता अहेऊ, श्रणता कारणा, श्रणता
अकारण, श्रणता जीवा, श्रणता अजीवा, श्रणता भवसिद्धिया,
श्रणता अभवसिद्धिया, श्रणता सिद्धा, श्रणता अमिद्धा पणत्ता—

भावमभावा हैऊमहेऊ, कारणमकारणे देव ।

जीवाजीवा भवियमभविया, सिद्धा असिद्धा य ॥ २८ ॥

इच्छेइय दुवालसगं गणिपिटगं तीए काले श्रणता जीवा
आणाए विराहिता चाउरंत समारकतार शणूपर्त्यद्विसु ।

इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं पदुपणकाले परित्ता जीवा आणाए
विराहित्ता चाउरत संसारकंतारं अणुपरियद्वृत्ति ।

इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं अणाए काले अणता जीवा
आणाए विराहित्ता चाउरत संसारकंतारं अणुपरियद्वृत्तिं ।

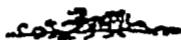
इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं तीए काले अणता जीवा
आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवद्विसु । इच्चेइयं
दुवालसंग गणिपिडगं पदुपणकाले परित्ता जीवा आणाए
आराहित्ता चाउरंतं संसारकत्तारं वीईवद्यंति । इच्चेइयं दुवालसंग
गणिपिडगं अणाए काले अणता जीवा आणाए आराहित्ता
चाउरत संसारकत्तारं वीईवद्विसंति ।

- इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ
न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुवि च, भवइ य, भविस्सइ^य, धुवे,
नियए, सासए, अकलए, अव्वए, अवट्टिए, निच्चे ।
से जहानामए पंचत्यकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्य, न
कयाइ न भविस्सइ, भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे,
नियए सासए, अकलए, अव्वए, अवट्टिए, निच्चे । एवामेव दुवालसंगं
गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्य, न कयाइ न भविस्सइ,
भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अकलए,
अव्वए, अवट्टिए, निच्चे ।

से समासओ चउव्वहे पणत्ते, तं जहा—दव्वओ, खित्तओ,
कालओ, भावओ, । तत्थ दव्वओ ण सुयनाणो उवउत्ते सव्वदव्वाइं
जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं खेत जाणइ
सइ, कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वं काल जाणइ पासइ,
ओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥ सू० ५८॥

श्रवक्षर सज्जी सम्म, साइय खलु सपञ्जवसिय च ।
 गमिय श्रगपविट्ठु, सत्तवि एए सपडिवक्षा ॥३६॥
 आगमसत्थगहण, ज बुद्धिगुणेहि अहुहि दिट्ठुं ।
 वित्ति सुयनाणलभ, त पुव्वविसारया धोरा ॥४०॥
 सुस्त्रुसइ पडिपुच्छइ, सुरेइ गिणहइ य ईहए यावि ।
 तत्तो अपोहए वा धारेइ, करेइ वा सम्म ॥४१॥
 मूअ हुंकारं वा, वाढङ्का पडिपुच्छावीमंसा ।
 तत्तो पसगपारायण च, परिणिट्ठु सत्तमए ॥४२॥
 सुत्तत्यो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्ति-मीसिश्रो भणिओ ।
 तइओ य निरवसेसो, एस विही होह श्रणुओगे ॥४३॥
 से त्त श्रगपविट्ठु । से त्त सुयनाण । से त्त परोक्षवनाण । से त्त
 नंदो ॥

नदी समता ॥



श्री अनुत्तरौपपातिकदशांग सूत्रम्

—ॐ श्री अनुत्तरौपपातिकदशांग सूत्रम्—

तेण कालेण, तेणं समएणं, रायगिहे णामं जयरे होत्था ।
सेणियनाम राया होत्था । चेलणा देवीए । गुणसिलए चेइए ।
वण्णओ ॥ १ ॥

तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे, अज्ज-सुहम्मस्स
समोसरण । परिसा णिगया । धम्मकहिओ । परिसा पडिगया ॥ २ ॥

जबू जाव पञ्जुवासइ, एवं वयासी—जइ णं भन्ते ! समणेण
जाव सपत्तेण अटुंमस्स अंगस्स अतगडदसाण अयमहु पणत्ते,
नवमस्स ण भन्ते । अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण
जाव सपत्तेण के अहु पणत्ते ? ॥ ३ ॥

तएण से सुहम्मे अणगारे, जम्बू अणगार एवं वयासी—एवं
खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण नवमस्स अंगस्स अणु-
त्तरोववाइयदसाणं तिणिण वगा पणत्ता ॥ ४ ॥

जइ ण भन्ते ! समणेण जाव संपत्तेण नवमस्स अंगस्स
अणत्तरोववाइयदसाण तओ वगा पणत्ता, पढमस्स ण
भन्ते । वगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव संपत्तेण कइ
अजभयणा पणत्ता ? ॥ ५ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-
दसाणं पढमस्स वगस्स दस अजभयणा पणत्ता, तं जहा—
जालि, मयालि, उवयालि, पुरिसेणे य, वारिसेणे य ।
दीहदते य, लटुदंते य, वेहल्ले, वेहायसे, अभये-ति कुमारे ॥ ६ ॥

जइ ण भन्ते । समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाहय-
दसाण पढमस्स वग्गस्स दस अजभयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं
भन्ते । अजभयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्टे पण्णत्ते ? ॥७॥

एव खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे
रिद्धित्थमिय-समिद्धे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । धारिणी
देवी । सीहसुमिण पासित्ताण पडिबुद्धा जाव जालि कुमारे जाए ।
जहा मेहो जाव अद्वद्वओ दाओ, जाव उर्पि पासाय जाव
विहर्इ ॥८॥

तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव
समोसढे । सेणिओ णिगओ । जहा मेहो तहा जाली वि णिगओ ।
तहेव णिक्खन्तो, जहा मेहो । एङ्कारस शंगाइ अहिल्लइ ॥९॥

तएण से जाली अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ २
त्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुव्येहि अब्भुण्णाय
समाणे गुण-रयण सवच्छरं तदोकम्म उवसपञ्जित्ताणं विहरित्तए ?
अहासुहं देवाणुप्यिया । मा पडिवध करेह ॥१०॥

तएण से जाली अणगारे समणेण भगवया महावीरेण
अब्भुण्णाय समाणे समण भगव महावीर वदइ नमसइ २ त्ता
गुणरयण सवच्छर तदोकम्म उवसपञ्जित्ताण विहरइ । त जहा—

१ पढम मास चउत्थ चउत्थेण अणिक्षित्तेण तदोकम्मेण
दियट्टाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणमूसिए आयादेमाणे, रक्ति
वीरसणेण अवाडेण य ।

२ दोच्च मासं छट्ट छट्टेण अणिक्षित्तेण तदोकम्मेण दिय-
ट्टाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणमूसिए आयादेमाणे, रक्ति

वीरासेणेण अवाउडेण य ।

३ तत्त्व मास अद्भुम अद्भुमेण अणिकिखत्तेण तबो कम्मेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

४ चउत्थ मास दसम दसमेण अनिकिखत्तेण तबोकम्मेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्तिवीरासणेण अवाउडेण य ।

५ पंचम मास बारसम बारसमेण अनिकिखत्तेण तबो-कम्मेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

६ छठु मास चउदस-चउदसमेण अणिकिखत्तेण तबोकम्मेण दियाठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

७ सत्तम मास सोलसम सोलसमेण अनिकिखत्तेण तबो-कम्मेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

८ अष्टम मास अद्वारसम अद्वारसमेण अनिकिखत्तेण तबो-कम्मेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

९ नवम मास विसइम वीसइमेण अनिकिखत्तेण तबो-कम्मेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

१० दसम मास बावीसाए बावीसांइमेण अनिकिखत्तेण दियद्वाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे, रक्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

११ एकारसम मासं चउवीसाए चउवीसइमेण अनिविल-
त्तेण तवोकम्मेण दियद्वाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए
आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण्य ।

१२ बारसम मासं छव्वीसाए छव्वीसइमेण अनिविलत्तेण
तवोकम्मेण दियद्वाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया-
वेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण्य ।

१३ तेरसम मास अद्वावीसाए अद्वावीसइमेण अनिविल-
त्तण तवोकम्मेण दियद्वाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए
आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण्य ।

१४ चउदसमं मासं तीसइम तीसइमेण अनिविलत्तेण
तवोकम्मेण दियद्वाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया-
वेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण्य ।

१५ पञ्चरसम मास वत्तीसइमं वत्तीसइमेण अनिविलत्तेण
तवोकम्मेण दियद्वाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया-
वेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण्य ।

१६ सोलम मास चोत्तीसइम चोत्तीसइमेणं तवोकम्मेण
दियद्वाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्ति वीरा-
सणेण अवाउडेण्य ॥११॥

तए ण से जालि अणगारे गुणरथणं संवच्छर तवोकम्मं
आहासुत्त अहाकप्पं अहामगं अहातच्च समकाएणं फातिता
पालिता सोहिता तीरिता किद्विता आणाए आराहिता जेणेव
समणे भगव महावीरे तेणेव सवागच्छइ २ ता समण भगव
महावीरं वदइ नमसइ, वदहिता नमसइता वहूहिं चउत्थछटु
अद्वमदसमद्वालसेहि भासेहि अद्वमासखमणेहि विचित्तोहिं तवो-
कम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥१२॥

तए णं से जाली श्रणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तोणं पगहिएणं एव जा चेव जहा खंदगस्स वत्ताव्या सा चेव चिन्तणा, आपुच्छणा थेरेहि सर्द्धि विपुल तहेव दुरुहति, णवर सोलस वासाइ सोमणपरियां पाउणित्ता कालमासे कालं किञ्चा उड्ढं चदिमसोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्ये नव य गेवेन्जे विमाणपत्थडे उड्ड दूर वीतीवतित्ता विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥१३॥

तए णं ते थेरा भगवंतो जाँल श्रणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसगं करेति, पत्ताचीवराइं गिणहति, तहेव उत्तरंति जाव इमे से आयारभेंडए ॥१४॥

भतेत्ति ! भगवं गोयमे जाव एव वयासी—एव खलु देवा-युष्पयाणं अतेवासी जाली नाम श्रणगारे पगइभद्वए, से णं जाली श्रणगारे कालगए कहिं गए, कहिं उववण्णे ? एवं खलु गोयमा ! मम अतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिमाइ जाव विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥१५॥

जालिस्स णं भन्ते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥१६॥

से ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छहिइ कहिं उववज्जहिइ ? । गोयमा ! महाविदेहे वासे सिजिभहिइ जाव सब्बदुक्खाणमतं करि—स्सइ ॥१७॥

एवं खलु जम्बू ! समणेण जाव संपत्तेण, श्रणुत्तरोववाइय-दम्माण पढमस्स वगास्स पढमस्स अजभेयणस्स श्रयमट्टे पण्णत्ते ।

एवं सेसाणवि अदुण्ह भाणियद्वं । नवरं छ धारिण-

सुआ, वेहूल्लवेहायसा चैल्लणाए । अभयस्स नाणत्त—रायगिहे नगरे, सेणिए राया, नदा देवी माया, सेसे तहेव । आइल्लाणं पंचणह सोलस वासाइ सामण्णपरियाओ, तिणह वारसवासाइं, दोणह पच वासाइ । आइल्लाण पचणह अणुपुच्चीए उचवाओ, विजय विजयते जयते अपराजिए सब्बटुसिढ्डे । दीहृदते सब्बटुसिढ्डे, अणुक्कमेण सेसा । अभओ विजये । सेस जहा पढमे ।

एवं खलु जन्म्बु ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वगगस्स श्रयमट्टे पणत्ते ।

॥ इय पढमस्स वगगस्स दस अजभ्यणा समता ॥

॥ द्वितीय-वर्ग ॥

जइ ण भन्ते । समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वगगस्स श्रयमट्टे पणत्ते, दोच्चस्स णं भते । वगगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेण जाव संपत्तेण के अट्टे पणत्ते ? ॥१॥

एवं खलु जन्म्बु । समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वगगस्स तेरस अजभ्यणा पणत्ता ? तं जहा-दीहसेणे, भहासेणे, लट्टदते य, गुढदते य ।

सुद्धदते य, हल्ले, दुमे, दुमसेणे, महादुमसेणे य आहिए ॥ १ ॥
सीहे य, सीहसेणे य, भहासीहसेणे य आहिए ।

पुन्हसेणे य वोधव्ये, तेरसमे होति अजभ्यणे ॥ २ ॥

जइ ण भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स वगगस्स तेरस अजभ्यणा पणत्ता, दोच्चस्स

णं भन्ते ! वग्गस्स पढमस्स अज्ञभयणत्स समणेण जाव सपत्तेण के अद्दु पण्णत्ते ?

एवं खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्म, बालत्तण कलाश्रो, णवर दीहसेण कुमारे सब्बे वत्तच्चया, जहा-जालिस्स जाव अतं काहिति ॥१॥

एवं तेरसवि, रायगिहे नयरे, सेणिश्रो, पिया, धारिणी माया तेरसण्हवि सोलसवासाए परियाय मासियाए संलेहणाए आणु पुध्वीए उववाश्रो विजए दोन्हि, विजयंते दोन्हि, जयते दोन्हि, अपराजिते दोन्हि, सेसा महादुमसेणमाइए पन्न सब्बहुसिद्धे ॥२॥

एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोञ्चस्स वग्गस्स अयमद्दु पण्णत्ते, मासियाए संलेहणाए दोसुवि वगोसु ॥ त्ति वेमि ॥

॥ बीश्रो बग्गो समत्तो ॥

॥ तृतीय-वर्ग ॥

जइ ण भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोञ्चस्स वग्गस्स अयमद्दु पण्णत्ते, तञ्चस्स णं भन्ते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेण जाव सपत्तेण के अद्दु पण्णत्ते ? ॥ १ ॥

एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण तच्चस्स वग्गस्स दस अज्ञभयणा पण्णत्ता त जहा—
धर्णणे य, सुनक्खत्ते य, इसिदासे य, अभ्वहते ।
पेल्लए, रामपुत्ते य, चन्दिमा, पिद्विमाइय ॥ १ ॥

पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पोट्टिले इय।
वेहल्ले, दसमे बुत्ते, इमे य दस आहिया ॥ २ ॥

जडूण भन्ते । समणेण जाव सपत्तेण अणुकृतरोववाइय-
दसाण तच्चस्स वग्गस्स दस अजभयणा पण्णत्ता, पढमस्स
ण भन्ते । अजभयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्टे
पण्णते ? ॥ ३ ॥

एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण काकन्दी नाम
नयरी होत्या, रिद्धित्यमियसमिद्धा, सहस्रवरणे उज्जाणे
सब्बोउथपुष्पकलसमिद्धे जाव पासाइए, जिथसत्तू राया ॥ ४ ॥
तत्थ ण काकन्दीए नयरीए भद्रा णाम सत्थवाही परिवसइ,
अड्डा जाव अपरिभूया ॥ ५ ॥

तीसे ण भद्रए सत्थवाहीए पुत्ते घन्ने नाम दारए होत्या
श्रहीण जाव सुरुवे, पचधाई—परिगाहिए, तंजहा—खीरधाइए
जहा महब्बलो जाव वावत्तरि कलाओ श्रहिए जाव श्रलं भोग-
समत्थे जाए यावि होत्या ॥ ६ ॥

तए ण सा भद्रा सत्थवाही घण्णदारय उमुळ्यातभाव
जाव भोगसमत्थ जाणित्ता, वत्तीस पासायवडिसए कारेह
अद्भुगायमूसिए जाव तेसि मज्ज्मे अणेग-भवण-वभ-सय-
सत्रिविहुं जाव वत्तीसाए इद्यभवरकज्जगाणं एगदिवसे ण पाणि-
गिण्हावेह २ त्ता वत्तीसाओ दाओ जाव उर्प्पि पासायवडिसए
फुङ्ग तेहि मुङ्गमत्थएहि जाव विहरड ॥ ७ ॥

तेण कालेण तेण समणे भगव महावीरे जमो-
सठे, परिसा निगग्या, जहा कोणिओ तहा जियत्तू
णिगग्यो ॥ ८ ॥

तए ण तस्स धण्णस्स तं महया जणसइ जहा जमाली
 तहा पिगओ, जवर पायचारेण जाव जं णवरं अम्मयं भदं
 सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए ण अहं देवाणुण्पियाण अतिए
 जाव पव्वयामि, जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छया,
 वुत्पडिवुत्तया, जहा महाब्बले जाव जाहे नो सचाइया,
 जहा थावच्चापुत्ते तहा जियसत्तू आपुच्छइ, छत-चामराओ,
 सयमेव जियसत्तू निकखमण करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स
 कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए, ईरियासमिए जावगुत्त-
 बभयारी ॥ ६ ॥

तएण से धण्णे अणगारे, ज चेव दिवसं मु डे भवित्ता
 जाव पव्वइए त चेव दिवस समणं भगव महावीर वंदइ
 नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु इच्छामि णं
 भन्ते ! तुबमेहिं अबभणुण्णाए समाणे जावझीवाए छहु-
 छट्टेण अणिकिखत्तेण आयबिल-परिगहिएण तवोकम्मेण अप्पा-
 णं भावेमाणे विहरित्तए, छट्टस्सवि य ण पारणगसि कट्पइ मे
 आयंबिल पडिगहित्तए, णो चेव णं अणायबिल, तपि य संसट्टे-
 णं णो चेव ण अससट्टेण, त पि य ण उजिभयधम्मय णो चेव ण
 अणुजिभयधम्मय, तपि य ण ज अन्ने बहवे समणमाहण-अतिहि-
 किवण-वणिमग। णावकखति । अहासुहं देवाणुण्पिया । मा पडिबंधं
 करेह ॥ १० ॥

तएण से धण्णे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अबभ-
 णुण्णायसमाणे हट्ट-तुट्ट जावझीवाए छट्ट-छट्टेण अणिकिखत्तेण तवो-
 कम्मेण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ११ ॥

तएण से धण्णे अणगारे पढम-छट्टखमण-पारणगसि पढमाए
 पोरिसीए सजभाय करेति, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छति जाव

जेणेव काकदी णयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता काकदीए नयरीए
उच्चनीय जाव अडमाणे आयविल जाव नावकखति ॥१२॥

तए ण से धणे अणगारे ताए आभुज्जताए पदत्ताए पग-
हियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्त लभइ तो पाण ण लभइ, अह
पाण लभइ तो भत्त ण लभइ ॥१३॥

तए ण धन्ने अणगारे अदीणे अविमणे अकलुमे अविसादी
अपरिततजोगो जयणघडण-जोग-चरित्ते अहापज्जत्त समदाण पडिग-
गाहेइ २ त्ता काकदीओ णयरीओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जहा गोथमे
तहा पडिदंसेइ ॥१४॥

तए ण से धणे अणगारे, समणेण भगवया महावीरेण अदभ-
णुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्ञोववन्ने विलमिव पणग-
भूएण अप्पाणेण आहार आहारेइ २ त्ता, संजमेण तवसा अप्पाण-
भावेमाणे विहरइ ॥१५॥

तए ण समणे भगव महावीरे अणणया कयाइ काकदीओ
णयरीओ सहस्रवदणाओ उच्चाणाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता वहिया
जणवयविहार विहरइ ॥१६॥

तए ण से धणे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स
तहारुवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहि-
झइ २ त्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥१७॥

तए ण से धणे अणगारे तेण ओरालेण जहा खदन्नो जाव
सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलते उवसोभेमाणे चिट्ठति ॥१८॥

धन्नस्स ण अणगारस्स पायाण अपमेयाल्वे तवस्वला-
चणे होत्या से जहानामए लुष्कद्धल्लीइ वा, कटुपाडयाड वा,
जरगओवाहणाइ वा, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया नुङ्गा

भुक्खा लुक्खा निमंसा अट्टिच्चम्भिरत्ताए पन्नायति, तो देव ण
मससोणियत्ताए ॥१६॥

धन्नस्स णं ग्रणगारस्स पायंगुलियाणं श्रयमेयारूपे तव-
रूपलावणे होत्था से जहानामए कलसगलियाइ वा मुगमास-
सगलियाइ वा, तरुणिया छिणा उण्हे दिणा सुङ्का समाणी
मिलायमाणी मिलायमाणी चिटुंति, एवामेव धन्नस्स पायगुलियाओ
सुङ्काओ जाव णो मससोणियत्ताए ॥२०॥

धन्नस्स श्रणगारस्स जंघाण श्रयमेयारूपे—से जहानामए
ककजंघाइ वा, काकजंघाइ वा, ढेणियालियाजंघाइ वा, एवं जाव
सोणियत्ताए ॥२१॥

धन्नस्स ण जाणूण श्रयमेयारूपे से जहानामए-कालि-पोरेइ
वा, मयूरपोरेइ वा, ढेणियालियापोरेइ वा, एव जाव सोणिय-
त्ताए ॥२२॥

धन्नस्सण उरुण—जहा नामए सामकरिल्लेइ वा, बोरिक-
रिल्लेइ वा, सल्लइयकरिल्लेइ वा, सामलिकरिल्लेइ वा, तरुणिया
छिन्ना उण्हे दिणा जाव चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स उरुण जाव
सोणियत्ताए ॥२३॥

धन्नस्स ण कडिपत्तस्स इमेयारूपे, से जहा नामए उदृपाएइ,
वा जरुगपाएइ वा, महिसपाएइ वा जाव णो सोणियत्ताए ॥२४॥

धन्नस्स णं उदरभायणस्स श्रयमेयारूपे से जहा नामए-
सुङ्कदिए इवा, भज्ञणय कभल्ल इवा, कट्टकोलबएइवा, एवामेव
उदरसुक ॥२५॥

धन्नस्स ण पांसुलियाकडयाण श्रयमेयारूपे से जहा नामए-
थासयावलीइ वा, पाणावलीइ वा, मुंडावलीइ वा, एवामेव० ॥२६॥

धन्नस्स पिटुकरडगाण श्रयमेयाहृचेसे जहा नामए-कन्ना-
वल्लीइ वा, गोलावलीइ वा, वट्टावलीइ वा, एवामेव० ॥२७॥

धणस्स उरकड्यस्स श्रयमेयाहृवे से जहा नामए-चित्त-
कट्टरेइ वा, चिपणपत्तेइ वा, तालियटपत्तेइ वा, एवामेव० ॥२८॥

धन्नस्स बाहाण से जहा नामए-समिसगलियाइ वा पहाया
सगलियाइ वा, श्रगत्यियसगलियाइ वा, एवामेव० ॥२९॥

धणस्स हृथ्याणं श्रयमेयाहृवे से जहा नामए-सुक्ष-छग-
णियाइ वा; वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा एवामेव० ॥३०॥

धणस्स हृथ्यगुलियाण से जहा नामए-कलसगलियाइ वा,
मुग्ग-माससगलियाइ वा, तरुणिया छिन्ना श्रायवे दिण्णा सुक्षा
समाणी एवामेव० ॥३१॥

धन्नस्स गीवाए से जहा नामए—करगीवाइ वा, कुडिया-
गीवाइ वा, [करेथवणाइ वा] उच्चट्टवणएइ वा एवामेव० ॥३२॥

धन्नस्स णं हण्याए से जहा नामए—लाउफलेइ वा, हक्क-
वफलेइ वा अंवगद्वियाइ वा एवामेव० ॥३३॥

धन्नस्स ण उट्टाण से जहा नामए—सुक्कजलोयाइ वा, सिले-
सगुलियाइ वा, अलत्तगुलियाइ वा, [अवाडगपेसीयाइ वा] एवा-
मेव० ॥३४॥

धन्नस्स जिद्भाए से जहा नामए चडपत्तेइ वा, पलास-
पत्तेइ वा [उवरपत्तेइ वा] सागपत्तेइ वा एवामेव० ॥३५॥

धन्नस्स नासाए से जहा नामए—श्रवग-पेमियाइ वा, श्रवा-
डगपेसियाइ वा, माउलिगपेमियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवामेव०
॥३६॥

धण्णस्स अच्छीण से जहा नामए—वीणाछिड्डेइ वा चद्दी-
सगछिड्डेइ वा, पाभाइयतारगाइ वा, एवामेव० ॥३७॥

धन्नस्स कन्नाण, से जहा नामए मूलाछल्लियाइ वा, वालुं-
कछल्लियाइ वा, कारेहलयल्लिवाइ वा, एवामेव० ॥३८॥

धन्नस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेयारुवे से जहानामए
तरुणगलाउएइ वा, तरुणगएलानुएइ वा, सिणहालए वा,
तरुणए जाव चिहुति एवामेव धन्नस्स अणगारस्स सीस सुक्क-
भुक्ख-लुक्ख-निस्सस अट्टिच्चस्मछिरत्ताए पन्नायइ नो चेव णं
मस-सोणियत्ताए ॥ ३९ ॥

एवं सव्वत्थमेव नवर उदर-भायण, कन्ना, जीहा, उहा,
एएसि श्रही न भण्णइ, चम्मछिरत्ताए पन्नायंति इति
भण्ंति ॥ ४० ॥

धन्ने णं अणगारे सुक्केण भुक्खेण पायजंघोरुणा चिगत-
तडिकरालेण कडिकडाहेण पिट्ठुमवस्त्सएण उदरभायणेण
जोइज्जमाणेहि पासुलियकडाएहि अवखसुत्तमाला वा गणिज्जमाणेहि
पिट्ठुकरडगसधीहि गगातरग-भूएण, उरकडागदेसभाएण सुक्क-
सप्पसमारोहि बाहाहि सिद्धिल-कडाली चिव लबतेहि य अग-
हत्थेहि कपणवाइए विव वेवमाणीए सीसघडीए पच्चादवदन-कमले
उद्भडधडमुहे उच्चुहुनयणकोसे ॥ ४१ ॥

जीव जीवेण गच्छइ, जीव जीवेण चिहुइ भासं भासिस्सा-
मिति गिलायइ से जहा नामए इंगालसगडियाइ वा, जहा
खदओ तहा हुयासणे इव भास-रासिपलिच्छन्ने, तवेणं तेएण
तवतेयसिरीए उवसोमेमाणे चिहुइ ॥ ४२ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए-
सेणिए राया । समणे भगव महावोरे समोसढे, परिसा णिगया,
सेणिओ णिगगओ, धम्मकहा, परिसा पडिगया ॥ ४३ ॥

तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स
श्रतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समण भगव महावीर वदइ नमस्तइ
वंदइत्ता नमंसित्ता एव वयासी—इमेसि ण भते । इदभूइपा-
मोक्खाण चउद्दसण्हं समणसाहस्सीण क्यरे अणगारे महा-
दुक्करकारए चेव महाणिज्ञरतराए ? ॥ ४४ ॥

एव खलु सेणिया ! इमेसि इद भूइपामोक्खाण चउद्दसण्हं
समणसाहस्सीण धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव, महा-
निज्ञरतराए चेव ॥ ४५ ॥

से केणद्वेण भते ! एव बुच्चवइ इमेसि चउद्दसण्हं समणसा-
हस्सीण धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्ञरतराए
चेव ॥ ४६ ॥

एवं खलु सेणिया ! तेण कालेण तेण समएण काकंदी
नाम नयरी होत्या, जाव उप्पि पासायवडिसए । तए णं
अहं अण्णया कथाइ पुच्चाणपुच्चीए चरभाणे गामाणुगाम दुङ्ग-
ज्ञमाणे जेणेव काकदी नयरी जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव
उवागए २ त्ता अहापडिरुवं उगगह उगिगिहत्ता सजमेण तवसा
जाव विहरामि । परिसा णिगया, त चेव जाव पच्चइए जाव
विलमिव जाव आहारेति, धश्सस ण अणगारस्स पादाणं सरीर-
वन्नओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ । से तेणद्वेणं
सेणियर ! एवं बुच्चवइ इमेसि चउद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने
अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्ञरतराए चेव ॥ ४७ ॥

तते ण से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स
श्रतिए एयमद्धं सोच्चा निसम्म हृठतुट्ठे समण भगव महावीर
तिक्षुत्तो आयाहिण पयाहिण करेह, वदइ नमस्द २ त्ता

जेणेव धन्ने अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धन्न अणगारं
तिक्षखुत्तो आयाहिण पयाहिण करेह, वदइ नमसइ, वदइत्ता
नमंसइत्ता एवं वयासी—धण्णो सि णं तुमं देवाणुपिया ! तुपुण्णे
सुक्षयत्थे कयलखणे सुलह्वे ण देवाणुपिया ! तव माणुस्सए
जम्मजीविगफलेत्ति कट्टु वदइ नमसइ, नमसित्ता जेणेव समणे भगव
महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्षुत्तो
जाव वदइ २ त्ता जामेव दिसि पाऊवभूए तामेव दिसि
पडिगए ॥४८॥

तए ण तस्स धन्नस्स अणगारस्स अन्नया कयाइ पुच्च-
रत्तावरत्तकालसमयसि धस्मजागरिय, जागरमाणस्स इमेयारूपे
अज्ञक्षत्थिए चित्तिए मणोगए संकष्ये समुपज्ञित्था, एवं खलु अहं
इमेण श्रोरालेण जहा खदशो तदेव चित्ता, आपुच्छण, थेरेहि सद्धि
विपुल दुर्लहइ । मासियाए सलेहणाए नवमासा परियाश्रो जाव
कालम से काल किञ्चा उड्ढ दुर वीइवइत्ता सच्चदुसिद्धे विमाणे देवत्ताए
उववन्ने ॥४९॥

थेरा तहेव उत्तरति जाव इमे से आयारभडए ॥५०॥

भते त्ति, भगवं गोयमे तहेव पुच्छइ जहा खदयस्स भगवं
वागरेति जाव सच्चदुसिद्धे विमाणे उववन्ने ॥५१॥

धन्नस्स ण भते ! देवस्स केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ?
गोयमा ! तेच्चीसं सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता ॥५२॥

से ण भते ! ताश्रो देवलोगाश्रो आउवखएण भवक्षत्थएण
ठितिक्षएण कर्हि गच्छहिति कर्हि उववज्जेहिति ? गोयमा !
महाविदेहवासे सिज्जभहिइ बुज्जभहिइ मुच्चिवहिइ परिणिव्वाहिइ
सच्चदुक्खाणमंतं करेहिइ ॥५३॥

एव खलु जम्बू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सप-
त्तेण पठमस्स अज्ञभयणस्स अयमद्दे पण्णते ॥५८॥

॥ पठम अज्ञभयण समत ॥

जइ ण भन्ते । उक्खेवश्चो एव खलु जम्बू । तेण कालेण
तेण समएण काकदो नयं रो होत्था, भद्रा सत्यवाही परिवसइ ॥१॥

तीसे ण भद्राए सत्यवाहीए पुत्ते सुनक्खत्ते नाम दारए
होत्था, श्रंहीण० जाव सुरुचै, पचधाइ—परिवक्खत्ते जहा धन्नो—
तहेव वत्तोसश्चो दाश्चो जाव उंपिप पासायवडिंसए विहरइ ॥२॥

तेण कालेण तेण समएण सामो समोसद्दे जहा घन्नो
तहा सुनक्खत्ते वि निगश्चो जहा थावच्छापुत्तस्स तहा नक्खमण
जाव अणगारे जाए ईरियासमिए जाव गुत्तवभयारिए ॥३॥

तेण से सुनक्खत्ते अणगारे ज चेव दिवस समणस्स भगवश्चो
महावीरस्स अतिए मुडे जाव पव्वइए त चेव दिवस श्रभिगगह
तहेव विलमिव पण्णगभूएण आहार आहारेइ, सजमेण जाव विह-
रइ ॥४॥

समण जाव वहिया जणवयविहार विहरइ । एक्कारस श्रगाइ
अहिज्जइ, सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाण विहरइ ॥५॥

तेण त सुनक्खत्त अणगारे तेण उरालेण जहा दद्द्यो ॥ ६ ॥

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए
चेह्हए, सेणिए राया सामो समोसद्दे, परिसा णिगया, राया
निगश्चो, धम्मकहा रायापूडिगयो, परिसा पडिगया ॥ ७ ॥

तेण तत्स सुनक्खत्त अग्नया कथाइ पुव्वरत्ता जाय
धम्मजागरियं जहा खदयस्स बहुवासाश्चो परियाश्चो ॥ ८ ॥

गोयमपुच्छा जाव सच्चटुसिद्धे विसारणे देवत्ताए उववण्णे ।
जाव महाविदेहवासे सिज्जिभहिति ॥ ६ ॥

॥ इय वीय अजभयणं समर्तं ॥

एव खलु जम्बू ! सुनवत्तगमेण सेसावि अटु भाणियव्वा,
नवरं श्राणुपुव्वीए-दोन्नि रायगिहे, दोन्नि साइए, दोन्नि वाणि-
यग्गामे, नवमो हत्थिणापुरे, दसमो रायगिहे ॥१॥

नवण्हं भद्राओ जणणीओ, नवण्हवि बत्तोसओ दाओ
नवण्हं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं, वेहल्लप्पिया करेइ,
नवमास धण्णे वेहल्ल छमासापरियाओ, सेसाणं बहुवासाइ,
मास सलेहणा सद्वे महाविदेहवासे सिज्जिभहिति । एवं दस
अजभयणाणि ।

एवं खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण
अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वगस्स अयम्हु पणत्ते । अणुत्त-
रोववाइयदसाओ सम्भत्ताओ । अणुत्तरोववाइयदसाणं एओ सुक्खंधो
तिन्नि वगा तिसु दिवसेमु उद्दिसिज्जति, पठमे वगे दस उह्वेसगा
बीए वगे तेरस उह्वेसगा, तइये वगे दस उह्वेसगा, सेसं जहा धम्म-
कहा नायव्वा ॥ इति ॥



✽ श्री दशाश्रुतस्कंध ✽

चित्त-समाधि पंचमी दशा

नमो सुयदेवयाए भगवतीए । सुय मे आउस । तेण भगवया
एवमक्खाय, इह खलु थेरेहि भगवतैहि दस चित्त-समाहिठाणा
पन्नता । कयरा खलु ते थेरेहि भगवतैहि दस चित्त-समाहिठाणा-
पणता ? इमे खलु थेरेहि भगवतैहि दसचित्तसमाहिठाणा-पणता
त जहा—तेण कालेण तेण समएण वाणियगगामे नगरे होत्या,
नगर-वण्णमो भाणियव्वो ॥१॥

तस्स णं वाणियगगामस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरच्छमे
दिसिभाए दूतिपलासए नामं चेहए होत्या, चेहए वण्णमो भाणि-
यव्वो ॥२॥

जियसत्तू राया, तस्स धारिणी नाम देवी, एव सब्ब समोस-
रणं भाणियव्व जाव पुढवीसिलापट्टए, सामी समोसढे परिसा
निगया, घम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥३॥

अर्ज्जो ! इति समणे भगव महावीरे समणाय समणीयो य
निगथा य निगर्थीओ य श्रामतिता एवं धयासी—इह खलु अर्ज्जो !
निगथाण वा, निगथीणं वा इरियासमियाण, भासासमियाण,
एसणासमियाणं, आयाणभड-मत्त-निक्षेपणा-समियाण, उच्चार-
पासवण-खेल-जल्नसिध्याण-पारिद्वावण्या-समियाण, मण समियाणं,
वय-समियाणं, काय-समियाण, मण-गुत्ति-याण, वय-गुत्तियाण,
काय-गुत्तियाणं, गुत्ति-दियाण गुत्त-वभयारेण, आयट्टीण, आय-

हियाणं, आय-जोयणं, आय-परिक्लमाणं पविष्ठए-पोसहि-एसु समाहि-
पत्ताणं भियायमाणाण इमाइ दसचित्तसमाहि-द्वाणाइ असमुप्पण-
पुव्वाइ समुप्पज्जित्था त जहा—धम्मचित्ता वा से असमुप्पण-पुव्वाइ
समुप्पज्जेज्जा सब्बं धम्म जाणित्तए ॥५॥

सुमिण-दसिण वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, अहा-
तच्च सुमिणं पासित्तए, सणिण-जाइ-सरणेण सणिण-णाणं वा से
असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, अप्पणो पोराणियं जाइ समरित्तए
॥६॥

देव-दसणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्व
देवडिड दिव्व देव-जुइ दिव्वं देवाणभाव पासित्तए ॥७॥

ओहिणाणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, ओहिणा
लोग जाणित्तए ॥८॥

ओहिं-दसणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा-अड्डा-
इज्जेसु दीव-समुद्देसु सणीणं-पंचिदियाणं पञ्चतगाणं मणोगएभावे
जाणित्तए ॥९॥

केवलनाणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकृप्यं
लोया-लोय जाणित्तए ॥१०॥

केवल-दसणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकृप्य
लोयालोय पासित्तए ॥११॥

केवल-मरणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा सब्ब-
दुक्खप्पहाणाए ॥१२॥

ओय चित्त समादाय, ज्ञाणं समुप्पज्जह ।

धम्मे द्विग्रो अविमणो, निव्वाणमभिगच्छह ॥१॥

ण इम चित्त समादाय, भुज्जो लोयंसि जायह ।

अप्पणो उत्तमं ठाणं, सणी णाणेण जाणह ॥२॥

अहतच्चं तु सुमिण, विष्प पासेति सबुडे ।
सब्वं वा श्रोह तरति, दुक्खश्रो य विमुच्छइ ॥३॥

पताइ भयमाणस्स, विवित्त सयणासण ।
श्रप्याहारस्स दंतस्स, देवा दसेति ताइणो ॥४॥

सब्व-काम-विरतस्स, खमणा भय-भेरवं ।
तश्रो से श्रोही भवइ, सनयस्स तवस्तिणो ॥५॥

तवसा अन्नहट्टु लेससस्स, दंसण परिसुज्जभइ ।
उड्ड अहे तिरिय च, सब्वमणुपस्तिति ॥६॥

सुसमाहिय-लेससस्स, अवितक्षस्स भिवखुणो ।
सब्वश्रो विष्पमुक्षस्स, आया जाणाइ पञ्जवे ॥७॥

जया से नाणावरण, सब्व होइ खय गय ।
तश्रो लोगमलोग च, जिणो जाणाति केवली ॥८॥

जया से दरसणावरण, सब्व होइ खय गय ।
तश्रो लोगमलोग च, जिणो पासति केवली ॥९॥

पठिमाए विमुद्वाए, मोहणिज्ज खय गर्य ।
असेज लोगमलोग च पासेति सुसमाहिए ॥१०॥

जहा मत्थए सूइए, हंताए हम्मइ तले ।
एव कम्माणि हम्मति, मोहणिज्जे खय गए ॥११॥

सेणावइन्मि निहते, जहा सेणा पणस्सइ ।
एव कम्माणि णस्सति, मोहणिज्जे खय गए ॥१२॥

घूम-हीणो जहा धगगी, खीयति से निर्दधणे ।
एव कम्माणि खीयंति, मोहणिज्जे खय गए ॥१३॥

सुकक-मूले जहा रुखें, सिचमाणे ण रोहति ।
 एव कम्मा ण रोहति, मोहणिज्जे खय गए ॥१४॥
 जहा द्वाण बीयाण, न जायति पुणश्कुरा ।
 कम्म-बोएसु दड्डेसु, न जायति भवंकुरा ॥१५॥
 चिज्ञा ओरालिय बोँदि, नाम-गोयं च केवली ।
 आउयं वेयणिज्ज च, छित्ता भवति णीरए ॥१६॥
 एव अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो ।
 सेणिसुद्धिमुवागम्म, आया सुद्धिमुवागइ ॥ त्ति बेमि ॥१७॥

॥ इति दशाश्रुतस्कन्ध-चित्तसमाधि-नाम-पंचमी दशा ॥

॥ चउसरण पट्टणा ॥

सावज्ञजोगविरई^१, उक्तिष्ण^२ गुणवश्चो अ पडिवत्ती^३ ।
 खलिअस्स निदणा^४, वणतिगिच्छ^५ गुणधारणा^६ चेव ॥१॥
 चारित्तस्स विसोही कीरइ, सामाइएण किल इहयं ।
 सावज्जेश्वरजोगाण वज्ञणा सेवणत्तणश्चो ॥२॥
 दंसणायारविसोही, चउवीसत्थएण किज्ञहय ।
 अच्चब्मुश्चगुणकित्तणरूपेण जिणवार्दिदाण ॥३॥
 नाणाईश्चा उ गुणा तस्सपत्तपडिवत्तिकरणाश्चो ।
 वंदणएण विहिणा, कीरइ सोही उ तेर्सि तु ॥४॥
 खलिअस्स य तेर्सि पुणो, विहिणा ज निदणाइ पडिक्कमण ।
 तेण पडिक्कमणेण, तेर्सिपि अ कीरए सोही ॥५॥

चरणाईयारा णं जहकम्म वणतिगिच्छरुवेण ।
 पड़िक्कमणासुद्धार्ण, सोही तह काउसगेण ॥६॥

गुणधारणरुवेण पच्चकखाणेण तवइआरस्त ।
 विरिआयारस्त पुणो, सब्बेहि वि कोरए सोही ॥७॥

गय' वसह' सीह' अभिसेश्र', दाम' ससि' दिणथर' भय' कुभ' ।
 पउभसर' सागर' विमाण, भवण' रथणुच्च य' सिंह'" च ॥८॥

अमर्िद-नर्िद-मुर्णिदवदिअ, वंदिडं महावीर ।
 कुसलाणुबधि, बंधुरमज्जयण कित्तइस्सामि ॥९॥

चउसरणगमण, दुक्कडगरिहा सुकडाणुमोशणा चेव ।
 एस गणो अणवरय, कायव्वो कुसलहेउत्ति ॥१०॥

अरहत-सिद्ध-साहू, केवलिकहिअ सुहावहो घम्मो ।
 एए चउरो चउगइहरणा, सरण लहइ घन्नो ॥११॥

अह सो जिणभत्ति-भल्लथरत-रोमच-कचुश्र-करालो ।
 पहरिसण उम्मीस, सीसंमि कयजलि भणइ ॥१२॥

रागहोसारोण हता, कम्मटुगाइ-अरिहता ।
 विसय-कसायारोण, अरिहंता हुंतु मे सरण ॥१३॥

रायसिरिमुवक्कमि (सि) ता, तवचरण डुच्चर अणुचरिता ।
 केवलसिरिमरिहता, अरिहता हुंतु मे सरण ॥१४॥

थुइ-वदणमरिहता, अमर्िद-नर्िदपूइअमरिहता ।
 सासयसुहमरहता, अरिहता हुंतु मे सरण ॥१५॥

यरमणगयं मुणंता, जोइइ-महिंदभाणमरहता ।
 घम्मकहु अरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरण ॥१६॥

सत्त्वजिग्राणमहिस, अरहता सत्त्ववयणमरहता ।
 दंभद्वयनरहता अरिहता हुंतु मे सरण ॥१७॥
 ओसरणमवसरिता चउतीर्दं अइसए निसेविता ।
 धमकह च कर्हता अरिहता हुंतु मे सरण ॥१८॥
 एगाइ गिराइणेगे, सदेहे देहिण सम छिता ।
 तिहुयणमणुसासता, अरिहंता हुंतु मे सरण ॥१९॥
 वयणामएण भुवण. निव्वार्विता गुणेसु ठावता ।
 निअलोअमुद्धरता, अरिहता हुंतु मे सरण ॥२०॥
 अनुद्युयगुणवते, नियजसससइरपसाहिअदिअते ।
 निअयमणाइ अणते, पडिकन्नो सरणमरिहते ॥२१॥
 उजिक्कर्जरमरणाण, समत्तदुक्खत्तसत्त-सरणाण ।
 तिहुग्रण-जणसुहयाण, अरिहंताण नमो तागं ॥२२॥
 अरिहंत-सरण-मल-सुद्धिलद्ध सुविसुद्ध-सिद्धबहुमाणो ।
 पण्य-सिर-रइय-कर-कमल-सेहरो-सहरिस भणइ ॥२३॥
 कम्मदुक्खयसिद्धा, साहाविअनाणदंसणत्तमिद्धा ।
 सत्त्वहुलद्धसिद्धा ते, सिद्धा हुंतु मे सरण ॥२४॥
 तिअलोअ-मत्ययत्या, परमपयत्या अर्चितस-म-था ।
 मगलसिद्धपयत्या, सिद्धा सरण सुहपत्त्या ॥२५॥
 मूलुक्षयपडिकक्षा, अमूढलक्षा सजोगिपच्चक्षा ।
 साहाविअत्तसुक्षा, सिद्धा सरण परममुक्षा ॥२६॥
 पडिपिलअ पडिणीया, समग्रभाणगिगद्धुभवदीया ।
 जोइसरसरणीया, सिद्धा सरण सुनरणिया ॥ २७ ॥

पावियपरमाणदा, गुणनीसदा विभिन्न भवकदा ।
 लहुईक्य-रविचंदा, सिद्धा सरण खविअदंदा ॥२६॥
 उवलद्वयरमवभा, दुलहलभा विमुक्षसरभा ।
 भुवणघरधरणखभा, सिद्धा सरण निरारभा ॥२७॥
 सिद्धसरणेण, नववभहेउसाहुगुणजणिअ-वहुमाणो ।
 मेहुणिमिलत-मुपसत्थमत्थश्चो, तत्त्विम भणइ ॥३०॥
 जिश्वलोश्रवधुणो, कुगईसिंधुणो पारगा महाभागा ।
 नाणाइएर्हि सिवसुक्खसाहगा, साहुणो सरण ॥३१॥
 केवलिणो परमोही, विचलमई मुश्रहरा जिणमयमि ।
 आवरिअ उवज्ञाया, ते सब्बे साहुणो सरण ॥३२॥
 चउदस-दस-नवपुव्वी, दुव.लसिक्कारसगिणो जे श्र ।
 जिणकप्पा।हालदि, अपरिहार-विसुद्धि-साहू श्र ॥३३॥
 खीरासवमहु-आसवसभिन्नसोग्र कुद्धबुद्धी श्र ।
 चारणवेउद्वि पयाणुसारिणो साहुणो सरण ॥३४॥
 उज्जिभयवइर-विरोहा, निच्चमदोहा पसतमुहसोहा ।
 अभिमयगुणसदोहा, हयमोहा साहुणो सरण ॥३५॥
 खडिश्रसिणेहदामा, अकामधामा निकाममुहकामा ।
 सुपुरिसमणाभिरामा, आयारामा मुणी सरण ॥३६॥
 मिल्हश्रविसयकमाया, उज्जिभयधरधरणिसगमुहसाया ।
 अकलिश्वरिसविसाया, साहू सरण गयपमाया ॥३७॥
 हिसाइ-दोससुज्ञा, कयकाख्ज्ञा नयभुरूप्यज्ञा—(पुणा) ।
 अजरामरपहुज्ञा, साहू सरण नुकयपुज्ञा ॥३८॥

कामविडबणचुक्का, कलिमलमुक्का विवि [मु] क्कचोरिक्का ।
 पावरय-सुरयरिक्का, साहू गुणरयणचञ्चिक्का ॥३९॥
 साहृत्तसुड्डिया जं, आयरिआई तओ य ते साहू ।
 साहुभणिएण गहिया, तम्हा ते साहुणो सरण ॥४०॥
 पडिवन्नसाहुसरणो, सरणं काउ पुणोवि जिणधम्म ।
 पहरिसरोमचपवच्चकंचुअंचिअतणू भणइ ॥४१॥
 पवरसुकएह पत्त, पत्तेहि वि नवरि केहि वि न पत्तं ।
 तं केवलिपन्तत्त, धम्म सरणं पवन्नोऽह ॥४२॥
 पत्तेण अपत्तेण य पत्ताणि अ जेण नरसुरसुहाइ ।
 मुवखसुहं पुण पत्तेण, नवरि धम्मो स मे सरण ॥४३॥
 निहलिअकलुसकम्मो, कयसुहजम्मो खलीकय-अहम्मो ।
 पसुहपरिणामरम्मो, सरणं मे होउ जिणधम्मो ॥४४॥
 कालत्तएवि न मय, जम्मण-जरमरणाहिसय-समयं ।
 असयं व बहुमयं जिणमयं च सरणं पवन्नोऽहं ॥४५॥
 पसमिअकामपमोहं, दिट्ठादिट्ठेसु नकलिअविरोहं ।
 सिवसुहफलयममोहं, धम्मं सरण पवन्नोऽहं ॥४६॥
 नरय-गइ गमणरोह, गुणसंदोहं पवाइनिवखोह ।
 निहणिअवम्महजोह, धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥४७॥
 भासुर - सुवन्न - सुंदर-रयणालंकार-गारय-महगं ।
 निहमिव दोगच्छहरं, धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥४८॥
 चउसरणगमणसचिग्रसुचरिच्चरोमच्चअचियसरीरो ।
 कयदुक्कज्जरिहो, असुहकम्मवखयकलिरो भणइ ॥४९॥
 इहभविग्रमन्नभविग्र, निच्छुत्तपवत्तणं जमहिगारण ।
 जिणपवयणपडिकुहं, दुहं गरिहामि तं पावं ॥५०॥

मिच्छ्रत्तमधेणं, अरिहंताहसु अवन्नवयण ज ।
अन्नाणेण विरहय, इष्णह गरिहामि त पाव ॥ ५१ ॥

सुग्रधम्म-सधसाहुसु, पाव पडिणीश्रयाइ ज रहय ।
अन्नेसु अ पावेसु, इष्णह गरिहामि त पाव ॥ ५२ ॥

अन्नेसु अ जीवेसु, मित्ती-कहणाइ-गोथरेसु कयं ।
परिआवणाइ दुक्ख, इष्णह गरिहामि त पाव ॥ ५३ ॥

जं मणवयकाएहि, कथकारिश्र-ग्रणुमर्द्दिंह श्रायरिय ।
घम्मविरुद्धमसुद्धं, सव्व गरिहामि त पाव ॥ ५४ ॥
अह सो दुक्कडगरिहा-दलिउक्कडदुक्कडो कृड भणइ ।
सुकडाणुरायसमुइन्नपुन्नपुलय - कुरकरालो ॥ ५५ ॥
अरिहत्त श्रारहतेसु, ज च सिद्धत्तण च सिद्धेसु ।
आयार श्रायरिए, उज्ज्ञायत्त उबज्ज्ञाए ॥ ५६ ॥

साहृण साहुचरिश्र च, देसविरइ च सावय-जणाण ।
श्रणुमन्ते, सब्बेसि, सम्पत्त सम्मदिट्ठीण ॥ ५७ ॥
अहवा सव्व चिअ वीयरायवयणाणुसारि ज सुकय ।
कालत्तएवि तिविहं, श्रणुमोएमो तय सव्व ॥ ५८ ॥
सुहृपरिणामो निच्चं, चउसरणगमाइ श्रायार जीवो ।
कुसलपयडीउ वघइ, वढाउ सुहाणुवधाउ ॥ ५९ ॥

मदाणुभावा वढाउ, तिव्वाणुभावाउ कुणइ ता चेव ।
असुहाउ निरणुवधाउ, कृणड तिव्वाउ मदाउ ॥ ६० ॥
ता एव कायव्वं, दुर्हेहि निच्च पि मकिलेमन्नि ।
होइ तिकाल सम्म, अमकिलेसंमि तुरुयफल ॥ ६१ ॥

चउरंगो जिणधम्मो, न कओ चउरंगसरणमवि न कयं ।
 चउरंगभवुच्छेओ, न कओ हा ! हारिओ जम्मो ॥ ६२ ॥
 इअ-जीवपसायमहारिवीर-भद्रं तमे-अमज्ञयण ।
 भाएसु तिसंभमवभ-कारणं निवुइसुहाणं ॥ ६३ ॥

॥ चउसरणं समतं ॥

॥ सुभाषित ॥



पंच-महव्यय-सुव्यय-मूल, समण-मणाइल-साहू सुचिन्तं ।
 वैरविरमणपञ्चवसाणं, सव्यसमुद्दमहोदधी नित्यं ॥ १ ॥

तित्थकरेहि सुदेसियमग्गं, नरग-तिरिय विवञ्चिय-मग्गं ।
 सन्व-पवित्र सुनिम्मयसारं, सिद्धिविसाणं अवंगुय-दारं ॥ २ ॥

देव नर्दिव-नमंसिय-पूङ्यं, सव्यजगुत्तम-संगल-सग्गं ।
 उद्धरिस गुण-नायगमेग, मोक्खपहस्स-बडिसगभूयं ॥ ३ ॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म-सारही ।
 धम्मारामे रए दंते, बभचेर - समाहिए ॥४॥

देव-दाणव-गधन्वा, जक्ख-रक्खस्स-किङ्गरा ।
 बभयारि नमंसति दुङ्करं जे करन्ति तं ॥५॥

एस धम्मे घुवे निष्ट्रे, सासए जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्जति चाणेण, सिज्जस्सति तहावरे ॥६॥

अरहंत-सिद्ध-पवयण-नगर-येर - वहृस्सुय - तवस्तीसु ।

वच्छल्लया य तेसि, अभिक्षनाणोवओगे य ॥७॥

दंसण-विणय-शावस्सए य, सौलच्चए निरइयारे ।

खणलव-तव-ज्ञियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥८॥

अपुच्चनाणगहणे सुथभत्ती, पच्चयणे पभावणया ।

एएहि कारणोहि तित्ययरत्त लहइ जीबो ॥९॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयण जे करति भावेण ।

अमला असकिलट्टा, ते हुंति य परित्तसारि ॥१०॥

एव खु नाणिणो सार, ज न हिसइ किचण ।

अहिंसा समय चेव, एत्तावत् वियाणिया ॥११॥

जाइ च बुँड्हि च इहेज्जपास, भूतेहि जाण पडिलेह साथं ।

तम्हा तिविज्ञो-परमति णज्ञा, सम्मतदसी न करेइ पाव ॥१२॥

उम्मुच्च पासं इह मच्चिवएहि, आरंभजीवीउभयाणुपस्ती ।

कामेसु गिद्धा णिचय करति, संसिचमाणा पुणरेति गवमं ॥१३॥

संवेणे नाणे विनाणे, पच्चवलाणे य सजमो ।

अणण्हए तवे चेव, वोदाणे श्रकिरिया सिद्धि ॥१४॥

एगोह नत्य मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ।

एव श्रद्धीणमणसा, श्रप्पाणमणुसासई ॥१५॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसजओ ।

सेसा मे वाहिरा भावा, सच्च सजोगलवलणा ॥१६॥

जीविय नाभिगच्छेज्ञा, मरण नोवि पत्यए ।

दुहउवि न इच्छेज्ञा, जीविय मरण तहा ॥१७॥

सार दसणनाण, सार-तव-नियम-नजम-सौल ।

सारं जिणवरधम्म, सार सलेहणा पडियमरजं ॥१८॥

कल्पाणकोडिकारिणी, दुग्गदुहनिदुवणी ।
 ससारजलतारिणी, एगत होइ जीवदया ॥१६॥
 आरभे नत्थ दया, महिलाए सग नासइ बर्भं ।
 संकाए नासइ सम्मत्तं, पवज्ञा अत्थगगहणं च ॥२०॥
 मज्जं विसयकसाया, निहा विकहा य पचमी भणिया ।
 एए पच पमाया, जीवा पाडति सत्तारे ॥२१ ।
 लब्धंति विमला भोए, लब्धति सुरसपया ।
 लद्धंति पुत्तमित्त च, एगो धम्मो न लद्धइ ॥२२॥
 न वि सही देवता देवलोए, न वि सुही पुढवीपइराया ।
 न वि सुही सेद्धिसेणावइ य, एगांत सुही मुणी वीयरागी ॥२३॥
 नगरी सोहती जलमूलवागे, नारी सोहति परपुरुषत्यागे ।
 राजा सोहत सभा पुराणी, साधु सोहता अमृतवाणी ॥२४॥
 चलति मेरु चलति मदिर, चलति तारा रविचन्द्रमडलं ।
 कदापि काले पृथ्वी चलति, साहसपुरुषवाक्यो न चलति धर्मे ॥२५॥
 श्रशोकवृक्षः सुरपुरुषवृष्टिदिवधवनिश्चामरमासन च ।
 भामण्डल दु दुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥२६॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नदणं वणं ॥२७॥
 अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तमित्त च, दुप्पट्टियसुपट्टियो ॥२८॥
 जो सहस्सं सहस्साप्प, संगामे दुज्जेइ जए ।
 एगं जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥२९॥
 लाभालाभे सुहे-दुखेइ, जीविए मरणे तहा ।
 समो निन्दापससासु, तहा माणावमाणओ ॥३०॥

भक्तामर-स्तोत्रम्

प्रदीप्तिः

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणिप्रभाणा-
मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादा-
वालम्बन भवजले पतता जनानाम् ॥१॥

य सस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभि. सुरलोकनाथं ।
स्तोत्रं र्जगत्तितयचित्त-हरेस्वरारं,
स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथम जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुध्या विनाईपि विबुधाच्चितपादपीठ ! ,
स्तातुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बाल विहाय जलस्थितमिन्दुविम्ब-
मन्यः क इच्छति जनं सहसा ग्रहेतुम् ॥३॥

वस्तु गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्कान्तान्,
कस्ते क्षमं सुरगुरो प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पातकाल-पवनोद्धत-नक्तचक्र,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधि भुजान्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश ! ,
कर्तुं हतव विगतशयितरपि प्रवृत्त ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्र,
नाभ्येति कि निजशिशो परिपालनार्थम् ॥५॥

अत्पश्चुतं श्रुतवत्तां परिहासधाम,
 त्वद्भूक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
 यत्कोकिल किल मधौ मधुर विरौति,
 तज्जारुचान्नकलिका-निकरंकहेतुः ॥६॥

त्वत्संस्तवेन ' भवसन्ततिसञ्जिबद्ध,
 पाप क्षणात्कथयमुपैति शरीरभाजाम् ।
 आकान्तलोक-मलिनील-मशेषमाशु,
 सूर्या शुभिन्नमिव शर्वरमन्धकारम् ॥७॥

मत्वेति नाथ ! तब स्तवनं मयेद-
 मारम्यते तनुधियाऽपि तब प्रभावात् ।
 चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु ,
 मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दु ॥८॥

आस्तां तब स्तवनमस्तसमस्तदोषं ,
 त्वत्सकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
 द्वारे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
 पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाज्ञि ॥९॥

नात्यद्भुत भुवनमूषण ! भूतनाथ !
 भूतं गुणं भूति भवन्तमभिष्टुवन्तः !
 तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
 भूत्याश्रितं य इह नात्मसम करोति ॥१०॥

द्वषा भवन्तमनिमेषविलोकनीय,
 नात्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
 पीत्वा पथ. शशिकरद्युतिदुर्घसिन्धोः,
 क्षार जलं जलनिघेरगितु क इच्छेत् ॥११॥

ये शान्तशागत्तचिभि. परमाणुभिस्त्वं,
निर्मपितस्त्रभुवनैकललामभून् ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्या,
यते समानमपर न हि रूपमस्ति ॥१३॥

वदत्र वद ते तुरनरोरगनेत्रहारि,
नि शेषनिजित-जगन्त्रितयोपमानम् ।
विस्त्र कलङ्कमलिन वद निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाष्ठुपलाशकरूपम् ॥१४॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककला-कलाप ।
शुश्रा गुणास्त्रभुवन तव लङ्घन्यन्त ।
ये नश्रितास्त्रजगदीश्वर । नायमेक,
कस्तास्त्रिवान्यति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१५॥

चित्र किमद्र यदि ते विदशाङ्कनानि-
र्नीत मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमस्ता चलिनाच्छ्लेन,
कि मन्दराद्रिशिखर चलित कदाचित् ॥१६॥

निवूंमवर्ति-रप्तवर्जित-तैलपूर
कृत्स्नं जगत्त्रयमिद प्रकटो-करोपि ।
गम्यो न जानु मस्ता चलिताच्छ्लानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाय । जगत्प्रकाश ॥१७॥

नास्तं कदाचिद्गुप्यासि न रहृगम्यः,
स्पृष्टोकरोषि महसा युगमस्तुगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महाप्रभाव..
सूर्यातिशायिभिर्हिमानि मुनीन्द्र । तोके ॥ १८ ॥

नित्योदयं इलित्सोहमहान्धकारं,
 गम्य न राहुवदनस्थ न वारिदानाम् ।
 विभ्राजते तत्र मुखाब्जमनल्पकान्ति-
 विद्योतयज्ञगदपूर्व-शशाङ्कविम्बम् ॥१८॥

कि शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्तता वा,
 युज्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
 निष्पश्चशालिवनशालिनि जीवलोके,
 कार्यं कियज्ञलधरैर्जलभारनम् ॥१९॥

ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
 नैवं तथा हरिहराद्विषु नायकेषु ।
 तेजस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं,
 नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहराद्य एव हृष्टाः
 हृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
 कि वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य,,
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

खीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् ,
 नान्या सुतं त्वद्वुपमं जननी प्रसूता ।
 सर्वा दिशो दधति भानि-सहस्ररिश्म ,
 प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
 मादित्यवर्णमभलं तमस-परस्तात् ।
 त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं ,
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनोन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्यय विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यम्,
ब्रह्माण - मीश्वर - मनन्त - मनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेक ,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्त ॥२४॥

दुष्टस्त्वमेव विवुधाचित्वुद्धिवोधत् ,
त्वं शङ्करोऽसिभुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
घाताऽसि धीर ! शिवभार्गविघेविधानात् ,
च्यक्त त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुम्यं नमखिभुवनार्त्तहराय नाथ !
तुम्य नम क्षितितलामलमूषणाय ।
तुम्यं नमखिजगतः परमेश्वराय ,
तुम्य नमो जिन ! भवोदविशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणरशेषं-
स्त्व सश्रितो निरत्वकाशतया सुनीश ! ।
दोषे-रूपात्-विविधाश्रयजातगवं ,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोक-तरसश्वित-मुन्स्युख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लस्त्विकरण-मस्ततमो-वितानं ,
विम्बं रवेरिव पयोधरपाश्वर्वर्ति ॥२८॥

सिहासने मणिमयूखशिखाविच्छ्रेँ ,
विभ्रामते तव वपुं कनकावदातम् ।
विम्बं वियद्विलसदशुलतावितानं ,
त्रुञ्जोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररसमः ॥२९॥

कुन्दावदातचल-चामर-चारशोभ,
 विभ्राजते तव वयु कलवौतकान्तम् ।
 उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्जर-वारि-धार—
 मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौमभम् ॥३०॥
 छत्रनयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
 मुच्चै स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
 मूकताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभ-
 प्रख्यापयत्तिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥
 गम्मीरतार-रवपूरित-दिग्दिभाग-
 स्त्रैलक्ष्य-लोकगुभसङ्गम-भूतिदक्ष ।
 सद्धर्मराजजथघोषणघोषक सन् ,
 ले डुन्डुभिर्धर्वनति ते यवसः प्रवादी ॥३२॥
 मन्दार-सुन्दर-नमेर-सुपारिजात-
 सतानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा ।
 गन्धोदविन्दुशुभमन्दमस्त्रप्रपाताः,
 दिव्या दिवः पतति ते चक्रसां ततिर्वा ॥३३॥
 शुभ्रप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
 लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
 प्रोद्याद्विकाकरनिरन्तरभूरिसख्या,
 दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सेमसौम्याम् ॥३४॥
 स्वर्गापवर्गममर्गविमार्गणष्टुः—
 सद्धर्मतत्त्वकथनैकपदुखिलोकयाः ।
 दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व—
 भाषास्त्वभावपरिणामगुणः प्रयोज्यः ॥३५॥

उन्निद्र - हेमनवपञ्चज - पुञ्जकर्ति-
पर्युद्धसन्नखमयूख - शिखाऽभिरमी ।
पादी पदानि तत्र यत्र जिनेन्द्र ! ध्रुतः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थ यथा तत्र विमूर्ति-स्मूर्जिनेन्द्र !
घर्मोपदेशनकिञ्चो न तथा परस्य ।
याहृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्वकारा,
ताहृक् कुतो प्रहगणस्य विकास्तिनोऽपि ॥३७॥

इच्योतन्मदाविल - विलोल - कपोल-मूल-
मत्तभ्रमद् - भ्रमरनाद - विवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभः सुद्धतमापतन्त,
दृष्टा भय भवति नो भवद्वश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भ - गलदुज्ज्वल - शोणिताक्त-
मुक्ताफल - प्रकरभूयित - मूसिभाग ।
बद्धक्रमः क्रमगत हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसधित ते ॥३९॥

कल्पान्तकाल - पवनोद्धत - वह्निकल्प,
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमूलस्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुभिव सन्मुखमापतन्तं,
त्वज्ञामकोर्तनजल शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रक्तेक्षण समदकोकिलकण्ठनील,
क्रोधोद्धत फणिनमुक्तणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुसः ॥४१॥

वलगत्तुरङ्गः - गजगजित - भीमनाद्-
 माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाथ् ।
 उद्याह्वाकर - मथूख १ - शिखापविद्धं,
 त्वत्कीर्तनात्तम इवाचु भिदासुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह-
 वेगावतार - तरणात्तुर - योधभीमे !
 युद्धे जय विजित - दुर्जय - जेयपक्षा-
 स्त्वत्पाद-पङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अस्मिन्निधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
 पाठीन-पीठ-भयदोल्वण-वाढवाग्नौ ।
 रङ्गत्तरग-शिखर-स्थितयान-पात्रा-
 स्त्रास विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४४॥

उद्भूत-भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः, -
 शोच्यां दक्षासुपगताश्चयुतजीविताशा ।
 त्वत्पाद - पङ्कज - रजोऽसृत - द्विध-देहा ,
 मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

आपाद - कण्ठसुरुशृङ्खल - वेष्टिताङ्गा ,
 गाढं वृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घः ।
 त्वक्षाममत्रमनिश मनुजाः स्मरन्तः,
 सद्यः स्वयं विगतवधभया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विषेन्द्र मृगराज - दवानलाहि-
 सड् ग्राम - वारिधिमहोदर - बन्धनोत्थम् ।
 तस्याच्छुनावासुपयाति भय भियेव ,
 यस्तावकं स्तवमिम मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्तज तव जिनेन्द्र ! गुणेनिवद्वा,
भवत्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
घट्टे जनो य इह कण्ठगतामजल,
त मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मी ॥४८॥

॥ इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचित स्तोत्रम् ॥



श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम्

श्रीकल्याण-मन्दिर-स्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीता भयप्रदमनिन्दितमधिपद्मम् ।
ससारसागर - निमल्लदशेषपञ्चतु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

यस्य स्वय सुरगुरुर्गिरिमास्तुराशे ,
स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभूविधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल् सस्तवत करिष्ये ॥२॥
साभान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वत्प-
मस्माहशाः कथमधीन ! भवत्यवीशाः ।
घृष्णोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्रहृपयति कि किल् घर्मरक्षेः ॥३॥

मोहक्षयादनुभवज्ञपि नाथ ! मर्त्यो,
 नून गुणान् नगणयितुं न तव क्षमेत् ।
 कल्पान्तवान्तपयसः ब्रकटोऽपि यस्मान्-
 सीधेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥
 अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
 कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
 वालोऽपि किं न निजबाहुयुग वितत्य,
 विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशे. ? ॥५॥
 ये योगिनामपि न यान्ति गुणस्तवेत् !
 वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाश ।
 जरता तदेवमसमीक्षितकाहितेयं,
 जलपन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥
 आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! सस्तवस्ते,
 नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
 तीव्रातपोपहत-पात्थजनान्विदाधे,
 प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥
 हृष्टिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति ,
 जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मवन्धा ।
 सद्यो भुजुङ्गममया इव मध्यभाग-
 मभ्यागते चनशिखण्डनि चन्दनस्य ॥८॥
 मृच्यत एव मनुजा सहसा जिनेत्त्र !
 रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि चीक्षितेऽपि ।
 ग्रोस्त्वामिति स्फुरितत्तेजसि हृष्टमात्रे ,
 चोरैरिवाशु पश्चः प्रपलायमानैः ॥९॥

त्वं तारको जिन ! कथ ? भविना॒ त एँवं॑
 त्वांमुद्धृत्वन्ति हृदयेन यदुत्तरंते॑ ।
 यद्वा हृतिस्तरंति यज्ञलभेषं नूने॑
 मन्त्रगतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥
 यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
 सोऽपि त्वया रतिपति क्षपितः क्षणेन॑ ।
 विद्यापिता हुतमुज पयसाऽथ धेन,
 पीत न कि तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥११॥
 स्वामिन्नन्त्यगरिमाणमपि प्रेपेशा॑-
 स्त्वां जन्तवं कथमहो हृदये दधाना ।
 जन्मोदधि लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
 चिन्तयो न हन्ति । महता यदि वा प्रभाव ॥१२॥
 क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथम निरस्तो,
 ध्वस्तास्तदा वत् कथ किल कर्मचौरा ?
 प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरोऽपि लोके,
 नीलद्रुमाणि विपिनानि न कि हिमानो ॥१३॥
 स्वा योगिनो जिन ! सदा परमात्मस्य-
 मन्त्रेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशो ।
 पूतस्य तिर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
 दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कणिकायाः ? ॥१४॥
 ध्यानाङ्गिनेश ! भवतो भविन. क्षणेन,
 देह विहाय परमात्मदशां वजन्ति ।
 तीव्रानलाद्युपलभावमपास्य लोके,
 चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदा ॥१५॥

अन्तः सदेव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
 भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
 एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,
 यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥
 आत्मा मनोषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
 ध्यातो जिनेद्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
 पानीयसप्यसृतमित्यनुचित्यमानं,
 किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥
 त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
 नून विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
 किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपिशड्खो,
 नो गृह्णते विविधवर्णविपर्यंवेण ॥१८॥
 धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
 दास्तां जनो भवति ते तरुण्यशोकः ।
 अभ्युदगते दिनपतौ स महीरुहोऽपि,
 किं वा विदोधसुप्याति न जीवलोकः ॥१९॥
 चित्र विभो ! कथमवाइमुखवृत्तमेव,
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपृष्ठपृष्ठिः ?
 त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
 गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥
 स्थाने गभीरहृदयोदधिसभवायाः ,
 पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
 पीत्वा यत परमसम्पदसङ्गभाजो ,
 भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

स्वामिन् । सुहरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचय सुरचामरीधा ।
येऽस्मै नन्ति विदधते मुनिपुञ्जवाय,
ते नूनमूर्धवंगतयः खलु शुद्धभावा ॥२२॥

श्याम गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्च-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥
उद्गच्छता तव शितिद्युतिमडलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतर्खंभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

भो भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहन् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्तभिनभः सृदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरय विहताधिकारः ।
मुक्त्वाकलापकलितोच्छ्रवसितातपत्र-
च्चाजातिविधा धृततनुध्रुवमन्युपेत ॥२६॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डतेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव सच्चयेन !
माणिक्यहेमरजतप्रविनिमितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो दिनामि ॥२७॥

दिव्यलजो जिन । नमस्त्रिदेशोविषाना —
 सुत्सृज्य रत्नरचितानपि भौलिवन्धान् !
 पादौ श्रयन्ति भंवतो यदि वा पर्वते,
 त्वंतंसङ्गमे सुमनसो न रमन्ते एव ॥२८॥
 त्वं नाथ । जन्मजलधैर्विषराङ्गमुखोऽपि ,
 यत्तारथस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
 युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव ,
 चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥
 विश्वेश्वरोऽपि जनपालक । दुर्गतस्त्वं ,
 किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश !
 अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव ,
 ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥३०॥
 प्रागभारतभूतनभासि रजांसि इरोषा-
 दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
 छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
 ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥
 यद् गर्जद्विजितघनौघमदभ्रभीमं-
 भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
 दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दंडे ,
 तैनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥
 घस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-
 प्रालम्बभृद्धयदवक्रविनियदनिः ।
 प्रेतवजः प्रतिभवन्तमणीरितो यः ,
 सोऽस्योऽभेवतप्रतिभुवं भवदुखहेतुः ॥३३॥

धन्यास्ते एवं भुवनांधिष ! चेत् त्रिसन्ध्य-
माराघयेन्ते विधिवद्विद्युतान्यकृत्या ।
भक्त्योल्लासत्पुलेक - पर्षमल - दैहंदेशा,
पांद्वद्वय तव विभो ! भुवि जन्मभाज ॥३४॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधीं मुनीश !,
मन्ये न मे अवणगोचरता गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
कि वा विपद्विषधरी सविध समेति ? ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवाना,
जातो निकेतनमह मयिताशयानाम् ॥३६॥

नून न मोहतिमिरावतलोचनेन-
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
ममाविधो विधुरयन्ति हि मामनर्था,
प्रोद्यतप्रबन्धगतय कथमन्यर्थं ? ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नून न चेतसि मया विधृतोऽसि भवत्या ।
जातोऽस्मि तेन जनवान्धव ! दु.खपात्र,
यस्मात्क्रिया प्रतिकलन्ति न भावशून्या ॥३८॥

त्व नाथ ! दु.खिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वक्षिना वरेण्य ! ।
भक्त्या न ते मयि भहेश ! दया विधाय,
दु.खाकुरोद्दलनत्परता विधेहि ॥३९॥

निःसख्यसारक्षरणं शरण - क्षरण-
 मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
 त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्धयो,
 वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्ध ! विदिताखिलवस्तुसार !,
 संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
 त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि,
 सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशे : ॥४१॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदंग्रिसरोरुहाणां,
 भवते : फलं किमपि सन्ततिसञ्चिताया ।
 तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण ! भूयाः,
 स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्करेऽपि ॥४२॥

इत्थ समाहितधियो विधिवज्ज्ञनेन्द्र !
 सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्जुकिताञ्जभागाः ।
 त्वद्विस्व - निर्मल - सुखाम्बुज - बद्धलक्ष्या,
 ये संस्तव तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचद्र ! प्रभास्वरा स्वर्गसपदो भुक्त्वा ।
 ते विगतिसलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥



श्री रत्नाकरपंचविंशतिः

१

थ्रेयः श्रियां मगलकेलिसद्य !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांग्रिपद्म !।
 सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरञ्जयज्ञानकलानिधान !॥१॥
 जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ! दुर्वारससारविकारवैद्य !
 श्रीवीतराग ! त्वयिमुखभावा-द्विजप्रभो विज्ञपद्मामि किञ्चित् ॥२॥
 किं बाललीलाकलितो न बाल-पित्रो पुरो जल्पति निर्विकल्प !
 तथा यथार्थ कथयामि नाथ !, निजाशय सानुवायस्तवाग्रे ॥३॥
 दत्त न दानं परिशीलित च, न शालि शील न तपोऽभितप्तम् ।
 शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्, विभो! मया भ्रातमहोमुर्धवा॥४॥
 दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दृष्टे, दुष्टेन लोभाद्यमहोरगेण ।
 ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन वद्धोऽस्मि कथं भजे त्वा ॥५॥
 कृत मयाऽमूत्र हित न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽमूत ।
 अस्माहृशा केवलमेव जन्म, जिनेश ! जन्मे भवपूरणाय ॥६॥
 मन्त्रे मनो यन्नमनोज्ञवृत्त !, त्वदात्मपीयूषमयूषलाभात् ।
 द्रुतं महानन्दरस कठोर-मस्माहृशा देव ! तदश्मतोऽपि ॥७॥
 त्वत्तः सुदुःप्रापमिद मयाऽस्त. रत्नत्रय नूरिभवभ्रमेण ।
 प्रमादनिद्रावशतो गत तत्, कस्याऽप्रतो नायक ! पूर्वरोमि ॥८॥
 वैराग्यरङ्गं परवच्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ।
 वादाय विद्याऽध्ययन च मेऽमूत, किष्यद् द्रुवे हास्यकर स्वमोग्र ॥९॥
 परापवादेन मुख सदोषं, नेत्र परखीजनवीक्षणेन ।
 चेतः परापाययिद्दिन्तनेन, कृतं भविष्यामि धर्मं विभोऽह ॥१०॥

विडम्बितं यत्स्मरघंस्मरात्ति—दज्ञावशात्स्वं विषयांधलेन ।
 प्रकाशितं तद्भवतो ह्यैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वप्नेव वेत्सि ॥११॥
 ध्वस्तोऽन्यमन्त्रः परमेष्ठिमन्त्रः कुशास्त्रवाक्यैर्तहतागमोक्तिः ।
 कतुं वृथाकर्मकुदेवेसंगादवाच्छ हि नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥१२॥
 विमुच्य हुगलक्ष्यगत भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
 कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुहशां विलासाः ॥१३॥
 लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे रागलबो विलगः ।
 न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये, धौतोप्यगत्तारक कारणं किं ॥१४॥
 अंग न चंग न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
 स्फुरत्प्रधानप्रभृता च काऽपि, तथाप्यहंकारकदयितोऽह ॥१५॥
 आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धिंगत वयो नो विषयाभिलाषः ।
 यत्नञ्च भैषज्यविद्वां न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥१६॥
 नात्मा न पृथग न भवो न पाप, मया विटानां कदुगीरपीय ।
 अधार कर्णे त्वयि केवलाके, परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिमासु ॥१७॥
 न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धवर्मश्च न साधुधमः ।
 लद्ध्वापि मानुष्यमिद समरतं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यं ॥१८॥
 चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनु—कल्पद्रुचिन्तामणिषु स्पृहात्तिः ।
 न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावं ॥१९॥
 सद्गौगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ।
 दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्य मयकाऽधमेन ॥२०॥
 स्थितं न साधोर्ह दि साधुवृत्तात्, परोपकारान्नं यशोऽजित च ।
 कृते न तीर्थोद्धरणादिकृत्य, मया मुधा हारितमेव जन्म ॥२१॥
 वैराग्यरंगो न गुहदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
 नाध्यात्मलेशो ममकोऽपि देव, तार्य कथञ्चारमंयमभवादिषः ॥२२॥

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागाभिजन्मन्यवि नो करिष्ये ।
 यदीद्वात्रोऽहं सम ते न नष्टा, सूतोद्भवाद्भाविभवत्रयीश ॥२३॥
 किंवा सुधाहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य ! त्वदग्रे चरित स्वकीय ।
 जल्पाभि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप ! निरूपकस्त्वं कियदेतदग्र ॥२४॥
 दीनोद्भारघुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्य. कृपा ।
 पात्र नोत्र जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येतां न याचे श्रिय ॥
 कि त्वर्हज्ञिदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिय ।
 श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलय । श्रेयस्कर प्रार्थये ॥२५॥



श्री अमितगतिसूरिविरचिता प्रार्थना-पञ्चकिंशतिः उपजातिवृत्तम्

सत्त्वेषु मंत्रो गुणिषु प्रमोद, विलष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
 माध्यस्थभाव विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव ॥१॥
 शरीरूपः कर्तुं मनन्तशक्तिन, विभिन्नमात्मानमणासनदोपत्र ।
 जिनेन्द्र ! कोषादिव खङ्गयुष्टि, तत्र प्रसादेन ममास्तु शयित ॥२॥
 दुखे सुखे वैरिण वन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा ।
 निराकृताऽज्ञेषममत्वबुद्धे, सम मनो मेजस्तु सदाऽपि नाय ॥३॥
 यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दे, य त्तूयते सर्वनरामरेन्द्र ।
 यो गीयते वेदपुराणशास्त्रे, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥४॥

यो दर्शनज्ञानसुखस्वभवः समस्तसंसारविकारवाह्यः ।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, सदेवदेवो हृदये समास्ताम् ॥५॥

निष्पृदते यो भवदुखजालम्, निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये समास्ताम् ॥६॥

विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद्व्यतीतः ।
त्रिलोकलोकी विकलोकलंकः, स देवदेवो हृदये समास्ताम् ॥७॥

क्रोडीकृतशेषजारीरिवर्ग, रागाह्यो यस्य न सति दोषाः ।
निरन्द्रियो ज्ञानस्थयोजनपायः, स देवदेवो हृदये समास्ताम् ॥८॥

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः, सिद्धो विबुद्धोद्धतकर्मबन्धः ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये समास्ताम् ॥९॥

न स्पृश्यते कर्मकलकदोषैः, यो ध्वान्तसंघैरिव तिन्मरणिमः ।
निरञ्जनं नित्यमनेकमेक, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१०॥

विभासते यत्र भरीचिसालिन्यविद्यमाने भुवनावभासि ।
स्वात्मस्थित बोधमयप्रकाश, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥११॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्व, विलोक्यते स्पष्टमिद विविक्तम् ।
शुद्ध शिवं शान्तमनाद्यन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१२॥

येन क्षता मन्मथमानमूर्छा—दिषादनिद्राभयशोकविन्ताः ।
क्षय्योऽमलेनेव तत्प्रपञ्चस्तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१३॥

प्रतिक्रमण प्रभुसमीपे स्वात्मचिन्तनं

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकषायनिमितम् ।
निहन्मि पाप भवदुखकारणं, भिषग्विष संत्रयुणैरिवाखिलम् ॥१४॥
अतिक्रमं यं विमतेवर्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
च्यवामनाचारमपि प्रमादत्. प्रतिक्रमं तस्य करोमि-शुद्धये ॥१५॥

न सस्तरोऽस्मा न तृणं न मेदिनी, विघानतो नो फलको विनिर्मितः ।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विष., सुघीभिरात्मेव सुनिर्मलो मतः ॥१६॥

न सस्तरो भद्रसमाधिसाधन, न लोकपूजा न च सधमेलनम् ।
यतस्ततोऽव्यात्मरतोभवाऽनिश, विमुच्य सर्वामिपिवाहृवासनाम् ॥१७॥

न संति बाह्या मम केचनार्था, भवामि तेया न कदाचनहम् ।
इत्थ विनिश्चित्य विमुच्य बाह्य, स्वस्य सदा त्वं भव भद्र ! मुक्त्यै॥१८॥

आत्मानमात्मन्यविलोक्यमानस्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः,
एकाग्रचित्त. खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् ॥१९॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मल. साविगमस्वभाव. ।
बहिर्भवा, सन्त्यपरे समस्ताः, न शाश्वता कर्मभवाः रवकीया ॥२०॥

यस्यास्ति नैक्य वपुषापि सार्वं, तस्यास्ति किं पुश्कलत्रस्त्रिं ।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपा, कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥२१॥

सयोगतो दुःखमनेकनेद यतोऽनुते जन्मवने शरीरो ।
ततस्त्रिंशासौ परिवर्जनीयो, वियासुना निवृत्तिमात्मनोनाम् ॥२२॥

सर्वं निराकृत्य विकल्पजाल, ससारकान्तारनिपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, नितीयसे त्वं परमात्मनस्त्वे ॥२३॥

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीय लभते द्युभादुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुट, स्वयंकृतं कर्म निरर्यकं तदा ॥२४॥

विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना, मया कपायाक्षवशेन दुर्घिया ।
चारित्रशुद्धेर्दकारि लोपनं तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ! ॥२५॥

श्री चिन्तामणि-पाश्वनाथ-स्तोत्रम्

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्



कि कर्पुरमय सुधारसमयं कि चन्द्ररोचिर्मयं ।
 कि लावण्यमय महामणिमय कालण्यकेलिमयम् ॥
 विश्वानन्दमयं महोदयमय शोभामयं चिन्मय ।
 शुक्लध्यात्ममयं वसुजिनपतेर्भूयाद् भवालम्बनम् ॥१॥

 पातालं कलयन् धरां धवलयज्ञाकाशमपूरयन् ।
 दिक्चक्रक्रसयन् सुरासुरतरथेणि च विस्मापयन् ॥
 व्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलालोलयन् ।
 श्रीचिन्तामणिपाश्वसभग्नो हसश्विरं राजते ॥२॥

 पुण्यानां विष्णिस्तमो दिनमणिः कामैभकुम्भे सृणि-
 स्मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिःप्रकाशारणिः ॥
 दाने देवमणिनर्तोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी ।
 विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपाश्वचिन्तामणिः ॥३॥

 श्रीचिन्तामणिपाश्वविश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया ।
 हृष्टस्तात् ! ततः ध्रियः सम्भवज्ञाशक्तिक्रिणम् ॥
 मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाच्छ्रितं ।
 दुर्देहं दुरितं त्रि हुदिनभयं कष्टं प्रणालुं सम् ॥४॥
 यस्य श्रौढत्वमप्रतापतपनः-प्रोद्दृग्मधामा जग—
 ऊर्ज्जालः कलिकालकेलिवलनो मोहान्धविश्वसकः
 नित्योद्योतपदं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते ।
 स श्रीपाश्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम् ॥५॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कहणाकुरो,
दारिद्राणि गजावलों हरिशिशु काष्ठानि वह्ने कण ।
पीयुषस्य लबोऽपि रोगनिवह यद्वत्तथा ते विभो ।
मूर्ति स्फूर्तिमतो सतो त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ॥६ ।
श्रीचिन्तामणिमत्रमोकृतियुत होकारसारश्रित ।
श्रीमद्वर्त्ममिङ्गणपाशकलित त्रैलोक्यवश्यावहम् ॥
द्वेधाभूतविषापह विषहर श्रेय प्रभावाश्रय ।
सोऽप्नास वसहाङ्कितं जिनफुल्लिगामन्दद देहिनाम् ॥७ ।
हों श्रीकारवर नमोऽक्षरपरं ध्यायति ये योगिनो
हृत्पद्ये विनिवेश्य पाश्वर्मधिप चितामणीसंज्ञकम् ॥
भालेवामभुजे च नाभिकरयोभूयो भुजे दक्षिणे ।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपद द्वित्रैर्भवेयन्त्यहो ॥८ ॥
नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचान,
नैवाधिनासिमाधिनं च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ।
नो शकिन्यो ग्रहा नो न हस्तिकरिगणा व्यालवेतालजाला,
जायते पाश्वर्चिन्तामणिनतिवशत् प्राणिनां भवितभाजाम् ॥९ ।
गोवणिद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रगिणो
देवा दानवमानवाः सविनय तस्मै हितध्यायिन ॥
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिना द्रह्माण्डसल्यायिनो ।
श्रीचिन्तामणिपाश्वर्वनाथसनिश सस्तीति यो ध्यायति ॥१०॥

इति जिनपतिपाश्वरं पाश्वर्पाश्वरत्ययक्षः,
प्रदलित - दुरितीघ. प्रीणित - प्राणीसार्थ ।
त्रिभुवन-जनवाङ्गादान - चितामणीक ।
शिवपदतर्क्षीज वोषियोज ददानु ॥११॥

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया ।
 सब जीवों को मोक्ष-मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
 बुद्ध वीर जिन हार हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
 भक्ति-भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ॥१॥

विषयों की आशा नहि जितके, साम्य भाव धन रखते हैं ।
 निज पर के हित साधन मे जो, निश्चिदिन तत्पर रहते हैं ॥
 स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
 ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख-समूह को हरते हैं ॥२॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
 उन्हीं जैसी चर्या मे यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
 नहीं सताऊ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ ।
 परधन वनिता पर न लुभाऊ, संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥

अहंकार का भाव न रखूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
 देख दूसरो की बढती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
 रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
 बने जहां तक इस जीवन मे, औरों का उपकार करूँ ॥४॥

मैत्री-भाव जगत मे मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
 दीन दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा-त्रोत बहें ॥
 दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरत्तो पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे ।
 साम्यभाव रखूँ मै उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥५॥

गुणों जनों को देख हृदय मे, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
 बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
 होऊँ नहीं कृतज्ञ कभी मै, द्रोह न मेरे उर आवे ।
 गुण-प्रहरण का भाव रहे नित, हृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥

कोई बुग कहो या श्रद्धा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
लाखो वर्षों तक जीवूं, या मृत्यु आज ही था जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥७॥

होकर सुख मे मग्न न फूलें, दुख मे कभी न घबरावे ।
पर्वत, नदी, इमशान भयानक, अटवी से नहिं भय लावे ॥
रहे श्रड्डोल, अकम्प निरन्तर, यह मन हृष्टतर बन जावे ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग मे, सहनशीलता दिखलावे ॥८॥

सुखो रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे ।
वेर पाप अभिमान छोड़, जग नित्य नये मगल गावे ॥
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे ।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे ॥९॥
ईति भोति व्यापे नहिं जग मे, वृष्टि समय पर हृथा करे ।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैलें, प्रजा शान्ति से जिया करे ।
परम श्रीहिंसा धर्म जगत में, फैले सब हित किया करे ॥१०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
श्रापिय, कटुक, कठोर शब्द नहिं, कोई मूल से कहा करे ॥
बन कर सब “युग-न्वीर” हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करे ।
वस्तु-स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख तकट सहा करे ॥११॥

प्रकीर्ण गाथाएं

नमित्तण श्रसुर सुरगरुल-भूयगपरिवंदिय-गयकिलेसे ।

अरिहंत - सिद्धायरिय - उवजभाय - सत्त्वसाहृण ।

सिद्धाण बुद्धाण पारगयाण परंपारगयाण ।

लोग्रगमुवगयाण नमो सया सत्त्व-सिद्धाण ॥१॥

जो देवाणमवि देवो, जं देवा पंजली नमंसति ।

त देवं देवमहियं सिरसा वन्दे महावीरं ॥२॥

इङ्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।

संसार-सागराओ तारेइ नर व नारें वा ॥३॥

उज्जितसेल-सिहरे दिक्खा नाण निसिहीआ जस्स ।

तं धम्मचक्रवर्णै ह अरिहुनेमि नमंस्सामि ॥४॥

चत्तारि अद्वृद्दस दोय बंदिया जिणवरा चउब्बोसं ।

परमहु निहिअद्वा सिद्धा सिद्धि ममं दिसंतु ॥५॥

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।

सन्तो सन्तोकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

अर्थ—इच्छित कार्य-सिद्धि होने के लिये प्रथम इष्टदेव को नमस्कार किया जाता है, सिद्धाण अर्थात् सिद्ध भगवान् को नमस्कार हो ।

संजयाणं अर्थात् संयति—आचार्य, उपाध्याय व सर्व साधु-साध्वी जी महाराज को नमस्कार हो । सारे लोक मे शान्ति करनेवाले शान्तिनाथ प्रभु जी को त्रिकरण-शुद्धि भावपूर्वक नमस्कार हो ।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवटी महड्डिओ ।

सन्तो सन्तोकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

अर्थ—सारे लोक मे शान्ति स्थापित करनेवाले सोलहवें
तीर्थंकर थी शांतिनाथ नाम के चक्रवर्तीं महान् ऋद्धि-सिद्धिवाले
भरत क्षेत्रका राज्य छोड़कर उत्तम (मोक्ष) गति को प्राप्त हुए।

अलद्धु पुब्वलद्धु जिणवयण-सुभ/सिय अमियं ।

भूद्वयगइमग्गा ना मरणाय बोयासो ॥१॥

जा जा वच्चह रथणी न सा पडिनियत्तह ।

अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइश्रो ॥२॥

जा जा वच्चह रथणो, न सा पडिनियत्तह ।

धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जति राइश्रो ॥३॥

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।

अप्याण तारइस्सामि, तुव्वेहि अणुमनिश्चो ॥४॥

एगे जिए जिया पच, पच जिए जिया दस ।

दसहा उ जिणित्ता ण, सञ्च सत्तू जिणैमहे ॥५॥





